कानपुर का इतिहास

भाग २

सम्पादक :

श्री लक्ष्मीकान्त त्रिपाठी
श्री नारायणप्रसाद अरोड़ा

कानपुर-इतिहास समिति
कानपुर

१९५८

मूल्य-आठ रुपया

प्रकाशक :

कानपुर इतिहास समिति

पटकापुर, कानपुर

मुद्रक :

श्री सत्यभक्त

ज्ञान मन्दिर प्रेस

मजीद अहमद रोड, कानपुर.

आत्म-निवेदन

"कानपुर का इतिहास" का पहला भाग सन् १९५० में प्रकाशित हुआ था। उसमें दूसरे भाग की रूपरेखा दी गई थी। अब ७ वर्ष बाद यह दूसरा भाग अपने उदार संरक्षकों और पाठकों के समक्ष प्रस्तुत करने में हम समर्थ हो सके। प्रथम भाग का संकलन अधिकतर आधारभूत सहायक सामग्री की सहायता से किया गया था, जिसके शोध और उपयोग में परिश्रम अवश्य करना पड़ा था, पर केवल विभिन्न स्थानों में जा जा कर फोटो-चित्र लेने के अतिरिक्त उस कार्य में विशेष क्षेत्रीय कार्य (Field work) की दौड़-धूप नहीं करनी पड़ी थी।

इस द्वितीय भाग के संकलन और मुद्रण में इतना अधिक समय लगा। इसका मुख्य कारण यही है कि इसके लिये बहुत कम प्रकाशित अथवा अप्रकाशित सामग्री उपलब्ध है। कानपुर में आधुनिक उद्योग-धन्धों का श्रीगणेश कुछ यूरोपीय व्यापारियों ने ही किया था। उनके साथ कुछ भारतीय व्यवसायी भी सम्मिलित होते गये, जिन्होंने कालांतर में अपने स्वतन्त्र उद्योग चालू कर दिये। अपर इन्डिया चेम्बर आफ कामर्स और यूरोपीय चेम्बर आफ कामर्स द्वारा प्रकाशित विवरणों से इन अग्रणी औद्योगिकों के कृतित्व और जीवन-वृत्त की आवश्यक सामग्री प्राप्त हो गई। रायबहादुर रामनारायण खजांची, ने स्थानीय अंग्रेजी साप्ताहिक 'सिटिजन' में एक लेख-माला प्रकाशित की

थी, जो पुस्तकाकार भी छप चुकी है। उसमें भी कानपुर के औद्योगिक इतिहास के इस प्रथम युग का बहुत कुछ प्रत्यक्षदर्शी वर्णन मिल जाता है। कुछ ट्रेड डाइरक्टरीज भी छपी हैं, जिनसे समय समय पर कानपुर के उद्योग व व्यवसाय की गति-विधि के आँकड़े उपलब्ध हुए हैं।

पर यह सब सामग्री इतनी अल्प है कि उसके आधार पर कानपुर के गत सौ वर्षों का औद्योगिक और व्यावसायिक इतिहास नहीं लिखा जा सकता। प्रथम विश्वयुद्ध के अन्त से लेकर आजतक, अर्थात् लगभग गत ४० वर्ष, की अवधि कानपुर की अभूतपूर्व औद्योगिक एवं व्यावसायिक प्रगति का स्वर्ण-युग है। इसी युग में कानपुर उत्तर भारत का मूर्धन्य व्यावसायिक और औद्योगिक केन्द्र बना है। इस युग के इतिहास की सामग्री अभी तक संकलित नहीं की गई है। न किसी व्यापार-मंडल ने और न किसी श्रमिक-संघ ही ने इस ओर ध्यान दिया है। डा० राजेन्द्रप्रसाद तथा श्री निम्बकर ने सन् १९२४ और १९३८ में जिन श्रम-आयोगों का प्रधानत्व किया था, उनकी महत्वपूर्ण रिपोर्टें कानपुर की श्रम-समस्या पर ही प्रत्यक्ष प्रकाश डालती हैं। हमारे नगर के औद्योगिक विकास का इतिहास उनमें बहुत कम मिलता है। हमारे अधिकांश उद्योगपति भी अपने विशिष्ट उद्योगों के सम्बन्ध में ऐतिहासिक सामग्री प्रकाशित कराने में उत्सुकता नहीं दिखाते। जे० के० उद्योगों पर जे० के० रिव्यू तो थोड़ा सा प्रकाश डालता है।

ऐसी परिस्थिति में गत ४० वर्षों के औद्योगिक विकास तथा उसके पूर्वेतिहास के बारे में विशेष दौड़-धूप (अक्षरशः) करनी पड़ी। पत्र द्वारा प्रार्थना का जब प्रभाव न पड़ा, तो स्वयं जाकर अथवा विशेष प्रतिनिधि भेजकर—एकबार नहीं कईबार—उद्योग एवं व्यवसाय विशेष के सम्बन्ध में आवश्यक सामग्री एकत्र की गई। कुछ उद्योगपतियों ने अपने उद्योगों अथवा अपने सम्बन्ध में सामग्री देने से इनकार तो कभी नहीं किया, किन्तु बार बार याद दिलाने और सन्देश पर सन्देश भेजने पर भी आज तक उनके यहाँ से एक पंक्ति भी नहीं आई। इस इन्तजारी के मजे में ही महीने क्या वर्ष बीत गये, पर वे न पसीजे! अब जब उनके विवरण के बिना यह पुस्तक प्रकाशित होगी, तब शायद यह शिकायत सुनने में आवे कि यह पुस्तक अपूर्ण है, इसमें अमुक उद्योग के बारे में अमुक बात छूट गई है, और अमुक परिवार की अधूरी चर्चा है।

उपर्युक्त बात हमने किसी व्यक्ति विशेष के प्रति आरोप के रूप में नहीं कही है। हमारा उद्देश्य केवल यह है कि हम अपने कृपालु पाठकों से अपनी कठिनाइयों और कमियों के बारे में आत्म-निवेदन कर दें, इसलिए नहीं कि वे हमारी भूलों और अशुद्धियों की ओर आँख बन्द कर लें, वरन् इसलिए कि वे उनके लिए हमें क्षमा प्रदान करें।

प्रथम भाग के लिए उत्तरप्रदेशीय सरकार ने एक हजार का पुरस्कार प्रदान कर हमें उत्साहित किया और उसके लिए

हम उसके आभारी हैं। उस भाग में कुछ अशुद्धियाँ हो गई थीं और कुछ बातें इन ७ वर्षों में आउट-आफ़-डेट भी हो गई हैं। पर अभी तक यह नौबत नहीं आई कि उसके प्रथम संस्करण की आधी प्रतियाँ भी बिक जातीं। यदि कभी दूसरा संस्करण छपेगा तो उसे पूर्ण रूप से संशोधित और परिवर्द्धित करने का प्रयास किया जायगा।

इस दूसरे भाग में हम कुछ अन्य विषयों की चर्चा करना चाहते थे, और विशेषतया उद्योग व्यवसाय से सम्बद्ध कानपुर में श्रम-आन्दोलन के इतिहास की। पर उद्योग-व्यवसाय का वर्णन इतना विस्तृत रूप धारण कर गया कि श्रम-आन्दोलन को चौथे भाग में कानपुर की राष्ट्रीय नवचेतना के इतिहास के साथ साथ देना निश्चित हुआ और एक प्रकार से यह ठीक भी होगा। उसी भाग में इस जिले के शैक्षिक, सांस्कृतिक तथा सामाजिक विकास का इतिहास होगा। तीसरा भाग भी इस दूसरे भाग के साथ प्रेस में दे दिया गया था। उसमें कानपुर जिले का साहित्यिक इतिहास है और उसके लेखक श्री नरेशचन्द्र चतुर्वेदी हैं। वह भी लगभग तैयार है और सम्भवतः इसी के साथ प्रकाशित होगा। इस प्रकार फ़ारसी की 'देर आयद दुरुस्त आयद' कहावत के अनुसार हम अपने संरक्षकों एवं ग्राहकों की सेवा में इस वर्ष एक के स्थान में दो भाग—द्वितीय और तृतीय लगभग एकही साथ भेंट कर रहे हैं।

अन्त में हमें उन सभी महानुभावों को सादर धन्यवाद देना है जिन्होंने इस भाग की सामग्री जुटाने में प्रेम व परिश्रम से हमारा सहयोग किया है। उनमें से श्री वृजबिहारी मेहरोत्रा एम० एल० ए०; श्री रामस्वरूप गुप्त एम०ए०; (भूतपूर्व एम० एल०ए०); श्री देवीशंकर वाजपेयी एम० ए० एल० टी०; श्री अर्जुनप्रसाद शुक्ल एम० ए० एल० टी०; और श्री रघुवरदयाल भट्ट के हम विशेष प्रकार से आभारी हैं। जिन उद्योगपतियों और व्यवसायियों ने हमें इस कार्य में सहायता दी है उन्हें भी हम धन्यवाद देते हैं।

श्री लक्ष्मीकान्त त्रिपाठी

श्री नारायणप्रसाद अरोड़ा

विषय-सूची

संख्या	विषय		पृष्ठ

संख्या	विषय		पृष्ठ

संख्या	विषय		पृष्ठ

संख्या	विषय		पृष्ठ

कानपुर का इतिहास

(दूसरा भाग)

उद्योग और व्यवसाय

कानपुर उत्तर-प्रदेश का सब से बड़ा औद्योगिक और व्यवसायिक नगर है। दिन प्रति दिन इसके कल कारखानों की वृद्धि होती जा रही है और इसका विस्तार बढ़ता जाता है। पन्द्रह बीस वर्ष पूर्व जो शहर पाँच छः मील की लम्बाई में बसा था वह आज बारह-पन्द्रह मील तक फैला हुआ है। देहली से कलकत्ते की तरफ यात्रा करने वाले एक रेलवे यात्री को मीलों दूर से ही स्वच्छ और आँखों को चकाचौंध कर देने वाली बिजली की रोशनी की वन्दनवार दिखाई दे जाती है। दूर से ही वह यह अनुभव करने लगता है कि मैं उत्तर-प्रदेश के विशाल औद्योगिक नगर में प्रवेश कर रहा हूँ।

क्या आज से लगभग ७०० वर्ष पूर्व गंगा-स्नान के निमित्त आये हुए महाराज कान्हदेव के मन में उस छोटे से "कान्हपुर" की स्थापना करने के समय इसके इतने बड़े धन-कुबेरों की नगरी होने की साधारण कल्पना भी उठी होगी ? कौन जानता था कि इतनी शीघ्रता से यह छोटा-सा गाँव भारतवर्ष के सबसे बड़े नगरों में हो जायगा। परन्तु औद्योगिक नगरों का महत्व किसी राजा अथवा सम्राट् की कृपा पर निर्भर न रह कर अपनी उपयोगी स्थिति पर निर्भर रहता है। पुण्य-सलिला भगवती भागीरथी के दाहिने तट पर स्थित कानपुर की एक विशेष स्थिति रही है।

विशेष औद्योगिक स्थिति

पाँच मील पूर्व की ओर जाजमऊ तथा दस मील पश्चिम बिठूर ऐसे तीर्थस्थानों के होने के कारण दूर-दूर की भक्त जनता गंगा-स्नान के लिए इन स्थानों तक आती रही है। गंगा पार करने के लिए तथा घरेलू व्यापार के लिए जाजमऊ तथा नानामऊ की एक विशेष स्थिति रही है। बुन्देलखंड तथा अवध के व्यापार को मिलाने वाले मार्ग प्राचीन काल से यही दो स्थान रहे हैं। आजकल भी प्रचलित लोकोक्ति—"देश-देश का मुर्दा नानामऊ का घाट"—नानामऊ की उसी प्राचीन स्थिति और महत्व का स्मरण दिलाती है। बुन्देलखंड के पुराने राजाओं की सनदों से, जो कई गंगापुत्र पंडों के पास से प्राप्त हुई हैं, सिद्ध होता है कि जाजमऊ में प्राचीन काल से पर्याप्त चहल-पहल रही है।

लखनऊ तथा बुन्देलखंड के कालपी तथा उरई का एकमात्र व्यापारिक केन्द्र जाजमऊ ही था। जाजमऊ से दक्षिण की ओर जाने वाली सड़क बुन्देलखंड से अवध का सम्बन्ध जोड़ती थी तथा बुन्देलखंडी व्यापारी जाजमऊ में ही गंगा पार करके अवध की सीमा में प्रविष्ट होते थे। प्राचीन काल के व्यापार का प्रधान साधन जलमार्ग ही होता था, इस कारण जाजमऊ गंगा का एक प्रसिद्ध और बड़ा बंदरगाह था।

यह सब होते हुए भी कानपुर की उन्नति विशेष रूप से यहाँ अंग्रेजों के आगमन के पश्चात् हुई। सन् १७७३ की जाजमऊ की संधि के पश्चात् अंग्रेजों से कानपुर का सम्बन्ध स्थापित हुआ। सन् १७६५ की संधि के अनुसार सम्राट् शाहआलम को इलाहाबाद में ही रहना चाहिये था परन्तु सम्राट् के वहाँ से चले आने के कारण कम्पनी सरकार ने उसे संधि-भंग समझा तथा लार्ड क्लाइव ने सन् १७७३ ई० में ही अवध के नवाब शुजाउद्दौला से हुई अस्थायी संधि को फैजाबाद में स्थायी रूप दे दिया। इसके साथ ही कानपुर से अंग्रेजों का सम्बन्ध स्थापित होना आरम्भ होता है। यद्यपि अवध के शासन-काल से ही यहाँ व्यापारिक प्रसार प्रारम्भ हो गया था, फिर भी भारतीय व्यापारी कानपुर की महत्वपूर्ण स्थिति को न आँक सके। वह जाति जो सात समुद्र पार करके केवल व्यापार करने के लिए ही इस देश में आई थी तथा व्यापार के द्वारा ही जिसने अपना साम्राज्य स्थापित कर लिया, भला कैसे इसकी उपयोगिता से

आँखें बन्द कर सकती थी। फलस्वरूप विदेशी व्यापारियों ने गंगा के किनारे इसकी महत्वपूर्ण स्थिति को समझा और कंपनी की एजेंसी सन् १७७३ ई० में यहाँ स्थापित हो गई।

हम पहले ही कह चुके हैं कि इस नगर की स्थिति व्यापारिक दृष्टि से अत्यन्त महत्वपूर्ण है, जिसका परिणाम यह हुआ कि कम्पनी के व्यापार की दिन दूनी रात चौगुनी उन्नति हुई। इस व्यापारिक प्रगति को देख कर कम्पनी के भाग्य-विधाताओं, यूरोपियन व्यापारियों को अपनी दूकानों और गोदामों की रक्षा के लिए फौज रखने की अत्यधिक आवश्यकता प्रतीत हुई और फलस्वरूप सन् १७७८ में बिलग्राम की फौजी छावनी हटकर कानपुर आ गई। छावनी के स्थान परिवर्तन का दूसरा कारण यह भी था कि कानपुर की व्यापारिक प्रगति के साथ अंग्रेजों की राजनैतिक प्रगति भी होती चले। कानपुर से अवध तथा दोआबा पर भली प्रकार दृष्टि रखी जा सकती थी, इस कारण भी छावनी का कानपुर लाना आवश्यक था। परिणाम यह हुआ कि कानपुर की चहल-पहल बढ़ गई तथा जाजमऊ, इटावा, औरैया, फर्रुखाबाद, कन्नौज, बिलग्राम, मिरजापुर, कालपी, हमीरपुर, बाँदा, खजुहा, जहानाबाद, फतेहपुर, लखनऊ, उन्नाव आदि के बहुत से परिवार गल्ला, किराना, कपड़ा तथा नील के व्यापार और फौज व कमसरियट की नौकरी, ठेकेदारी अथवा इसी प्रकार की अन्य सुविधाओं के कारण यहाँ आ बसे। सन् १८०१ ई० में कानपुर पूर्णरूपेण अंग्रेजों के अधिकार में आ गया।

विभिन्न प्रकार के व्यवसाय

कानपुर में सूती कपड़े के और चमड़े के बड़े-बड़े कारखानों के अलावा और भी बड़े-बड़े कारखाने हैं जिनमें हजारों गज रोजाना जूट का टाट बुना जाता है; लोहे की सरिया और मशीनों के पुर्जे बनते हैं। कील-काँटा, आटा, मैदा, मोजा, बनियाइन, साबुन, तेल, वनस्पति घी, प्लास्टिक प्राडक्टस आदि के बड़े-बड़े कारखाने इस नगर में हैं। इन बड़े कारखानों के अलावा मध्यम श्रेणी के भी कारखाने हैं और कितने ही गृह-उद्योग भी हैं। मजे की बात तो यह है कि इन बड़े-बड़े कारखानों के रहते हुये भी छोटे कारखाने और गृह-उद्योग जिन्दा हैं और हजारों कारीगरों को जीविका प्रदान करते हैं। मिसाल के तौर पर जहाँ एलगिन मिल्स कं० की दरियाँ और दुसूती बनती है तो दूसरी ओर फेथफुलगंज के घरों में बुनी जाने वाली शतरंजी, सुन्दर दरियाँ भी तैयार होती हैं और वे बाजार में अपना खास स्थान रखती हैं। देशी और विदेशी प्रकार की दवाइयों के बड़े और छोटे दोनों तरह के कारखाने हैं। आटे और मैदा की जहाँ बड़ी-बड़ी मिलें हैं वहाँ नित्यप्रति के इस्तेमाल में आने वाले आटे को पीसने वाली छोटी-छोटी चक्कियाँ भी हैं जिनमें पिसाई कराने वालों की भीड़ लगी रहती है। एक तरफ तेल और साबुन बनाने वाले बड़े-बड़े मिल हैं, तो दूसरी तरफ थोड़े मूलधन से चलने वाले घरेलू घानी और साबुन के कारखाने भी हैं, और कहें तो कह सकते हैं कि अच्छे चल रहे हैं।

मोजा बनयाइन बुनने वाली बड़ी-बड़ी मिलों के क़ायम होने के पूर्व ये चीजें "कुटीर-उद्योग" के ढंग पर अनेक स्थानों में बनाई जाती रही हैं। किन्तु अब यह उद्योग सर्वथा छोटी-बड़ी मिलों द्वारा होता है। लोहे के बड़े और छोटे कारख़ाने तो थोड़े ही हैं पर लोहारख़ाने जिनमें पुराने तरीके पर हाथ से लोहे की चीजें बनती और ढलती हैं उनकी संख्या सेकड़ों में होगी।

सफलता के कारण

प्रश्न यह उठता है कि कैसे कानपुर इस थोड़े से समय में, जिसे कठिनता से सौ वर्ष भी नहीं हुए, ऐसा विशाल औद्योगिक नगर बन गया और दूसरे पुराने-पुराने शहर उससे इस औद्योगिक दौड़ में हार गये और पीछे रह गये। जब हम इस प्रश्न पर विचार करने बैठते हैं तो हमें इन धन्धों की पृष्ठ भूमि की तरफ़ नजर दौड़ानी पड़ती है। कानपुर ज़िले के सौ वर्ष पुराने इतिहास की ओर अगर आप छानबीन की नजर डालें तो पता चलेगा कि हमारे ज़िले में ये सभी तरह के उद्योग-धन्धे किसी न किसी स्थान पर किसी न किसी रूप में मौजूद थे जो सर्वसाधारण की जरूरतों को पूरा कर रहे थे और जिनके आधार पर ही हमारे इन अर्वाचीन उद्योग-धन्धों के विकास और प्रसार में मदद मिली है। कानपुर में अंग्रेज़ी शासन की प्रतिष्ठा होने तथा वहाँ सैनिक छावनी स्थापित होने पर यही उद्योग नगर में केन्द्रित हो गये, जिसके फलस्वरूप कानपुर विशाल औद्योगिक नगर बन गया।

प्रारम्भ से ही हमारा जिला रुई उत्पादन करने वाले क्षेत्रों में प्रमुख रहा है। रुई के पौधे का प्रारम्भिक अवस्था के लिए मामूली नम जलवायु तथा गर्म ऋतु की आवश्यकता होती है। इन दोनों बातों की पूर्ति के लिए लगातार गर्म-तर मौसम आवश्यक है जिसके साथ अच्छी तरह बहावदार वर्षा की झड़ी होनी चाहिये। परन्तु लगातार वर्षा हानिकारक है जिससे रुई की किस्म घट जाती है। इसकी उपज के लिए तर दोमट मिट्टी सबसे अच्छी होती है परन्तु काली मिट्टी भी, जैसी बम्बई, हैदराबाद तथा मध्य भारत में पाई जाती है, इसकी सन्तोषजनक उपज के लिए ठीक है। इसके लिए ९० फारनहाइट तापक्रम आवश्यक है। हमारा जिला किसी न किसी रूप में ये सारी शर्तें पूरी कर देता है। यही कारण है कि यहाँ बहुत काल से कपास की खेती होती था। कितने ही बड़े-बड़े गाँवों में सैकड़ों की संख्या में कपास ओटने की चर्खियाँ चलती थीं। धुनाई का काम करनेवालों की एक जाति विशेष थी जिसे धुनियाँ या बेहना कहते हैं। कालान्तर में जिनिंग मिल के खुल जाने पर इन चर्खियों का अस्तित्व समाप्त हो गया। घर-घर में चर्खों द्वारा सूत काता जाता था। आज भी कुर्मी जाति वाले चर्खे के सूत से थान के थान बुनवा कर शामियाने, जाजम, तंबू, रावटी, कनात, छोलदारियाँ आदि बनवा लेते हैं। इस कपड़े को रँगाई, छपाई और उस पर कसीदा कढ़ाई का काम भी होता था और इस तरह के कपड़े की देश में काफ़ी माँग

थी। किन्तु अब कपास की खेती इस जिले में प्रायः समाप्त हो गई है। लोहे, पीतल और काँसे आदि के छोटे-बड़े बर्तन बनाने के घरेलू कारखाने, भी यहाँ पर्याप्त संख्या में थे जो आज भी किसी न किसी रूप में जीवित हैं और जिन्हें यदि हमारी सरकार सहायता करे तो वे फिर चमक सकते हैं।

रँग बनाने और रँगने का उद्योग

विदेशी रंग जब इस देश में नहीं आते थे तब इस जिले में देशी रंगों से ही हर तरह की रँगाई और छपाई का काम होता था। ये रंग पक्के और आबदार होते थे और इसी जिले की पैदा हुई वनस्पति से बनाये जाते थे। विदेशी रंग के दौरदौरे ने हमारी कला को नष्ट कर दिया। कानपुर में टेक्सटाइल स्कूल और टेक्सटाइल इंस्टीट्यूट होते हुए भी कोई रंग बनाने वाला कारखाना अभी नहीं बन पाया है। यदि इस ओर प्रयास किया जाय तो हमारा विश्वास है कि वह सफल प्रयास होगा। आज बाजार में दीवारों आदि की पुताई के लिये जो रंग मिलते हैं वे थोड़े ही दिनों में भद्दे पड़ जाते हैं। हमारे जिले में अब से सौ वर्ष पहले जो इमारती रंग बनते थे उनको अगर किसी को देखने का शौक हो तो ऐसी इमारतें मौजूद हैं जिनमें उनकी मजबूती और उनके स्थायित्व की परीक्षा की जा सकती है। उन रंगों का मुकाबिला ये विलायती रंग नहीं कर सकते।

कानपुर जिले में मूसानगर तथा अमरौधा रंगाई के काम के लिए विशेष प्रसिद्ध रहे हैं। इनमें से मूसानगर का रँगा हुआ

लाल रंग का खारुआ और हरे रंग का अमौवा अब भी प्रसिद्ध हैं। पुराने जमाने में इन रंगों को रँगने के लिए रंगरेज और छीपों को बाहर के रँग का मुँह नहीं ताकना पड़ता था। वे मूसानगर के जंगल से ही आल के फलों द्वारा लाल रंग रँगते थे। हरे रंग को रँगने के लिए तो मूसानगर के खेतों की मेड़ों पर और गिरे हुए घरों के टीलों पर उगा हुआ अड़ूसा, जिससे खाँसी की प्रसिद्ध औषध "सीरप बासक" बनती है, काम में आता है। वहाँ के रँगरेज इसी अड़ूसे की पत्तियों को पानी में पका कर पहले कपड़े को इसमें डुबा देते हैं, फिर नील के रँग में रँग देते हैं। बड़ा सुन्दर चमकीला हरे रँग का कपड़ा तैयार हो जाता है। इस हरे अमौवे पर वे कतीरे से घोंट भी देते हैं।

रँगाई के अलावा छपाई का काम भी यहाँ अच्छा होता था। यहाँ बस्ती में सैकड़ों घर छीपा लोगों के थे जो लकड़ी के छापों से ठिकाई का काम करते थे और रुई की फुरहरी से रँग भरते थे। उनके हाथ अपने काम में इतने सधे थे कि देखने वाला चकित होकर रह जाता था। नबेल में भी रँगरेजी और छपाई का काम पुराने जमाने से प्रसिद्ध रहा है।

अमरौधे में ऊँचे दर्जे की छपाई और रँगाई का काम होता था। आल, नील और अड़ूसा के अलावा यहाँ पलास और कुसुम के फूलों के रँग से भी रँगाई होती थी। यहाँ लहँगों के लिए अच्छे दर्जे की टापटी बुनी जाती थी जिसमें पक्के रँग

ही इस्तेमाल होते थे। कपड़े पहनते-पहनते फट जाने के बाद भी रंग नहीं जाता था।

वस्त्र-निर्माण के मुख्य-केन्द्र अमरौधा, डेरापुर, गजनेर, बिल्हौर आदि थे। अमरौधे में कोरियों के लगभग ४०० घर थे। यह सूत की बिक्री का भी बाजार था। यहाँ की कत्तिनें अच्छे नम्बर का सूत तो कातती ही थीं वे ऊन भी अच्छे प्रकार का कातती थीं, जो झाँसी जाया करता था। झाँसी और मऊ-रानीपुर में ऊनी कालीन बुनने के लिए यहाँ से कता हुआ ऊन बराबर मंगाया जाता था। सिकंदरा में देशी कंबल का बहुत अच्छा बाजार था। आसपास के गाँवों में पाली जाने वाली भेड़ों के ऊन से देसी तरीके पर ढेर द्वारा ऊन कात कर गड़रिये और लोदी जाति के लोग लाया करते थे। ये केवल अधिकतर सफेद रंग के ही होते थे। किसी-किसी कंबल में काले रंग का हाशिया भी होता था। काले रंग की कमली भी बुनी जाती थी।

लोहा और चमड़ा

लोहे के बर्तन तथा अन्य सामान बनाने का काम भी हमारे जिले में पुराने समय से चला आता है। लोहे की बड़ी-बड़ी कड़ाहियाँ, डाल, जंजीरें, तसले, छुरे, हल के फार, बखर के खुर्दे, फावड़े, कुदालें और कुल्हाड़ियाँ बनती थीं। तेल और गन्ना पेरने वाले कोल्हू और चर्खी भी तैयार होती थीं।

मूसानगर में कड़ाहियाँ बहुत अच्छी बनती थीं। बड़ी-बड़ी कड़ाहियाँ और रस अथवा शीरा पकाने के लिए बड़े-बड़े कड़ाह आज भी इस क़स्बे में बनते हैं जो दूर-दूर जाते हैं। इस काम के करने वाले देशी तरीका ही बरतते हैं। लोहे के प्लेटों को काट कर इतनी अच्छी रिबेट और वेल्डिंग करते हैं कि बिजली से वेल्डिंग करने वाले लोग दाँतों तले उँगली दबा लेते हैं। बताशेदार कील-काँटी और गुलमेखें भी इस कस्बे में बनते हैं। लोहे की चद्दरों से तसले और पानी भरने के डोल आजकल भी बनते हैं। बढ़ईगीरी के काम में आने वाले बसूले, लुखाने तथा पक्के लोहे की आरी भी यहाँ बनती थी।

सैदलीपुर में, जो पुखरायाँ से पाँच मील पर है, पुराने समय में आला दर्जे का ताला बनता था। इन तालों में दूसरी ताली मिला सकना असम्भव नहीं तो कठिन तो था ही। कारीगरों ने ऐसे ताले भी बनाये थे जिसमें गलत तरीके पर खोलने से गोली छूटती थी जिससे गलत खोलने वाला आदमी जख्मी हो जाता था। यही खतरा इन तालों के तोड़ने वाले के लिए भी था। यहाँ के कारीगर टोपीदार देशी बन्दूक, पिस्तौलें तथा कड़ाबीन बनाने की क्रिया भी जानते थे, और यहाँ की बनी हुई उपर्युक्त चीजें बड़ी मँहगी बिकती थीं।

चमड़े का काम कानपुर जिले में विशेषरूप से होता रहा है। जूता बनाने के अतिरिक्त और भी अनेक कार्यों में इस चमड़े का उपयोग होता रहा है। बहल, मँझोली, तथा रथ की बँधाई

में भी यह चमड़ा काम आता था। बेग और झोले भी इस चमड़े के बनते थे।

बिल्हौर तहसील में बिरहुन, चौबेपुर के पास चम्पतपुर तथा भोगनीपुर तहसील में स्थित मावर नामक गाँव चमड़े के काम के लिए विशेष प्रसिद्ध रहे हैं। यह गाँव झाँसी रोड पर सेंगुर के पुराने पुल के पास ही बसा हुआ है। पुराने समय में "नरी" का एक तल्ले वाला हल्का जूता मशहूर था। जूते बनाने वाले और चमड़े के अन्य काम करने वाले चमार इस जिले में बहुत अधिक संख्या में अभी तक हैं। सन् १९०१ की जन-गणना में इस जिले की जनसंख्या १२५८८६८ थी, जिसमें १५३९७५ चमार थे।

लकड़ी और मिट्टी का काम

अन्य घरेलू उद्योग-धन्धों में बढ़ईगीरी का भी मुख्य स्थान था। मूसानगर में बैलगाड़ियों के पहिए, गाड़ी तथा दरवाजों की नकाशीदार चौखटें बनती थीं जो आसपास के मेलों (जैसे मकनपुर, गजनेर, बनीपारा) आदि में बिकने जाती थीं। अमरौधे में भी लकड़ी का ऊँचे दर्जे का काम होता था। छपाई के लिए छापे की नकाशी के अलावा छज्जों में लगने वाले कंगूरे, नकाशीदार खम्भे और चौखट-सहावट भी बनती थी। रसधान में दरवाजों की चौखटें, किवाड़ों के पल्ले तथा लकड़ी की बड़ी-बड़ी सन्दूकें बनती थीं जिनके जोड़ मिलाने की तारीफ़ यह थी कि जोड़ दिखाई ही न पड़ता था। पानी भी भर दिया जाय तो

एक बूँद बाहर न टपक सके। गृहस्थों के यहाँ नित्यप्रति काम में आने की चीजों में मूसल, बेलन, चौकी, पीढ़ा, कठौती और लकड़ी के छोटे-बड़े चमचे भी यहाँ के कारीगर रहे हैं। खराद के काम में खूँटियाँ, पाये, गाड़ी की छतरियों के खरादे हुए डंडे तथा गाड़ियों के जुए भी अच्छे बनते थे। मृदंग और ढोलक का घेरा तथा तबले और नक्कारे के लकड़ी के घेर प्रसिद्ध थे। शहनाई का बाजा भी यहाँ बनाया जाता था। मूसा-नगर से पश्चिम की ओर यमुना के किनारे देवरहट नामक कस्बा है। यमुना के किनारे आबाद होने के कारण यहाँ नौका बनाने की कला के कारीगर बहुत पुराने समय से ही रहते चले आये हैं जो पास के जंगल से ही लकड़ी लेकर बड़ी नावें और बजरे बनाने का व्यापार करते थे। इन्हीं नावों पर उस समय देवरहट में व्यापार सम्बन्धी यातायात होता था। अरसे से और जातियों के अलावा मल्लाहों की भी आबादी रही है जो नाव बनाने और सन की टाट पट्टी बनाने का काम करते आ रहे हैं। इस काम के गुणी आज भी देवरहट में मौजूद हैं पर दामों के उतार-चढ़ाव ने उनकी हिम्मत पस्त कर दी है और एक तरह से वे अपने इस पुराने व्यापार को छोड़ चुके हैं। अवध के नवाबों के शासन-काल में जाजमऊ व्यापार का केन्द्र तथा गंगा का प्रसिद्ध बन्दरगाह रहा है। यहाँ नई नावों के बनाने और पुरानी नावों की मरम्मत का भी प्रबन्ध था। नाव खेने वाले मल्लाह या केवट जाति के लोग इस व्यवसाय में यहाँ खूब फूले फले।

हमारे ज़िले में पत्थर चूँकि नहीं पाया जाता है, इसलिए मिट्टी के द्वारा ही इस कमी की पूर्ति की जाती रही है। हमारे ज़िले में मिट्टी की मूर्ति-कला ने जन्म लिया और तरह-तरह की मूर्तियाँ, खिलौने और बर्तन आदि बनाये जाते रहे हैं तथा उन पर इस तरह के रंग और घोंट दी जाती रही है कि पत्थर और चीनी के बर्तन मात खा जायँ। अमरौधे में शीशे की पालिश किए हुए अमृतवान और कुँओं और कंगूरों में लगाये जाने वाले हरे रंग के मिट्टी के बने हुए गुलदस्ते, झाड़ आदि जिनका रंग कभी नहीं बदलता, बनाये जाते थे। ये चमकदार रंग फ़िरोज़े से तैयार किए जाते थे। रसधान के पास बड़ी चिकनी मिट्टी पाई जाती है जो अपने ढंग की निराली मिट्टी है। इस मिट्टी के द्वारा वहाँ के कलाकार बड़ी सुन्दर मूर्तियाँ बनाते थे जो रंगने और पकाने पर पाषाण की मूर्ति की भाँति सुन्दर जँचती हैं। मूर्तियों के अलावा खिलौने भी अच्छे बनते थे। दिवाली पर पूजा के काम में आने वाली गणेश और लक्ष्मी की मूर्ति बनाने वाले गुणी आज भी वहाँ मौजूद हैं जो किसी वक्त में देशी रंगों के द्वारा ही ऐसे रँग दिया करते थे जो कभी फीके नहीं पड़ते थे। कुछ कारीगर उन रंगों को बनाने की क्रिया अब भी जानते हैं। अमरौधे की भाँति यहाँ भी अमृतवान अच्छे बनते थे। मिट्टी के गुलदस्ते और झाड़ भी प्रसिद्ध थे। झरोखों में लगाई जाने वाली मिट्टी की रंगीन जालियाँ भी बनती थीं। मिट्टी के खपड़े, पनारे, घड़े, नाँदें, क़दे आदम डहरवे, सरवे, दिये, कुल्हड़

और छोटे-बड़े खिलौने तो प्रायः सर्वत्र बनते थे और अब भी बनते हैं।

कानपुर जिले में सन भी पैदा होता है और यह सन रस्सी और बाध बनाने के काम में ही आता था। कंजड़ तथा अन्य अर्धसभ्य जातियों के लोग सन, मूँज हाथीचिघाड़ आदि की रस्सी बड़ी मजबूत बिन लेते हैं। यों तो किसान लोग अपने अवकाश में भी यह धन्धा कर लेते है। जब कानपुर में जूट के मिल नहीं थे, जूट के लिए और जूट के सामान के लिए लोगों की नजरें बंगाल की तरफ लगी रहती थीं। आज वक्त की खूबी है कि हमारे देहातों के लोग कानपुर आकर सन की रस्सी खरीद करते हैं।

घरेलू-उद्योग धन्धों में शक्कर बनाने का व्यवसाय भी मुख्य स्थान रखता था। रसधान गुड़ की अच्छी मंडी थी। यहाँ के कारीगर गुड़ और गुड़ से अच्छे दर्जे की राब बनाया करते थे जिससे कंद, बूरा और मिश्री बनाई जाती थी। मिठाई में यहाँ के बने खाजाऔर सूतफेनी प्रसिद्ध थी। सिन्कदरा में कन्द का ओला बहुत अच्छा बनता था। पर आज से लगभग ३०-३५ वर्ष पूर्व इसका बनना बन्द हो गया, क्योंकि एक तो मीलों में बहुत साफ शक्कर बनने लगी और जिस कुँए के पानी से सिकन्दरे में शक्कर की धुलाई होती थी वह सूख गया।

अन्य प्रकार के छोटे उद्योग धन्धे

इनके अतिरिक्त अन्य बहुत से छोटे-छोटे घरेलू उद्योग धन्धे भी थे। नमक और शोरा बनाने का काम बहुत से स्थानों में होता था। यहाँ के लोनिये खाने लायक अच्छा साफ चमकदार नमक बनाया करते थे और शोरा भी वे अच्छी खासी तादाद में तैयार करते थे। अमरौधे तथा रुयौरा का बना नमक और शोरा विशेष प्रकार से साफ होता था। अमरौधे में काँसे और पीतल के बर्तन और जेवर भी ढलते थे। सूबर के जेवरों की ढलाई का काम भी होता था। रोजमर्रा इस्तेमाल होने वाले चाँदी और सोने के जेवर भी अच्छे बनते थे। यहाँ ताजिया भी अच्छा बनता था। मुसलमानों की अच्छी खासी आबादी होने में कारण कई गाँवों में ताजियेदारी होती है। यहाँ बने हुए ताजियों को जिनमें आला दर्जे की कैंची और तराश की कारीगरी का प्रदर्शन होता था, दूर-दूर से देखने के लिए लोग आते थे। इन ताजियों में भोड़र यानी अभ्रक का काम भी अच्छा बनाया जाता था। खाने की चीजों में पेड़ा, कलाकन्द, गुलाब-जामुन, लच्छेदार खोया और तिल की रेवड़ी प्रसिद्ध रही हैं। रस-धान की बनी हुई राब से चीनी और कन्द तैयार की जाती थी जो कालपी के बाजार में मिश्री बनानेवाले खरीद ले जाया करते थे। गाँव की कुछ मुसलमान महिलायें ऊँचे दर्जे की सिलाई और चिकन का काम बनाती थीं जो लखनऊ के नवाबों के यहाँ अच्छे दामों में बिकती थीं। उठी हुई आँख में

ला० जुग्गीलाल
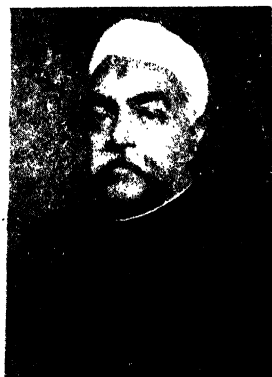
ला० कमलापत

सर पदमपत

ला० कैलाशपत

ला० लक्ष्मीपत

लगाया जाने वाला अंजन, सुर्मा और मिस्सी भी यहाँ की महिला कारीगरों की करतूत थो जो देहली और लखनऊ के दरबारों तक पहुँचती रही हैं।

सिकंदरा में, जो मुगल रोड पर आबाद है, काँच और काँच की चूड़ियाँ बनाने वाले रहते थे जो फूँके से कच्ची शीशियाँ भी बनाया करते थे। यहाँ तबला और ढोलक अच्छी मढ़ी जाती थी। आटा छानने की चमड़े की चलनी प्रसिद्ध थी। मूँज के चारपाई बुनने के बाध बहुत बारीक बटे जाते थे। मूँज की टोकरी, पिटारे और मोरपंख के पंखे अच्छे बनते थे। लाठी और डंडे में मोरपंख के बन्द की अच्छी बँधाई होती थी। अभ्रक की लालटेन अर्थात् क़न्दीलें बहुत सुन्दर और सस्ती बनती थीं। यहाँ भी ताजियादारी होती थी और ताजिया बनाने वाले कारीगर बड़े होशियार थे। ये लोग आतिशबाजी और बारूद बनाने का काम करते थे। मूँज और सरपत के मोढ़े, कुर्सियाँ और सूप भी बनते थे। उड़ाई जाने वाली तुक्कुल और पतंग भी यहाँ बनती थीं। देशी साबुन भी बनता था।

मूसानगर में काँस का जंगल होने के कारण बहुत पुराने समय से खस का इत्र निकाला जाता रहा है। कन्नौज और लखनऊ के इत्र फ़रोश अपने व्यापार के लिए यहाँ इत्र निकलवाते हैं। गर्मी के प्रारम्भ में ही काँस की खुदाई शुरू हो जाती है और काँस की जड़ों को बड़ी-बड़ी डेगों में चढ़ा कर जंगली लकड़ी के ईंधन से बफ़ारे की क्रिया से खस की रूह तैयार की

जाती है। इस काम के गुणी आज भी मूसानगर और उसके आस-पास के इलाके में पाये जाते हैं। मूसानगर का पेड़ा भी प्रसिद्ध रहा है। आजकल भी मूसानगर के पेड़े के नाम पर कानपुर में पेड़ा बेचने वाले अपनी जीविका कमाते हैं। हमारे ज़िले में अफ़ीम की भी खेती होती थी। पोस्ते की काश्त में काम करने वाले चतुर मजदूर जो बोंडी में अच्छा शिगाफ़ लगाना जानते थे सिकंदरा में बहुत अधिक रहते थे। कपास से बिनौला निकालने वाली चखियाँ भी यहाँ फसल पर बड़ी संख्या में चलती थीं। बिनौले और महुवे का तेल पेरने वाले कोल्हू भी चलते रहे हैं। काशीपुर में कमलगट्टे को भूनकर मखाना बहुत अधिक परिणाम में बनता था।

हमारा ज़िला नील के व्यापार के लिए भी, जो अब लुप्तप्राय है, बहुत प्रसिद्ध था। इस ज़िले के विभिन्न भागों में नील की खेती होती थी और बड़े-बड़े क़स्बों में नील के व्यापारियों की कोठियाँ थीं। नजफगढ़ इस व्यापार के लिए विशेष रूप से प्रसिद्ध था। लखनऊ के प्रसिद्ध जेनरल क्लाड मार्टिन ने यहाँ नील का एक बहुत बड़ा कारखाना खोला था जिसमें ४८ कुँए तथा २२० हौज़ थे। कुछ समय के लिए नजफ़गढ़ में व्यापार इतना अधिक चमका कि ऐसा मालूम पड़ने लगा कि कानपुर उसके सामने दब जायगा। नजफ़गढ़ कानपुर का भीषण प्रतिद्वन्द्वी बन गया और कानपुर के अनेक परिवार तथा अन्य बहुत से लोग नजफ़गढ़ जाकर बस गये। परन्तु सन् १८३० की

सट्टेबाज़ी के कारण नील का काम ठप पड़गया और नजफ़गढ़ महाराजपुर आदि के नील के कारखाने तोड़ दिए गए और इस प्रकार कानपुर का नया प्रतिद्वन्द्वी परास्त हो गया और नगर की उन्नति में कोई बाधा न उपस्थित हो सकी। साढ़, अमरौधा मंधना, सैबसू तथा सिकंदरा भी नील के व्यापार के केन्द्र थे।

नील व्यवसाय कुछ दिनों तक चलता रहा। परन्तु जर्मनी के बढ़िया रासायनिक रंग आने के कारण नील का व्यापार बिल्कुल बन्द हो गया और आज देहात में भग्नावस्था के नील के कुंड उस अतीत के व्यापार की अपने मूक संकेतों द्वारा केवल याद भर कराते हैं। इस प्रकार हम देखते हैं कि ये अस्थायी धक्के कानपुर के व्यापार को कोई क्षति न पहुंचा सके और कानपुर का व्यापार उत्तरोत्तर उन्नति के पथ पर ही अग्रसर होता गया।

इन उद्योग धन्धों के अतिरिक्त सन् १८३० ई० से लेकर १८७५ तक और भी उद्योग किसी न किसी रूप में उन्नति करते रहे। चमड़े का व्यापार तो उन्नति पर था ही। बढ़िया से बढ़िया जूता ८ रु० में मिल जाता था। इसके अतिरिक्त प्राचीन काल में कालपी के कागज़ का उद्योग बहुत उन्नतावस्था में था। कन्नौज में भी पर्याप्त मात्रा में कागज़ बनता था परन्तु वह कालपी के कागज़ की अपेक्षा घटिया होता था। आज भी हम आल्हा में गाते हुए सुनते हैं कि—"कागज़ लैके कालपी वारो अपनो कलमदान लै हाथ।" यह कालपी का कागज़ कानपुर के द्वारा ही बाहर

जाता था। कालपी और कन्नौज की देखादेखी कानपुर में भी कागज़ का व्यवसाय चेतने लगा और कुछ ही दिनों में यहाँ का कागज़ कन्नौज वाले कागज़ से अच्छा होने लगा। परन्तु आगे चलकर यह उद्योग यहाँ से नष्ट हो गया और आज कानपुर के इतना बड़ा औद्योगिक केन्द्र होते हुए भी यहाँ एक भी कागज़ बनाने का कारखाना नहीं जिसका अभाव एक व्यापारिक नगर के लिये खटकने का विषय है। उद्योगपतियों को इस ओर ध्यान देना चाहिये।

कागज़ के अतिरिक्त यहाँ काँच का उद्योग भी आरम्भ हुआ था। यद्यपि यह काँच बढ़िया मेल का न होता था परन्तु फिर भी इसका महत्व तो था ही। आज भी काँच का उद्योग यहाँ नगण्य रूप में ही है। कानपुर को अपनी माँग के लिये फ़ीरोज़ाबाद, बंगलौर आदि पर निर्भर रहना पड़ता है। यद्यपि यहाँ काँच के सामान की काफ़ी खपत है परन्तु आज भी काँच का सामान बनाने वाला यहाँ कोई अच्छा कारखाना नहीं है।

मिर्ज़ापुर के कुछ परिवारों के आ बसने के कारण यहाँ गलीचे बनाने का काम भी होने लगा। सन् १८५० के लगभग गलीचे बुनने वालों का यहाँ अच्छा काम चलने लगा था, परन्तु आगे चलकर ये सब कारीगर सूती व्यवसाय की ओर ही अग्रसर हो गये। अस्तु यह व्यवसाय यहाँ पनप न सका। यद्यपि सूती वस्त्र के गृह-व्यवसाय को बड़े-बड़े कारखाने खुल जाने पर बड़ी ठेस लगी परन्तु कांग्रेस के स्वदेशी आन्दोलन से इसे बहुत

बल मिला और आज भी गाँवों में कोरी और जुलाहे हाथ से कपड़ा बुनते हैं। शहर में भी बहुत से जुलाहे हैं। गांधी जी के चर्खा-आन्दोलन तथा विदेशी वस्त्र बहिष्कार के परिणामस्वरूप कानपुर में भी किसी समय घर-घर चर्खे चलने लगे थे परन्तु आन्दोलन समाप्त होने पर धीरे-धीरे उनका प्रयोग भी कम होता गया यद्यपि खद्दर का प्रचार अब भी थोड़ा-बहुत है। गृह-उद्योग भंडार की कुछ दुकानें हैं जो घरेलू उद्योग-धन्धों को उन्नत करने का प्रयत्न करती हैं। परन्तु यह सब नहीं के बराबर है। कपड़े पर छपाई का काम कानपुर में बहुत पुराने समय से होता आया है। आज भी शहर के अनेक मुहल्लों में छपाई की कितनी ही दुकानें हैं।

सलमे-सितारे और गोटे-पट्टे का काम भी यहाँ होता था परन्तु ये व्यवसाय भी यहाँ पनप न सके। यद्यपि अभी तक शहर में पर्दनशीन गरीब स्त्रियाँ इस पेशे द्वारा अपनी जीविकोपार्जन करती हैं परन्तु इस फैशन के उठ जाने से इसका विकास समाप्त सा हो गया है। बर्तन बनाने का काम भी यहाँ होना प्रारम्भ हुआ था जो किसी रूप में अब तक चालू है। कपड़े पर कुन्दी और उत्तू करने का उद्योग भी नगर में होता था। सोने-चाँदी के वर्क भी बनते थे।

कहना न होगा कि कानपुर में केवल वे ही उद्योग-व्यवसाय पनप सके जिनको विदेशी व्यापारियों का प्रोत्साहन प्राप्त हुआ। शेष व्यवसाय या तो दम तोड़ चुके या अपनी शैशवावस्था में

पड़े छटपटा रहे हैं। गृह उद्योगों की उन्नति का कोई सक्रिय प्रयत्न नहीं हुआ जिसके फलस्वरूप हमारे गाँवों का व्यापार टूट कर शहर में ही आगया।

कानपुर के व्यापार का विकास

इस प्रकार कानपुर नगर का व्यापार उत्तरोत्तर उन्नति करता गया। सन् १८५७ के प्रथम स्वतन्त्रता-संग्राम में हमारे कानपुर नगर ने भी अंगड़ाई ली और विदेशी शासन को उखाड़ने में विशेष भाग लिया। इस कारण कुछ दिनों तक नगर की व्यापारिक प्रगति अवरुद्ध हो गई। परन्तु ग्रांडट्रंक रोड के निर्माण एवं १८५४ ई० में गंगा की नहर चालू हो जाने से नगर का व्यापारिक महत्व और भी बढ़ गया और वह उत्तरप्रदेश का व्यापारिक केन्द्र समझा जाने लगा। सन् १८५७ के स्वातन्त्र्य-संग्राम के कारण कानपुर का सैनिक महत्व भी बढ़ गया और अंग्रेजों द्वारा इसकी विशेष देख-रेख होने लगी।

ग़दर के बाद कानपुर की औद्योगिक उन्नति में कई विचित्र एवं नवीन बातों का समावेश हुआ। सैनिक छावनी से उत्पन्न सुरक्षा तथा सुविधाओं से आकर्षित होकर यहाँ बहुत से व्यापारी तथा दूकानदार आकर बसने लगे। कानपुर शहर तथा जिले में चमारों की आबादी काफ़ी बड़ी संख्या में है। सैनिकों के लिए जूते तथा चमड़े का अन्य सामान बनाने के लिए ये लोग शहर में आकर बस गये। इसके अतिरिक्त सन् १८५६ में अवध

के अंग्रेजी राज्य में मिला लेने के कारण लखनऊ के अनेक प्रसिद्ध कुशल कारीगर यहाँ आये थे। यद्यपि गदर से अत्यधिक विनाश हुआ तथा अंग्रेज व्यापारियों एवं उनके उत्तराधिकारियों का प्रायः नामोनिशान ही मिट गया किन्तु गदर के बाद औद्योगिक प्रगति अधिक तीव्र हो गई। गंगा के पुल के सामने वाली अंग्रेजी सेना को किले बन्दी को एक सरकारी चमड़े तथा कपड़े के कारखाने का रूप प्रदान कर दिया गया।

३ मार्च सन् १८५९ ई० में प्रथम बार ईस्ट इंडियन रेलवे के कानपुर और इलाहाबाद के बीच में चल जाने से कानपुर के व्यापार को बहुत बड़ी प्रेरणा मिली और दिन दूनी रात चौगुनी व्यापारिक उन्नति होने लगी। १५ अगस्त सन् १८६५ को कलकत्ता से लेकर दिल्ली तक ईस्ट इंडियन रेलवे की १०२५ मील लम्बी शृंखला के पूरे हो जाने से कानपुर का व्यापारिक क्षेत्र और भी विस्तृत हो गया।

सन् १८७७ ई० की एक सरकारी गवेषणा के अनुसार सन् १८४७ से लेकर तीस वर्षों में कानपुर का व्यापार कई सौ प्रतिशत बढ़ गया था। सन् १८७५ ई० में कानपुर में ५० लाख रुपये से अधिक का माल आयात होता था तथा ३४ लाख रुपये से भी अधिक का माल प्रतिवर्ष निर्यात किया जाता था। इस समय तक कानपुर उत्तर भारत का बहुत बड़ा वितरण एवं संग्रह का केन्द्र बन गया था। यहाँ पर दोआब और बुंदेलखंड का कपड़ा अवध के लिए आता था। रुई, जो स्थानीय

उपयोग से बच जाती थी, कलकत्ता भेजी जाती थी। गेहूँ तथा दूसरे अनाज कलकत्ता भेजे जाते थे। लोहा, कलकत्ता तथा मध्यभारत से आकर दोआब और अवध भेजा जाता था। इनके अतिरिक्त आसपास के जिलों की अन्य अनेक प्रकार की पैदावार और कारीगरी की वस्तुओं का आदान-प्रदान भी इस नगर द्वारा होने से धीरे-धीरे इसने एक बहुत बड़ी मंडी का रूप ग्रहण कर लिया।

कल-कारखानों की प्रगति—

इसी बीच कानपुर में कल-कारखानों का सूत्रपात हो गया था और उनकी प्रगति बड़ी शीघ्रता से हो रही थी। जैसा हम अन्यत्र भी उल्लेख कर चुके हैं कि इस कार्य के अगुआ योरोपियन लोग ही थे और अनेक वर्षों तक इन कारबारों की बागडोर उन्हीं के हाथ में रही। इन कल-कारखानों का वर्णन करने के पूर्व हम इस समय कानपुर में स्थित प्रमुख कारखानों की नामावली नीचे देते हैं जिससे पाठकों को इसके औद्योगिक विस्तार का कुछ अनुमान हो सकेगा :—

सूती मिल :—

१—कानपुर काटन मिल्स कम्पनी (कोपरगंज); २—कानपुर काटन मिल्स कम्पनी (काकोमी) (जूही); ३—एल्गिन मिल्स कम्पनी लि० (सिविल लाइन्स); ४—अथर्टन वेस्ट एन्ड क० लि० (ग्रांड ट्रंक रोड); ५—कानपुर टेक्सटाइल्स लि० (कूपर

गंज); ६—जे० के० काटन स्पिनिंग एंड वीविंग मिल्स कं० लि० (कालपी रोड); ७—लक्ष्मी रतन काटन मिल्स कं० लि० (कालपी रोड); ८—जे० के० काटन मैन्यूफैक्चरर्स लि० (कालपी रोड); ९—म्योर मिल्स कम्पनी लि० (सिविल लाइन्स); १०—दी न्यू विक्टोरिया मिल्स कम्पनी लि० (सिविल लाइन्स); ११—दी नारायण काटन मिल्स (एच० बेविस एंड कम्पनी) बाँस मन्डी); १२—दी स्वदेशी काटन मिल्स कम्पनी लि० (जूही); १३—दी संचेड़ी काटन मिल्स; १४—दी अवस्थी टेक्सटाइल मिल्स (फ़ज़्लगंज); १५ हरिकृष्ण दास विष्णु दयाल वीविंग मिल्स (फ़ज़्लगंज), १६—कृष्णा वीविंग वर्क्स (जूही)।

ऊनी मिल :—

१७- कानपुर ऊलेन मिल्स (माल रोड); १८—जे० के० ऊलेन मैन्यूफैक्चरर्स (ग्रांड ट्रंक रोड)।

जूट मिल :—

१९- जे० कं० जूट मिल्स कम्पनी लि० (कालपी रोड); २०—माहेश्वरी देवी जूट मिल्स लि० (हैरिसगंज)।

चमड़े के कारखाने :—

२१—कूपर एलेन एंड कम्पनी सिविल लाइन्स); २२—कानपुर टैनरी लि० (ग्रांड ट्रंक रोड); २३—दी हिन्दुस्तान टैनरीज (कर्नलगंज); २४—ईस्टर्न टैनरीज लि० (पुराना तोपखाना बाज़ार); २५—पायोनियर टैनरीज लि०; २६—सर्वोर

टैनरी लि०; २७—इंडियन नेशनल टैनरी (हीरामन का पुरवा); २८—दी यूनाइटेड प्राविन्सेज टैनरी कम्पनी लि० (हीरामन का पुरवा); २९—प्रेम टैनरी (कालपी रोड); ३०—नरोन्हा माडेल टैनरी (जाजमऊ); ३१—ग्रांड ट्रंक टैनरीज; ३२—सेंट्रल टैनरीज (जाजमऊ)।

शक्कर और शराब मिल—

३३—कानपुर सुगर वर्क्स लि० (कोपर गंज); ३४—दी इन्डियन डिस्टलरी (अनवर गंज)।

होजरी मिल :—

३५—मिश्रा हाजरी मिल्स; ३६—जे० के० होजरी फैक्टरी (कालपी रोड); ३७—दी टेक्सटाइल सीविंग एन्ड फिनिशिंग कम्पनी लि० (रामनगर); ३८—पक्का हाजरी मिल्स (सिविल लाइन्स)।

ब्रश फैक्टरी :—

३९—ब्रशवेयर लि० (माल रोड); ४०—इंडियन ब्रश फैक्टरी (बाँस मंडी); ४१—रेलायंस ब्रशवेयर (फैक्टरी एरिया)।

लोहा और इस्पात के कारखाने :—

४२—जैन स्टील रोलिंग मिल्स (डिप्टी का पड़ाव); ४३—सिंह प्लेट मिल्स लि० (फैक्टरी एरिया); ४४—सिंह इञ्जीनियरिंग लि० (ग्रांड ट्रंक रोड); ४५—जे० के० आयरन एंड स्टील कम्पनी लि० (फैक्टरी एरिया); ४६—डी० पी० एंड सन्स

इञ्जीनियरिंग वर्क्स (नलाक मुहाल); ४७--श्री महाबीर रोलिंग मिल्स (फैक्टरी एरिया); ४८--राधेलाल स्टील रोलिंग मिल्स (जूही); ४९—पीपुल्स आयरन एंड स्टील इंडस्ट्रीज लि० (फैक्टरी एरिया); ५०—कानपुर रोलिंग मिल्स लि० (हैरिसगंज); ५१—इंडियन रोलिंग मिल्स कम्पनी लि० (कालपी रोड); ५२—भाटिया सेफ़ वर्क्स (हालसी रोड); ५३—लक्ष्मण रोलिंग मिल्स (हैरिस गंज); ५४—जगदीश रोलिंग वर्क्स (जूही कलाँ); ५५—बिन्ध्येश्वरी प्रसाद बनवारी लाल रोलिंग मिल्स; ५६—यू० पी० रोलिंग मिल्स (कोपर गंज); ५७—कानपुर आयरन, ब्रास वर्क्स एंड फ्लावर मिल्स (डिप्टी का पड़ाव); ५८--शारदा इंजीनियरिंग वर्क्स (फ़हीमाबाद); ५९--हिन्दुस्तान टूल्स मैन्यूफैक्चरिंग कम्पनी (फैक्टरी एरिया); ६०—कानपुर प्लेट मिल्स लि० (हैरिसगंज); ६१—आत्मा सिंह स्टील रोलिंग मिल्स; ६२—टेक्सटाइल इंजीनियर्स लि०; ६३-लक्ष्मी बालटी वर्क्स (हालसी रोड); ६४—पंजाब आयरन स्टोर्स (हालसी रोड); ६५--लीला इंजीनियरिंग वर्क्स (फैक्टरी एरिया); ६६--हरनारायण जगन्नाथ (हटिया बाजार); ६७—स्पूल काप० कम्पनी (इंडिया) कालपी रोड; ६८—गैस एंड मेटल आपरेटर्स (हमीरपुर रोड); ६९—बृज बिहारीलाल त्रिलोकीनाथ आयरन फाउन्डरी (फैक्टरी एरिया)।

आटा मिल :—

७०—गैंजेज फ्लावर मिल्स (हैरिसगंज); ७१—न्यू कानपुर

फ्लावर मिल्स (कोपरगंज); ७२—श्री राम महादेव प्रसाद मिल्स (हैरिसगंज)।

बर्फ़खाने :—

७३—भार्गव आइस फैक्टरी (सिविल लाइन्स); ७४—कमला आइस फैक्टरी (बाँस मंडी); ७५—कपूर आइस फैक्टरी; ७६—लक्ष्मी आइस फैक्टरी। इनके अतिरिक्त कुछ और भी बर्फ़खाने खुल गये हैं।

प्रेस :—

७७—स्टार प्रेस (माल रोड); ७८—नेशनल फ्रंट जर्नल्स लि० (राम नगर); ७९—जाब प्रेस (माल रोड); ८०—खन्ना प्रेस (मनीराम की बगिया) आदि सैकड़ों छोटे-बड़े प्रेस खुल गये हैं।

सिगरेट के कारखाने :—

८१—इम्पीरियल टुबैको कम्पनी आफ इंडिया लि० (छावनी)

केमिकल वर्क्स एन्ड फैक्टरीज़ :—

८२—कानपुर केमिकल वर्क्स लि० (ग्रांड ट्रंक रोड); ८३—माथुर एंड मंजूर लि० (ग्रांक ट्रंक रोड); ८४—लेस्को केमिकल वर्क्स लि० (शिवपुरी); ८५—पर्ल प्राडक्ट्स लि० (फैक्टरी एरिया); ८६—टैलो प्राडक्ट्स मैन्यूफैक्चरिंग कम्पनी (फैक्टरी एरिया); ८७—ग्लोब केमिकल कम्पनी (बेकनगंज);

गैस फैक्टरी :—

८८—इंडियन आक्सिजन एंड एसिटिलीन कम्पनी लि० (आनन्द बाग); ८९—स्पेन्सर एंड कम्पनी लि० ।

तेल मिल :—

९०—मातादीन भगवानदास आयल मिल्स लि० (बाँस मन्डी); ९१—जे० के० आयल मिल्स (बाँस मन्डी); ९२—गङ्गा आयल मिल्स (कोपर गंज); ९३—निहालचन्द किशोरीलाल जिनिंग फैक्टरी एन्ड आयल मिल्स (बाँस मंडी); ९४—नार्दर्न इंडिया आयल इंडस्ट्रीज लि० (रायपुरवा); ९५—श्रीगोविन्द आयल मिल्स (बाँस मंडी); ९६—नागरथ आयल मिल्स (फैक्टरी एरिया); ९७—राजेन्द्र प्रसाद आयल मिल्स (जूही); ९८—दुर्लीचन्द उमरावलाल आयल मिल्स (मिल एरिया); ९९—गणेश आयल मिल्स (फैक्टरी एरिया), १००—रतीसन्स आयल इंडस्ट्रीज (लाटूश रोड), १०१—ओम काटन जिनिंग एंड आयल मिल्स (अनवर गंज), १०२—श्रीकृष्ण जिनिंग प्रेसिंग एन्ड आयल मिल्स (कालपी रोड), १०३—कमलापत मोतीलाल आयल मिल्स, १०४—प्रीमियर आयल मिल्स (कूपर गंज) ।

साबुन के कारखाने :—

१०५—श्री गणेश आयल एन्ड सोप मिल्स (डिप्टी का पड़ाव), १०६—चौधरी सोप मिल्स लि० (जूही), १०७—जूही सोप फैक्टरी (जूही) ।

बनस्पति घी के कारखाने :—

१०८—गणेश फ्लावर मिल्स कम्पनी लि० (फैक्टरी एरिया)।

टेन्ट के कारखाने :—

१०९—कर्जन टेन्ट फेक्टरी (बाँस मन्डी), ११०—म्योर मिल्स कम्पनी लि० टेन्टडिपो (सिविल लाइन्स), १११—एल्गिन मिल्स कम्पनी लि० टेन्ट डिपो (सिविल लाइन्स), ११२—विशेश्वर नाथ एंड कम्पनी (रायपुरवा), ११३—इंडिया सप्लाइज लि० (फैक्टरी एरिया)।

फैब्रीकेशन फैक्टरीज :

११४—नार्दर्न इंडिया ट्रेडिंग कम्पनी, परेड, कानपुर ११५—लैंको वर्क्स लि० (सिविल लाइन्स), ११६—आल्को कान्स्ट्रक्शन कम्पनी लि० (माल रोड)।

गूदड़ के कारखाने :—

११७—गर्ग काटन वेस्ट फैक्टरी (हुमायूँ बाग), ११८—मातादीन हरीनाथ (कोपर गंज), ११९—परमानन्द यशोदानन्द (कर्नलगंज रोड)।

जिनिंग एन्ड प्रेसिंग फैक्टरी :—

१२०—नरायन दास गोपाल दास, जे० के० जिनिंग एन्ड प्रेसिंग फैक्टरी।

प्लास्टिक फैक्टरी :—

१२१—प्लास्टिक प्राडक्ट्स लि० (फैक्टरी एरिया)।

सिलीकेट वर्क्स :—

१२२—श्री अम्बिका सिलीकेट वर्क्स।

मोटर सर्विस :—

१२३—कानपुर आम्नी बस सर्विस लि०, १२४—आटो सर्विस गैरेज (माल रोड)।

अन्य कम्पनियाँ :—

१२५—बर्ड एंड कम्पनी (सिविल लाइन्स), १२६—जार्डिन मेंजीज़ एन्ड कम्पनी (सिविल लाइन्स)।

आइस केन्डी की इस समय कानपुर में ५० फेक्टरियाँ हैं इनमें सर्व प्रथम स्वर्गीय कर्ण अरोड़ा ने सन् १९४१ में 'अरोड़ा आइसक्रीम फेक्टरी' के नाम से खोली थी, जो अभी चालू है।

× × ×

समस्त कारखानों का परिचय तो हमें प्राप्त नहीं हो सका किन्तु कुछ प्रसिद्ध मिलों का परिचय नीचे दिया जाता है:—

एलगिन मिल्स

जैसा कि हम पहले उल्लेख कर चुके हैं सन् १८६० में कानपुर काटन कमेटी नामक एक संस्था स्थापित की जा चुकी थी। इस संस्था ने ही कानपुर के सर्वप्रथम सूती मिल एलगिन

मिल को जन्म दिया। सन् १८६१ में "एलगिन काटन एन्ड स्पिनिंग कम्पनी लिमिटेड" के नाम से उक्त मिल को स्थापना हुई और सन् १८६४ में ३ लाख की प्रारम्भिक पूँजी के साथ मिल ने काम करना आरम्भ किया। सन् १८७१ में कम्पनी दिवालिया हो गई, अतः मिल नीलाम कर दिया गया। सन् १८७२ में उक्त कम्पनी के साझीदारों, जिनमें श्री ह्यू मैक्सवेल प्रमुख थे, तथा मि० ए० एस० बो० चैरमैन ने पुनः मिल चालू किया। मि० गैविन जोन्स, जो मि० ह्यू मैक्सवेल के रिश्तेदार थे, मिल के दिवालिया होने के पूर्व उसके मैनेजर तथा सेक्रेटरी नियुक्त किये गये थे किन्तु मतभेद हो जाने के कारण उन्होंने इस्तीफा दे दिया था। नव-निर्मित कम्पनी में वे पुनः शामिल हो गये और उक्त पद पर ही उन्हें रखा गया। बाद में आपने एलगिन मिल से पृथक् होकर म्यांर मिल को स्थापना की।

सन् १८६४ से १९०० तक एलगिन मिल एक प्राइवेट संस्था रहा। सन् १९०० में उसके मालिकों ने उसे एक प्राइवेट कम्पनी का रूप प्रदान किया और सन् १९१२ में उसे एक सार्वजनिक लिमिटेड कम्पनी में परिवर्तित कर दिया गया तथा ३२ लाख रुपया की पूँजी से काम आरंभ हुआ। सन् १९१४ से उक्त मिल मेसर्स बेग सदरलैंड एन्ड कम्पनी कानपुर की मैनेजिंग एजेंसी में आगया। मिल में ४९,६१६ तकुये तथा १२०० करघे हैं। इस मिल के ही कई व्यक्तियों ने उससे निकलकर कानपुर में अन्य मिलों की स्थापना की। इस प्रकार यह उनका जनक

लाला दीनानाथ

श्री रामेश्वरप्रसाद बागला
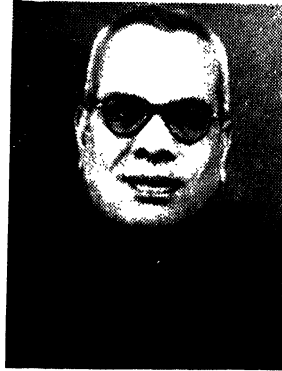
श्री हरीशंकर बागला

ला० काशीराम बेरीवाल

माना जा सकता है। सबसे पुराना मिल होने के कारण यह जनता में 'पुराना पुतलीघर' के नाम से ही अधिक प्रसिद्ध है।

अथर्टन मिल्स

उक्त मिल की स्थापना सन् १९२१ में मेसर्स अथर्टन वेस्ट एन्ड कम्पनी लि० ने की है। उक्त कम्पनी के डाइरेक्टरों में विक्टोरिया मिल के संस्थापक मि० अथर्टन वेस्ट के पुत्र भी हैं। उन्होंने विक्टोरिया मिल के अपने शेयर बेचकर जुग्गीलाल कमलापत के सहयोग से इस नई मिल की स्थापना की। यह मिल अनवरगंज क्षेत्र में है। उसमें ३९९०० तकुये तथा ८९८ करघे हैं।

कानपुर काटन मिल्स

एलगिन मिल के ही वीविंग मास्टर मि० जान हारवुड ने उक्त मिल से पृथक् होकर सन् १८८० में कानपुर काटन मिल नामक एक नई मिल की स्थापना कानपुर के रूई बाजार कूपर गंज के बिल्कुल पास में की। बहुत वर्षों तक यह 'हरवट साहिब का पुतलीघर' के नाम से ही प्रसिद्ध रहा। सन् १८८२ में १० लाख की पूँजी से उक्त कम्पनी की रजिस्ट्री हुई। सन् १९२० में यह मिल ब्रिटिश इन्डिया कार्पोरेशन में सम्मिलित कर दिया गया। सन् १९२२ में इसमें धुलाई और फिनिशिङ्ग भी शुरू कर दी गई।

इसका प्रारम्भिक इतिहास बड़ा रोचक है। मि० हारवुड ने, जो एलगिन मिल में वीविंग मास्टर थे, सन् १८८० में इसी

स्थान पर, जहाँ आजकल कानपुर काटन मिल है, एक खपरैल में सूत कातने तथा बुनने का एक छोटा कारखाना खोला। सन् १८८२ में इसे लिमिटेड कम्पनी का रूप प्रदान किया गया। सन् १९०२ में बिल्कुल नई मशीनें लगाई गईं। इसके बाद इस कंपनी ने जूही में 'वेन्स टैनरी' नामक एक चमड़े की मिल की सारी भूमि तथा संपत्ति खरीद ली तथा बिनाई का एक नया मिल स्थापित किया जिसने सन् १९१२ से कार्य करना आरंभ कर दिया। उक्त दोनों मिलों में कुल मिलाकर ७५,४७४ तकुए तथा ९७२ करघे हैं। नये मिल में दरी और तम्बू बनने लगे।

कुछ समय के लिए कानपुर काटन मिल लाला मूलचन्द के अधिकार में चला गया था। किन्तु सर अलेक्जेंडर ने काफ़ी मुक़दमेबाजी के बाद उस पर पुनः अधिकार प्राप्त कर लिया। इस मुकदमे में दोनों पक्षों का बड़ा धन खर्च हुआ। लाला मूलचन्द की ओर से कानपुर के प्रसिद्ध वकील श्री एरिन्डेल थे जो लालाजी के स्थायी मित्र, परामर्श दाता तथा पथप्रदर्शक सभी कुछ थे। उधर श्री मैकराबर्ट ने मद्रास से श्री ई० नार्टन को अपनी ओर से पैरवी करने के लिये बुलाया।

मिल पुनः अधिकार में आ जाने के बाद श्री मैकराबर्ट ने विक्टोरिया मिल के वीविंग (बिनता) मास्टर श्री ए० एफ० हार्समैन को मिल का मैनेजर नियुक्त किया। श्री हार्समैन बड़े ही परिश्रमी, ईमानदार तथा कुशल व्यक्ति थे। उनके कार्यकाल

में मिल ने बड़ी उन्नति की। आप बड़ी ही सादी प्रकृति के थे जिसका नमूना इसी बात से मिल जाता है कि आप मोटी-सी हैट लगा इक्के पर सवार होकर कूपरगंज में रूई खरीदने जाया करते थे।

सन् १९४५ में जब ब्रिटिश इन्डिया कारपोरेशन की रजत जयन्ती हुई, तब कानपुर काटन मिल में में ६००० आदमी काम करते थे और वहाँ ४६ लाख रुपया मजदूरी में बाँटा जाता था, दो करोड़ पौंड सूत तैयार होता था और ३ करोड़ १५ लाख गज कपड़ा तैयार होता था।

इस समय इस मिल के एक मात्र विक्रेता (सोल सेलिंग एजेण्ट) शर्मा कम्पनी है जिसके मालिक श्री देवशर्माजी हैं, जो कानपुर के एक प्रसिद्ध कान्यकुब्ज रईस और बड़े व्यापारी हैं।

न्यू विक्टोरिया मिल्स

एलगिन मिल के ही अथर्टन वेस्ट नामक एक अन्य वीविंग मास्टर ने उक्त मिल से अलग होकर सन् १८८६ में ५ लाख रुपया की पूँजी से विक्टोरिया मिल की स्थापना की। एलगिन मिल से पृथक् होकर आप ग्वालटोली में लाला शिव प्रसाद खजाञ्ची के यहाँ आ गये। लाला जी कताई एवं बुनाई का छोटे पैमाने पर काम किए हुये थे। कानपुर की पुरानी फर्म रामनाथ बैजनाथ की सहायता से उक्त छोटा-सा कारखाना एक विशाल मिल में परिवर्तित हो गया। इस मिल की स्थापना

में रामनाथ बैजनाथ ने विशेष दिलचस्पी ली। सन् १९२० में इस मिल का नाम बदलकर न्यू विक्टोरिया मिल्स कंपनी लिमिटेड हो गया। आजकल सर ज्वाला प्रसाद श्रीवास्तव एंड सन्स इसके मैनेजिंग डाइरेक्टर्स हैं। मिल में ७२,०७८ तकुए तथा १३६७ करघे हैं।

स्वदेशी काटन मिल

उक्त मिल की स्थापना सन् १९११ में मि० एए० फ० हार्स मेन ने जुही में की। आप इसके पूर्व कानपुर काटन मिल में कई साल तक मैनेजर रह चुके थे। सन् १९२१ में इस मिल को प्राइवेट लिमिटेड कंपनी में परिणत कर दिया गया। आपकी मृत्यु के बाद आपके दोनों पुत्रों—श्री हैरी तथा श्री अलबर्ट ने इसकी बड़ी उन्नति की। ऊर्सुला हार्स मैन हास्पिटल तथा परेड के जनरल हास्पिटल की इमारत इन्हीं लोगों ने बनवाई है। अब उक्त मिल कलकत्ते के प्रसिद्ध मारवाड़ी सेठ मंगतूराम जी जैपुरिया ने खरीद लिया है और कानपुर में ही रहकर आप उसका संचालन कर रहे हैं।

इस मिल में १,१४,८३६ तकुए तथा १९४६ करघे हैं। यह कानपुर का ही नहीं किन्तु उत्तरी भारत का सबसे बड़ा सूती मिल है। कानपुर में यही एक ऐसा मिल है जिसमें महीन ढंग के धोती जोड़े बनते हैं।

म्योर मिल्स

एलगिन मिल के मैनेजर मि० गैविन जोन्स ने उक्त मिल•

से पद-त्याग कर म्योर मिल कंपनी लि० की स्थापना की। सन् १८७४ में ५ लाख रु० की लागत से मिल का काम आरंभ हुआ। सर टामस स्मिथ और उनके बाद उनके पुत्र मि० टी० आई० स्मिथ इसके मैनेजिंग डाइरेक्टर रहे। मिल की वर्तमान उन्नति का श्रेय सर स्मिथ को ही प्राप्त है। मिल में ८७,५२८ तकुए तथा १६५७ करघे हैं। म्योर के चद्दरें विशेष रूप से प्रसिद्ध हैं और वह उत्तरी भारत के सबसे बड़े मिलों में है। यह बहुत लंबे घेरे में फैला हुआ है।

इस समय इस मिल के मालिक श्री रामेश्वर प्रसाद बागला और श्री हरिशंकर बागला हैं, जो कानपुर के पुराने फर्म श्री गंगाधर बैजनाथ के संचालक हैं।

जे० के० काटन मिल

जे० के० काटन मिल के इतिहास के साथ ही प्रायः सम्पूर्ण जे० के० ग्रुप का इतिहास आरंभ होता है। इस मिल की स्थापना लाला कमलापति सिंहानियाँ ने की थी। जनवरी सन् १९२१ में प्राइवेट कंपनी की हैसियत से इसकी रजिस्ट्री की गई, किन्तु शीघ्र ही सन् १९२३ में ज्वाइन्ट स्टाक कंपनी एक्ट के आधार पर यह प्राइवेट लिमिटेड कंपनी में रजिस्टर्ड हो गया। इस मिल के प्रारंभिक सात वर्ष कठिनाइयों के वर्ष रहे क्योंकि इस बीच मिल का सुचारु रूप से चलना कठिन दिखाई देता था किन्तु लाला कमलापति के परिश्रम, अध्यवसाय तथा साहस के परिणाम स्वरूप इसकी उत्तरोत्तर वृद्धि होती

गई। यह मिल प्रारंभ में २५ हजार कताई तथा ५ सौ बुनाई की मशीनों से चालू हुआ था किन्तु इस समय इस मिल में ४४ हजार ९ सौ ६४ कताई की तथा १ हजार १ सौ १६ बुनाई की मशीनें हैं। इसी मिल में लाला कमलापत ने प्रथम बार भारतीय रूई से बढ़िया माल तैयार करने का प्रयोग किया। इसके पहले सारे भारतवर्ष में किसी भी मिल में छींट नहीं तैयार की जाती थी किन्तु जे० के० काटन मिल में यह प्रयोग प्रथम बार सफल हुआ तथा विदेशी माल की प्रतियोगिता में भारतीय रूई से ४० से लेकर ६० हन्डरवेट बढ़िया माल तैयार होने लगा। जे० के० काटन मिल का रँगाई और छपाई विभाग उत्तर प्रदेश का पथ-प्रदर्शक है। जे० के० की काली और सुरमई छींट का अत्यधिक प्रचार हुआ और हाथोंहाथ बाजार में बिकने लगी। इस प्रकार यह मिल उत्तरोत्तर उन्नति करता गया और आज इस मिल में ५० लाख पौंड सूत तथा ३ करोड़ गज कपड़े का वार्षिक उत्पादन है।

जे० के० काटन मैन्यूफैक्चर्स लि० मिल की स्थापना भी लाला कमलापत सिंहानियाँ द्वारा सन् १९३३ में हुई। इस मिल में २२ हजार ४ सौ रिंग स्पिंडिल तथा ५ हजार ७ सौ डबलिंग स्पिंडिल हैं। इस मिल में होजरी तथा सूती कपड़े के लिये सूत तैयार होता है। इस प्रकार अभी केवल सूत तथा मोटा कपड़ा ही इस मिल में तैयार होता है, किन्तु शीघ्र ही सब

साधनों युक्त बुनाई विभाग खोलने की योजना बनाई जा रही है। इस समय इस मिल में १५ सौ आदमी काम करते हैं।

दी सचेंड़ी काटन मिल्स

उक्त मिल सचेंड़ी गाँव में है और इसमें ३४४० तकुए हैं। इसके मैनेजिंग एजेंट्स मेसर्स नारायणदास गोपालदास हैं जिसके मालिक बाबू रामस्वरूप भरतिया हैं। आजकल यह मिल बन्द पड़ा है।

दी नारायण काटन मिल्स

यह मिल बाँस मन्डी में है। इसमें १५,५०० तकुए तथा २५० करघे हैं। इसके मेनेजिंग एजेंटस एच० वेविन्सएन्ड कंपनी थे। कुछ दिन यह मिल श्री नारायणदास दर्जी का रहा परन्तु अब बन्द है।

लक्ष्मी रतन काटन मिल्स कंपनी लिमिटेड

सन १९३४ में उक्त मिल की स्थापना कालपी रोड पर हुई। इसमें २१,३४० तकुए तथा ७९९ करघे हैं। प्रारम्भ में यह मिल सर पदमपत के साझे में था किन्तु आजकल श्री रामरतन गुप्त द्वारा संचालित है और बी० आर० इन्डस्ट्रीज का केन्द्र-विन्दु है।

कानपुर टेक्सटाइल्स लिमिटेड

उक्त मिल सिविल लाइन्स में है। इसमें २३९३६ तकुये तथा ५१० करघे हैं। बेग सदरलैंड एन्ड कंपनी लि० इसकी मैनेजिंग एजेंट्स है।

मिलों की विशेषतायें :—

कानपुर के कपड़े के मिल प्रायः बहुत-सी ऐसी चीजें बनाते हैं जो सबही मिलों में तैयार होती हैं, जैसे धोती जोड़ा, साड़ी चादर, मारकीन आदि सभी मिलों में बनते हैं। किन्तु कुछ मिलों ने अपनी-अपनी एक दो चीजें ऐसी तैयार कर ली हैं जिनमें उनकी विशेषता है और उनका वह बाना टकसाली समझा जाता है। जैसे जीन और चादर कई मिलों में बनता है किन्तु एलगिन मिल ने चादरे और जीन में जो विशेषता और प्रसिद्धि प्राप्त कर ली है वह अन्य मिलों को नहीं प्राप्त हो सकी है। इसी प्रकार लक्ष्मी रतन और टेक्स टाइल मिलों ने 'मारकीन' में विशेषता प्राप्त कर ली है। इन दोनों मिलों की मारकीन का भाव अन्य मिलों की मारकीनों की अपेक्षा सदा कुछ ऊँचा ही रहता है। चादरें म्योर मिल के भी काफी प्रसिद्ध हैं। धोती जोड़े स्वदेशी मिल के अपना विशेष स्थान रखते हैं। किन्तु न्यु विक्टोरिया मिल ने भी धोती जोड़ों में नाम पैदा कर लिया है। अथर्टन मिल की धोती भी काफी चलती है। काकोमी काटन मिल ने अपने लंकलाट में नाम पैदा कर लिये हैं। काली और सुख छींट में जुग्गीलाल कमलापत मील अपना सानी नहीं रखता। लाल इमली के कम्बल तो संसार प्रसिद्ध हो गये हैं। इस प्रकार हर एक मिल की कुछ न कुछ विशेषता अवश्य है।

कानपुर की कुछ प्रमुख कोठियाँ :—

२० वीं शताब्दी के प्रारंभ के साथ कानपुर के औद्योगिक

जीवन में भारतीयों का भी प्रवेश आरंभ होता है। इसके पूर्व अधिकांश भारतीय व्यवसायी अथवा महाजन यूरोपियनों द्वारा संचालित मिलों अथवा कंपनियों को केवल सामान्य रूप में सहायता देते थे। वे केवल दलाल, आढ़तिये अथवा सप्लाई के काम तक ही अपने को सीमित रखते थे। महाजन लोग सूद पर धन देकर अथवा अन्य रूपों में आर्थिक सहायता करते थे।

श्री गैविन जोन्स ने, जिन्हें कानपुर में औद्योगिक जीवन के सूत्रपात करने का श्रेय प्राप्त है, ऊनी सूती तथा चमड़े के मिलों की स्थापना के लिये इन भारतीय बैंकरों अथवा सराफ़ों से हुन्डी लेकर धन प्राप्त किया था।

मेसर्स बैजनाथ रामनाथ

कानपुर के औद्योगिक विकास में इस प्रकार धन से सहायता पहुंचाने वाले फर्मों में मेसर्स बैजनाथ रामनाथ का नाम विशेष उल्लेखनीय है। आज से लगभग एक शताब्दी पूर्व ये फर्रुखाबाद से कानपुर आये थे। चटाई मुहाल में उनकी दुकान थी और कपास, आटा तथा लेन-देन का काम होता था। धीरे-धीरे औद्योगिक क्षेत्र में भी उनका प्रवेश हुआ।

मेसर्स बैजनाथ रामनाथ का फर्म आजकल के उत्तरी भारत के सर्वप्रसिद्ध औद्योगिक फर्म जुग्गीलाल कमलापत का पूर्वज है। यह संयुक्त परिवार के रूप में था और लाला मूलचन्द उर्फ मुरलीधर भी इसके साझीदार थे। लाला मूलचन्द बड़े सूझ-

बूझ के व्यक्ति थे। विक्टोरिया मिल तथा कानपुर काटन मिल आदि की स्थापना में मेसर्स बैजनाथ रामनाथ ने सहायता प्रदान की थी। कुछ समय के लिए तो कानपुर काटन मिल पर उनका प्रभुत्व-सा हो स्थापित हो गया था। सर अलेक्जेंडर राबर्ट से लंबी मुकदमेबाजी हुई और अन्त में लाला मूलचंद हार गये। इसके बाद फर्म का नाम भी बदल गया। अब उसका नाम बैजनाथ जुग्गीलाल हो गया और लाला मूलचंद उससे अलग हो गये। बँटवारे में गैंजेज फ्लावर मिल, जिसका गवनमेंट फ्लावर मिल के आधार पर निर्माण हुआ था, लाला मूलचंद को मिला। सन् १९०२ के लगभग आपने बलदेवदास केदारनाथ के नाम से अपना स्वतंत्र कारोबार आरंभ किया। गैंजेज फ्लावर मिल तथा उन्नाव शुगर मिल आपके ही क़ायम किए हुये हैं। स्वतंत्र रूप से आपका कारोबार १०-१२ वर्षों तक ही चल सका और लाला मूलचंद के जीवनकाल में ही वह, बहुत अधिक घाटा हो जाने के कारण, समाप्त हो गया। लाला मूलचंद के लड़के मेसर्स जुग्गीलाल कमलापत के यहाँ अब भी प्रभावशाली पदों पर हैं।

लाला जुग्गीलाल जी की देखरेख में मेसर्स बैजनाथ जुग्गीलाल ने बड़ी उन्नति की। सन् १९१८ या १९ में इस फर्म में पुनः बँटवारा हो गया। लाला जुग्गीलाल जी के तीन पुत्रों में से लाला बाँके बिहारीलाल जी पृथक् हो गये। फलतः बैजनाथ जुग्गीलाल का नाम बदलकर जुग्गीलाल

कमलापत हो गया। लाला बाँके बिहारीलाल जी ने बैजनाथ बालमुकुन्द के नाम से अपना स्वतंत्र व्यवसाय आरंभ किया। आपने एक शक्कर मिल तथा बैजनाथ बालमुकुन्द ऊलेन मिल नामक मिल की स्थापना की, जो अब भी है।

जुग्गीलाल कमलापत

ला० जुग्गीलाल जी की मृत्यु के पश्चात् ला० कमलापत जी फर्म के मालिक हुये आपने सन १९२१ में कानपुर में सर्व प्रथम भारतीय सूती मिल की स्थापना की। इसके बाद आपने प्रायः अन्य सभी उद्योगों में भी हाथ डाला और क्रमशः जूट, स्टील, होजरी तथा तेल मिलों की स्थापना की। कानपुर के औद्योगीकरण का श्रेय लाला कमलापतजी को ही प्राप्त है। यहाँ के भारतीय व्यवसायियों में सर्व प्रथम आपने ही इतने बड़े पैमाने पर विभिन्न उद्योगों का श्रीगणेश किया। इसके पूर्व कानपुर के व्यावसायिक एवं औद्योगिक क्षेत्र में अंग्रेजों का ही बोलबाला था। किन्तु लाला कमलापत जी उद्योगों की विविधता की दृष्टि से अंग्रेजों से भी बाजी मार ले गये। अंग्रेजों ने कानपुर में मुख्यतः सूती, ऊनी तथा चमड़े के मिल ही स्थापित किये थे। लाला कमलापत जी ने लोहे तथा जूट के मिल भी स्थापित किये। कानपुर के अनेक पूँजीपतियों ने औद्योगिक क्षेत्र में आपसे प्रेरणा प्राप्त की।

श्री पद्मपत सिंहानिया—

ला० कमलापत जी की मृत्यु के बाद आपके ज्येष्ठ पुत्र

श्रीपदुमपत पर फर्म का सारा दायित्व तथा जे० के० ग्रुप का सारा कार्य-भार आपड़ा। श्रीपदुमपत जी बहुत ही प्रतिभाशाली व्यक्तियों में है। आपकी प्रतिभा सर्वतोमुखी है। आपने कई बार विदेशों की यात्रा की और व्यापारिक अनुभव प्राप्त किया। आप केवल धन लगाने वाले उद्योगपति ही नहीं हैं किन्तु मशीनों आदि का भी ज्ञान रखते हैं। इस प्रकार विभिन्न उद्योगों का टेक्निकल ज्ञान होने के कारण आप अपनी व्यावसायिक तथा औद्योगिक प्रगति को और अधिक समुन्नत बनाने में समर्थ हो सके हैं। उन्होंने महान सफलतायें प्राप्त की हैं और जिस कार्य में भी हाथ डालते हैं उसका सफल होना निश्चित-सा है।

आपने कई नये मिल तथा कारखाने हैं खोले। रेमान्ड ऊलेन मिल नामक बम्बई के सुप्रसिद्ध ऊनी मिल को आपने खरीद लिया है। आर्थिक क्षेत्र में हिन्दुस्तान कमर्शल बैंक लि० जैसी भारत प्रसिद्ध बैंक की स्थापना आपकी योग्यता एवं कार्यक्षमता का उत्कृष्ट नमूना है। आज जे० के० ग्रुप का नाम केवल भारतवष में ही नहीं किन्तु विदेशों तक में प्रसिद्ध है। उसकी इस प्रसिद्ध के पीछे श्री पदुमपत सिंहानिया का कृतित्व छिपा हुआ है। वास्तव में यदि यह कहा जाय कि श्री पदुमपत जी न उत्तर प्रदेश का उद्योगीकरण किया है तो हमारी समझ में कोई अतिशयोक्ति न होगी।

कानपुर के अनेक लोगों ने औद्योगिक क्षेत्र में आपके

पद चिन्हों का अनुसरण किया है और आपसे प्रेरणा एवं प्रोत्साहन पाया है। बिहारीलाल रामचरण के स्वत्वाधिकारी ला० रामरतन जी गुप्त ने आपसे ही प्रेरणा प्राप्त की थी। लक्ष्मी रतन काटन मिल की स्थापना उसी का परिणाम था। श्री एच० जी० मिश्रा, श्री बागला तथा श्री जैपुरिया आदि भी अपने औद्योगिक प्रसार में आपसे प्रभावित हुये हैं।

श्री पद्मपत जी अपने पिता के चरण-चिन्हों पर चलते हुये अपने कुल की परम्परागत विशेषताओं को भी पूर्ववत् कायम रखे हुये हैं। आज आपकी गणना भारत के इने-गिने सर्वप्रमुख उद्योगपतियों एवं व्यवसायियों में की जाती है।

जे० एन० कोकलस—

श्री जे० एन० कोकलस प्रसिद्ध रैली ब्रदर्स फर्म की कानपुर शाखा के प्रधान थे। उन दिनों रैली ब्रदर्स तथा मेसर्स स्क्डर स्मिथस, तिलहन, कपास, अनाज आदि ग्रामीण उपज के सबसे बड़े व्यापारी थे। वे इन चीजों को खरीदकर विदेशों को भेजने का काम करते थे। रैली ब्रदर्स का कार्यालय कोपर गंज में अब भी वर्तमान है परन्तु मेसर्स स्क्डर स्मिथस का अस्तित्व समाप्त हो चुका है।

श्री जे० एन० कोकलस ग्रीक थे। वे बहुत ही ईमानदार, परिश्रमी तथा बुद्धिमान व्यक्ति थे। सन १९०४ के बाद आपने अपना स्वतन्त्र व्यवसाय आरम्भ करने की इच्छा से रैली ब्रदर्स की नोकरी छोड़ दी। परन्तु आपके पास व्यापार करने

के लिये रुपये न थे। कुल ८०० रु० आपके पास थे। इसी बीच लाला जुग्गीलाल से आपकी भेंट हो गई। इसके कुछ ही समय पूर्व लाला जुग्गीलाल जी कपास ओटने की एक मिल खरीद चुके थे। लाला जुग्गीलाल जी को किसी बुद्धिमान, कुशल व्यक्ति की आवश्यकता थी। श्री कोकलस से भेंट होने पर उन्होंने वह मिल लीज अथवा ठेके पर श्री कोकलस को दे दी। दोनों आदमियों का साझा हो गया जो सन १९४६ में कोकलस साहब की मृत्यु के समय तक कायम रहा।

श्री कोकलस कानपुर में दूसरे व्यक्ति थे जिन्होंने सबसे पहले मोटर खरीदी। आप बहुत ही उदार तथा स्पष्टभाषी थे। श्री कोकलस ने अपने जीवन के आरम्भिक काल में किसी प्रेम सम्बन्धी मामले में उसका प्रतिदान न पाकर जीवन भर विवाह न करने का निश्चय कर लिया। अन्त तक आपने इस प्रण का पालन किया। छावनी के गोरा कब्रिस्तान में आपकी समाधि है।

कुछ पुराने व्यापारिक फर्म

१९ वीं शताब्दी के अन्तिम तथा २० वीं शताब्दी के प्रारम्भिक चरण में कानपुर में अनेक प्रसिद्ध फर्मों की स्थापना हो चुकी थी। समीपवर्ती व्यापारिक मंडियों के प्रसिद्ध व्यापारी कानपुर में आकर बस गये थे और उनके कारण कानपुर व्यापार की प्रधान मंडी हो गया था। इन भारतीय व्यापारियों ने मुख्यतः चीजों के क्रय-विक्रय तक ही पहले अपने को सीमित

रखा, किन्तु बाद में उनमें से कई ने औद्योगिक क्षेत्र में भी प्रवेश किया। पहले ये मुख्यतः तिलहन, कपास, किराना आदि का व्यवसाय करती थीं तथा हुन्डी पुर्जे पर महाजनी का काम भी होता था। इनमें प्रसिद्ध फर्म बैजनाथ रामनाथ का उल्लेख पहले ही हो चुका है।

नयागंज में सर्व श्री दुलारी राम रामदयाल तथा तुलसी राम जियालाल (बैंकर्स तथा गल्ले केब ड़े व्यापारी थे)। निहालचन्द बलदेव सहाय, जानकीदास जगन्नाथ, जगन्नाथ महादेव प्रसाद, रामजसमल श्रीराम आदि थे। ये सब लोग हुन्डी पुर्जे, लेन-देन तथा कपास एवं गल्ले का व्यवसाय करते थे।

कलेक्टर गंज में गल्ले तथा कपास के व्यापारियों में सब श्री बैजनाथ ताराचन्द, राधाकृष्ण मंगतराय, शादीराम गंगा प्रसाद, मथुरादास सत्य नारायण तथा शिवमुख राम रामकुमार प्रमुख थे।

जनरल गंज में गंगाधर बैजनाथ, गौरीदत्त तुलसीराम, मोतीचन्द फतेहचन्द प्रमुख थे और मुख्यतः सूत का काम करते थे। यहाँ रामकरणदास राम बिलास का भी फर्म था जो शक्कर का काम करते थे।

हटिया में पूरनचन्द परमेश्वरीदास तथा लाला शिव प्रसाद बैंकर थे। चकले में छोटे लाल गया प्रसाद की प्रसिद्ध फर्म थी। फर्म रामरतन राम गोपाल के मालिक लाला

विश्वम्भर नाथ तथा लाला कन्हैयालाल थे। ठठराई में फर्म फूँदूमल गंगाप्रसाद था जिसके मालिक लाला देवी प्रसाद तथा लाला अयोध्या प्रसाद थे। चौक में भजनलाल सराफ की प्रसिद्ध दूकान थी।

चटाई मुहाल में मेसर्स बैजनाथ रामनाथ के अतिरिक्त अन्य कई प्रसिद्ध फर्में थीं। इनमें फूलचन्द मोहनलाल, तथा फूलचन्द जैनारायण हाथरस से यहाँ आकर बसे थे और बहुत बड़े बैंकर तथा कपास के व्यापारी थे। मिर्जापुर को प्रसिद्ध फर्म बिहारीलाल कुंजीलाल की भी कोठी यहीं थी। काहू की कोठी में सर्व श्री तेजपाल जमुनादास, शिवरतनदास मोतीलाल, तथा श्रीनाथ शंकरनाथ फुटकर कपड़े के प्रसिद्ध व्यापारी थे।

इनके अतिरिक्त सर्व श्री भवानी प्रसाद परमानन्द तथा इच्छाराम रायदयाल के फर्म भी प्रसिद्ध थे।

× × ×

कूपरगंज में अनेक जिनिंग फैक्टरियाँ अथवा कपास ओटने की मिलें थीं। इनमें वेस्ट पेटेन्ट प्रेस कम्पनी लिमिटेड, हाइड्रोलिक प्रेसिंग एसोसिएशन, मेसर्स विअर एण्ड सीतल, बलदेवदास केदारनाथ, बैजनाथ जुग्गीलाल, श्रीराम महादेव प्रसाद, निहालचन्द बलदेव सहाय, मेसर्स वोलकर्ट ब्रदर्स, नारायण दास लक्ष्मणदास, हरदत्तराय बिलासदास तथा अमर चन्द बद्रीदास की जिनिंग फैक्टरियाँ प्रमुख थीं।

इनके अतिरिक्त अन्य कई फर्मों का भी नाम उल्लेखनीय
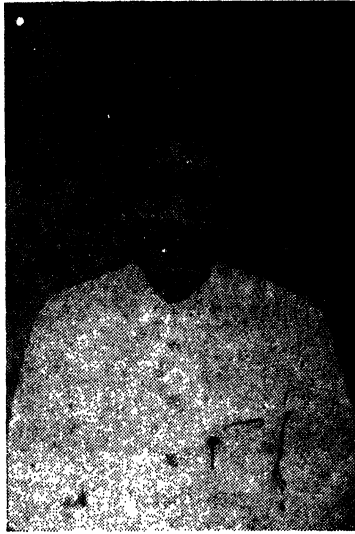
ला० गिल्लूमल बजाज

है। पुराने ज़माने में साँवलदास चमार ने चमड़े के व्यापार में खूब धन पैदा किया। गिनवाला एण्ड दलाल पारसी थे और चमड़े का व्यापार करते थे। हाफ़िज़ मुहम्मद हलीम भी चमड़े के प्रसिद्ध व्यापारियों में थे और कानपुर के मशहूर रईसों में थे।

इनके अतिरिक्त चमड़े का व्यापार करने वाले सैकड़ों ही लोग हैं जो, कुली बाज़ार, नई सड़क, फ़राशख़ाना, बूचड़ख़ाना, मेवबाग और हीरामन के पुरवा में अपना कारबार करते हैं। कच्चे चमड़े का काम प्रायः मुसलमान लोगों के ही हाथ में है।

चमड़े से बने हुये सामान के व्यापार में कूपर लेदर वर्क्स, गौरीशंकर एण्ड कम्पनी, मंगली प्रसाद एण्ड सन्स, जिसके संचालक आजकल श्री शहज़ादेलाल हैं, और नन्दलाल प्रभू दयाल आदि फर्मों के मालिक कानपुर के श्रीवास्तव लोग रहे हैं और इन्होंने अच्छा धन कमाया है।

× × ×

कानपुर में ज्वाइन्ट स्टाक कम्पनी के रूप में सर्वप्रथम स्थापित होने वाली मिल, यूनियन इंडियन शुगर मिल थी। कानपुर शुगर वर्क्स के आधार पर इसका निर्माण हुआ था। उस समय कानपुर में जितनी भी प्रसिद्ध मारवाड़ी फर्में थीं वे सब उसमें शामिल थीं। किन्तु यह मारवाड़ी सिंडीकेट सन् १९२७ में दिवालिया हो गई और अनेक लोगों का पैसा

डूब गया। अब यह मिल जुग्गीलाल कमलापत तथा बम्बई के चिम्मनलाल मोतीलाल के साझे में है।

कानपुर के औद्योगिक क्षेत्र में तीन ग्रुप प्रधानतया प्रसिद्ध हैं। ये हैं जे० के० ग्रुप, बी० आई० सी० ग्रुप तथा बी० आर० ग्रुप। स्वदेशी काटन मिल और म्योर मिल इन ग्रुपों में शामिल नहीं हैं।

× × ×

इस समय कानपुर केवल उत्तर प्रदेश में ही सूती वस्त्र उद्योग का एक महत्वपूर्ण केन्द्र नहीं है किन्तु सारे देश में सूती वस्त्र उद्योग का एक प्रमुख केन्द्र हो गया है। वह उत्तरी भारत का मान्चेस्टर ठीक ही कहा जाता है। यद्यपि कानपुर में सर्व प्रथम सूती मिल की स्थापना १८६१ में हुई थी तथा बाद के दशकों में भी और नये मिल खुले किन्तु यहाँ के सूती वस्त्र-उद्योग का प्रसार सन् १९३५ के पश्चात् ही अधिक हुआ है।

इस समय कानपुर में १७ सूती मिल हैं जिनमें १५ तो खास कानपुर नगर में हैं। इनमें से तीन मिलें तो पिछले महायुद्ध के समय अस्तित्व में आईं और उन्हें केवल छोटे बिनता-घर कहा जा सकता है। सन् १९३५ में १४ मिलें थीं जिनमें कुल ४ लाख ५५ हजार १३६ तकुये तथा ८०१९ करघे थे। इनमें औसत रूप से प्रतिदिन ३० हजार ११८ मजदूर काम करते थे तथा ७८४ पौंड वजन वाली १ लाख ९ हजार ३०१ कंडी रूई की खपत होती थी। सन् १९४३ में मिलों की

संख्या १७ हो गई जिनमें ५ लाख ३४ हज़ार ५०० तकुये तथा १०००० करघे थे। इस समय ४४ हज़ार ४८० मजदूर औसत रूप से प्रतिदिन काम करते थे तथा १ लाख ७६ हज़ार ९८२ कंडियाँ रुई प्रतिदिन खर्च होती थीं।

सन् १९४८ के १ सितम्बर से सन् १९४९ की ३१ मार्च तक के सात महीनों के भीतर कानपुर की मिलों में १ लाख ३१ हज़ार ६५१ गाँठें रुई की खर्च हुई। बंबई तथा अहमदाबाद को छोड़कर भारत में यह सबसे अधिक संख्या थी। उत्तरी भारत में तो कानपुर की समता करने वाला कोई नगर ही नहीं था। कलकत्ता में इस समय के भीतर कुल ३५३६१ गाँठें रुई खर्च हुई। संपूर्ण भारतीय संघ में यह खपत १९ लाख ७८ हज़ार ९९५ गाँठें थीं। इनमें प्रत्येक गाँठ का वजन ४०० पौंड था जिसमें बारदाना भी शामिल था। बारदाना निकाल देने पर यह वजन ३९२ पौंड था।

इसके अतिरिक्त इस अवधि के बीच देश में कुल ५ लाख ८५ हज़ार १७९ पौंड विदेशी रूई की भी खपत हुई जिसमें कानपुर में खर्च होने वाली रूई का परिमाण ३७८०६ पौंड था।

चतुर्थ अखिल भारतीय सूती वस्त्र सम्मेलन

कानपुर की इस औद्योगिक महत्ता का ही परिणाम था कि चतुर्थ अखिल भारतीय सूती वस्त्र सम्मेलन सन् १९४७ में होली

के अंकों में कानपुर में हुआ। इसके पूर्व तीन सम्मेलन बम्बई में हो चुके थे।

जिस समय यह चौथी टैक्सटाइल कानफ़रेन्स कानपुर में हुई उस समय उसकी एक शाखा यहाँ भी खोल दी गई थी और एक प्रदर्शनी भी हुई थी।

मिल, मशीनरी, स्टोर्स तथा सूती वस्त्र-उद्योग से सम्बन्धित अन्य विभिन्न वर्गों के प्रतिनिधि बहुत बड़ी संख्या में सम्मेलन में सम्मिलित हुये। भारत सरकार के तत्कालीन उद्योग तथा सिविल सप्लाइज सदस्य श्री राजगोपालाचारी ने सम्मेलन का उद्घाटन किया। आपने अपने उद्घाटन-भाषण में अधिक टिकाऊ वस्त्र बनाने पर जोर दिया।

स्वागत समिति के अध्यक्ष श्री जे० पी० श्री वास्तव के पुत्र श्री जे० के० श्रीवास्तव थे। उन्होंने अपने भाषण में कई उपयोगी सुझाव पेश किये ये जो वस्त्र उद्योग के लिये बड़े काम के थे। सम्मेलन के अध्यक्ष डा० नज़ीर अहमद अस्वस्थता के कारण न आ सके, अतएव आपका लिखित भाषण पढ़कर सुना दिया गया। प्रथम दिन का खुला अधिवेशन ब्रिटिश इण्डियन कारपोरेशन के अध्यक्ष सर रावर्ट मेंजीज की अध्यक्षता में हुआ। दूसरे दिन के अधिवेशन के अध्यक्ष सर पद्मपत सिंहानियाँ थे। इस अधिवेशन में "भारत में टेक्सटाइल उद्योग का भावी कार्यक्रम" विषय पर विवाद हुआ था। दोपहर के बाद का अधिवेशन दो भागों में विभाजित हो गया। एक के अध्यक्ष श्री

राल्फ पी० रिचर्डसन तथा दूसरे के सर हरगोविन्द मिश्र थे। रिचर्डसन साहब के सामने "रेशे और वस्त्र" विषय पर चर्चा हुई थी। मिश्र जी के सामने अंकों पर निबन्ध पढ़े गये थे। तृतीय दिन का अधिवेशन लाला रामरतन गुप्त की अध्यक्षता में हुआ जिसमें टेक्निकल शिक्षा, श्रमिक भर्ती और नैतिक नाप पर लेख पढ़े गये थे। चौथे दिन प्रतिनिधियों ने नगर के मिलों तथा कारखानों का निरीक्षण किया। कानफरेन्स के साथ जो नुमाइश हुई थी वह बड़ी शिक्षाजनक थी। उसमें कताई, बुनाई आदि का क्रमिक विकास बड़े सुन्दर ढंग से दिखाया गया था।

\+ \+ \+

कानपुर के मिलों में काम करने वाले अधिकतर मजदूर पड़ोस के कृषि प्रधान क्षेत्रों के निवासी हैं। कानपुर नगर में स्थायी रूप से बसे हुये मजदूरों की संख्या २० प्रतिशत से अधिक नहीं है। शेष ८० प्रतिशत गाँवों के लोग हैं। मिलों के अधिकांश कर्मचारी या उनमें से ७०—८० प्रतिशत हिन्दू हैं। मजदूरों में ९८·७४ प्रतिशत पुरुष, १ प्रतिशत स्त्री तथा ·२६ प्रतिशत बच्चे हैं। महिलायें अधिकतर गूदड़ बटोरने तथा रीलिंग विभाग में काम करती हैं।

जिन मिलों में महिलायें काम करती हैं उनमें से प्रत्येक में 'क्रेचेज' रहते हैं जहाँ शिशुओं को दूध तथा बिस्कुट दिये जाते हैं।

\+ \+ \+

यद्यपि पिछले १० वर्षों में उत्तर प्रदेश में, जिसका कि मुख्य केन्द्र कानपुर है, सूती मिलों की संख्या में कोई उल्लेखनीय वृद्धि नहीं हुई परन्तु सन् १९३५ की तुलना में अब रुई की खपत ६२ प्रतिशत तथा काम करने वाले मजदूरों की संख्या लगभग ५० प्रतिशत बढ़ गई है।

+ + +

कानपुर का सूती-वस्त्र-उद्योग मुख्यतः भारतीयों के हाथ में है। यद्यपि इसकी नींव अंगरेजों ने ही डाली थी परन्तु उसका विकास तथा प्रसार भारतीयों द्वारा ही हुआ। पिछले महायुद्ध के समय तक तो कई मिलें अंगरेज उद्योगपतियों के हाथ में अवश्य थीं परन्तु सन् १९४७ में भारत को स्वतन्त्रता मिलने के बाद से इन लोगों ने अपना व्यवसाय समेटना आरम्भ कर दिया। १९०५ में बनी हुई स्वदेशी काटन मिल जैसी उत्तरी भारत की सबसे बड़ी सूती मिल जिसमें ११३८४८ रिंग तकुए और ११४८० डबलिंग तकुए हैं, अब भारतीय उद्योगपतियों के हाथ में आगई है। इसी प्रकार १८७४ में स्थापित की हुई म्योर मिल भी अब भारतीयों के ही हाथ में है।

सूती वस्त्र उद्योग का भविष्य

भारत के सूती-वस्त्र-उद्योग की स्थिति देखते हुये कानपुर में सूती वस्त्र व्यवसाय का भविष्य उज्ज्वल प्रतीत होता है। इस समय भारत संसार के सबसे बड़े सूती-वस्त्र-निर्माता देशों में एक है। तकुओं के हिसाब से उसका स्थान पाँचवाँ तथा रुई की

खपत एवं मजदूरों की संख्या की दृष्टि से उसका संसार में तीसरा स्थान है। लाखों मजदूर उसमें लगे हुए हैं। मजदूरों की संख्या तथा रुई की खपत देखते हुये देश के सम्पूर्ण सूती-वस्त्र उत्पादन का लगभग १३वाँ भाग कानपुर में होता है। वस्त्र उद्योग के विस्तार तथा मिलों की संख्या की दृष्टि से क्रमशः बम्बई, मद्रास तथा बंगाल के बाद उत्तर प्रदेश का नाम आता है।

भारत के सूती वस्त्र-व्यवसाय का भविष्य बहुत ही उज्ज्वल प्रतीत होता है। सन् १९४४ में ४ अरब ८७ करोड़ गज कपड़ा भारत में तैयार होता था परन्तु फिर भी देश में प्रति व्यक्ति पीछे कपड़े की वार्षिक खपत केवल १६ गज ही हुई जब कि अमेरिका में वह ६४ गज हुई। सन् १९४४ के बाद रुई आदि की कमी तथा अन्य कुछ कारणों से यह उत्पादन-स्तर घटकर ३ अरब ८० करोड़ गज ही रह गया। इस प्रकार प्रति व्यक्ति पीछे केवल १० गज वार्षिक का ही औसत पड़ा जब कि कई जाँच कमीशनों के अनुसार यह औसत प्रति व्यक्ति पीछे कम से कम ३० गज होना चाहिये। मान लिया जाय कि वह २० ही गज अभी हो सके तब भी प्रति वर्ष ८ अरब गज कपड़ा और बनाना चाहिये जिसका अर्थ है कि वर्तमान ३ करोड़ ८० गज कपड़े में १०० प्रतिशत उत्पादन वृद्धि की जाय। देश के सूती वस्त्र-उद्योग की भाँति कानपुर के सूती वस्त्र-उद्योग को भी कांग्रेस के स्वदेशी प्रचार तथा विदेशी वस्त्रों के बहिष्कार से विशेष शक्ति मिली।

विदेशी कपड़ा आना बन्द हो जाने से नई किस्म के तरह-तरह के कपड़े बनने लगे। द्वितीय महायुद्ध में भारत के सूती-वस्त्र-उद्योग को विशेष प्रोत्साहन मिला। ऐसी उन्नति उक्त उद्योग की ओर पहले कभी नहीं हुई थी। युद्धकाल में सैनिक आवश्यकता की वस्तुयें जैसे जीन, ट्विल, मच्छरदानी, अस्पताली चद्दरें, टेन्ट, क्लाथ, कैनवास, गॉज, गैस विरोधी कपड़ा तथा नेवाड़ आदि बनने लगीं तथा जनता की दैनिक आवश्यकता की वस्तुओं का निर्माण कम हो गया। कानपुर में बीसियों लखपती करोड़पती तथा सैकड़ों सहस्त्रपती लखपती हो गये।

कानपुर के सूती वस्त्र-उद्योग-पतियों ने राज्य के भीतर अन्य स्थानों तथा उसके बाहर भी अनेक स्थानों में अपने मिल क़ायम कर रखे हैं। भूपाल टेक्सटाइल्स लि० भूपाल तथा रजा टेक्स-टाइल्स लि० रामपुर के मैनेजिंग एजेन्ट्स जे० पी० श्रीवास्तव एण्ड सन्स लि० कानपुर ही हैं। उक्त दोनों मिलों की स्थापना श्री जे० पी० श्रीवास्तव के ही विशेष उद्योग का फल है। उक्त दोनों मिलों में क्रमशः १५००४ तकुए व ४०० करघे तथा १९०६४ तकुए व ४४० करघे हैं।

मेयर मिल्स लि० बम्बई के अधिकतर शेयर लाला रामरतन गुप्त (फर्म बिहारीलाल रामचरण) ने ख़रीद लिये हैं। उनके मँझले भाई लाला रामगोपाल उसके डाइरेक्टर बोर्ड के चेयरमैन हैं। यह एक बड़ा मिल है। इसमें ४४९९६ तकुए तथा १०२१ करघे हैं।

ला० देवकीनन्दन वंसल

श्री विक्रम काटन मिल्स लि० लखनऊ के मैनेजिंग एजेन्ट्स कानपुर के स्व० बाबू विक्रमाजीत सिंह के पुत्र श्री रणजीत सिंह जी हैं। पहले इस मिल का नाम आर० जी० काटन मिल था। इसमें १७८८८ तकुए तथा ३२९ करघे हैं।

बम्बई का 'न्यू कैसरे-हिन्द मिल भी सिहानिया परिवार के अधिकार में आ गया है। इसे लाला कैलाशपत जी देखते हैं। इसमें ५३७१६ तकुए और १४०६ करघे हैं।

इसी प्रकार औरंगाबाद मिल श्री रामरतन गुप्त के अधिकार में है और इसमें १८३१६ तकुए और २७१ करघे हैं।

बम्बई के प्रसिद्ध सासुन ग्रुप के इण्डिया यूनाइटेड मिल्स लिमिटेड के संचालन में हमारे नगर के प्रसिद्ध उद्योगपति लाला रामेश्वर प्रसाद जी बागला का विशेष भाग है। और आप उसके चेयरमैन हैं। यह मिल नये प्रबन्ध में १९४३ में आया। इस ग्रुप में ५ मिल हैं। इनमें प्रथम में १ लाख २० हज़ार ३६ तकुए और २४०० करघे, दूसरे तथा तीसरे में १ लाख १९ हजार २०४ तकुए और १४९४ करघे, चौथे में २१३९ करघे तथा पाँचवें में २८९४० तकुए तथा ६८४ करघे हैं। उसमें १० हज़ार आदमी काम करते हैं।

सिले हुए कपड़े का व्यापार

कानपुर में रेडीमेड कपड़े का व्यवसाय भी काफ़ी बड़े पैमाने पर है। इस सम्बन्ध में प्रो० एकरायड और प्रो० देवराज ने सन्

१९३८ में एक 'सरवे' किया था जिसकी एक बड़ी अच्छी रिपोर्ट प्रकाशित हुई है उसमें इस व्यवसाय के उतार-चढ़ाव के अंक दिये हुए हैं और इसकी उन्नति के उपाय भी सुझाये गये हैं। साथ ही दर्जी यूनियन का स्मृति पत्र भी दिया हुआ है जिसमें दर्जियों की कठिनाइयों का विवरण है। रंजीत पुरवा और नहर पार भूसा टोली मुहल्ले में इस उद्योग का मुख्य केन्द्र है। यहाँ सड़क के दोनों ओर इस प्रकार की पचासों दूकानों की शृंखला चली गई है जिनमें कपड़े सिये जाते हैं। सैकड़ों कर्मचारी सिलाई का काम करते हैं। इस प्रकार यहाँ सिले हुये कपड़े का पूरा बाजार ही है। यहाँ से दूर-दूर माल भेजा जाता है। पंजाब जैसे दूरवर्ती राज्य तक के लोग यहाँ कपड़ा लेने आते हैं। व्यवसाय काफ़ी बड़े पैमाने पर होता है और माल गाँठों में बन्द करके भेजा जाता है।

युद्धकाल में स्थानीय मिलों तथा पैराशूट फैक्टरी आदि में भी रेडीमेड कपड़े का निर्माण होता था और इस समय भी कई मिल, जिनमें एलगिन मुख्य है, कटपीस के कपड़े को सी कर बेचने का भी काम करते हैं।

भारत सरकार द्वारा नियुक्त पैनेल ने युद्धोत्तर काल के पहले ५ वर्षों में इस रेडीमेड कपड़े के उद्योग के सम्बन्ध में जो सुझाव दिये हैं उसमें इसके विकास पर विशेष जोर दिया गया है। पैनेल का कहना है कि इस उद्योग का अधिक प्रसार होना इसलिये आवश्यक है क्योंकि सामूहिक पैमाने पर कपड़ा काटने

से कम से कम ५ से १० प्रतिशत तक कपड़े की बचत हो जाती है। उसने विदेशों को निर्यात किये जाने वाले कपड़े का भी यथासम्भव रेडीमेड कपड़े के रूप में ही अधिक से अधिक भेजने की सिफारिश की है क्योंकि ऐसा करने से इन सिले हुये कपड़ों की मजदूरी भी भारतीय जनता के ही पास आ जायगी और देश के बहुत से लोगों को काम मिल जायगा।

पैनेल ने उक्त उद्योग के विकास के लिये आधुनिक साधनों से युक्त पाँच कारखाने भी खोलने की सिफ़ारिश की है। इन्हें बम्बई, मद्रास, कलकत्ता, दिल्ली तथा अमृतसर में खोलने के लिये कहा गया है। कानपुर की इस सम्बन्ध में जो उपेक्षा की गई है वह कभी भी उचित तथा न्यायपूर्ण नहीं कहा जा सकता। उक्त पैनेल की रिपोर्ट अथवा इस उद्योग की उन्नति सम्बन्धी अन्य कोई भी योजना जब कभी भी कार्यान्वित हो उसमें कानपुर के इस पुराने उद्योग का उचित ध्यान रखना चाहिये।

ऊनी वस्त्रोद्योग

बहुत प्राचीनकाल से भारत में ऊनी वस्त्रों का कुटीर उद्योग चला आ रहा है। प्रकृति ने ऊन उत्पन्न करने के समस्त साधन यहाँ जुटा दिये हैं। यहाँ लगभग १५ लाख मन ऊन प्रतिवर्ष उत्पन्न होता है। इसमें से आधा तो करघों द्वारा मोटी कमलियों के बनाने में प्रयोग कर लिया जाता है, क्योंकि उसका रेशा छोटा होता है और वह पहनने के वस्त्र तैयार करने में नहीं इस्तेमाल किया जा सकता। दूसरा आधा भाग गलीचे बनाने में काम

आता है अथवा इसी प्रकार के काम के लिये अन्य देशों को निर्यात कर दिया जाता है।

यहाँ का सभी ऊन उपर्युक्त प्रकार का नहीं होता। हिमालय आदि ठण्डे प्रदेशों में पाई जाने वाली भेड़ों का ऊन बहुत बढ़िया और उच्च प्रकार का होता है।

हमारे देश में भेड़ पालने वाले अनपढ़ होते हैं और वे अपनी प्रत्येक भेड़ से १ सेर ऊन प्राप्त कर पाते हैं जब कि आस्ट्रेलिया के गड़रिये अपनी प्रत्येक भेड़ से ४ सेर ऊन प्राप्त करते हैं।

भारत में सर्व प्रथम ऊनी मिलों की स्थापना सन् १८६६ में कानपुर तथा धारीवाल में हुई। इसके पूर्व कानपुर जिले में गड़रिये लोग भेड़ पालते और उनके ऊन से कमली आदि तैयार करते थे। उनका यह व्यवसाय अब भी काफ़ी पैमाने पर जारी है। इस प्रकार कुटीर उद्योग में निर्मित वस्तुओं की माँग गाँवों में अधिक है और मेलों आदि में ये चीजें भारी परिमाण में बिकने के लिये आती हैं।

कानपुर ऊलन मिल्स

मि० जार्ज एलेन (बाद में सर जार्ज एलेन), मि० डब्ल्यू० ई० कूपर (बाद में सर विलियम अर्नशा कूपर), मि० बेवन पेटमैन, डा० कांडन तथा मि० गैविन एस० जोन्स ने सन् १८७६ में एक छोटा-सा मिल मुख्यतः फौज के कम्बल बनाने के लिये

खोला। इसी कारण यह "कम्बल घर" के नाम से भी प्रसिद्ध है। इसका एक नाम "लाल इमली" भी है। सन् १८८२ में इसे सार्वजनिक लिमिटेड कम्पनी बना दिया गया। सन् १८८४ में मि० ए० मैकराबर्ट, जिन्हें बाद में सर की उपाधि से विभूषित किया गया, मिल के मैनेजर नियुक्त हुये। आप सन् १९२२ तक अपनी मृत्यु पर्यन्त उक्त पद पर काम करते रहे। आपने मिल की अत्यधिक उन्नति की। स्व० सर गैविन जोन्स आपकी प्रसंशा करते हुये प्रायः आपको "कानपुर का बिना तिलक का राजा" कहा करते थे।

इस मिल के सम्बन्ध में इतना ही कहना काफी है कि "लाल इमली" के नाम से इसकी बनी हुई चीजें समस्त भारतवर्ष भर में समान रूप से विख्यात है। इस मिल का बना माल भारत के प्रत्येक बाजार तथा प्रत्येक घर में मिलेगा।

सन् १९१० में मिल को बड़ा गहरा धक्का लगा! उसमें अत्यन्त भयंकर आग लग गई जो कई महीनों तक जलती रही। सौभाग्यवश मिल की मशीनें बच गईं और केवल कच्चे माल का ही नुकसान हुआ। सन् १९१०—११ में बड़े पैमाने पर नई इमारत बनाने का काम आरम्भ हुआ और उसी में अधिकांश मशीनें लगाई गईं। सन् १९२० में यह मिल ब्रिटिश इण्डिया कार्पोरेशन का एक अंग हो गया। मिल में २२३२४ तकुए तथा ३८० करघे हैं। इसमें मुख्यतः सर्ज, शर्टिङ्ग, कम्बल, लोई, ओवरकोट का कपड़ा, डैब मिक्स्चर तथा फ्लैनेल बनता

है। यह मिल, भारत के ही नहीं किन्तु एशिया के प्रसिद्ध ऊनी मिलों में से एक है। युद्धकाल में इसके बने माल की इतनी अधिक खपत होने लगी थी कि जनसाधारण को उसका माल मिलना दुर्लभ हो गया था।

इस मिल में हजारों मजदूर काम करते हैं। इन मजदूरों के लिये मिल की ओर से एक बस्ती बसी हुई है जिसका नाम मैकराबर्टगंज है। यह बस्ती साफ-सुथरी, और हवादार मकानों की है जो मजदूरों के लिये आदर्श बस्ती कही जा सकती है। कानपुर में मजदूरों के लिये एलनगंज नामक एक और अच्छी बस्ती भी है। केन्द्रीय सरकार के प्रयत्न से इस समय १९५४ में मजदूरों के लिए अन्य बस्तियाँ भी बन रही हैं।

बैजनाथ बाँकेबिहारीलाल ऊलेन मिल्स

इस मिल की स्थापना भी जे० के० परिवार के पूर्वजों द्वारा ही हुई थी। सन् १९१८—१९ में बैजनाज जुग्गीलाल फर्म में पुनः बँटवारा हुआ। लाला जुग्गीलाल जी के तीन पुत्रों में से लाला बाँकेबिहारीलाल पृथक् हो गये। आपने ही उक्त ऊलेन मिल की स्थापना की। उक्त मिल अनवरगंज में ग्रांडट्रंक रोड के किनारे है। इसमें २४०० तकुए तथा ६२ करघे हैं। इसके मैनेजिंग एजेन्ट्स जे० के० एलेन मैन्यूफैक्चर्स अनवरगंज कानपुर थे।

कानपुर के बाहर भी दो ऐसी ऊनी मिलें हैं जो कानपुर के उद्योगपतियों द्वारा ही संचालित होती हैं। इनमें एक तो है

न्यू ईगरटन ऊलेन मिल्स कम्पनी लि० धारीवाल (पंजाब)। यह मिल बी० आई० सी० ग्रुप का है। इसमें १६६०० तकुये तथा ३१७ करघे हैं।

दूसरा रेमंड ऊलेन मिल्स बम्बई है। यह मिल जे० के० ग्रुप में आ गया है। लाला कैलाशपत जी सिंहानियाँ उसके मैनेजिंग डाइरेक्टर हैं। इसमें १७३०० तकुए तथा १९६ करघे हैं।

जूट उद्योग

जूट का घर बंगाल है और वहाँ यह बहुत प्राचीनकाल से बोया जाता है। हाथ के बने हुए जूट के ४ करोड़ १० लाख बोरे आदि १८६५-६६ में कलकत्ते से विदेशों को निर्यात किये गये जिनका मूल्य ८३ लाख रुपया था। सबसे पहले जूट के रेशे के निर्यात का पता १७९१ में चलता है।

हुगली के किनारे 'रिशरा' नामक स्थान पर जूट के रेशे को कातने का शक्ति-संचालित मिल सन् १८५५ में बना था। इसे मिस्टर जार्ज आकलैंड ने स्थापित किया था और यह भारत का पहला जूट मिल था। शुरू में इसमें ४८ तकुए थे किन्तु शीघ्र ही तकुए बढ़ाये गये और प्रतिदिन ८ टन माल तैयार होने लगा। १८९५ में बोर्नियो कम्पनी ने 'बारनागर' में १९२ करघे लगा कर जूट की बुनाई का एक मील स्थापित किया।

जूट मिल एसोसियेशन के उद्योग से सन् १९२८ तक हिन्दुस्तान में ९५ मिल स्थापित हो गये जिनमें ३ लाख आदमी काम करते थे और उनमें नवीनतम मशीनों का प्रयोग होता था। इन

मिलों में लगभग १० लाख तकुए और ५० हजार करघे काम करते थे।

जूट के उद्योग का मुख्य केन्द्र बंगाल है जहाँ संसार के जूट के उत्पादन का एकाधिकार ही समझना चाहिए।

इस उद्योग के अन्य केन्द्र उत्तर प्रदेश, बिहार, दक्षिण भारत और पूर्वी राज्य हैं। बंगाल के बाहर सन् १९१९ के पश्चात् मिलों की स्थापना हुई। सन् १९४४ में हिन्दुस्तान भर में ११२ मिल थे जिनमें से १०१ बंगाल में थे।

हिन्दुस्तान और पाकिस्तान में जितना जूट उत्पन्न होता है उसका दो-तिहाई हिन्दुस्तान के मिलों में खर्च हो जाता है। शेष एक तिहाई विदेशों को निर्यात कर दिया जाता है। संसार भर में उत्पन्न होने वाले लगभग सारे जूट की उपज भारत ही में केन्द्रित है। इसको उपजाने के लिए अमेरिका, मिश्र, अफ्रीका, अरब और फिलस्तीन में किये गए प्रयत्न असफल प्रमाणित हुए। भारत के जूट के बने हुए माल का सबसे बढ़िया खरीदार अमेरिका रहा है, जो लगभग ६० प्रतिशत तैयार माल खरीद लेता रहा है। दूसरे नम्बर के खरीदार में अरजेन्टीना का नाम आता है। ब्रिटेन, कैनाडा, आस्ट्रेलिया और फिलिस्तीन आदि अन्य देशों में भी भारत का बना हुआ जूट का माल जाता है, परन्तु थोड़ा-थोड़ा।
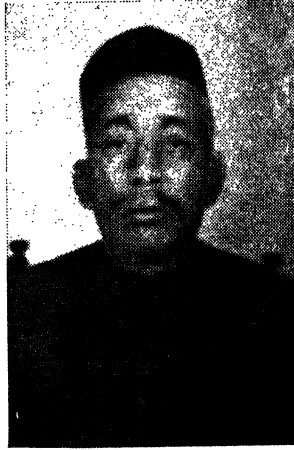
श्री प्यारेलाल भुराड़िया

कानपुर में जूट उद्योग की सफलता इस बात पर निर्भर है कि आस-पास के जिलों में उत्पन्न होने वाले सन का उक्त मिलों में अधिकाधिक उपयोग किया जाय क्योंकि कानपुर के आस-पास का प्रदेश जूट पैदा करने वाले क्षेत्र के अन्तर्गत नहीं है। जब तक ऐसा न किया जायगा यहाँ जूट उद्योग का भविष्य बहुत उज्ज्वल नहीं है। कानपुर की मिलों को बाहर बंगाल आदि से जूट मँगाना पड़ता है। अतएव रेलवे भाड़ा आदि पड़ जाने के कारण यहाँ के मिलों की बनी चीजें बंगाल आदि के जूट मिलों में बनी वस्तुओं की प्रतिद्वन्द्विता में टिक नहीं पातीं। अतएव जूट मिलों की सफलता तथा उनके विकास के लिए यहाँ की मिलों में सन का प्रयोग किया जा सकता है।

देहात में किसान लोग सन को कात कर उससे रस्सी, पाखरी तथा टाट पट्टा अब भी बनाते हैं। कुटीर उद्योग में काम आने वाले इस रेशे का उपयोग जूट मिलों में अधिक सफलता के साथ हो सकता है।

कानपुर में जूट की प्रथम मिल

कानपुर में सर्व प्रथम जूट मिल श्री आर्नाल्ड बिअर नामक एक अंगरेज सज्जन ने १८८३ में नार्थवेस्ट प्राविंसेज जूट मिल्स कम्पनी लि० के नाम से रेल बाजार में खोला। कुछ वर्षों बाद उक्त मिल फेल हो गया। कई वर्ष तक वह मिरजापुर की एक फर्म के अधिकार में रहा। इस बीच वह बन्द रहा। बाद में एक

सिंडीकेट ने उसे खरीद लिया और उसका नाम बदल कर श्री द्वारिकाधीश जूट मिल्स हो गया।

अन्त में सन् १९३६ में मेसर्स गंगाधर बैजनाथ ने उसे खरीद कर उसके स्थान पर माहेश्वरी देवी जूट मिल की स्थापना की।

श्री बिश्नर ने कुछ समय बाद पुनः औद्योगिक क्षेत्र में पदार्पण किया और शीतल तथा मामराज के साथ मिल कर कृष्णा जिनिंग मिल की स्थापना की। कुछ दिनों के बाद उक्त मिल भी फेल हो गया।

जे० के० जूट मिल

कच्चे माल तथा जलवायु की दृष्टि में उत्तर प्रदेश, जूट उद्योग के लिये सर्वथा अनुपयुक्त समझा जाता था। लाला कमलापत सिंहानियाँ सदैव नये-नये उद्योगों की स्थापना करने की धुन में रहा करते थे, अतएव उन्होंने सन् १९२९ में जे० के० जूट मिल की स्थापना की। सन् १९३१ में यह एक ज्वाइन्ट स्टाक कम्पनी के रूप में परिवर्तित हो गया। यह उत्तर प्रदेश का सर्व प्रथम दृढ़ आधार पर स्थापित तथा सबसे बड़ा जूट मिल है। इसमें जूट मिल सम्बन्धी आधुनिकतम मशीनें प्रयुक्त हुई हैं। वर्तमान समय में इसमें ११ हजार ८ सौ ५८ कताई तथा ४५० बुनाई की मशीनें हैं। इस मिल में १२ हजार टन वार्षिक कच्चे जूट की खपत होती है। इस मिल में हेसियन, सौकिंग तथा ट्विन का उत्पादन नागरिक उपयोग तथा विदेशी निर्यात

के लिये होता है। इस मिल में प्रतिदिन लगभग ५ हज़ार मज़-दूर कार्य करते हैं।

करघा उद्योग

बहुत प्राचीनकाल से भारत में कपड़ा बनता आया है। लोगों का ख़याल है कि भारत ही वस्त्र-उत्पादन का जन्म-स्थान है। भारत का बना हुआ कपड़ा केवल देश में ही नहीं इस्तेमाल किया जाता था बल्कि मिश्र, यूनान और रोम तक भी जाता था। हाथ से सूत कातने वाले महीन से महीन सूत कातते थे और उसके बाद कपड़े बनाते थे। ढाका और मसलीपट्टम इस उद्योग के केन्द्र थे। किन्तु समय ने पलटा खाया और जो देश अपना माल विदेशों को भेजा करता था वह विदेशों से वस्त्र मँगाने लगा।

देश में विदेशी वस्त्रों के आने से करघा उद्योग की अवनति आरम्भ हो गई। करघे की दशा बिगड़ने से हाथ कताई भी कम हो गई। फिर भी करघा उद्योग जीवित है और आज भी उसमें २५ लाख आदमी लगे हुये हैं। १९०५ के स्वदेशी आन्दोलन ने और सन् १९२० के असहयोग आन्दोलन ने करघा उद्योग को बहुत प्रोत्साहन दिया और उसकी काफ़ी तरक्क़ी हुई।

देश की आर्थिक दशा सुधारने के विभिन्न उपायों में महात्मा गाँधी ने हाथ-कती और हाथ से बुनी खादी को एक महत्वपूर्ण स्थान दिया। वह कहते थे कि "खादी भारतीय मानवता की,

एकता की, उसकी आर्थिक स्वतन्त्रता की और समता की, प्रतीक है।" पं० जवाहरलाल नेहरू ने उसे "भारतीय स्वतन्त्रता का बाना" बतलाया है। सन् १९२० में जब कांग्रेस ने यह पास कर दिया कि प्रत्येक भारतवासी खादी पहने क्योंकि वह अनुशासन और बलिदान का चिन्ह है, तब से करघा और खादी को और भी प्रोत्साहन मिला और हाथ-कता और हाथ से बना खादी की काफ़ी तरक्क़ी हुई। १९४० की चर्खा संघ की रिपोर्ट से पता चलता है कि १३५५१ गाँवों में २७५१४६ ग्रामीणों को कताई और बिनाई में ३४८५३०५ रुपया मज़दूरी का मिला।

असहयोग आन्दोलन के प्रारम्भिक काल १९२१ में कानपुर में भी एक खद्दर भण्डार मेस्टन रोड पर खुल गया। इसके संस्थापक लाला लल्लूमल दलाल, श्री प्यारेलाल अग्रवाल, लाला रामकुमार नेवटिया और श्रीरामस्वरूप गुप्त थे। यहाँ भी सैकड़ों चर्खे चलने लगे। जो सूत चर्खों से कत कर आता था उसे करघों द्वारा बिनवा कर खादी तैयार की जाती थी।

अखिल भारतीय चरखा संघ की संरक्षता और श्रीरामनाथ टण्डन के प्रबन्ध में कांग्रेस खद्दर भण्डार की ख़ूब उन्नति हुई। लेकिन वह आर्डीनेन्स की चपेट में आ गया और डेढ़ वर्ष तक बन्द रहा। इन्हीं दिनों लाला लल्लूमल के प्रयत्न से हटिया में "स्वदेशी पेंठ" भी लगती थी जिसमें कानपुर ज़िले की बनी हुई गजी और गाढ़ा अच्छी तादाद में बिकने के लिये आते थे।

इन्हीं दिनों पं० गंगानारायण अवस्थी ने बघाई में "स्वराज्याश्रम" नामक संस्था स्थापित की और खद्दर बुनने का काम आरम्भ किया। इसने भगवन्त नगर-मल्लावें के कोरियों और जुलाहों को संगठित करके खद्दर बहुत बड़ी मिक़दार में बनाना आरम्भ कर दिया। इसके बने हुए कोटिंग और शर्टिंग के डिज़ाइन देश भर में प्रसिद्ध हो गये। कुछ दिन बाद यह संस्था एक ट्रस्ट के सिपुर्द कर दी गई और सन् १९३४ में चेरिटेबुल संस्था के कानून के अनुसार इसकी रजिस्ट्री आश्रम के सात आजीवन सदस्यों द्वारा कराई गई। सन् १९३७ में इसके संस्थापक श्री गंगानारायण अवस्थी व श्री रामानन्द गुप्त और तीन आजीवन इससे अलग हो गये। फिर भी संस्था चलती रही। सन् १९३८ में इसकी ओर से कत्तिनों को एक हज़ार चर्खे तथा एक हज़ार धुनकी मुफ्त में दी गईं। आज भी यह संस्था ढाई तीन हज़ार रुपया कत्तिनों की शिक्षा में प्रति वर्ष खर्च करती है। १९३८ की साल में नरवल में भी सौ सवा सौ कत्तिनों को कताई, धुनाई की शिक्षा का काम शुरू किया गया, जहाँ आज तक खादी बिक्री का कार्य चल रहा है। इस संस्था के उत्पत्ति और बिक्री केन्द्र चार हैं:—

स्वराज्य आश्रम खादी भण्डार, जनरलगंज, कानपुर
,, ,, ,, ,, सुन्दर बाज़ार, उन्नाव
,, ,, ,, ,, मल्लावाँ, हरदोई
,, ,, ,, ,, अरौल

हरदोई और उन्नाव केन्द्रों के शर्टिंग और अरौल की कोटिंग देश भर में प्रसिद्ध है। अरौल वितरण केन्द्र भी है।

आश्रम के द्वारा १२५ गाँवों में ३००० बुनकर, ३२०० कातने वाले परिवार और ४० कार्यकर्ता परिवार काम कर रहे हैं। रामनगर केन्द्र में चर्खा, सरंजाम की उत्पत्ति होती है और ८-९ हजार रुपये का सरंजाम बनता है।

कानपुर शहर में कताई धुनाई सिखाने का प्रबन्ध है और जिस मुहल्ले में कम से कम ५ कातने वाले एक साथ कताई धुनाई सीखने को तैयार होते हैं वहाँ आश्रम की ओर से बिना किसी वेतन के शिक्षक भेजे जाते हैं। महिला विद्यालय, हडसन मेमोरियल गर्ल्स स्कूल, विद्या मन्दिर, आनन्द बाग, वृन्दाबन महिला विद्यालय (ग्वालटोली), एपीफेनी गर्ल्स स्कूल में कताई धुनाई शिक्षण का कार्य आश्रम ने किया है। आश्रम में खादी की वार्षिक उत्पत्ति १५००००) की है और ९००००) मजदूरी में बँटता है और ३ लाख की खादी की बिक्री होती है। इस संस्था की मौजूदा पूँजी ११४६६०) रु० है।

१९३० में श्री देवकुमार जैन तथा श्री मनोहरलाल जैन और श्रीरामनाथ जैन के उद्योग से "नवयुवक चर्खा मण्डल" स्थापित हुआ जिसने कई वर्ष तक खादी का उपयोगी कार्य किया और अब बन्द हो गया है। इसके अतिरिक्त रामनाथ पांडे का "स्वतंत्र खद्दर भण्डार" और बादशाही नाके का रामभरोसे खद्दर भण्डार भी काफ़ी दिन चले किन्तु अंत में बन्द हो गये। इस समय

"रामकृष्ण खादी भण्डार" जो ए० बी० रोड पर बहुत दिनों से क़ायम है काफ़ी बिक्री कर रहा है और उसकी दो बिक्री की दूकानें ए० बी० रोड पर हैं। जिस समय स्वदेशी बाज़ार खुला था उस समय उक्त बाज़ार में एक "सस्ता खद्दर भण्डार" भी खुला था, जो कुछ ही दिनों में बन्द कर दिया गया।

सन १९३७ में जब कांग्रेस ने मुल्क की बागडोर अपने हाथों में ली, तब खादी उद्योग को और भी प्रोत्साहन मिला। १९४२ में १२००२४३० रुपये की खादी देश में उत्पन्न की गई।

करघा उद्योग से जीविकोपार्जन करने वाले सैकड़ों जुलाहे कानपुर के मीरपुर मोहाल में रहते हैं और लाखों रुपये की दरियाँ और अँगौछे बनाकर नित्य बाज़ार में बेंचते हैं और सैकड़ों गाँठ मील का सूत ख़र्च करते हैं। इनके माल के बेचने वाली बीसों दूकानें नौघड़ और जनरलगंज में हैं। सूत का व्यवसाय बहुत कुछ करघा उद्योग पर निर्भर करता है। कानपुर के सूत के व्यापारी मिलों का सैकड़ों गाँठ सूत लेकर कानपुर के तथा अन्य स्थानों के जुलाहों के हाथ बेचते हैं। कानपुर के सूत के व्यापारियों में लाला छाजूराम और हीरालाल सूत वाले प्रमुख हैं।

चमड़े का उद्योग

रुई के उद्योग के अतिरिक्त कानपुर में जिस उद्योग की सबसे अधिक उन्नति हुई वह चमड़े का उद्योग है। जैसा कि

पहले लिखा जा चुका है हमारे जिले में चमारों की संख्या अत्यधिक मात्रा में रही है।

प्राचीन काल में जाजमऊ से लेकर बिठूर तक भयंकर जंगल था। ऊसर बंजर भी हमारे जिले में बहुत मिलता है। इस कारण जानवर भी यहाँ बहुत बड़ी संख्या में पाले जाते रहे हैं। जानवरों के पालने के बाद उनका मरना स्वाभाविक ही है अतएवं यहाँ के चमारों ने उनका उपयोग करना आरम्भ किया।

उत्तर प्रदेश में प्राकृतिक रूप से मरे हुए पशुओं की खाल प्रति वर्ष लगभग १८ लाख होती हैं। इन खालों को उतारना और कमाना चमारों का काम रहा है।

अंगरेजों के आगमन के पश्चात् यहाँ का चमड़े का व्यापार खूब चमका। छावनी के स्थापित हो जाने के बाद कानपुर की बस्ती बढ़ने लगी। आस-पास के गाँवों की छोटी जातियाँ चमार आदि जमींदारों के अत्याचारों से त्रस्त होकर शहर में जीविकोपार्जन के निमित्त आने लगीं। फलस्वरूप फ़ौज की आवश्यकता के लिये छोटे-छोटे ठेकेदार इन चमारों से बूट तथा कारतूस की पेटियाँ, घोड़ों का साज सामान बनवाने लगे। पहले यह उद्योग छोटे रूप में ही चलता रहा परन्तु आगे चल कर इसे बढ़ाने की आवश्यकता प्रतीत हुई और उसके लिये यहाँ पूरी सुविधा थी।

अर्थ शास्त्र की दृष्टि से किसी भी क्षेत्र में उद्योग की उन्नति और प्रसार के लिये निम्न बातों का होना आवश्यक है :—

(१) कच्चा माल सरलता से पर्याप्त मात्रा में मिल जाना; (२) सस्ते श्रमिकों का मिलना; (३) बने हुये माल की खपत के लिये स्थानीय बाजार का होना; (४) यातायात साधनों का होना ताकि दूसरे स्थानों में भी उसका वितरण सरलता से हो सके; (५) उद्योग की उन्नति के लिये पूँजी का लगाना।

हम पहले कह चुके हैं कि हमारे जिले में उसके हरे-भरे होने के कारण, जानवर बहुत बड़ी संख्या में पाले जाते हैं। हमारे पड़ोसी जिले उन्नाव, फतेहपुर आदि में भी पशुपालन का काम पर्याप्त रहा है। अतः कच्चा माल प्राप्त होने की दृष्टि से यहाँ चमड़ा खूब मिलता रहा है क्योंकि जानवरों के मरने से उनकी खाल चमार लोग उपयोग में लाते रहे हैं। दूसरी ओर चमड़ा रंगने के लिये बबूल की छाल काम में आती है, जो हमारे जिले में बहुत बड़ी मात्रा में उत्पन्न होता है। यों तो बबूल सभी प्रकार की मिट्टी में उग आता है परन्तु इसके लिये बहुत ऊँचे तापक्रम की आवश्यकता होती है। इसकी उपज के लिए ऊसर भूमि सबसे अधिक लाभप्रद है। ऊसर भूमि में क्षार (अलकली) अधिक मात्रा में होता है जो बबूल की उन्नति के लिये बहुत लाभप्रद है। इसी कारण ऊसर की क्षार भूमि को उपजाऊ बनाने के लिए बबूल के बन आरोपण करने की योजना भारत सरकार काम में लाने जा रही है। चूँकि बबूल का खाद्य पदार्थ क्षार ही है इस कारण बबूल की खेती से क्षार निकल जाता है और उपजाऊ भूमि रह जाती है। कृषि विभाग की खोज से यह

परिणाम निकला है कि अपने आस-पास के ज़िलों की भूमि, विशेष रूप से उन्नाव ज़िले की भूमि संसार में सबसे अधिक क्षार वाली भूमि है। यही कारण है कि यहाँ शोरे का काम भी बहुत पहले से नुनियाँ लोग करते रहे हैं। आज भी देहात में लोग रेहू से कपड़े साफ़ करते हैं। इस प्रकार चमड़े के उद्योग की उन्नति के लिये बबूल की छाल सबसे आवश्यक वस्तु है जो हमारे ज़िले से तथा आस-पास के ज़िलों से बहुत बड़ी मात्रा में प्राप्त होता रहा है। इस प्रकार प्रारम्भिक काल से ही चमड़े का व्यापार उत्तरोत्तर उन्नति करता गया और आज हमारा नगर न केवल भारतवर्ष के ही वरन् संसार के चमड़े के व्यापार में प्रमुख स्थान रखता है।

सस्ते श्रमिकों की दृष्टि से भी यहाँ चमारों की काफ़ी बस्ती रही है जो चमड़े के काम में काफ़ी कुशल थे। गाँवों के अत्याचारों ने उन्हें शहर में बसने के लिये बाध्य किया और दूसरे देशों की अपेक्षा थोड़ा पारिश्रमिक पाने पर भी वे योग्यता से काम करने लगे। यही कारण है कि आज गाँवों में मज़दूरों का नितान्त अभाव हो गया है और शहर से अधिक मज़दूरी देने पर भी कुशल मज़दूर नहीं मिलते।

कानपुर में छावनी होने के कारण चमड़े के लिए बाज़ार खोजने की भी आवश्यकता नहीं पड़ी और बहुत बड़ी मात्रा में यहाँ की बनी हुई वस्तुओं की खपत होने लगी। आगे चलकर रेलवे और पक्की सड़कें बन जाने पर यातायात की कोई असु-

विधा न रही और गंगा के किनारे होने के कारण पहले भी कोई विशेष कष्ट न था। अंगरेज उद्योगपतियों ने पूँजी लगाई जिससे यहाँ के व्यापार को अर्थशास्त्रीय दृष्टिकोण से सभी प्रकार की सुविधायें प्राप्त हो गईं और किसी प्रकार की अड़चन सामने न रही।

चमड़े के उद्योग में कच्ची खालों का व्यापार काफ़ी महत्वपूर्ण स्थान रखता है। खालें दो प्रकार की होती हैं, एक तो "मुर्दारी" अर्थात् उन जानवरों की खालें जो अपनी मृत्यु से मरते हैं, और दूसरी "हलाली" अर्थात् वे खालें जो जानवरों को मार कर तैयार की जाती हैं। कानपुर में दोनों प्रकार की खालों का काफ़ी व्यापार होता है और इस व्यापार को करने वाली सौ से ऊपर दुकानें हैं और प्रायः सभी मुसलमानों के हाथों में हैं। चमड़े के कुछ प्रमुख व्यापारी ये हैं :—

१—बाबू हमजा—मालिक नेशनल टैनरी तथा यू० पी० टैनरी। २—हाजी समी और मोहम्मद शरीफ़—मालिक हिन्दुस्तान टैनरी। हाजी समी कानपुर म्युनिसिपल बोर्ड के बहुत दिनों तक सीनियर वाइस चेयरमैन रहे हैं और एक प्रसिद्ध रईस हैं। मोहम्मद शरीफ़ कानपुर के प्रसिद्ध मुसलमान श्री दिलदार खाँ साहब के साहबजादे हैं। ३—मियाँ लतीफ़—ईस्टर्न टैनरी के मालिक हैं। ४—रहीम बख़श फैयाजहुसेन चमड़े के एक मशहूर अढ़तिया हैं।

कुछ अन्य प्रसिद्ध अढ़तिये और भी हैं जैसे: —

१—सरताज हाइड एन्ड स्किन कारपोरेशन

२—फ़जल करीम

३—मुजफ्फ़र इकबाल हुसेन

४—हारून हिसामुद्दीन

५—अब्दुस्सलाम महम्मद फ़ारूक

६—एच० फ़जलहुसेन एच० गुलाम रसूल

७—असगर अली दादा मियाँ

८—हाजी जाहिद अली अवसार अहमद

९—हाजी अब्दुल्ला एन्ड सन्स

१०—नत्थू मोहम्मद इस्माइल

११—क़यूम ब्रादर्स

१२—नूरुल इस्लाम एन्ड कम्पनी

१३—शरीफ़ एन्ड कम्पनी—इनकी एक टैनरी भी उन्नाव में है।

यहाँ पर इन दोनों प्रकार की खालों की आमदनी और रवानगी भी काफ़ी होती है। कानपुर में मुरदारी खालें गोरखपुर से पर्याप्त संख्या में आती हैं। चौरी चौरा की मुर्दारी खालों की यहाँ बड़ी अच्छी बिक्री होती है। अन्य जिले जहाँ से यहाँ खालें आती हैं ये हैं:—

लखीमपुर, सीतापुर, उन्नाव, शाहजहाँपुर, मुरादाबाद, बरेली, फ़तेहपुर, इलाहाबाद (भरवारी के बाजार से), बाँदा,

हमीरपुर, मकनपुर, फ़र्रुख़ाबाद, बहराइच, गोंडा, बस्ती, आगरा। नैपाल की खालें भी बहराइच ज़िले से आ जाती हैं।

"हलाली" खालों का आयात रामपुर, मुरादाबाद, अंबाला, झाँसी, ललितपुर, ओरई, बरेली, बुलन्द शहर, खुर्जा, देहली, मथुरा, अलीगढ़, आगरा, हमीरपुर, मेरठ, मुज़फ्फ़र नगर, सहारनपुर, और फ़र्रुख़ाबाद से होता है। किसी समय 'हलाली' खालें सागर से बहुत आया करती थीं।

कानपुर के बाज़ार से खालों का निर्यात बुन्देलखंड, आगरा, जयपुर, जोधपुर, ग्वालियर, दिल्ली, रेवाड़ी और इलाहाबाद तथा पंजाब के कुछ नगरों को होता है। मद्रास और कलकत्ते के बन्दरगाहों को भी यहाँ से माल जाता है और वहाँ से जहाज़ों के द्वारा विदेशों को भी भेजा जाता है। कुछ दूकानदारों की एजेन्सियाँ कलकत्ते में हैं, कुछ व्यापारी अपना माल सीधा यूरोप को भेजते हैं। किन्तु खालों के अधिकांश व्यापारी कलकत्ते के निर्यात करने वाले यूरोपियन फर्मों के हाथ अपना माल बेंच देते हैं। मुर्दारी खालों की इटली में अच्छी खपत होती है और हलाली की जर्मनी में। भैंसों और बकरियों की खालें अमेरिका भेजी जाती हैं।

खालों के व्यापार के कानपुर शहर में दो बड़े बाज़ार हैं। दोनों अनवरगंज वार्ड के हीरामन के पुरवा में हैं। फूल वाली गली में कतरन, और गाँवों में टैन की हुयी खालें बिकती हैं और पेंचबाग का बाज़ार सोमवार और शुक्रवार को लगता है जहाँ

गाँवों की टैन की हुई खालों और कच्चे माल का व्यापार होता है। कतरन का व्यापार दोनों बाज़ारों में नीलाम के द्वारा होता है।

बछड़ों की खालों के दाम अधिक होते हैं क्योंकि वे हल्की होती हैं और उनकी वार्निश में कम परिश्रम पड़ता है। ये थोक लगाकर और नीलाम के द्वारा बेची जाती हैं।

खालों का व्यापार बरसात में बहुत धीमा पड़ जाता है और अक्टूबर से मार्च तक ख़ूब ज़ोरों से चलता है। माल की आमदनी और चालान रेल, मोटर और भैंसागाड़ियों द्वारा होता है। व्यापारी या तो स्वयं अपना माल लाते हैं या रेल से भेजते हैं। माल की बिक्री अढ़तियों के द्वारा होती है, जिन्हें आढ़त मिलती है। गाय की खाल पर कम और भैंस की खाल पर अधिक व्यापारी को धर्मादे खाते भी २० खालों पर बारह आना के हिसाब से देना पड़ता है। खरीदवाले को बिकवाल से चार-छै आना कोड़ी बट्टा भी मिलता है। खालों का व्यापार करोड़ रुपये से ऊपर पहुँच जाता है। सन् २४ के अंकों से पता चलता है कि कानपुर में आठ टैनरियाँ थीं जिनमें ४३०० आदमी काम करते थे।

जूते

चमड़े का व्यापार करने वालों में से आधे से ज्यादा जूते का कार-बार करते हैं और वे प्रायः मुसलमान और चमार ही होते हैं। जूते दो किस्म के बनते हैं, घटिया और बढ़िया। यदि

बढ़िया का दाम १६) और २०) रु० होता है तो घटिया का दाम १०) और १५) रु० होता है। बढ़िया १००० जोड़ा और घटिया १५०० जोड़ा प्रति दिन बनते हैं। जूतों के व्यापार के साथ उससे सम्बन्धित सूत, फुल्ली, स्क्रू, कील, टैक, फीता और तल्ले की पालिश का भी रोजगार चलता है। हाथ से जूते बनाने वालों का काम प्रायः ठेके से होता है किन्तु कुछ लोग मासिक तनख्वाह पर भी रखे जाते हैं। कुछ दूकानदार अपनी छपी हुई सूचियाँ भेजते हैं और कुछ के एजेन्ट भी दौरा करते हैं। मुन्डे और गुर्गाबी जूते बनाकर प्रायः बंगाल भेजे जाते हैं और तीन चार हजार की संख्या में प्रति दिन तैयार होते हैं। जूते बनाने वालों के करीब ४० कारखाने हैं जिनमें से निम्नलिखित मुख्य हैं :—

गवर्नमेन्ट हारनेस और सेडलरी फैक्टरी, कोपर एलन कम्पनी, नार्थवेस्ट टैनरी, सन शू फैक्टरी अब्दुल ग़फ़ूर शू फैक्टरी, रऊफ कम्पनी कानपुर लेदर वर्क्स, एहसान इलाही, एशियन बूट फैक्टरी, कर्जन लैदर वर्क्स, अमीर एन्ड सन्स, खत्री बूट हाउस आदि। इन कारखानों की दूकानें, परेड, ठण्ढी सड़क मेस्टन रोड, हाल्सी रोड और मूलगंज में हैं।

काठी

तीन हजार से ऊपर आदमी काठी बनाने का काम करते हैं और १००० से अधिक काठियाँ कानपुर में बनकर बिकती हैं। यहाँ की काठियाँ सरकारी खरीद के अलावा पंजाब और काबुल

को भी जाती हैं। रजवाड़ों में भी इनकी माँग काफ़ी रहती है। काठी का काम अधिकतर लोग ही अधिकतर करते हैं। काठी के अतिरिक्त चमड़े के सन्दूक, हैंड बैग और कैबिन बक्स भी यहाँ काफ़ी बनते हैं और लगभग तीन-चार हज़ार आदमी इस काम में भी लगे रहते हैं। इनका सौदा प्रायः इन्च के भाव से होता है। सूट केस अधिकतर कलकत्ते भेजे जाते हैं। जूते का व्यापार करने वाली ५० से ऊपर बड़ी-बड़ी फ़र्में कानपुर में हैं और इतनी ही मशहूर फ़र्में काठी और सूट केस का काम करती हैं।

काठी, सूट केस और हैंड बैग के बनाने वाले तथा व्यापार करने वाले लगभग ५० सज्जन हैं जैसे मोहम्मद हफ़ीज मो० सिद्दीक, अब्दुल मजीद अब्दुल रशीद, इस्लामियाँ लैदर वर्क्स, यंग एन्ड कम्पनी, मो० कासिम ब्रादर्स, यूनियन लैदर वर्क्स, फ़ैयाज़ मोहम्मद, मुश्ताक मोहम्मद, हबीबुलहक एन्ड कम्पनी, मोहम्मद रफ़ीक एन्ड सन्स, रामलाल ब्रादर्स, उस्मानियाँ लैदर वर्क्स, रामलाल चक्खनलाल, किंग लैदर फैक्टरी, अलाबक्स, अब्दुल हक़, स्वदेशी लैदर वर्क्स आदि।

गवर्नमेन्ट हार्नेस एण्ड सैडलरी फैक्टरी

सन् १८५९ में गदर के पूर्णरूप से समाप्त हो जाने पर उस स्थान में, जिसे ज० हैवलाक ने गंगा नदी में पीपों के पुल के पास पुल की रक्षा के लिये बनाया था, फौजी सामान का डिपो तथा चमड़े का कारखाना खोला गया। फ़ौज के लिये चमड़े

ला० केदारनाथ

का सामान भी यहाँ आता था। सन् १८६० में यह चेष्टा की गई कि यहीं चमड़ा पकाकर चमड़े का सामान तैयार किया जाय। कै० जान स्टीवार्ट की देखरेख में एक हार्नेस डिपो खोला गया। उक्त कार्य में सफलता मिली और सन् १८६३ में एक गवर्नमेन्ट फैक्टरी खोलने का निश्चय किया गया। उक्त पाँप के पुल के पास ही अस्थाई रूप से एक इमारत खड़ी की गई। सन् १८६७ में एक बड़ा कारखाना खोला गया और धीरे-धीरे उसमें और वृद्धि होती रही।

प्रयोग के तौर पर खोले गये उस हार्नेस डिपो ने सन् १८८० में एक बहुत बड़े कारखाने का रूप धारण कर लिया था। सन् १८८३ में कर्नल स्टीवार्ट के अवकाश ग्रहण कर लेने पर कर्नल पाल बैडले कारखाने के निरीक्षक नियुक्त हुये। कर्नल स्टीवार्ट ने आगरे में जाकर "स्टीवार्ट टैनरी एण्ड लेदर इक्विपमेंट फैक्टरी" की स्थापना की जिसे बाद में वान डर वेन्स नामक एक जर्मन व्यापारी ने खरीद लिया और उसे कानपुर उठा लाया।

कूपर एलेन एण्ड कम्पनी

मि० विलियम अर्नशा कूपर तथा मि० जार्ज एलेन ने सन् १८८० में उक्त कारखाना खोला। सर्व प्रथम परमट के पास एक छोटे रहायशी बंगले में काम आरम्भ हुआ। सन् १८८३ में कम्पनी को पहला सरकारी ठेका मिला। धीरे-धीरे उस के कार्य में ज्यों-ज्यों वृद्धि हुई कारखाने की इमारत भी बढ़ती गई। सन् १९११ में इसे लिमिटेड कम्पनी में परिणत कर दिया गया।

सन् १९०४ में कम्पनी ने नार्थवेस्ट टैनरी कम्पनी को भी जो नागरिकों के उपयोग के लिए सामूहिक पैमाने पर जूते बनाने वाला देश का एकमात्र कारखाना था, अपने में मिला लिया। प्रारम्भ में खोला गया यह छोटा-सा कारखाना आज अपने ढंग का सम्भवतः संसार में सबसे बड़ा कारखाना है। सन् १९२० में इसे ब्रिटिश इण्डिया कार्पोरेशन में मिला दिया गया।

इस समय यह कारखाना समस्त एशिया में चमड़े का सबसे बड़ा कारखाना है तथा फौज के लिए जूते बनाने का इतना बड़ा कारखाना तो संसार में अन्यत्र कहीं नहीं है। इस कम्पनी का क्रोम का चमड़ा बहुत बड़ी मात्रा में विदेशों को भी भेजा जाता है।

नार्थ वेस्ट टैनरी कम्पनी

सन् १८९२ में उक्त कम्पनी का निर्माण मि० एडवर्ड क्वाय ने मि० टी० टी० बांड के सहयोग से किया। मि० डब्ल्यू० बी० शीवान, जो कूपर एलेन कम्पनी में कुछ वर्षों तक काम कर चुके थे, इस कम्पनी में चले आये और शीघ्र ही इस कारखाने का बना चमड़ा अत्यधिक प्रसिद्ध हो गया। सन् १८९७ में कम्पनी लि० संस्था हो गई और सन् १९०४ में मेसर्स कूपर एलेन एन्ड कम्पनी इसके मैनेजिंग एजेन्ट्स नियुक्त हुये। सन् १९२० में यह कारखाना भी ब्रिटिश इण्डिया कार्पोरेशन में मिला दिया गया। प्रसिद्ध 'फ्लेक्स' के जूते इस कम्पनी में ही बनते हैं।

वान डर वेन्स टैनरी

सन् १९०० में आगरे के मि० वानडर वेन्स नामक एक जर्मन व्यापारी ने जुही में एक बहुत बड़ी टैनरी "वेन्स टैनरी एण्ड लेदर इक्विपमेंट फैक्टरी" के नाम से खोली। नार्थ वेस्ट टैनरी के मि० डब्लू० बी० शीवान अब इस कारखाने में चले आये। बहुत शीघ्र ही उक्त टैनरी कूपर एलेन कम्पनी की सफल प्रतिद्वन्द्वी बन गई जिससे कूपर एलेन वाले उससे प्रतिस्पर्धा रखने लगे। सन् १९०३ में मालिकों से मतभेद हो जाने के कारण श्री शीवान ने नौकरी छोड़ दी और इसके बाद ही कम्पनी फेल हो गई। उसकी इमारत तथा मशीनरी कूपर एलेन एण्ड कम्पनी ने खरीद ली। जिस स्थान में उक्त टैनरी थी उसमें आजकल काकोमी मिल है जो कि कानपुर काटन मिल की ब्रांच है। वान डर वेन्स के इस उद्योग से कानपुर के चमड़े के व्यवसाय को एक नयी प्रेरणा मिली और लोगों ने इस कारखाने की भूलों से शिक्षा ली।

श्री वान डर वेन्स ने टैनरी के अतिरिक्त एक बड़ी कपास ओटने की मिल तथा एक ब्रुश फैक्टरी भी बाँस मंडी में स्थापित की थी। काम फेल होने पर जिनिंग फैक्टरी वोल्कर्ट ब्रदर्स के तथा ब्रुश फैक्टरी मेसर्स एच० वेविस एण्ड कम्पनी के अधिकार में चली गई।

जाजमऊ टैनरी

वान डर वेन्स टैनरी से पृथक् हो जाने के बाद मि० शीवान

ने जाजमऊ में अपनी टैनरी खोली। इस कारखाने में बने हुये चमड़े तथा इसके पूर्व नार्थ वेस्ट टैनरी तथा वान डर वेन्स टैनरी में आपके द्वारा बनाये जाने वाले चमड़े की ख्याति दूर-दूर तक फैल गई। "सून साहब के चमड़े" के नाम से कानपुर का सबसे बढ़िया चमड़ा प्रसिद्ध हो गया।

इसके बाद कानपुर टैनरी, इण्डियन नेशनल टैनरी तथा यूनाइटेड प्राविन्सेज टैनरी के नाम से अन्य चमड़े के कारखाने भी खुले।

इसके अतिरिक्त मन्नाना पुरवा की 'कानपुर टैनरी' और 'एस० बी० टैनरी' 'यू० पी० टैनरी' भी हैं, जिनमें लगभग एक हज़ार आदमी काम करते हैं। चमड़े की फैक्टरियों का एक विशेष केन्द्र जाजमऊ भी हो गया है।

चमड़ा उद्योग और सहकारी समितियाँ

संयुक्त राष्ट्र संघ के खाद्य एवं कृषि संगठन के चर्म उद्योग विशेषज्ञ, श्री एफ० एच० हुक ने उत्तर प्रदेश के चुने क्षेत्रों में चमड़ा उतारने और कमाने वालों की सहकारी समिति बनाने आवश्यकता पर जोर दिया है। श्री हुक्क ग्रामोद्योग के रूप में चमड़ा उद्योग के विकास के सम्बन्ध में उत्तर प्रदेश सरकार को सलाह देने और सहायता पहुँचाने के लिये उक्त संगठन की ओर से नियुक्त किये गये हैं।

विशेषज्ञ ने उत्तर प्रदेश के चमड़ा उद्योग की स्थिति का पर्यायलोचन किया है और सितम्बर १९५१ से लेकर नवम्बर,

१९५३ तक की अवधि के सम्बन्ध में राज्य सरकार को जो अन्तरिम रिपोर्ट दी है, उसमें इस सम्बन्ध की अनेक सिफारिशें की हैं।

उत्तर प्रदेश के चमड़ा उद्योग की सबसे बड़ी समस्या यह रही है कि राज्य में उतारी जाने वाली खाल विशेष कर प्राकृतिक रूप में मरे हुये पशुओं की खाल की किस्म में कैसे सुधार किया जाय।

ख़ाल उतारने के लिये जिस पशु को मारा जाता है, उसकी लाश से अच्छी तरह ख़ून निकाल दिया जाता है; अतएव चमड़े के रोजगारी और चमड़ा कमाने वाले बड़े-बड़े संगठन सामान्यतः इसी प्रकार की ख़ाल पसन्द करते हैं। किन्तु इस प्रकार इतनी खाल नहीं मिल पाती कि चमड़ा कमाने वाली फर्मों की आवश्यकता पूरी हो सके। अतएव कानपुर की चमड़ा कमाने वाली फर्में अन्य राज्यों से ऐसी खालों का आयात करती हैं।

प्रशिक्षण केन्द्रों में कार्य

उत्तर प्रदेश की ग्रामीण अर्थ व्यवस्था में प्राकृतिक रूप से मरे पशुओं की खाल के व्यवसाय का महत्व समझ कर ही सरकार ने सर्वप्रथम अक्टूबर, १९५३ को खाद्य तथा कृषि विशेषज्ञ की देख-रेख में लखनऊ स्थित बक्शी के तालाब में खाल उतारने और कमाने का केन्द्र खोला। इस केन्द्र का मुख्य उद्देश्य खाल के व्यवसाय, अर्थात् खाल उतारने और चमड़ा कमाने के लिये ग्रामीण चमारों द्वारा काम में लाये जाने वाले उपायों में

सुधार करने के लिये व्यवहारिक प्रदर्शन करना तथा धीरे-धीरे ग्रामीण क्षेत्रों में सुधरे हुये तरीक़ों का प्रचार करना था।

इस केन्द्र में व्यवहारिक प्रदर्शन करने की सुविधायें दी गई हैं और १९५३ के आरम्भ से ही मरे पशुओं की खाल का व्यवसाय करने वालों को दो महीने की ट्रेनिंग बराबर दी जा रही है। एक बार में २० प्रशिक्षार्थियों के एक जत्थे की भर्ती की जाती है और उन्हें ४५ रु० प्रतिमास की छात्रवृत्ति दी जाती है।

उक्त विशेषज्ञ ने सिफारिश की है कि कुछ चुने हुये क्षेत्रों में विशेष कर सामुदायिक योजना क्षेत्रों में देहाती खाल उतारने तथा साफ़ करने वालों की सहकारी समितियाँ बनाई जायँ, जो गाँवों में खाल उतारने के स्थान निर्मित करें, सुधरे तरीकों का प्रचार करें, खालों तथा अन्य वस्तुओं की हाट व्यवस्था करें और खालों तथा अस्थि पंजरों आदि के लाने ले जाने का प्रबन्ध करें।

चमड़ा कमाने की सीधी-साधी देहाती मशीनों के निर्माण को बढ़ावा देना चाहिये और उनका मूल्य इतना कम होना चाहिये ताकि चमड़ा कमाने के देहाती दल इन मशीनों को खरीद सकें। चमड़ा कमाने की सामग्री तैयार करने के लिये बबूल के पेड़ विशेष कर ऐसे देहाती क्षेत्रों में अधिकता से लगाये जायँ, जहाँ चमड़ा कमाने का उद्योग चल रहा हो।

शक्कर व्यवसाय

कानपुर शक्कर व्यवसाय का एक प्रमुख केन्द्र है। वर्तमान समय में यह एक जानने का विषय है कि एक समय इस नगर में शक्कर का एक भी मिल न होते हुये भी यह भारतवर्ष में शक्कर के व्यापार के केन्द्र रूप में कैसे दिखाई देता था।

जब हम शक्कर व्यापार के अतीत की ओर दृष्टिपात करते हैं तो देखते हैं कि बीसवीं शताब्दी के प्रारम्भ में यहाँ खाँडसारी शक्कर, (देशी शक्कर) का व्यापार ही प्रमुख रूप से था। उस युग में आजकल के समान शक्कर पट्टी में शक्कर व्यवसाय का कोई अस्तित्व न था। उन दिनों जनरलगंज में शक्कर का व्यापार होता था। देशी शक्कर के प्रमुख व्यापारियों में हीरालाल घनश्याम दास, सरजूप्रसाद, जमनाप्रसाद तथा वाजिदअली आबिद अली आदि फर्मों का विशिष्ट स्थान था। उनमें से सरजूप्रसाद का फर्म अब तक क़ायम है।

समय बदला, व्यापारिक क्षेत्र में प्रगति हुई और भारतवर्ष में जावा शक्कर, (विदेशी शक्कर) का व्यापार जोर पकड़ने लगा। धीरे-धीरे शक्कर के व्यापार ने देश के भीतरी भाग में भी अड्डा जमाया। इसका कारण यह था कि विदेशी शक्कर प्रमुख रूप से मशीनों द्वारा तैयार की जाती थी इस कारण यह देशी शक्कर से सस्ती मिलती थी। भारत की सीधी जनता का सस्ते सौदे की ओर आकर्षित होना स्वाभाविक ही था; इसी कारण विदेशी शक्कर का व्यापार भारत में उत्तरोत्तर बढ़ता गया।

फलस्वरूप कानपुर में भी इसका व्यापार तेजी से बढ़ा। यह समय प्रथम महायुद्ध का था। इसी समय से शक्कर व्यवसाय का क्षेत्र जनरलगंज से हट कर कलक्टरगंज की ओर बढ़ने लगा।

विदेशी शक्कर के व्यापार में इसी प्रारम्भिक काल में कुछ सिन्धी, गुजराती तथा कच्छी व्यापारियों का पदार्पण हुआ और नगर के कुछ व्यापारियों ने भी योगदान दिया। देश के अन्यान्य भागों के साथ-साथ कानपुर के आस-आस भी शक्कर की कुछ मिलें स्थापित हुईं। इन मिलों में गुड़ को साफ करके शक्कर बनाई जाती थी। विदेशी शक्कर के व्यापारियों में मातादीन भगवानदास, उत्तमचन्द चेलाराम, दाऊद मोती, गणेशप्रसाद, दुर्गाशंकर; बद्रीदास, प्यारेलाल तथा नानकराम चौथमल आदि प्रमुख फर्म थे। इनमें दाऊद मोती फर्म अब नहीं है।

सन् १९२०, तथा २१ का समय शक्कर व्यापार का एक प्रगति युग था। इसका एक विशेष कारण था। शक्कर की मिलें इस समय उन स्थानों में स्थापित हुईं जहाँ नील का व्यापार होता था। इन नील की कोठियों के मालिक अंग्रेज थे। इन मालिकों एवं मजदूरों में चलने वाले संघर्ष के फलस्वरूप पूज्य महात्मा गाँधी को सत्याग्रह करना पड़ा जिसका परिणाम यह हुआ कि नील का व्यापार ठप हो गया और कोठियाँ टूट गईं। नील का व्यापार समाप्त होने पर इन व्यापारियों ने अधिकतर उत्तर बिहार तथा उत्तर प्रदेश के उत्तरी-पूर्वी जिलों में चीनी

मिलें स्थापित कीं। इन मिलों का माल भी कानपुर के बाजार में बिकने लगा और कानपुर का शक्कर व्यवसाय उत्तरोत्तर उन्नति करता गया।

शक्कर व्यवसाय के कानपुर में बढ़ने का एक कारण और भी है। बिहार और पूर्वी उत्तर प्रदेश के ज़िलों के मिलों की मैनेजिंग एजेन्ट मेसर्स बेग सदरलैंड कम्पनी थी जिसका प्रधान कार्यालय कानपुर में ही था। इस कारण इन मिलों का सारा माल कानपुर के बाजार से ही वितरित होता था। यही कारण है कि कानपुर में शक्कर का व्यापार अत्यधिक बढ़ा और यह नगर भारत के प्रमुख शक्कर के बाजारों में हो गया।

शक्कर व्यापार की इस प्रगति के फलस्वरूप कानपुर में भी आस-पास गुड़ से शक्कर बनाने की कई मिलें स्थापित हुईं जिनके नाम गुटैया शुगर मिल (कमलापत मोतीलाल शुगर मिल), कानपुर शुगर मिल, बैजनाथ बालमुकुन्द शुगर मिल तथा उन्नाव शुगर मिल हैं। इन मिलों में उस समय की आधुनिकतम मशीनों का प्रयोग किया गया था। इन सभी मिलों में गुड़ को साफ़ करके शक्कर बनाई जाती थी। देशी शक्कर के व्यापार की अपेक्षा विदेशी शक्कर के अधिक चलने का कारण यह भी था कि यह अधिकांश मशीनों द्वारा तैयार की जाती थी जिसके कारण यह देशी शक्कर से सस्ती होती थी। इसी दृष्टि-कोण से देशी व्यापारियों ने भी आधुनिकतम मशीनों का प्रयोग आरम्भ किया। इन मिलों में सर्व प्रथम गुड़, गलाने की मशीन

में डाला जाता है जहाँ यह गुड़ बड़े बड़े हौजों में भाप के द्वारा गला कर पानी कर दिया जाता है। इसके पश्चात् यह रस एक अन्य मशीन में जिसे 'टेलर फ़िल्टर' कहते हैं, डाला जाता है, जहाँ यह टाट के बड़े-बड़े थैलों द्वारा छाना जाता है। यहाँ से छानने के पश्चात् फिर यह रस 'आर्डिनैरी फ़िल्टर' में जाता है जहाँ कपड़े के छन्नों से यह रस साफ़ किया जाता है। यह साफ़ रस फिर 'वैकूअमपैन' में डाला जाता है, इसके पश्चात् 'कन्डेंसर' में डाल कर इसे गाढ़ा किया जाता है जहाँ इस रस से पानी का तत्व अलग कर लिया जाता है और राब बन जाती है। यह राब 'क्रिस्टलाइजर' में निकाल ली जाती है जिसमें यह आठ या दस घंटे तक ठंढी होती रहती है जिससे दाना गाढ़ा हो जाता है। इसके पश्चात् यह दाना 'सेन्टीफ्यूगल' मशीन में जाता है। इस मशीन की चाल बहुत तेज़ होती है तथा तीव्रता से घूमती है। यहाँ पर पानी की पिचकारियों से राब साफ़ की जाती है। इस क्रिया द्वारा राब से शक्कर प्रथक हो जाती है और शीरा अलग हो जाता है। इस प्रकार शीरा, शक्कर के बाई प्रोडक्ट के रूप में मिल जाता है जो शराब बनाने तथा तम्बाकू के व्यापार में काम आता है। 'सेन्टीफ्यूगल' मशीन के पश्चात् शक्कर सूखने की मशीन में जाती है और बाद में पीसकर शक्कर तैयार कर ली जाती है। इसी प्रकार की मशीनें उपर्युक्त मिलों में प्रयुक्त हुई थीं जिनमें मशीनों के चलाने के अतिरिक्त मजदूरों का बहुत कम उपयोग होता था।

गुटैया शुगर मिल

इस मिल की स्थापना श्री देवीदत्त पाटोदिया ने बी० बी० सी० आई० रेलवे के पहले स्टेशन गावतपुर में की थी। इसमें गुड़ साफ़ करके शक्कर बनाई जाती थी। थोड़े ही समय में देवीदत्त पाटोदिया ने इस मिल की उत्पादन शक्ति दूनी कर दी थी और अपने पुत्र के नाम पर इस मिल का नाम वासुदेव शुगर मिल रक्खा। किन्तु शीघ्र ही आर्थिक संकट के कारण उन्हें इस मिल से पृथक हो जाना पड़ा तथा इस मिल को जुग्गीलाल कमलापत फर्म के लाला कमलापत सिंहानियाँ तथा चिम्मनलाल मोतीलाल फर्म के लाला मोतीलाल ने मिलकर खरीद लिया तथा इसका नाम कमलापत मोतीलाल शुगर मिल हो गया। प्रारम्भ में गुटैया शुगर मिल की शक्कर का बड़ा प्रचार हुआ और देश के विभिन्न भागों में इसकी खपत होने लगी। इस प्रकार चलने पर सन् १९३७–३९ के बीच इस मिल को गुड़ से शक्कर बनाने के स्थान पर सीधा गन्ने से शक्कर बनाने की मिल में परिवर्तित कर दिया गया। परन्तु आस-पास के क्षेत्र में गन्ना अधिक पैदा न होने के कारण इस मिल को लाभ न हुआ जब कि इस प्रकार की दूसरी मिलों को पर्याप्त लाभ होता था। इसी कारण द्वितीय महायुद्ध के पश्चात् इस मिल को किसी सुविधाजनक स्थान में ले जाने का विचार किया गया और सन् १९४७ में यह मिल यहाँ से उठकर फैज़ाबाद ज़िले के मसौदा नामक स्थान में चली गई जहाँ पर अब यह सफलता पूर्वक चल

रही है। मसौदा ई० आई० आर० मुख्य लाइन पर एक स्टेशन है। इस समय इस मिल का काम श्री विशुनलाल देखते हैं।

कानपुर शुगर वर्क्स

इस मिल की स्थापना कोपरगंज के पास साझीदारों की लिमिटेड फर्म की हैसियत से मेसर्स बेग सदरलैण्ड द्वारा की गई थी। यह मिल भी गुड़ से शक्कर तैयार करता था और आधुनिकतम मशीनों से सुसज्जित था। यह मिल उत्तरोत्तर उन्नति करता गया तथा इसी के मुनाफे से गोरखपुर जिले के गौरी बाजार स्टेशन पर इसी की शाखा एक अन्य मिल स्थापित किया गया जो गन्ने से शक्कर तैयार करता है। यह मिल समय की परिस्थितियों के हिसाब से बराबर चलता रहा किन्तु सन् १९३२ के बाद जब गन्ने की शक्कर बनाने के मिल अधिक हो गये, इस प्रकार के मिलों को कोई लाभ न रहा किन्तु फिर भी यह मिल किसी प्रकार चलता रहा। सन् १९३७ से ४० की शक्कर की मन्दी का भी इस मिल पर बुरा प्रभाव पड़ा और अन्त में सन् १९४२ में सरकार द्वारा शक्कर पर लगाये गये नियंत्रण के कारण मिल बिलकुल बन्द हो गया। इसी मिल में काम सीखे हुये पं० विश्वम्भर दयाल शुक्ल शक्कर संसार के एक प्रसिद्ध केमिस्ट रहे हैं। इसके कार्यकर्ताओं ने मिल बेचने का विचार किया किन्तु इस प्रकार के मिल की कोई उपयोगिता न होने के कारण पूरा मिल न बिक सका और इसकी मशीनें फुटकर रूप में एक-एक करके बिक गईं।

इस मिल में शीरे से शराब बनाने का कारखाना भी था जो अब तक है। कानपुर में शीरा न मिलने के कारण इसे बाहर से शीरा मँगाना पड़ता है।

बैजनाथ बालमुकुन्द शक्कर मिल

यह मिल भी गुड़ से शक्कर बनाने के लिये कानपुर अनवरगंज में स्थापित हुआ था। इसके मालिक लाला बाँकेबिहारीलाल सिंहानियाँ थे। यह मिल भी समयानुसार चलता रहा किन्तु सन् ४२ के लगाये गये शक्कर नियंत्रण के प्रसाद स्वरूप यह मिल भी बन्द हो गया। इस मिल का उप-कारखाना शराब मिल जो शीरे से शराब तैयार करता है अब भी चल रहा है। इसकी मालिक लाला बाँकेबिहारीलाल की धर्मपत्नी ही हैं।

उन्नाव शुगर वर्क्स

यह मिल उन्नाव स्टेशन से डेढ़ मील पर कानपुर की ओर स्थित है। इस मिल में भी गुड़ से शक्कर तैयार की जाती थी। समय की बदलती परिस्थितियों के कारण मिल के मालिकों में बहुत परिवर्तन हुए और कई लोगों ने इसे खरीदा। अन्त में सन् १९२३ में इस मिल को लिक्वीडेटर्स ने नीलाम कर दिया जिसे लायलपुर शुगर वर्क्स के मालिक लाला जयरामदास ने खरीदा। लाला जयरामदास, बेग सदरलैण्ड के सेलिंग एजेन्ट तथा पंजाब नेशनल बैंक की कानपुर शाखा के स्थानीय डाइरेक्टर थे। लाला जी मैकरावर्टगंज स्थिति एक बंगले में रहते थे जो बी०

एन० एस० डी० कालेज के होस्टल के रूप में आज भी मौजूद है। लाला जयरामदास जी ने यह मिल नौ लाख रुपये में खरीदा था। इसके साथ भी एक शराब मिल था। किन्तु बाद में इन्हें आर्थिक संकट का अनुभव हुआ इस कारण आपने मातादीन भगवानदास फर्म के मालिक लाला मातादीन को साझीदार बनाया जो इनके खास मित्रों में थे। किन्तु एक साल मिल चलाने के बाद लाभ न देखकर लाला मातादीन साझेदारी से अलग हो गये और लाला जयरामदास को एक पंजाबी फर्म निहालचन्द जगन्नाथ से साझा करना पड़ा। किन्तु तीन साल चलने के बाद मिल पुनः बन्द हो गया तथा दोनों साझीदारों में कानूनी लड़ाई प्रारम्भ हुई जो सन् १९२९ तक चलती रही। चूँकि यह मिल पंजाब नेशनल बैंक में मार्गेज था और लाला जयरामदास रुपया न अदा कर सके अतएव उपर्युक्त बैंक ने मिल को श्रीकृष्ण जगन्नाथ फर्म के हाथ बेच दिया। इस फ़र्म ने भी थोड़ा रुपया देकर इसे मार्गेज रक्खा। यह फर्म शीरे का व्यापार करने वाली कानपूर की प्रतिष्ठित फ़र्म थी। परन्तु इस मिल की परिपाटी के अनुसार इस पर पुनः आर्थिक संकट आया। इसका कारण सरकार द्वारा शक्कर पर लगाया गया उत्पादन कर था जो फरवरी सन् १९३४ में लागू हुआ था। इसके कारण गुड़ से शक्कर बनाने वाले मिल सीधे गन्ने से शक्कर बनाने वाले मिलों की प्रतियोगिता में खड़े न रह सकें और यही कारण है कि सन् १९३५ में यह मिल पुनः बन्द हो गया। इसके

पश्चात् पंजाब नेशनल बैंक ने इसे रायबहादुर ब्रजलाल चौधरी को किराये पर चलाने का दिया। श्री चौधरी फौज में शक्कर के ठेकेदार थे। परन्तु चौधरी साहब भी साल भर चलाने के बाद मिल चलाने में असमर्थ रहे। किन्तु तीन वर्ष का ठेका होने के कारण यह मिल इनके हाथ में ही रहा। आपने द्वितीय महायुद्ध में फौज में भेजने के लिये मसाला पीसने का काम भी किया जिसमें इनके कई साझीदार भी थे, किन्तु इस काम में भी इन्हें लाभ न हो सका और वे भी मिल छोड़कर चले गये।

पंजाब नेशनल बैंक ने इस में गन्ने से शक्कर तैयार करने की मशीन लगाने का भी विचार किया किन्तु यू० पी० शुगर फैक्ट्रीज एक्ट के कारण यह प्रयत्न सफल न हो सका। इस एक्ट के अनुसार १० मील के क्षेत्र में गन्ने से शक्कर बनाने वाले दो मिल नहीं बन सकते। उस समय गुटैया शुगर मिल था ही इस कारण बैंक को सरकार से आज्ञा न प्राप्त हो सकी।

इस मिल की असफलताओं के कारण पंजाब नेशनल बैंक काफ़ी परेशान हो चुका था अतएव उसने लाला करमचन्द थापड़ के हाथ बहुत ही कम मूल्य में मिल बेच दिया। आज भी यह मिल उन्हीं के पास है किन्तु सन् ४२ के शक्कर नियंत्रण की विषमताओं के कारण बन्द ही पड़ा है।

+ + +

कानपुर में शक्कर का व्यापार मुख्यतः शक्कर के वितरण के व्यापार के रूप में रहा है। इस वक्त कानपुर के शक्कर के

बाजार का मुख्य केन्द्र कलेक्टरगंज का वह बाजार है जिसे लाला मातादीन स्ट्रीट कहते हैं। इसे आम तौर से शक्कर पट्टी भी कहा जाता है। इसके अतिरिक्त नयेगंज का बागला बिल्डिङ्ग तथा अन्य कुछ क्षेत्रों में भी शक्कर व्यवसाय से सम्बन्धित फर्में हैं।

कानपुर के बाजार से सारे भारतवर्ष में शक्कर का वितरण होता है। इसी कारण से यहाँ तमाम भारत की मुख्य-मुख्य व्यापारिक मंडियों के बड़े-बड़े व्यापारियों ने अपने-अपने दफ्तर खोले हैं। इस समय यहाँ पर बम्बई, बंगाल तथा आसाम के बड़े-बड़े व्यापारियों की शाखायें हैं।

यहाँ पर व्यापार को संगठित रूप में रखने के लिए कानपुर शुगर मर्चेन्ट्स असोसिएशन नामक एक संस्था है। इसका मुख्य उद्देश्य व्यापारिक झगड़ों को आपस में पंचायत द्वारा निपटाना और शक्कर के व्यापार से सम्बन्धित सभी प्रकार के सुझावों को प्रांतीय और केन्द्रीय सरकारों तक पहुँचाना है। यह संस्था भारत के सभी शक्कर व्यापारी संगठनों से सबसे अच्छी संगठित है। यों तो यह असोसिएशन सन् १९१९ से काम कर रहा है परन्तु पहले यह "शक्कर कमेटी" के नाम से काम करता था। सन् १९३१ के ऐतिहासिक हिन्दू मुस्लिम दंगे में इसके भी आफिस में आग लग जाने से इसका काम उस समय लगभग बन्द-सा हो गया और सन् १९३४ के आरम्भ तक बन्द ही रहा। जब सन् १९३४ की फरवरी में केन्द्रीय सरकार ने शक्कर

ला० जगन्नाथ

पर प्रथम बार उत्पादन कर लगाया तब फिर इसका जीर्णोद्धार स्व० लाला मातादीन जी के कर कमलों द्वारा कानपुर शुगर मर्चेन्ट्स असोसिएशन के रूप में हुआ।

इस असोसिएशन ने अपने शैशवकाल में ही यह अनुभव किया कि भविष्य के सौदों को नियंत्रित रूप में रखने के लिए यह जरूरी है कि एक कोई ऐसी पृथक संस्था हो जो इस क़िस्म के सौदों को सुचारु रूप से चला सके। इसी के परिणाम स्वरूप कानपुर शुगर मर्चेन्ट्स असोसियेशन के प्रयत्नों से अपर इण्डिया शुगर एक्सचेंज की स्थापना हुई। जब तक शक्कर का व्यापार नियंत्रण में नहीं आया उस समय तक उक्त संस्था अपना कार्य बराबर करती रही परन्तु नियंत्रण हो जाने के बाद से अब उसने चाँदी के व्यापार का कार्य आरम्भ कर दिया है।

यहाँ पर इण्डियन इन्स्टीट्यूट आफ़ शुगर टेकनालाजी की प्रयोगशाला और लड़कों को पढ़ाने का कालेज भी है। उक्त संस्था भारत में अपने ढंग की अनोखी है। इसमें पढ़ने वाले छात्र ही शक्कर मिलों में शुगर केमिस्ट के पद पर नियुक्त होते हैं। शक्कर-उद्योग को प्रगति प्रदान करने में उक्त संस्था को भी बहुत बड़ा श्रेय है।

सन् १९४० में प्रान्तीय सरकार की आज्ञानुसार यहाँ इण्डियन शुगर सिंडीकेट का दफ्तर खुला परन्तु बाद में सरकारी आदेशानुसार उसको अपने हाथों ही अपना विघटन करना पड़ा। यह संस्था यू० पी० और बिहार के समस्त मिल

मालिकों की एक बहुत ही शक्तिशाली संस्था थी। इस संस्था का मुख्य कार्य शक्कर के गिरते हुए भावों को रोकना और ऊँचे स्तर के भावों को लाना था। इस संस्था का जन्म सन् १९३७ के उन दिनों में हुआ था जब कांग्रेसी सरकारों ने पहली बार प्रांतों में बागडोर सँभाली थी और उस समय शक्कर के गिरते हुये भावों को देखकर उन्हें यह भय हुआ कि अगर इसमें जल्द ही हस्तक्षेप न किया गया तो इन दोनों ही प्रांतों के लाखों ही काश्तकार बर्बाद हो जायँगे।

इस समय नगर में शक्कर के व्यवसाय में निम्नलिखित प्रसिद्ध व्यवसायिक फर्में संलग्न हैं :—

मातादीन भगवानदास, गणेशप्रसाद दुर्गाशंकर, बद्रीदास प्यारेलाल, रमणलाल बलदेवदास, काशीराम कन्हैयालाल माणिकलाल हरीलाल, प्रभूदयाल बैजनाथ, छगनलाल गिरिधर दास, चुन्नीलाल हीरालाल, पूरनमल कपूरचन्द, ए० एच० भिवन्डीवाला, हरदयाल नेवटिया, परशुराम पारूमल, जस्साराम फतेहचन्द, हरदत्तराय जगदीशदास, प्यारासिंह सीताराम, शुगर डीलर्स, पांडे ब्रदर्स, इन्दरमल लक्ष्मीचन्द तथा शुगर एजेन्ट्स।

प्रथम चार फर्म शक्कर के पुराने व्यवसायी हैं और अब भी शक्कर के व्यापार में मौजूद हैं। ये सभी पहली लड़ाई के समय से काम करने वालों में हैं जिस समय उत्तरी भारत में शक्कर का व्यवसाय सिर्फ कानपुर तक ही सीमित था और देशी शक्कर के व्यापार की बहुतायत थी। इनके समकालीन

अधिकांश व्यापारी अब या तो अपना शक्कर का धंधा बन्द कर चुके हैं या व्यापार से बिल्कुल ही पृथक् हो गये हैं। उपर्युक्त फर्मों का संक्षिप्त परिचय नीचे दिया जाता है :—

मातादीन भगवानदास :—जब पहली लड़ाई के बाद कानपुर ने उत्तरी भारत के एक बड़े वितरण-केन्द्र का काम सँभाला और जब सन् १९३२ में उत्तरी भारत में प्रथम बार यहाँ देशी उद्योग का प्रादुर्भाव हुआ उस समय और उसके बाद भी सन् १९३४ तक फर्म मातादीन भगवानदास के मालिक लाला मातादीन कानपुर के बाज़ार को बराबर कन्ट्रोल करते रहे। इस तरह से न केवल कानपुर के बाज़ार को ही बल्कि शक्कर के सम्पूर्ण भारत के व्यापार को कन्ट्रोल करने का श्रेय इन्हीं को था, क्योंकि कानपुर ही समस्त भारत की शक्कर के वितरण की एकमात्र सबसे बड़ी मंडी थी। भारतीय शक्कर के एक बहुत बड़े भाग का वितरण कानपुर के ज़रिये से होता था और उसमें से भी सबसे बड़ा भाग इनकी ही मार्फत तमाम भारत में फैलता था।

इस समय उक्त फर्म का कार्य लाला दयाराम जी देखते हैं। आप बहुत ही दूरदर्शी, कुशाग्र-बुद्धि तथा प्रतिभा सम्पन्न युवक हैं। आप बड़े ही मिष्टभाषी सरल तथा मृदुल स्वभाव के हैं। आप बुढ़वल शुगर मिल के मैनेजिंग डाइरेक्टर हैं तथा अन्य अनेक सरकारी तथा गैरसरकारी शक्कर सम्बन्धी समितियों में भी प्रभावपूर्ण पदों पर हैं।

गणेशप्रसाद दुर्गाशंकर :—यह फ़र्म भी बहुत पुराना काम करने वाला है। इसके मालिक पं० दुर्गाशंकर जो एक वयोवृद्ध प्रतिष्ठित व्यापारी हैं। वह स्वयं ही इस व्यापार में आये थे। यह उन्नाव ज़िले के बदरका ग्राम के रहने वाले हैं। आपने अपने व्यापारिक काल में बड़े ईमानदारी और दूरदर्शिता से व्यापार किया। अब भी आप व्यापार करते हैं परन्तु अब आपका ध्यान व्यवसाय से उद्योग की ओर अधिक हो गया है। आपने चावल के कुछ कारख़ाने भी खोले हैं और बुढ़वल शुगर मिल के मैनेजिंग डाइरेक्टर हैं।

बद्रीदास प्यारेलाल :—ये घी के मशहूर व्यापारियों में थे। लाला प्यारेलाल ने अपनी व्यापारिक बुद्धि से काफ़ी उन्नति की है। इन्होंने अब कुछ और भी आस-पास के ज़िलों में अपना कार्यक्षेत्र बढ़ाया है। कुछ मिलों में शक्कर के शेयर भी ख़रीदे हैं।

रमणलाल बलदेवदास :—यह गुजराती फ़र्म है। इसके मालिक लाला रमणलाल बुढ़वल शुगर मिल के एक डाइरेक्टर तथा कानपुर शुगर मर्चेन्ट्स असासियेशन के प्रधान मंत्री हैं।

काशीराम कन्हैयालाल :—स्व० लाला काशीराम पहले तुलसीराम जियालाल फ़र्म में काम करते थे। इनकी शक्कर-बाज़ार में ही नहीं किन्तु और बाजारों में भी काफ़ी धाक थी। सन् १९३० के लगभग इन्होंने अपना निजी काम उपर्युक्त नाम से आरम्भ किया, जिसका शक्कर के व्यवसाय में काफ़ी ऊँचा

स्थान है । यह शक्कर मिलों की एजेन्सी तथा अपना निजी व्यवसाय भी करते रहे हैं । इस समय लाला पन्नालाल जी इसके मालिक हैं । आप शुगर असोसियेशन के बहुत वर्षों तक सभापति रहे हैं । आज भी शक्कर व्यवसाय में इनका स्थान प्रमुख है ।

सन् १९३२ में व्यापार के दायरे के बढ़ने के साथ ही साथ व्यापारियों में भी वृद्धि हुई और बाहर के तमाम व्यापारियों ने अपने-अपने आफ़िस इस बड़ी मंडी में खोले । इनमें से मुख्य ये हैं :—ए० एच० भिवन्डीवाला, परशुराम पारूमल, जस्साराम फतेहचन्द, हरदत्तराय जगदीशदास, और प्यारासिंह सीताराम । भिवन्डीवाला फर्म बम्बई की एक बहुत बड़ी और मशहूर फर्म की ब्रांच है । इसने शक्कर के व्यवसाय में बहुत महत्वपूर्ण हिस्सा लिया है । इसके मालिक एक पारसी सज्जन हैं ।

शक्कर की मंडी में पाण्डे ब्रदर्स के मालिक पं० गंगा शंकर का काफ़ी प्रभाव है और दलालों में पं० सुदर्शन बाजपेयी का ।

किराना

कानपुर में वस्त्र-व्यवसाय के अतिरिक्त जो अन्य व्यवसाय उन्नत अवस्था में चल रहे हैं उनमें किराना का स्थान प्रमुख है । यहाँ के व्यापारी आरम्भ ही से किराने की वस्तुयें उनके उत्पत्ति स्थलों से मँगाते रहे हैं जिसके फलस्वरूप आस-पास के ही नहीं दूरवर्ती जिलों के भी फुटकर व्यापारी यहाँ से माल खरीदा करते थे ।

व्यापारिक दृष्टिकोण से टिपटूर से नारियल गोला मँगाना विशेष लाभदायक सिद्ध होता था—इलायची, लौंग और मिर्च आदि प्रायः बम्बई और कलकत्ता से थोक में मँगाई जाती रही हैं, कुछ व्यापारियों ने विदेशों से व्यवहार कर सुपारी आदि सीधे मंगाई, जो लाभकर प्रमाणित हुई। अंग्रेज़ी शासन प्रायः इन सभी वस्तुओं के उत्पत्ति स्थल तक था; अतः इनकी प्राप्ति में विशेष खोज और जानकारी के साथ व्यापारी की सचाई और आर्थिक स्थिति का भी विशेष महत्व रहा है।

बाहर का व्यापारी सहसा यहाँ माल भेजने को तैयार नहीं रहता था। गोले का व्यापार श्रीकृष्ण गोपीकृष्ण जी के फ़र्म में सबसे प्रथम आरम्भ हुआ और इसी फ़र्म के प्रमाणित करने पर कठिनता से अन्य दूकानदारों को सीधे माल मिला। कतिपय व्यापारी, बम्बई कलकत्ता और देहली में विविध वस्तुओं के लिये अपने-अपने अढ़तिये निश्चित कर उन्हीं के द्वारा माल मँगाने लगे। आरम्भ में किराने का थोक व्यापार धनी-मानी ही कर सकते थे क्योंकि बाहरी दूकानदार थोड़ा माल भेजने में अपना लाभ न समझ कर थोड़ा माल भेजने को तत्पर नहीं होते थे लेकिन कुछ समय के उपरान्त पैदावार के स्थानों में छोटे-छोटे व्यवसायी हो जाने के कारण थोड़ा माल भी आने लगा और छोटे दूकानदार भी व्यवसाय करने लगे।

कानपुर में किराने का थोक व्यापार सर्व प्रथम पुराने जनरलगंज में होता था और पेठे वाली गली तक ख़ूब फैला

हुआ था। यहाँ पुराने दूकानदार श्री उदयराम गोपीराम जी, श्री देवीदीन दुर्गाप्रसाद, श्री युगुलकिशार सीताराम, श्रीकृष्ण रामकृष्ण, रामप्रताप रामदयाल, मेवाराम मुरलीधर, चुन्नीलाल ईश्वरीप्रसाद, रामगोपाल रामचरण, श्री कृष्ण गोपीकृष्ण, कल्लूमल सत्यनारायण, कल्लूमल बंशीधर, बंशीधर कुञ्जीलाल, कल्लूमल रामचरण, प्रयागदास रामरत्न, रामचरण बलदेव प्रसाद, रामनाथ नथमल, सरयूप्रसाद कन्हैयालाल, बलदेव प्रसाद सरयूप्रसाद, ठाकुरप्रसाद घासीराम, शिवनारायण पन्नालाल, लीलाधर रामसुख, गंगाराम टीकाराम, रामेश्वर रामगोपाल, लालमणि तुलसीराम, मुक्ताप्रसाद गयाप्रसाद, जयनारायण गोपीकृष्ण, जगन्नाथ राधाकृष्ण, किराना कम्पनी, श्रीराम रामनाथ, शिवचरणलाल लालमणि, छंगामल जगन्नाथ, बालमुकुन्द रामचन्द्र, रामदयाल मदनमोहन, रामगोपाल रामरतन, गंगासहाय गणेशनारायण, और किशोरी लाल रामरत्न, आदि दूकानें थीं। इनमें अधिकांश दूकानें अब समाप्त होगई हैं। लाला उदयराम जी किराने में अपनी सज्जनता और न्यायप्रियता के कारण जनप्रिय थे। लाला जी ने गोपीराम नामक एक बालक गोद लिया था, उसके आसामयिक निधन पर श्रीकृष्ण गोपाल जी को गोद लिया, इनके दो पुत्र हैं वही अब काम करते हैं। इस फर्म में श्री कल्लूमल जी साझीदार थे और बड़े ही धार्मिक मनोवृत्ति के थे। इनके पुत्र श्री सत्यनारायण जी तथा श्रीकृष्णलाल जी गुप्त आदि चार भाई हैं, अब कल्लूमल

सत्यनारायण के नाम से नयागंज में दूकान है। श्री देवीदीन, दुर्गाप्रसाद का फर्म कानपुर में प्रायः ९० वर्ष से है। कुछ दिनों बाद फर्म का नाम देवीदीन परमानन्द हो गया। शनैः-शनैः परमानन्द नारायणदास, लछमनदास रामकुमार, सरयूप्रसाद रामकुमार, रामकुमार श्रीराम, श्रीराम रामकुमार और रामचन्द्र रामकुमार नाम पड़ते रहे। नयागंज में दूकान है।

युगुलकिशोर सीताराम की दूकान भी बहुत पुरानी है करीब ७५ वर्ष से स्थापित है। सम्प्रति श्रीरामचन्द्र भार्गव इसके मालिक एवं संचालक हैं।

श्रीकृष्ण गोपीकृष्ण फ़र्म पुराना है दूकान बन्द हो गई है परन्तु श्री बालकृष्ण जी महेश्वरी उत्तराधिकारी हैं जो एक सार्वजनिक कार्यकर्ता, कांग्रेस जन एवं सुलेखक हैं।

शिवनारायण पन्नालाल नाम की दूकान श्री अयोध्या प्रसाद जी पांडेय ने स्थापित की थी करीब ५५ वर्ष पहले, इसमें लाला वृन्दावन जी कार्यकर्ता साझीदार रहे हैं। पांडे जी के बाद उनके सुपुत्र श्री रामसेवक जी पांडे दूकान चलाते रहे—श्रीराम सेवक जी की मृत्यु के उपरान्त श्री श्यामाचरण जी पांडे उत्तराधिकारी हुये। कांग्रेस कार्य में आसक्त रहने से दूकान का काम बन्द करना पड़ा और अब श्री विशेश्वर दयाल जी दीक्षित जो इनके सम्बन्धी हैं, उनके यहाँ से व्यापार करते हैं। लीलाधर रामसुख की भी दूकान बहुत पुरानी है, इनके यहाँ सुपारी का अधिक व्यापार होता है अब नयागंज में दूकान है। इनके यहाँ

सोने चाँदी आदि का भी व्यापार होता है।

श्रीराम रामनाथ का अब नामान्तर हो गया है—श्रीसीताराम हरगोविन्द और जवाहर मल लक्ष्मीनारायण के नाम से दो दूकानें चल रही हैं।

पुराने जनरलगंज के पास हटिया में फुटकर किराने की दूकानें थीं। पुराने जनरलगंज में दूकानदार अपना माल मँगा कर बेचा करते थे और भुगतान की अवधि डेढ़ मास की थी जो दूकानदारों को बड़ी असुविधा देने वाली रही है। नगर के विस्तार के साथ किराने का व्यापार भी बढ़ा—प्रथम तो नयागंज में आढ़ती काम होता रहा जिसमें बाहरी व्यापारी अपना माल यहाँ बेचने को भेजते थे और आढ़त लेकर यहाँ बेच दिया जाता था—उस समय श्री तुलसीराम जियालाल, श्रीरामकरण राम विलास, ईश्वरदास बालमुकुन्द, रामसुखदास रामगोपाल, अयोध्याप्रसाद रामलाल, द्वारकानाथ जुगुलकिशोर, गिरिधारी लाल जगन्नाथ, भैरव प्रसाद मदारीलाल, बिहारीलाल मन्नीलाल, कल्लूमल सत्यनारायण, जगन्नाथ मन्नीलाल, राधाकृष्ण भगवान दीन, मन्नालाल मुरलीधर, श्रीराम रामसहाय, लक्ष्मीनारायण राजाराम, जेठमल लखमीचन्द, सेवाराम हीरालाल, बलदेव प्रसाद लक्ष्मी नारायण आदि दूकानदार थे। यहाँ भुगतान की मुद्दत १५ दिन की रक्खी गई—इसी कारण यहाँ किराने के व्यापार में उन्नति हुई और यहाँ बिकवाली की भी दूकानें पुराने जनरलगंज से आकर खुलीं। शनैः शनैः जनरलगंज का किराने का व्यापार समाप्त होकर

नयागंज में ही आ गया। हटिया में फुटकर किराने को दूकानें अब भी हैं परन्तु किराने का काम कलेक्टरगंज, नयागंज नहर किनारा तथा नई बस्तियों में भी बहुतायत से होने लगा है। चूँकि नगर का प्रसार बहुत हो गया है उसी अनुपात से नगर के विभिन्न भागों में भी किराने का व्यवसाय अधिक होने लगा है। नयागंज में श्री तुलसीराम जियालाल फ़र्म के मुख्य कार्यकर्ता श्री लाला काशीराम जी बाज़ार के प्रधान माने जाते रहे हैं। अब यह फ़र्म तुलसीराम केशवराम के नाम से है और लाला केशवराम जी उसका संचालन करते हैं। लाला काशीराम जी के सुपुत्र श्री पन्नालाल जी ने अपना अलग कारोबार कर लिया है। लाला पन्नालाल जी उनके पुत्र बड़े विनम्र स्वभाव के सत्पुरुष हैं।

लाला काशीराम जी जिस प्रकार बाज़ार के विवाद निपटा दिया करते थे लाला पन्नालाल जी भी उसी तरह कार्य करते हैं। रामकरण रामविलास फ़र्म ने नाम बदल कर रामविलास चिरंजीलाल कर दिया, यह फ़र्म बहुत पुराना है तथा दानी भी रहा है।

अयोध्याप्रसाद रामलाल फ़र्म में कत्थे का काम होता था, अब यह फ़र्म बन्द हो गया है। धनकुट्टी में इसी नाम से एक अच्छी धर्मशाला बनी है।

बिहारी लाल मन्नीलालजी का व्यवसाय प्रथम फुटकर का था पीछे थोक दूकान भी हो गई और इन लोगों ने अपने सभी कुटुम्बियों को दूकानें करवा दीं—श्री हरिहरनाथ जी शुक्ल इनके प्रिय

मित्र थे। श्री मोतीलाल शुक्ल तथा श्री श्रीराम जी शुक्ल उनके सुपुत्र हैं और श्री बिहारीलाल मन्नोलाल के साझे में दूकान किये हुए हैं। श्री बिहारीलाल जी के श्री मन्नोलाल जी व श्री सरयूप्रसाद जी दो पुत्र थे। श्री मन्नीलाल के श्री हरीकिशन तथा श्री सरयूप्रसाद के श्री रामकिशन सुपुत्र हैं, इन्होंने कानपुर बालिका छात्रावास एक लाख रुपये की लागत से बनवाया है और श्री मन्नालाल सरयू प्रसाद भवन के नाम से करीब १॥ लाख की लागत का ओमर वैश्य विद्यालय बनवाया है। इनकी पाँच-छः दूकानें हैं।

श्री जगन्नाथ मन्नोलाल फ़र्म अभी तक पूर्ववत् चल रहा है। ला० मन्नीलाल जी केसर वैश्य के सुपुत्र श्री शिवगोपाल श्री सिद्धगोपाल चार भाई हैं, इन्होंने अपने ग्राम में एक विशाल मन्दिर बनवाया है। श्री राधाकृष्ण भगवानदीन फर्म के मालिक श्री ला० रामचन्द्र जी हैं। ये उनके दामाद हैं और दोसर वैश्य धर्मशाला तथा मन्दिर निर्माण करा गये हैं। इस फर्म में ला० रामदास जो अच्छे कारकुन थे। मन्नालाल मुरली-धर फर्म में कत्थे का काम होता है। फर्म के मालिक ला० बलदेव प्रसाद के पुत्र श्री कृष्णकुमार गुप्त काम सँभाले हुए हैं। फर्म में धर्म का काम ख़ूब होता रहा है। ला० बलदेव प्रसाद जी बड़े दानी थे। विस्तार भय से प्रत्येक दूकान का विवरण नहीं लिखा जा सका है।

रामगंज में भी मिर्चा, मखाना और हल्दी आदि पहले बिहार के व्यापारी भेजा करते थे। रामगंज में मुख्य व्यवसाय

तमाखू सीरे का है। मिर्च के सिवा अन्य वस्तुयें अब रामगंज में प्रायः नहीं आतीं। कलेक्टरगंज गल्ले की मंडी है यहाँ भी कानपुर तथा निकटवर्ती ज़िलों से किराने में बिकने वाला सामान जैसे सिंघाड़ा, धनिया, जीरा, खटाई आदि आते हैं। मूँगफली पहले किराने में शामिल रही है अब उसका पृथक् व्यापार हो गया है। कतिपय वर्ष पूर्व अमरावती आदि से मूँगफली आती थी अब तो यहाँ भी अधिकांश मात्रा में उत्पन्न होने लगी है।

बड़ी इलायची नैपाल तथा दारजिलिंग में विशेष रूप से पैदा होती है। पटना के श्री श्यामलाल गोकुलचन्द इसके ठेकेदार थे वही यहाँ के व्यापारियों को भेजते रहे हैं। श्री गोवर्द्धनदास खन्ना के पूर्वज इलायची के एक बड़े व्यापारी थे। अब ठेके समाप्त हो जाने पर दूकानदार सीधे माल मँगा लेते हैं। नैपाल से कम परता पड़ता है।

काला नमक चँदौसी ज़िला मुरादाबाद से यहाँ आकर बिकता था। श्री रुस्तम तथा हबीबुल्ला ने चँदौसी से यहाँ आकर रेल बाज़ार में कारख़ाना खोला। इनके बाद सखावत हुसेन ख़लील अहमद ने डिपुटी पड़ाव पर कारखाना खोला और अच्छनमियाँ ने रेल बाज़ार में।

अकबर ख़ाँ और याकूब ख़ाँ ने डिप्टी पड़ाव पर नमक बनाने का काम किया। मक़सूद अहमद और मंसूर अहमद ने भी काम किया। होरीलाल शर्मा तथा रामनिवास मिश्र ने सन् १९३२ में

काम किया था। श्री रामकुमार पांडे ने भी नमक बनवाया था। श्री कल्लूमल जी नमक के पुराने अढ़तिया थे, इनके बाद श्रीमन्नीलाल जी ओमर ने आढ़त की। अब उनके पुत्र श्री बद्रीप्रसाद जी काम करते हैं। नमक घड़े में त्रिफला और सज्जी डालकर पकाते हैं। इसको नगाड़ा के नाम से बेचा जाता है। काला नमक आढ़त के सिवा अन्य दूकानदारों के यहाँ भी आता है। साल्ट रिफायन एक सिंधी महाशय ने भी खोली है वहाँ भी काला नमक बनाया जाता है।

काला नमक साँभर नमक से बनाया जाता रहा है। कानपुर में साँभर नहीं आने से डीडवाना नमक से बनाया जाता है। और अब रेष्टा नमक से बनाया जाता है जो पहिले के समान नहीं होता—पहले लकड़ी की आग दी जाती थी अब पत्थर के कोयला से पकाया जाता है।

कपूर का व्यवसाय करने वाले प्रायः किराने वाले हैं। यह कपूर चूरा रूप में आता है और यहाँ उड़ा करके शुद्ध करके बेचा जाता है। ला० हजारीलाल बद्रीप्रसाद कपूर बनाने का काम करते थे। गिरिधारीलाल, शालिगराम, रामदास, रामसहाय, छोटेलाल कपूर बनवाते थे कपूर अब भी बनता है। श्री सत्यनारायण जी सिद्धेश्वर जी विशेष रूप से कपूर के व्यापारी हैं। यों तो सभी दूकान वाले (किराने में) बेचते हैं।

शहद भी किराने में बिकता है पहाड़ों से भी आता है और नकली भी बहुत बनाया जाता है। सुना तो यहाँ तक जाता है

कि नकली बनाने वाले पहाड़ों पर भेज कर पुनः वहाँ से वापस मँगाकर असली के नाम से बेचते हैं। श्री युगलकिशोर सीताराम के यहाँ सरकारी शहद आता है।

रंग का व्यापार किराने के साथ अधिकांश में चलता रहा है, इसकी पृथक् दूकानें भी हैं। अबीर यहाँ बनता और किराने के साथ चलता है।

जड़ी बूटी की दूकानें पहले यहाँ नहीं थीं, बाहर से वैद्यों, हकीमों को भी मँगाना पड़ता था अब तीन-चार दूकान हैं। श्री शिवनारायण, श्री बाबूराम तथा श्री जयनारायण आदि संचालक हैं। हकीमी दवायें किराने में बेचने वाले अत्तार कहे जाते हैं। इनके यहाँ प्रायः हकीमी दवायें मिलती हैं। कुछ अत्तार शर्बत, बेल मुरब्बा आदि भी बेचते हैं। इनमें श्री कन्हैयालाल तथा श्री केदारनाथ बहुत पुराने हैं। कन्हैयालाल जी मर चुके हैं उनकी स्त्री तथा जेठानी, काम करती हैं। सोने के वर्क, चाँदी के वर्क, मोती, केशर, कस्तूरी तथा रत्न आदि किराने में ही मिलते हैं। वर्क बनाने वाले कारीगर अलग होते हैं। कुछ पृथक् दूकानदार कई वस्तुओं के हो गये हैं। खपरिया भी पंसारी बेचते थे जो बम्बई से भी मँगाई जाती थी। अब यह प्राप्य नहीं है और उसके स्थान पर यशद भस्म डाली जाती है।

वंशलोचन नकली बहुत आने लगा है। असली का ३०) सेर से लेकर ३८) रु० तक भाव है। नकली ६) ७) रु० सेर में मिलता है वही अधिक चल रहा है। सरकार को नकली चीजें जिनसे

जीवन को भी हानि हो सकती है बनने से रोकना चाहिये और किराने में नकली चीजें नहीं बिकने देना चाहिये। ये चीजें स्पष्ट रूप से नकली कहकर दूकानदार बेचते हैं। चिकित्सक (वैद्य हकीम) यदि दवाइयाँ न पहचानते हों तो बहुत अनर्थ हो सकता है। देखना है कब तक इस सम्बन्ध में सुधार हो सकेगा।

कत्थे का व्यापार यहाँ बहुतायत से होता है। पुराने दूकानदार अयोध्या प्रसाद रामलाल, प्यारेलाल शिवचरणलाल, मन्नालाल मुरलीधर, राधाकृष्ण भगवानदीन, पं० गंगाप्रसाद कत्थे का काम करते थे। बिहारीलाल बालकृष्ण, श्री रामकुमार श्रीराम और रामजीदास रामप्रसाद के यहाँ भी कत्थे का काम होता है। बिहारीलाल बालकृष्ण के यहाँ मन्नीलाल (मनिया चाचा) कार्यकर्ता हैं।

किराने के दलाल

मंडी में दलालों के बिना काम नहीं होता यह प्रथा चालू है। श्री मोरसिंह जी, श्री सोनेलाल जी, श्री भगवानदास मिरजापुरी, श्री रामचरण मास्टर, श्री शिवबालक मिश्र, श्री लल्लूमल दलाल जहानाबादी, श्री पुन्नूलाल, श्री गोकुलप्रसाद, श्री देवीदीक्षा आदि पुराने दलाल थे। श्री बद्रीदास जी, श्री हरप्रसाद पाठक, हजारीलाल दरोगा, मन्नालाल, पं० विश्वेश्वर दयाल गोबर्धन प्रसाद, दुर्गाप्रसाद पांडे, बाबूलाल, पन्नालाल आमर,

श्रीनारायण वाजपेयी, लक्ष्मीकान्त, दुर्गाप्रसाद गुप्त, रामभरोसे आदि आजकल दलाली का कार्य करते हैं। इन लोगों के द्वारा खरीद-फरोख्त में सुविधा रहती है। श्री बद्रीदास जी वृद्ध हैं और इनके कई दूकानें भी हैं।

ला० नरोत्तमदास जी, श्री बाबूराम, राधाकृष्ण के यहाँ दलाली का काम करते थे। कत्थे की पारिख अच्छी करते थे। जापान भी इन्होंने कत्था भिजवाया था। यू० पी० किराना सेवा समिति के निर्माताओं में इनका नाम है।

किराने के व्यापारी कई प्रकार के हैं। जैसे थोक व्यापारी, वह दो प्रकार के होते हैं, एक तो वह जो बम्बई आदि शहरों तथा देश के बाहर से माल मँगाकर यहाँ थोक में बेचते हैं। दूसरे वह जो बाहर के व्यापारी का माल अपने यहाँ उतार कर थोक भाव में बेच देते हैं। इनको अढ़तिया भी कहते हैं। परन्तु कुछ आढ़ती ऐसे भी होते हैं जो केवल चालानी का काम करते हैं अर्थात् बाहर के व्यापारी जो माल यहाँ से मँगाते हैं उसे यहाँ से खरीद कर चालान करा देते हैं। इसी प्रकार फुटकर दूकानदार दो तरह के हैं। प्रथम वे जो देहाती पसारियों को ढाई सेर, पाँच सेर, सवा सेर और ढाई पाव सवा पाव माल थोक भाव से कुछ मुनाफा लगाकर बेचते हैं। द्वितीय वे जो पाव, आध सेर से लेकर सेर दो सेर तक साधारण खरीदारों के हाथ बेचते हैं। पैसे दो पैसे तक के बेचने वाले तथा बाजारें करने वाले भी फुटकर पंसारी कहे जाते हैं।

ला० बाबूराम

चालानी के काम करने वाले बहुत लोग हैं। श्रीरामशंकर दुर्गाप्रसाद के यहाँ भी अच्छा काम होता है। रामदयाल वृन्दावन, भगवती प्रसाद गुप्त भी काम करते हैं।

यहाँ यह लिख देना अप्रासंगिक न होगा कि किराने वालों ने भी स्वतन्त्रता संग्राम में प्रचुर मात्रा में सहयोग दिया है। कांग्रेस फंड लगाया, जब विदेशी अधिकारियों ने बहुत सताया तो धर्मादा कमेटी नाम रख कर सहायता दी। अब धर्मादा कमेटी पृथक् क़ायम हो गई है और उसका कांग्रेस से सम्बन्ध नहीं रक्खा—जब श्री किशोरचन्द्र जी कपूर इसके मंत्री बहुत समय तक रहे, उस समय बहुत सहयोग मिला।

श्री किशोरचन्द्र जी नगर में हींग के प्रमुख व्यवसायी हैं। इनके पिता ताराचन्द जी, मातादीन ताराचन्द्र के नाम से हींग का व्यापार करते थे। पठानी बोल-चाल में आप निपुण हैं और बड़े ही धार्मिक सज्जन हैं।

श्री नारायण प्रसाद जी अरोड़ा के बाबा ला० बाबूराम जी किराने की दलाली करते थे। उनके पुत्र ला० कन्हूलाल जी भी किराने की दलाली करने लगे परन्तु किराने की दलाली में गेरू, हिरमिजी, आदि भी खरीदना पड़ता था वह आपको पसन्द न आया क्योंकि आप बहुत स्वच्छ रहना पसंद करते थे और गेरू आदि के काम से कपड़े खराब हो जाना स्वाभाविक था। इसी लिये आपने किराने का काम छोड़कर कपड़े की दलाली पसंद की

और जीवन भर यही करते रहे। ला० बाबूराम ने अपने भांजे ला० लल्लूमल को किराने की दलाली में लिया, उन्होंने तरक्की करके लल्लूमल दलाल के नाम से आढ़त की दुकान की जो अब बन्द हो गई है।

श्री गंगाशंकर जी पांडे जो अब शक्कर के प्रसिद्ध व्यवसायी हैं पहिले किराने के ख्यातनामा कुशल व्यापारी रहे हैं।

चालानी काम करने वालों में श्री नानक चंद सादीराम बहुत पुराने हैं। इनका काम दिल्ली में भी है और धूलिया वाले के नाम से प्रख्यात हैं। करीब ७५ वर्ष से कानपुर में आढ़ती चालानी का काम करते हैं। फर्म के मालिक ला० मीनामलजी ने अपने सुयोग्य पुत्रों—श्री हरीकृष्ण सोमानी और श्री बालकृष्ण जी सोमानी को यहाँ का कार्यभार सौंप दिया है और आप दिल्ली में रहते हैं। वहाँ श्री रामकृष्ण और श्री राधाकृष्ण काम करते हैं।

श्री मनोहरदास रामप्रसाद जी के यहाँ भी चालानी का काम होता है। अब श्री गणेशनारायण जी काम देखते हैं। इनके यहाँ गल्ले व कपड़े की दूकानें भी हैं। श्री बद्रीदास बिहारी लाल पुराने आढ़ती हैं। श्री श्यामाचरण जी गुप्त अब मुख्य कार्यकर्ता हैं। श्री हुलासी लाल रामदयाल के नाम से यह फर्म बहुत पुराना है और श्री रामदयाल जी बड़े धर्मप्रिय थे। उनके लड़के व नाती काम करते हैं, लड़कों में केवल द्वारकाप्रसाद और मदनमोहन जी हैं।

श्री गंगाशंकर जी पांडेय, हर्षचन्द श्री निवास, हर्षचन्द बिहारी लाल, हर्षचन्द हरीराम भी किराने का काम करते रहे हैं। भोलानाथ चन्दीप्रसाद की किराने की बहुत पुरानी दूकान थी।

रामगंज में श्री बट्टूमल दुर्गा प्रसाद जी, श्री मुनई लाल पुत्तूलाल जी तथा श्री पुरुषोत्तमदास बनारसी दास के यहाँ किराने का माल आता था। बट्टूमल अखाड़ बाज थे और एक बार इन्होंने बेगमगंज के मुसलमानों से हिन्दुओं की रक्षा की थी। श्री दुर्गाप्रसाद जी मुँशी जी के नाम से प्रसिद्ध थे और बड़े साधु सेवी थे इन्होंने एक मन्दिर भी बनवाया है। श्री मुनईलाल पुत्तूलाल फर्म का नाम पहिले श्री गुलजारी लाल सिरधर लाल पड़ता था। श्री गुलजारी लाल जी ने एक मन्दिर व संस्कृत पाठशाला बनवाया है जो श्री सांवलेप्रसाद गुलजारीलाल संस्कृत पाठशाला के नाम से है। श्री गुलजारी लाल जी के बाद श्री मुनई लाल पुत्तूलाल फर्म का नाम पड़ा। श्री मुनई लाल के लड़के श्री राजनारायण दवाओं का काम करते हैं और पुत्तूलाल जी के भाई श्री लक्ष्मी नारायण जी ने लाइम मिल खोला जिसे श्री पुत्तूलाल जी के पुत्र श्री मन्नालाल जी चला रहे हैं; और अब दूकान का नाम बदल गया है।

श्री पुरुषोत्तम दास बनारसीदास जी के यहाँ ला० सुक्खा मल तथा उनके पुत्र श्री सीताराम जी मुख्य कार्यकर्ता थे अब कानपुर के आस-पास की अन्य मंडियाँ ज्यादा मशहूर थीं।

श्री अमरनाथ जी तथा श्री देवीप्रसाद जी कार्य भार सँभालते हैं। श्री छोटेलाल विहारीलाल, प० द्वारिका प्रसाद की भी दूकानें हैं।

गल्ला तेलहन और रूई

कलक्टरगंज प्रमुख रूप से गल्ला और तेलहन की मंडी है। इसके अतिरिक्त कपास, रुई, बिनौला, तेल, खली, भूसा तथा घी का काम बहुत बड़े पैमाने पर होता है। लगभग सौ वर्ष से यह मंडी क़ायम है। कानपुर में काफ़ी सुधार हो जाने पर भी कलक्टरगंज मंडी नवीनता से काफ़ी दूर है। अब भी यहाँ प्राचीन वातावरण दिखलाई देता है। कलक्टरगंज में पहले सबसे ज्यादा काम गल्ला-तिलहन, घी, कपास का होता था। कलक्टरगंज के पास ही स्थित नहर से नावों द्वारा काफ़ी गल्ला आता था। रेल मार्ग बन जाने के काफ़ी दिनों बाद तक माल का आवागमन बैलगाड़ियों, नावों तथा घोड़ों से हुआ करता था। हज़ारों बैलगाड़ियों के द्वारा गल्ला और तिलहन का आयात होता था। ग़दर के पश्चात् ही स्थाई रूप से इस मंडी का काम शुरू हुआ। पहले फुटकर रूप से बैलगाड़ियाँ, घोड़े तथा नावों से जो माल आता था उसके ढेर का सौदा व्यापारी लोग कर लिया करते थे। कानपुर की मंडी प्रथम महायुद्ध के शुरू होने के पूर्व काफ़ी व्यवस्थित हो गई थी किन्तु सर्वाधिक ख्याति उसे प्रथम महायुद्ध से ही मिली। इसके पहले

किन्तु कानपुर में जैसे-जैसे साधनों का विस्तार होता गया वैसे-वैसे आस-पास की मंडियाँ टूट कर कानपुर में मिलतीं गईं। बड़े-बड़े व्यापारियों ने भी सुरक्षा की दृष्टि से कानपुर में ही रहकर व्यापार किया।

प्रथम महायुद्ध के पूर्व सम्पन्न और जबरदस्त व्यापारी के रूप में तेजपाल जमनादास और मोतीलाल भागीरथमल की गद्दियाँ थीं। इन दोनों ही गद्दियों में देश के भिन्न-भिन्न हिस्सों के सैकड़ों व्यापारी आया करते थे। जब रेलों ने माल लादना शुरू किया तब रेलवे के अंगरेज साहब इन गद्दियों में व्यापारियों से जैराम जी करने आते थे और कहा करते थे कि हमारी कम्पनी के द्वारा अपना माल भेजिये, हम हर तरह की सुविधा देंगे।

कानपुर में खाद्यानों में गेहूँ, चना, ज्वार, बाजरा, मटर, अरहर, मक्का, मसूर, मूँग, उरद तथा तेलहन में अलसी, लाही, अंडी, तिल्ली, गुल्लू, मूँगफली, सरसों, सेहुँआ, काफ़ी कसरत से प्रदेश के भिन्न-भिन्न हिस्सों से आते तथा अन्य देश के कई प्रदेशों से अलग-अलग किस्म की जिन्सें आयात होती हैं। कानपुर कलक्टरगंज की मंडी में गंगा और यमुना के आस-पास तथा उसके पार होने वाली पैदावार को छोटे छोटे व्यापारियों द्वारा एकत्रित करके थोक बनाकर लाया जाता है। आजकल यह मंडी उत्तर भारत की प्रमुख मंडियों में से है। कानपुर में प्रथम महायुद्ध के बाद से व्यापार ने बड़ी उन्नति की। खाद्यानों

का व्यापार भी बड़ी तेज़ी से होने लगा। आस-पास की मंडियाँ जैसे औरैया, इटावा, भरथना, बिंदकी, फतेहपुर, हमीरपुर, आदि दब गईं और इन मंडियों की आमदनी सीधे कानपुर की मंडी में होने लगी। पंजाब से लाखों बोरा गेहूँ, दक्षिण हैदराबाद से सींगदाना, मध्य प्रदेश से मूँग, आयात होती हैं। इसी प्रकार भिन्न प्रदेशों में निर्यात होने वाली चीजों में—कलकत्ते के लिये लाही; बम्बई के लिये अलसी और अंडी; काठियावाड़ का बाजरा; राजस्थान को ज्वार, बाजरा; तथा अरहर, उरद, मूँग, वा मसूर की दालें सारे हिन्दुस्तान का सप्लाई होती हैं। उत्तर प्रदेश के भिन्न-भिन्न जिलों से यहाँ जालौन, हमीरपुर, बाँदा जिले से चना काठिया तथा पिसिया, अरहर, गेहूँ, अलसी, अंडी, लाही, बड़े दाने का धनियाँ, कसरत से आता है। बहराइच, तथा उत्तरी इलाकों से अरहर बड़े दाने की, और अलसी छोटे दाने की आती है। बदायूँ, गंज डुन्डवारा, चन्दौसी से गेहूँ देशी क्वालिटी का और फ़र्रुखाबाद, कन्नौज, मैनपुरी, हरदोई से मूँगफली कसरत से आती है। ललितपुर, झाँसी से महुवा तथा सभी जिलों से थोड़ी बहुत सभी जिन्सें बराबर आयात होती हैं। बरेली, देहरादून, नौगढ़ से चावल अधिक मात्रा में आता हैं।

द्वितीय महायुद्ध के पूर्व कपास का काम यहाँ सबसे ज्यादा होता था। कपास, बिनोला का काम द्वितीय महायुद्ध के प्रारंभ तक लगभग समाप्त हो गया। इसका कारण था यू० पी० में

कपास की खेती का अभाव। कपास का काम करने वाले कई भारतीय फर्मों के अतिरिक्त अंग्रेजी कम्पनियाँ भी थीं। कपास की ओटाई और उसकी रुई बनाने के कारखाने यहाँ कई हैं।

द्वितीय महायुद्ध में कन्ट्रोल लगने के कारण कानपुर की कलक्टरगंज मंडी को बड़ा धक्का लगा। सभी प्रान्तों से माल आना बन्द हो गया और निर्यात भी बहुत कम होने लगा। गेहूँ, चना, चावल आदि की राशनिंग हो जाने से खाद्यान्न-बाजार की दूकानों में ताले लटकने लगे थे और कुछ लोग चोर बाजारी करने लगे। कन्ट्रोल छूटने से बाजार की रौनक बढ़ी है। परन्तु रेलवे की असुविधा से व्यापार खुले ढंग से नहीं हो पाता। खाद्यान्न का आयात-निर्यात भी अभी प्रदेशों से मुक्त न होने के कारण व्यापार का पूर्व स्वरूप नहीं आ पाया है। तेलहन का कार्य काफ़ी मात्रा में होता है। कपास का काम प्रायः बन्द-सा है। हाँ रुई का काम बराबर होता है बड़ी मात्रा में। कानपुर में कपड़े की कई मिलें और इन मिलों को रुई सप्लाई करने वाली बड़ी-बड़ी कम्पनियाँ तथा फर्म हैं। तेल और खली का काम सबसे ज्यादा यहीं से होता है। हजारों वैगन महीनें में पंजाब, बंगाल बिहार, आसाम, नैपाल, विन्ध्य प्रदेश, मध्य भारत आदि स्थानों को तेल और खली के लदा करते हैं।

आजकल माल का आयात निर्यात प्रायः रेल, मोटर, ठेला से होता है और बैलगाड़ियों की आमदनी कम हो चली है, फिर भी कई सौ बैलगाड़ियाँ आजकल भी इस बाजार में प्रतिदिन

आती हैं। घोड़ों पर भी थोड़ा बहुत माल आता है। घी का व्यवसाय भी द्वितीय महायुद्ध के बाद से कम हो गया है। पहले हजारों टीन प्रतिदिन यहाँ आते तथा बाहर रवाना किये जाते थे। इस मंडी में घी का आयात, इटावा, भर्थना, मैनपुरी, औरैया, सिकोहाबाद, लडुआपुर, बस्ती तथा जमनापारी इलाकों से होता था। आजकल वेजीटेबिल का प्रचार बढ़ने से असली घी के व्यापार को बड़ी हानि पहुँची है और अब सिर्फ स्थानीय लोगों को खाने-पीने के लिये थोड़े से टीनों की ही खपत रह गई है।

रुई

कपास ख़रीद कर उसकी ओटाई करके रुई बनाना और उसे बेचना तथा मिलों को रुई सप्लाई करने के लिए पंजाब, अकोला, बरार तथा पंजाब के वे इलाके जो अब पाकिस्तान में हैं यथा:—लायलपुर, ननकाना, शेखूपुर आदि से रुई की गाँठें बराबर कानपुर आया करतीं थीं। कानपुर के अढ़तिये तथा दूकानदारों के पास हजारों गाँठों का स्टाक रहा करता था और मील की खरीद निकलते ही हजारों गाँठों की ख़रीद फ़रोख्त हुआ करती थी। पाकिस्तान बन जाने से रुई के व्यापार को भारी धक्का लगा और यहाँ पंजाब की अमेरिकन क्वालिटी की रुई का काम बहुत कम हो गया। अब देशी बंगाल' क्वालिटी रुई पंजाब के अमृतसर, तरनतारन, कोटकपूरा, मानसा, भटिंडा, रामपुराफूल, डब्बावाली, पानीपत, लुधियाना आदि से आती है जो फुटकर

में तथा मीलों को बेची जाती है। रुई के बड़े-बड़े व्यापारियों में मोतीलाल भागीरथ मल, किलाचन्द देवचन्द, पुरुषोत्तमदास बनारसीदास, बसन्तलाल बनारसीदास, लक्ष्मीनारायण जगदीशनारायण, के० के० दूबे एन्ड कम्पनी, मानसिंह मुसद्दी लाल; एस० एफ़० वाजिबदार, रामनाथ मेहरोत्रा एन्ड कम्पनी, आजकल भी काम कर रहे हैं। पूर्व में—कोकलस, पोकाक आदि अंग्रेज कम्पनियाँ भी ख़ूब काम करतीं थीं। कपास की सबसे ज्यादा ख़रीद में कोकलस, रैली ब्रादर्स, निहालचन्द किशोरीलाल, कृष्णा मिल, मामू जी भीम जी, निहालचन्द बलदेव सहाय, नित्यानन्द देवकीनन्दन का नाम प्रमुख है।

गल्ला तिलहन

देश तथा प्रदेशों के भिन्न-भिन्न हिस्सों से सभी तरह के खाद्यान्न तथा तेलहन की चीजें आती हैं। बनारस, बस्ती, गोरखपुर, बहराइच, बलिया आदि स्थानों को ज्वार, बाजरा, मूंग आदि काफ़ी मात्रा में जाती है। गल्ले के पुराने व्यापारियों में—लालमन काशीराम, मनोहरदास रामप्रसाद, मथुराप्रसाद मुन्नालाल, पहला बद्रीप्रसाद, अच्छेलाल बिहारीलाल, मोतीलाल छाजूलाल, भोलानाथ रामप्रसाद, बनवारीलाल रामभरोसे, रमनलाल बलदेवप्रसाद, कुँवर जी उमरसी, तुलसीराम जियालाल थे। प्रथम महायुद्ध के बाद इस मंडी के बड़े व्यापारियों में—पुरुषोत्तमदास बनारसीदास, रामकरनदास जगन्नाथ, उमरावलाल शिवरतनदास, भजनलाल भगवतीप्रसाद, दौलतराम

भवानी सहाय, कामताप्रसाद रघुनाथ प्रसाद, बसन्तलाल बनारसीदास, कन्हैयालाल लखनलाल, कन्हैयालाल राधाकृष्ण, चन्द्रिकाप्रसाद कन्हैयालाल; लालमन हीरालाल, प्रेमनारायण हरनारायण, लक्ष्मीनारायण जगदीशनारायण, जगन्नाथ छंगामाल, शिवबालकराम तुलसीराम, दुर्गाप्रसाद काशीराम, कुन्जबिहारीलाल गंगाचरन, बेलजी ग्वालजी हैं। चालानी का काम करने वालों में कच्छियों का भी महत्वपूर्ण स्थान था। कच्छियों की खरीद बड़ी तगड़ी होती थी किन्तु पाकिस्तान बनने से अधिकांश कच्छी व्यापारी पाकिस्तान चले गये। हुसेन कासिम दादा, दीवान हाजी पीर मुहम्मद ईसा, हाजी हबीब हाजी पीर मुहम्मद, हाजी आदम हाजी अबुल करीम, आदम हाजी पीर मुहम्मद ईसाक, हाजी इस्माइल नूर मुहम्मद के नाम प्रमुख हैं।

दाल का काम

दाल का काम कानपुर का बहुत बड़ा काम है। अरहर, उरद, मटर, मसूर, चना, मूंग की दालें पहले हाथ से बना करतीं थीं और हजारों आदमियों की रोजी चलती थी। कारखाने लग जाने के बाद हाथ से दाल का काम बन्द हो गया और हजारों ग़रीब स्त्री पुरुषों की रोटी छिन गई। हाथ का काम बड़ी-बड़ी दाल मिलों ने ले लिया। दलिहाई का काम करने वाली बड़ी-बड़ी पार्टियाँ यहाँ हैं। बड़े-बड़े कारखाने भी हैं। इनमें यू० पी० दाल मिल, कानपुर दालमिल, तथा बुद्धूलाल गौरीशंकर, जवाहरलाल सुन्दर लाल, कल्लू भैयादीन, बद्री प्रसाद भगवती

प्रसाद, नेवरराम गयाप्रसाद, मोहनलाल गंगाप्रसाद का नाम प्रमुख है।

छोटे मोटे कारखाने तथा तेल के कोल्हू पंजाबी सिन्धी भाइयों के हैं तथा बड़े-बड़े कारखानों में जे० के० एन० के० आयल मिल, कृष्णा मिल आदि के नाम प्रमुख हैं।

कानपुर और बरफ़ का व्यवसाय

मानव प्रकृति स्वभावतः विलास प्रिय होती ही है। फलस्वरूप शरदऋतु में गर्मी तथा ग्रीष्म में ठण्डक की आकांक्षा करना स्वाभाविक ही है। धनी मानी व्यक्ति अपनी इच्छायें सरलता से पूरी कर लेते हैं किन्तु मध्यम एवं निम्न वर्ग के व्यक्ति को अपनी इच्छाओं का दमन करना पड़ता है। प्राचीनकाल में ग्रीष्म के भयंकर ताप से बचने एवं ठंडक प्राप्त करने के लिये राजे महाराजे पहाड़ी बरफ़ का प्रयोग करते थे। उनके सेवक पहाड़ों पर जमी हुई बरफ़ लाकर जमा करते रहते थे और ग्रीष्म ऋतु में यही बरफ़, पानी को ठण्डा करने के काम में लाई जाती थी। मुग़लकाल में विलासिता की वृद्धि के साथ बरफ़ ढाने और उसे इकट्ठा करने का काम और भी बढ़ गया। ये बादशाह लोग जहाँ कहीं भी जाते थे इनके साथ बरफ़ का ढेर भी ले जाया जाता था। आज भी हैदराबाद के निज़ाम साहब अपने एक विशेष कुएँ का ही जल ग्रहण करते हैं एवं जहाँ कहीं भी जाते हैं इस कुएँ का पानी बड़े-बड़े बाल्टों में भर कर इनके साथ ले जाया जाता है। ठीक यही अवस्था पुराने मुसलमान बाद-

शाहों की थी। कालान्तर में अवस्था बदली और लोगों ने स्वयं आसमानी बरफ़ बनाना प्रारम्भ कर दी।

कानपुर नगर में भी उन्नीसवीं शताब्दी के प्रारम्भ एवं मध्य काल में इसी प्रकार आसमानी बरफ जमाई जाती थी। जाजमऊ के समीप गङ्गा के तट पर शरदऋतु में रात्रि के समय खुले आकाश में पानी भर कर रख दिया जाता था। प्रातःकाल यह जमा हुआ पानी सोलह सत्तरह फीट गहरे गड्ढों में फूस इत्यादि से ढककर बन्द कर दिया जाता था और ग्रीष्म ऋतु में खोद-खोद कर इसी प्रकार की बरफ़ उपयोग में लाई जाती थी। यह बरफ़ साफ़ न होने के कारण पीने के काम में न लाई जाती थी वरन केवल पानी को ठण्डा करने में प्रयुक्त होती थी। धीरे-धीरे समय परिवर्तित हुआ और वैज्ञानिकों को अमोनियम क्लोराइड (नौसादर) तथा स्लैक्ड लाइम को आपस में मिलाकर रगड़ने से ठंढक का अनुभव हुआ और उन्होंने यह निष्कर्ष निकाला कि यह मिश्रण वस्तुओं को ठंडा करने के काम में आ सकता है। बस यहीं से आधुनिक ढंग से बरफ़ बनाने का सूत्र-पात होता है। इस प्रकार बरफ़ के कारख़ाने पहले पहल लखनऊ में खुले और लखनऊ से ही कानपुर तक बरफ़ लाई जाती थी। लखनऊ की इस बरफ़ का कानपुर में एकमात्र विक्रेता सिरकी मोहाल में गोकुलप्रसाद बरफ़ वाला था, तत्पश्चात् रामनरायन बाजार के अहमद खाँ, तथा ज्वालाप्रसाद, कन्धई और नरायन भी इस क्षेत्र में आये।

पहला कारखाना

साधारण जनता में भी बरफ़ का प्रचार उत्तरोत्तर बढ़ता जाता था इस कारण लखनऊ से आने वाली बरफ़ कानपुर की जनता की बढ़ती हुई माँग की पूर्ति न कर सकी। आसमानी बरफ़ की प्रथा भी उठ चुकी थी अतएव नगर में आधुनिक ढंग से चलने वाले बरफ़ के कारख़ाने की आवश्यकता स्पष्ट प्रतीत होने लगी। इसी दृष्टिकोण से सर्वप्रथम रेल बाज़ार में सन् १८९६ ई० में जान साहब ने एक बरफ़ के कारख़ाने की नींव डाली जिसका नाम जान्स आइस फैक्ट्री रक्खा गया। यह कारख़ाना वर्तमान महेश्वरी देवी जूट मिल के सामने था। इस कारख़ाने की मशीन केवल ३ टन की थी तथा 'सेल सिस्टम' से बरफ़ तैयार की जाती थी। इस प्रकार बनाई जाने वाली बरफ़ कपड़े के थान के समान निकलती थी। यह थान लगभग ४ फीट लम्बे ३ फीट चौड़े तथा केवल एक इञ्च मोटे होते थे। जान्स आइस फैक्ट्री की मशीन इंगलैण्ड की बनी हुई लिण्डा मशीन थी। यह बरफ़ आजकल बनाई जाने वाली बरफ़ से अधिक साफ़ होती थी किन्तु उसके बनाने में अब की अपेक्षा समय अधिक लगता था। यह बरफ़ दूर भेजने के योग्य नहीं थी क्योंकि इसकी मोटाई केवल एक इंच ही होती थी इस कारण यह शीघ्र ही गल जाती थी और दूर के स्थानों में नहीं ले जाई जा सकती थी। इस प्रकार जहाँ यह बरफ़ कुछ अंशों में अच्छी थी वहाँ इससे आर्थिक हानि भी थी।

इस प्रकार यह कारखाना सन् १८९६ ई० से लेकर सन् १९१२ तक चलता रहा। सन् १९१२ में लखनऊ के मुन्शी प्रयाग नारायण भार्गव ने इसे खरीद लिया। किन्तु जैसा ऊपर बताया जा चुका है कि 'सेल सिस्टम' से बनाई जाने वाली बरफ़ आर्थिक दृष्टि से लाभदायक नहीं थी इस कारण सन् १९१४ ई० के लगभग उन्होंने यह कारखाना बेच दिया तथा भार्गव आइस फैक्ट्री की नींव डाली।

भार्गव आइस फैक्ट्री

मुन्शी प्रयाग नारायण भार्गव ने सन् १९१२ में वर्तमान स्थान पर ही भार्गव आइस फैक्ट्री की नींव डाली। प्रारम्भ में इस कारखाने का काम केवल दस या बारह मजदूरों से शुरू हुआ। कारखाने में जर्मन प्लान्ट जो उस समय सबसे आधुनिक ढंग का था लगाया गया था। उस समय नगर में बरफ़ का भाव सात या आठ रुपया प्रति मन था तथा पूरे नगर में प्रति दिन दो सौ पचास मन बरफ़ खर्च होती थी। इस प्रकार सन् १९१२ से लेकर सन् १९२० तक जर्मन प्लांट चलाने के बाद सन् १९२० में नई बड़ी मशीन फ्रिक कम्पनी की लगाई गई। सन् १९२१ में कमला आइस फैक्ट्री नामक नई फैक्ट्री खुल जाने के कारण दोनों कम्पनियों में भीषण प्रतियोगिता चली तथा सन् १९२६ तक बरफ़ का भाव आपसी चढ़ा-ऊपरी के कारण बहुत कम रहा। किन्तु १९२६ ई० में आपसी समझौते के कारण व्यापार

अपनी वास्तविक स्थिति में आ गया। इस प्रकार सन् १९३७ तक केवल दो कारखाने ही कानपुर में रहे।

इस युग तक बरफ़ जमाने के तरीके में पर्याप्त सुधार हो चुके थे और आधुनिक तरीके काम में लाये जाने लगे थे। अमोनियम क्लोराइड तथा स्लैक्ड लाइम के मिश्रण से ठंढक का सिद्धान्त ज्ञात होने के पश्चात् अमोनिया कम्प्रेसर बनाये गये। इनके द्वारा अमोनिया गैस द्रव के रूप में कम्प्रेस कर दी जाती है और जब यह द्रव नमक के पानी में होकर बहता है तो इस पानी में रक्खे हुये बड़े-बड़े लोहे के साँचों का पानी जम जाता है और बरफ तैयार हो जाती है। नमक का पानी इस कारण प्रयुक्त होता है कि वह जम न सके क्योंकि नमक का पानी ० अंश तक नहीं जमता। पहले यह कम्प्रेसर बहुत बड़े-बड़े होते थे। इनमें उत्तरोत्तर सुधार होता गया और आजकल तो केवल एक चारपाई भर जगह घेरने वाले कम्प्रेसर बनाये जा चुके हैं। इस प्रकार आजकल इसी ढंग से बरफ़ अधिकतर जमाई जाती है और अर्थ शास्त्रीय दृष्टिकोण से यह ढंग सबसे अधिक लाभदायक भी है।

कमला आइस फैक्ट्री

कानपुर के प्रसिद्ध व्यवसायी लाला कमलापत सिंहानियाँ ने सन् १९२१ में कमला आइस फैक्ट्री की स्थापना की। इस कारखाने की स्थापना की कथा बड़ी ही मनोरंजक है। कहते हैं कि लाला कमलापत की लड़की के विवाह में बरात के लिये बरफ़

की आवश्यकता हुई। लाला जी का प्रतिनिधि भार्गव आइस फैक्ट्री में बरफ़ लेने गया। उस समय मैनेजर महोदय ने कहा कि बरफ़ इस समय नहीं मिलेगा, कुछ देर बाद मिलेगी। इस पर उस व्यक्ति ने जोर देते हुए कहा कि आप जानते नहीं हैं लाला कमलापत के यहाँ बरात आई है हमें इसी समय बरफ़ चाहिये। इस पर मैनेजर ने व्यंग किया कि "यदि इतनी शान और जल्दी है तो लाला जी स्वयं क्यों नहीं फैक्ट्री खोल देते" उस व्यक्ति ने जाकर लाला जी से बात ज्यों की त्यों कह दी। लाला जी को बात लग गई और कहा जाता है कि इसी बात पर उन्होंने कमला आइस फैक्ट्री की स्थापना की और कहा था मैं कानपुर में दो पैसे सेर बरफ़ शहर भर में बिकवाऊँगा। इसमें कोई सन्देह नहीं कि कमला बरफखाने के स्थापित होते ही दोनों कारखानों में सन् १९२६ तक पर्याप्त प्रतियोगिता रही और बरफ़ बहुत सस्ती बिकती रही। सन् २६ में समझौता हो जाने पर स्थिति सम्हल गई।

इस प्रकार लगभग सन् १९३७ तक कानपुर में केवल दो कारखाने ही चलते रहे। द्वितीय विश्वयुद्ध के प्रारम्भ होने के पश्चात से तो बरफ़खानों में पर्याप्त उन्नति हुई। आधुनिक युग प्रचार का युग है। प्रचार के कारण ही भारतवासी गर्मियों में चाय सेवन करने लगे हैं और अमेरिका निवासी जाड़ों में भी बरफ़ का उपयोग करते हैं। हमारे देश में भी बरफ़ का पर्याप्त
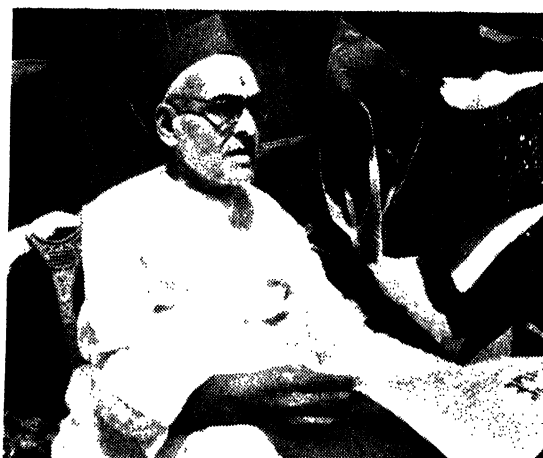
श्री मन्नीलाल नेवटिया

प्रचार हो गया है। इसी के फलस्वरूप कानपुर नगर में आज बारह बरफ़ख़ाने चल रहे हैं :—

१—भार्गव आइस फैक्ट्री २—कमला आइस फैक्ट्री ३—प्रकाश आइस फैक्ट्री ४—रामा आइस फैक्ट्री ५—नार्दन इण्डिया आयल मिल एण्ड आइस फैक्ट्री ६—पंजाब आइस फैक्ट्री ७—श्रीगोविन्द आयल मिल एण्ड आइस फैक्ट्री ८—कोहली आइस फैक्ट्री ९—लक्ष्मी आइस फैक्ट्री १०—कपूर आइस फैक्ट्री ११—गिरधर आइस फैक्ट्री १२—नवानगर आइस फैक्ट्री

बरफ़ख़ानों के मालिकों ने आपसी प्रतियोगिता मिटाने के लिये एक संगठन की स्थापना की है जिसका नाम है—आइस मैन्युफैक्चरर्स एसोसियेशन। इसकी स्थापना सन् १९५० में हुई। आजकल इसके सभापति श्री रामनाथ खन्ना हैं। इसके अतिरिक्त बरफ़ विक्रेताओं की एक समिति की भी स्थापना हो गई है। कलकत्ता, बम्बई आदि नगरों में बरफ़ का वितरण मुफ्त किया जाता है किन्तु यहाँ यह ढंग नहीं अपनाया गया है। यहाँ दूकान-दार स्वयं अपने खर्च से बरफ़ कारख़ाने से ले जाते हैं जब कि कलकत्ता बम्बई में कारख़ानों की ट्रक दूकान-दूकान जाकर बरफ़ दे आती हैं।

आइसक्रीम

कानपुर में आइसक्रीम का व्यवसाय पहले पहल सन् १९४१ में शुरू हुआ और इसके प्रारम्भकर्ता स्वर्गीय कर्ण अरोड़ा थे। उन्होंने कलकत्ते जाकर यह काम सीखा और मशीन लाकर मई १९४१ से कार्य आरम्भ कर दिया। अगले साल यहाँ पाँच-छः कारख़ाने और खुल गये और अब तो आइसक्रीम फेक्टरियों की भरमार है और लगभग ५० मशीनें चालू हैं। कारीगर, हाकर तथा मालिकों को मिला कर १००० आदमी इस उद्योग में लगे हुये हैं। शहर के अतिरिक्त देहातों में भी कानपुर की आइसक्रीम पहुँचती है। शहर में तो सैकड़ों रंग-बिरंगी और नित नये डिज़ाइन की गाड़ियाँ दिखलाई देती हैं। कानपुर म्युनिसिपल बोर्ड ने भी इस व्यापार से आमदनी का एक ज़रिया निकाल लिया है। पहले एक फेक्टरी की लाइसेन्स फीस दो रुपया थी और अब ५०) कर दी गई है। इसी प्रकार एक गाड़ी के लिये बजाय ६) रु० के २४) रु० साल देने पड़ते हैं और एक हाकर को बजाय दो के पाँच देने पर लाइसेन्स मिलता है। बिजली दर तो सर्वत्र सवाई हो गई है। कारख़ाने में काम करने वालों की मज़दूरी भी समयानुसार बढ़ गई है अतः अब इस व्यापार में तत्व कम रह गया है।

कानपुर में आइसक्रीम की फेक्टरियाँ इस प्रकार हैं। अरोड़ा, लक्ष्मी, प्रताप, कानपुर, शिव, हरहरगंगे, विजय, वीटा,

दारा, मगनोलिया, क्राउन, वीनस, मोहन, राजेन्द्र, कृष्ण, हिमा-लय, अशोक।

इनके अतिरिक्त हजारों छोटे-छोटे दूकानदार अपनी मटकी तथा ठेलों में बरफ जमा कर कुलफी बरफ़ बेचते हुए नगर की हर गली में घूमते हुये दृष्टिगोचर होते हैं। आजकल बरफ़ का व्यवहार बहुत बढ़ गया है।

पीतल के बर्तन

अन्य स्थानों की तरह थाली, कटोरे, और बटुआ आदि बर्तन कानपुर में भी पीटकर तथा पुराने बर्तनों को फिर से ढालकर बनाये जाते हैं। पीतल के बर्तनों को लोग इसलिए पसन्द करते हैं कि टूट-फूट जाने पर तथा पुराने हो जाने पर पीतल के बर्तन बदले जा सकते हैं और वे चीनी या शीशे के बर्तनों की तरह टूट जाने पर बेकार नहीं हो जाते। जो बर्तन पीतल की चद्दर के अथवा हलके ढले होते हैं उनकी बिक्री अच्छी होती है। बर्तनों के सम्बन्ध में भी अन्य वस्तुओं की तरह कान-पुर एक वितरण केन्द्र है। कानपुर में रावतपुर में बटुए, रेल बाजार में फूल के बर्तन और सदर बाजार में कसकुट के कड़े आदि काफ़ी मात्रा में बनते हैं और सैकड़ों आदमी इन चीजों के बनाने में नित्य लगे रहते हैं।

बर्तनों का बाजार पहले चौक में था और चौक का दक्खिनी भाग ठठराई कहलाता था और आज भी उसे ठठराई ही कहते

हैं हालांकि उसमें बर्तन वालों की दुकानें नहीं रहीं और वह टोपियों का बाजार हो गया है। वहाँ से शहर की बिक्री के अलावा कानपुर जिले के बाजारों तथा अन्य शहरों में काफी टोपियाँ बनकर बाहर जाती हैं।

लगभग २५ वर्ष से पीतल, फूल और मुरादाबादी कलई के बर्तनों का बाजार चौक ठठराई से उठ कर हटिया राजगद्दी में आगया है और प्रायः समस्त दुकानें यहीं स्थित हैं। हाँ धनतेरस के दिन बर्तनों की क्षणिक दुकानें केवल दो दिन के लिए ठठराई और ए० बी० रोड पर भी लगती हैं। कानपुर का स्थायी बर्तन बाजार तो हटिया राजगद्दी ही है जहाँ बारहों महीने लाखों रुपये के बड़े और छोटे बर्तन बिकते हैं। उसके पास ही लोहे के बर्तनों का बाजार भी है, जहाँ तवा, कढ़ाई और बाल्टियाँ मिलती हैं और खरीदार मनमानी संख्या में खरीद ले जाते हैं। पीतल और फूल के बर्तनों की लगभग ५० दुकानें हैं।

कानपुर के बर्तन बाजार में मिर्जापुर, कलकत्ता, बनारस, पूना, रेवाड़ी, फर्रुखाबाद, अजमेर, हाथरस, सराय आकिल (इलाहाबाद) और मुरादाबाद के बने हुए बर्तन बिकते हैं। ये बर्तन पीतल और तांबे के होते हैं। पीतल और तांबे की चद्दरें कलकत्ते से आती हैं और थकिया बम्बई से।

कानपुर के बने हुए बर्तन सीतापुर, लखीमपुर, बाराबंकी, गोसाईंगंज, फैजाबाद, बस्ती, औरंगाबाद, नागपुर, जबलपुर,

देहली और राजस्थान जाते हैं। बटुए अधिकतर गोंडा और बहराइच जाते हैं।

बर्तनों की बनाई ठेके पर होती है और सामग्री दुकानदारों से मिलती है। जो जितना माल बनाता है उसे उतनी मजदूरी मिल जाती है।

ऊपर लिखे स्थानों के अतिरिक्त कर्नलगंज, अनवरगंज, नई चौक और हीरामन के पुरवे में भी बर्तन बनते हैं।

यद्यपि कानपुर में एलम्युनियम की कोई फैक्टरी नहीं है तो भी यहाँ एलम्युनियम के बर्तन पर्याप्त संख्या में बिकते हैं। कलकत्ते में सेठ पद्मपत सिंहानियाँ का एलम्यूनियम का एक बहुत बड़ा कारखाना है जिसे उनके सबसे छोटे भाई सेठ लक्ष्मीपति सिंहानियाँ देखते हैं।

बर्तनों के इस नये बाजार अर्थात् हटिया राजगद्दी में ताले वालों की कई दूकानें हैं, जहाँ पीतल के तथा अन्य प्रकार के ताले बिकते हैं। कानपुर में तालों का यही मुख्य बाजार है और आप जितने ताले चाहें खरीद सकते हैं।

बर्तनों के व्यापारी

हटिया में—विशेश्वर दयाल रंगीलाल, दुलीचन्द रामरतन, लालाराम रामऔतार, ज्वालाप्रसाद बाबूराम, प्रागदास रामनारायण, पचकौड़ीमल श्रीकृष्ण, भगवानदास प्रागदास, वृन्दावन बरातीलाल।

मूलगंज से चौक तक—पुत्तीलाल लालमन, मन्नीलाल राधाकृष्ण, हुलासीलाल बुलाकीदास, मुकुन्दीलाल गर्ग एण्ड कम्पनी, मानिकचन्द शिवप्रसाद, मिश्रीलाल बलदेवप्रसाद, कन्हैयालाल रघुनाथप्रसाद।

शराफ़ा

कानपुर की मंडी में शराफे का एक प्रमुख स्थान रहा है। कोई ज़माना था जब होली के मेले का दिन निश्चित करना शराफे वालों पर निर्भर करता था और यह शराफ़ा चौक में था। चौक का शराफ़ा बहुत पुराने काल से चला आ रहा है। यहीं पर पहले सोना, चाँदी और सारे ज़ेवरात मिलते थे। परन्तु समय ने पलटा खाया और धीरे-धीरे नयागंज, जहाँ फुटकर गल्ले का बाज़ार था, शराफे का मुख्य बाज़ार बन गया।

पहले कलक्टरगंज में सोने चाँदी की कोठी मानसिंह देवीचरन की स्थापित हुई और यहीं सोने चाँदी का व्यापार होता था। इसके बाद सन् १९०२ में मथुरादास सत्यनारायण की शराफे की दूकान नयेगंज में खुली, फिर बिलासराय हरदत्तराम की और हज़ारीमल सोहनलाल तथा सन् १९१९ में पन्नालाल दुर्गाप्रसाद की दूकान खुली। शुरू-शुरू में नयेगंज में केवल चाँदी के टुकड़े और नेशनल बैंक का सोने का पासा बिकता था। किन्तु पन्नालाल दुर्गाप्रसाद ने नयेगंज में ज़ेवर बेचना भी शुरू किया और अब भी सोने चाँदी तथा सब मेल के ज़ेवर का

काम करते हैं। विलासराम हरदत्तराय ने सन् १९२१ में अपना बसना पूज कर अपनी दूकान बन्द कर दी और हजारीमल सोहनलाल की दूकान भी अब से २० वर्ष पहले बन्द हो गई। चौक से नयेगंज में शराफे का जोरदार बाजार हो जाने के दो कारण हैं। एक तो वह नाज की मंडी कलक्टरगंज से पास था और दूसरे वहाँ असली माल मिलता था और तौल भी ठीक होती थी। इस समय नयेगंज में शराफे की लगभग १०० दूकानें हैं। चाँदी सोने के सट्टे का स्थान भी नयागंज स्थित बागला बिल्डिंग में है। सट्टा बाजार को खुले लगभग १०-१२ वर्ष हुए हैं।

सन् १९३१ के हिन्दू-मुस्लिम दंगे के बाद बेगमगंज के कई शराफ़ भी नयेगंज में आ गये हैं, जैसे बाबूराम मथुराप्रसाद और सुखईलाल रामलाल आदि। वैसे तो बेरिहाना रोड और ग्वालटोली में भी .जेवरों की दूकानें हैं, किन्तु चौक और नयागंज ही शराफे के मुख्य स्थान हैं जहाँ सौ-सौ दूकानें .जेवरों और चाँदी सोने की हैं। प्रत्येक दूकान में .जेवर तैयार रहता है और आर्डर देने पर बनवा भी दिया जाता है। हर दूकान के साथ कुछ सुनार सम्बन्धित हैं जो आर्डर का माल बनाते रहते हैं। इन सुनारों की संख्या भी लगभग एक हजार से ऊपर होगी।

शराफे में बिकने वाला जे.वर केवल कानपुर का ही बना नहीं होता बल्कि शाहजहाँपुर, दिल्ली, अहमदाबाद और बंगलोर

आदि से भी आकर बिकता है। बिकने वाले बने हुये .जेवर का मूल्य तो लाखों रुपये होता है और सट्टे का तो कोई ठिकाना ही नहीं।

कुछ शराफों की दुकानें चौक और नयागंज दोनों ही में हैं। जैसे लाला जग्गीलाल की नयेगंज की दुकान पर राधाकृष्ण स्वरूपकृष्ण नाम पड़ता है और चौक में पुत्तीलाल जग्गीलाल नाम से कारबार होता है। नयेगंज में मुनिया महाराज की दूकान का नाम रामनारायण श्यामसुन्दर पड़ता है और राधाकृष्ण आनन्देश्वर तथा पन्नालाल दुर्गाप्रसाद नयेगंज की प्रसिद्ध दूकानें हैं। चौक की प्राचीन दूकानें कई एक हैं जैसे, रामदयाल मदनमोहन और बैजनाथ रामकिशोर आदि। किसी ज़माने में चौक शराफे के सिद्धेश्वर शराफ़ के भी नाम थे। आजकल श्री मदनमोहन मिश्र और करुणा शंकर शुक्ल आदि मशहूर शराफ़ हैं।

कानपुर में चाँदी सोना साफ़ करने वाले लगभग ५० नियारिये भी होंगे और सिक्कों को साफ़ करके चाँदी निकालने वाले दो-तीन कारख़ाने भी हैं।

कोयला

कानपुर में कोयले वालों की लगभग २०० दूकानें हैं जिनमें से ७५ तो पत्थर के कोयले की हैं और १२५ लकड़ी के कोयले की।

वैसे तो प्रायः हर एक मोहल्ले में कोयले की दुकानें हैं परन्तु कोयला का मुख्य बाज़ार हालसी रोड पर है जिसे कोयला बाज़ार ही कहते हैं। लकड़ी के कोयले पर कोई कन्ट्रोल नहीं है परन्तु पत्थर के कोयले पर है।

पत्थर का कोयला झरिया से आता है और लकड़ी का मध्य प्रदेश, मध्य भारत और विन्ध्य प्रदेश से। मिलों के अतिरिक्त घरों में ३००० मन पत्थर का कोयला और १२०० मन लकड़ी का कोयला हर रोज़ खर्च होता है।

यह बात भी जान लेने की है कि पत्थर के कोयले की चार क़िस्में होती हैं। एक साफ्टकोक जो घरों में ख़र्च होता है। दूसरा हाईकोक जिसे हलवाई और ढलाईवाले इस्तेमाल करते हैं। तीसरा स्टीमकोक जिसे मील वाले प्रयोग में लाते हैं और चौथा है सिन्डर जिसे भट्ठों और घरों के काम में लाया जाता है। यह सिन्डर मीलों से निकलता है; और मीलों से राख, भी निकलती है जो इमारत के काम में लाई जाती है। इस सिन्डर और राख के लगभग ५० ठेकेदार कानपुर में हैं जो मिलों से माल लेकर बाज़ार में बेचते हैं। यह माल लगभग ५००० मन रोज शहर में बिक जाता है।

कानपुर के कुछ बड़े और पुराने व्यापारी ये हैं:—श्री द्वारिकाप्रसाद लक्ष्मीनारायण, कल्लू मल दाताराम, चुग ब्रादर्स, ठाकुर सूरजपाल सिंह और कामताप्रसाद साहू आदि। इनमें लाला द्वारिकाप्रसाद, यू० पी० कोल डिपो होल्डर्स एसोसियेशन

के सभापति हैं। इन कोल डिपो होल्डर्स की एक कान्फरेन्स अगस्त १९५२ में कानपुर में ही हुई थी जिसका उद्घाटन प्रान्तीय कांग्रेस कमेटी के सभापति श्री अलगूराम शास्त्री ने किया था।

कोयले के नये व्यापारियों में श्री मन्नोलाल रामेश्वर, श्री राम-निरंजनसिंह (आर्य नगर) श्री भरतसिंह आदि हैं। श्री भरत सिंह केवल लकड़ी का कोयला बेचते हैं। नये व्यापारियों में कुछ राजनैतिक पीड़ितों को भी कोयला मिलता है। इनमें से कुछ ये हैं :—श्री गोवर्द्धन सिंह स्वतंत्र, श्री बाबूराव जो श्रीराम फन्सलकर के भाई हैं और श्री ज्ञानेन्द्र पाण्डे आदि। आजकल कानपुर कोल डिपो होल्डर्स के सभापति श्री सीताराम मिश्र हैं जो कानपुर कांग्रेस की एडहाक कमेटी के सदस्य हैं। श्री रोशन लाल चुग एसोसियेशन के मंत्री हैं।

शहर में लगभग १५०००) रु० का माल रोज बिकता है और सब दूकानों पर हजार-बारह सौ आदमी काम करते हैं। सबको माल कोटे के हिसाब से मिलता है। इन कोटा होल्डर्स को माल 'कोल मर्चेन्टों' द्वारा प्राप्त होता है, जिनका सम्बन्ध कोयले की खान के मालिकों से होता है। इन कोल मर्चेन्टों को केवल कमीशन मिलता है। कुछ कोल मर्चेन्ट ये हैं :—श्री करमचन्द थापड़, सोकरी ब्रादर्स, रामसरनदास एण्ड ब्रादर्स शुक्ला कम्पनी, और कानपुर कोलियर्स आदि।

नमक

नमक का व्यवसाय लाइसेन्स प्राप्त लोगों के द्वारा होता रहा है। किसी समय आगरा और कानपुर सांभर नमक के वितरण स्थान थे, परन्तु कोटा सिस्टम होने से वितरण स्थानों का महत्व समाप्त हो गया। कानपुर में सांभर नमक सांभर, नावा, गुढ़ा और पचभद्रा से आता था और सेंधा नमक खेवड़ा, कालाबाग और वारछा से। सांभर डीडवाना में भी बनता है और वही आजकल कानपुर में आता है। सांभर का कोटा कानपुर को नहीं प्राप्त है परन्तु उन्नाव को है।

कानपुर में रेहू से नमक और शोरा तैयार किया जाता है। रेहू फफूँद, खेवराज्योरा और पनकी आदि स्थानों में काफ़ी मिलता है और वहीं से आता है।

कानपुर में राधाकृष्ण मंगतराय की नमक की दूकान बहुत पुरानी है। यह १८६० में स्थापित हुई थी। अब जोतमल कानोडिया के नाम से काम होता है। दूसरी पुरानी दूकान नानकराम चौथमल की है। इनके बड़े लड़के पोटलबाबू ने नमक के काम को अलाभकारी समझ कर छोड़ दिया है। पूरनमल कपूरचन्द के नाम से काम होता है। तीसरी पुरानी दूकान रामनिरंजन हरप्रसाद के नाम से थी। उसकी अब दो दूकानें हो गई हैं। एक तो रामनिरंजन कालीचरन के नाम से है और दूसरी हरप्रसाद जगदीशप्रसाद के नाम से है। दोनों लाइसेन्सी हैं।

चौथी दूकान मातादीन भगवानदास की है। यह नमक के साथ शक्कर का लम्बा काम करते हैं और इनका एक तेल मिल भी है। आजकल फर्म के मालिक श्रीदयाराम जी हैं।

श्रीगनपतराम विश्वनाथ सन् १९२१ में नमक का काम करते थे किन्तु अब काम बन्द करके मुरादाबाद चले गये हैं। रामचन्द रामकुमार की दूकान सन् ३० में बन्द हो गई थी। तुलसीराम जियालाल पहले नमक का काम नहीं करते थे किन्तु कन्ट्रोल के जमाने में इन्हें काम मिला और काशीराम कन्हैयालाल के नाम से काम हुआ। गणेशप्रसाद विश्वेश्वर प्रसाद का काम अब गणेशप्रसाद दुर्गाशंकर के नाम से होता है। मातादीन शिवदुलारे तथा लक्ष्मीचन्द के नमक के काम अब बन्द हो गये हैं। राम-जीवन रामप्रताप खारागोड़ा के साथ सेंधा नमक का भी काम करते हैं। नमक के पुराने व्यापारियों में मोतीलाल छाजूलाल नमक का काम नहीं करते। मोहम्मद क़ासिम मोहम्मद हफ़ीज फर्म के मा० क़ासिम अब नमक के रिटेलर हैं अर्थात् फुटकर विक्रेता हैं। और मो० हफ़ीज़ मनिहारी बाने का काम करते हैं अर्थात् जनरल मर्चेन्ट हैं।

लल्लूमल रामचन्द्र ने काम छोड़ दिया। पुरानों में हीरालाल चुन्नीलाल का नमक का काम सन् १९१४ में बन्द हो गया था। आजकल के नमक के नये व्यापारियों में पूरनचन्द कपूरचन्द और रामगोपाल गंगानारायण आदि कई व्यापारी हैं। चुन्नीलाल पुरुषोत्तमदास को लाइसेन्स मिला परन्तु इन्होंने काम छोड़ दिया।

छन्नूलाल मूँदड़ा डिस्ट्रिक्ट नामनी हैं और मान्य (एप्रूव्ड) नमक एजेन्ट हैं। हंसराज गुरमानी भी डिस्ट्रिक्ट नामनी हैं, क्योंकि यह शरणार्थी हैं। जीतमल कानोडिया डिस्ट्रिक्ट नामनी और मान्य एप्रूव्ड नमक डीलर हैं। जीवनराम रामकृष्ण डिस्ट्रिक्ट नामनी और कन्सेशनर हैं अर्थात् उद्योग के लिये नमक बनाने वाले और ड्यूटी से मुक्त हैं। गवर्नमेंट ने जिसको नमक का एजेन्ट बनाया उसे १९४० से ड्यूटी से मुक्त कर दिया और अब १९४७ से ड्यूटी समाप्त हो गई है। आजकल नित्यानन्द देवकीनन्दन भी नमक का काम करते हैं।

गुड़

कानपुर शहर में गुड़ तो बनता नहीं है परन्तु जिले के देहातों में कई जगह बनता है और वहाँ से शहर में बिकने आता है। मेरठ और दातागंज से भी गुड़ कानपुर में आता है। शहर में गुड़ के दो बाजार हैं, एक हूलागंज में और दूसरा कलक्टर-गंज में। थोक और फुटकर गुड़ बिक्रेताओं को दो-डेढ़ सौ दूकानें हैं। ये दूकानदार गुड़ को भन्डसार भरते हैं और लाखों रुपये का माल भर लेते हैं। यह भन्डसार माह के महीने से शुरू होती है और बैसाख तक भरी जाती है। भरा हुआ गुड़ ऐसे मकानों में रखा जाता है जिनका रुख पूरब और पश्चिम को होता है। गुड़ की भेलियों पर टाट चढ़ाकर भी रखा जाता है, वरना बरसात के दिनों में गुड़ के बह जाने का अन्देशा रहता है। जेठ से अगहन तक गुड़ की बिक्री का समय होता है। बड़े

दूकानदार दो-ढाई लाख रुपये तक का गुड़ भर लेते हैं। गुड़ के प्रमुख व्यापारी गुलजारीलाल दुर्गाप्रसाद छन्नूलाल और श्रीराम कल्लूमल आदि हैं।

मछली

कानपुर के लगभग ७० प्रतिशत आदमी मछली खाते हैं या खा सकते हैं अगर वह सस्ती मिले। बंगाली तो कदाचित बिरले ही मिलेंगे जो मछली न खाते हों।

जिले भर में मछली प्राप्त करने के स्थान इस प्रकार हैं:—

१—गंगा, यमुना, रिंद, पाण्डु, ईसन, नोन और सेंगुर नदियों से साल के हर महीने में मछली पकड़ी जाती है।

२—मछरियाँ और इटैली झीलों में काफ़ी मछलियाँ मिलती हैं और वे अक्टूबर से मई तक पकड़ी जाती हैं।

३—तालाबों में भी मछलियाँ ख़ूब मिलती हैं। जिले भर में अनेक कच्चे और पक्के तालाब हैं। इनमें से कुछ में पूरे साल भर और कुछ में केवल अक्टूबर से मई तक मछलियाँ पकड़ी जाती हैं।

४—लोअर गंजेज नहर की चारों शाखाओं अर्थात् इटावा, भोगनीपुर, फतेहपुर और कानपुर में मछलियाँ बहुतायत से पाई जाती हैं। जून और अगस्त के बीच में जब इन नहरों का पानी बढ़कर आस-पास के मैदानों तक पहुँच जाता है तब इनमें मछलियों का शिकार काफ़ी होता है।

नहर विभाग, कोर्ट आफ़ वार्ड्स और कृषि विभाग अपने अधीनस्थ मछलियों के स्थानों को नीलाम करके अथवा ठेका देकर कुछ आमदनी कर लेते हैं। ज़मींदार लोग भी ठेका दे दिया करते थे।

कानपुर शहर में कुछ जातियाँ हैं जिनकी जीविका मछली के शिकार से चलती है। ये लोग अपनी पकड़ी हुई मछलियों को या तो स्वयं बाज़ार में बेंच आते हैं अथवा कुँजड़ों आदि के द्वारा बिकवा लेते हैं। यह लोग प्रायः गरीब होते हैं। मछली का पेशा करने वाले कहार, मुसलमान, पासी, कोरी और मल्लाह होते हैं। कानपुर ज़िले में लगभग पच्चीस-छब्बीस प्रकार की मछलियाँ पाई जाती हैं, जैसे हिल्सा, नैनी, पोटा, रोहू, पड़हिन, टिंगारा आदि। मछली पकड़ने के सारे औज़ार जैसे जाल आदि पकड़ने वाले स्वयं बना लेते हैं किन्तु कटियाँ और रील ख़रीद लेते हैं।

कानपुर में मछली की बिक्री के दो मुख्य बाज़ार हैं, एक तो पारसी गिरजाघर से जो सड़क गड़रिया मोहाल को जाता है वह, और दूसरा मूलगंज के पीछे का मछली टोला। इन दोनों बाज़ारों में इतनी मछलियाँ पकड़ कर लाई जाती हैं कि काफ़ी माल लखनऊ और कलकत्ते तक भेजा जाता है। कुछ मछली वालों के पास काफ़ी पैसा भी है। यह भी एक खासा व्यापार है।

सरेस

कानपुर में सरेस बनाने का कोई संगठित फेक्टरी नहीं है, किन्तु यहाँ सरेस बनता अवश्य है और वह कुटीर उद्योग के रूप में तैयार किया जाता है।

सरेस मुख्यतः छापेखानों के रूले बनाने के काम में आता है। दफ्तरी लोग और लकड़ी का फर्नीचर बनाने वाले भी इसका प्रयोग करते हैं। देशी सरेस का इस्तेमाल तो होता ही है, विलायती सरेस भी फ्रांस, आस्ट्रेलिया और इङ्गलैण्ड से आता है। देशी सरेस बम्बई, कलकत्ता और मदरास भेजा जाता है। कानपुर में लगभग २००० मन सरेस प्रतिवर्ष तैयार होता है। यह चमड़े की बर्चा-खुर्चा कतरन को कई अन्य पदार्थों के साथ उबाल कर तैयार किया है। चूँकि यहाँ चमड़े का काफ़ी काम होता है इसलिये चमड़े की रद्दी कतरन भी काफ़ी मिल सकती है। अतएव यदि कोई पढ़ा-लिखा नवयुवक इस ओर ध्यान दे और सरेस बनाने की एक छोटी-मोटी फैक्टरी खोल दे, तो वह अच्छा लाभ उठा सकता है। अब तो प्रेस भी कानपुर में काफ़ी हो गये हैं और बढ़िया फ़रनीचर भी यहाँ अधिक बनने लगा है। अतः खपत की काफ़ी गुञ्जाइश है।

कार्डबोर्ड के बक्स

कार्डबोर्ड के बक्स दवाओं की शीशियों, सर में लगाने वाले तेल, साबुन, खिजाब, स्याही की बोतलों, स्याही की टिकियों, मिठाई और चाकलेट आदि के लिये बनाये जाते हैं।

श्री नवलकिशोर भरतिया

कानपुर की सबसे पुरानी कार्डबार्ड की फेक्टरी श्री लालबिहारी वर्मा की थी जो सन् १९११-१२ में स्थापित हुई थी। इसका नाम 'कानपुर फोल्डिंग बाक्स फेक्टरी' था। शहर में कुछ दिन चलाने के बाद यह कारखाना जूही में चला गया और सन् १९४२-४३ में बन्द हो गया।

इसके बाद सन् १९१४ में कार्डबोर्ड की दूसरी फैक्टरी श्री गोवर्द्धनदास खन्ना ने 'खन्ना बाक्स फेक्टरी' के नाम से खोली खन्ना फेक्टरी ने जब १९१६ में श्रीकाश्मीरीलाल बेरी का 'मोहन प्रेस' खरीदा तब उसके साथ एक मशीन फोल्डिंग बाक्स की भी मिली।

यह मोहन बाक्स फेक्टरी लगभग एक साल की चली हुई थी। खन्ना बक्स फेक्टरी आज भी चालू है और मनीराम बगिया मोहल्ले में स्थित है।

सवाई सिंह के हाते में श्री शिवनारायण गुप्त ने 'फैन्सी कार्डबोर्ड फैक्टरी' नाम से एक कारख़ाना खोला जो सन् १९२४-२५ में बन्द हो गया। इसके बाद कपड़ा बाज़ार में पं० मुन्नालाल ने बबेरवाल बाक्स फेक्टरी खोली जो काफ़ी अरसे तक चलने के बाद अब बन्द हो गई है।

एल० बी० वर्मा के कारख़ाने से निकल कर कुछ लोगों ने 'पायनियर बाक्स फैक्टरी' खोली जो आज भी चालू है और ख़ूब ज़ोर शोर से काम कर रही है। इन दिनों इसी तरह ज़ोर-शोर से काम करने वाली दूसरी फैक्टरी "सीनियर बाक्स

फैक्टरी" है जिसके वर्तमान मालिक श्री विश्वनाथ जी हैं और इसे शुरू किया था श्री रामदास ने।

उपर्युक्त फैक्टरियों के अलावा परेट पर 'बाक्स एंड कार्टून बाक्स कम्पनी', धनकुटी में एक दूसरा कारखाना और पंजाबियों के कई कारखाने हैं। ये समस्त चालू कारखाने लाखों ही बाक्स प्रति वर्ष बनाते हैं। कुछ लोग कार्डबोर्ड कानपुर के बाज़ार से ही खरीद लेते हैं और कुछ बाहर से तथा विलायत तक से माल मँगा लेते हैं। सबको मिलाकर लाखों रुपये का काम होता है। कुछ कारखाने होज़री और चप्पलों के लिये भी बाक्स बनाते हैं। परन्तु होज़री आदि के बाक्स प्रायः हाथ से बनते हैं और सैकड़ों कारीगर इनको बनाने में लगे रहते हैं। कार्डबोर्ड के बक्सों के बनने के प्रारम्भिक काल में एल० बी० वर्मा ने अपनी कार्यविधि को पेटेन्ट करा लिया था ताकि और कोई न बना सके। परन्तु खन्ना बाक्स फैक्टरी के अध्यक्ष ने उनके इस कार्य को चैलेन्ज किया और मुक़दमा लड़ने पर खन्ना जी जीत गये।

आठ घंटे के प्रति दिन में एक फैक्टरी में ४००० बाक्स बनते हैं। बाक्सों का भाव १००० के हिसाब से होता है और मूल्य बाक्स के आकार और कार्डबोर्ड की क्वालिटी पर निर्भर करता है। अगर कार्डबोर्ड चिकना और बढ़िया होगा तो भाव तेज़ होगा। प्रायः बाक्स आर्डर मिलने पर ही बनाये जाते हैं। प्रत्येक

कारखाने में विभिन्न प्रकार की डाइयाँ तैयार रहती हैं और *आर्डर मिलते ही माल तैयार कर दिया जाता है।*

बेंत का सामान

बेंत की बिनाई का काम करने वाले लगभग १०० परिवार कानपुर में हैं। इनमें से अधिकांश लोग कुली बाज़ार में रहते हैं और बेंत की बिनाई का आर्डर मिलने पर काम करते हैं। कुछ लोग शहर में घूमकर कुर्सियाँ आदि बिन जाते हैं। बेंत पीलीभीत, बरेली, गोंडा, गोरखपुर और नैपाल से आता है। 'मलाका केन' बहुत थोड़ी तादाद में कलकत्ते और बम्बई से आता है।

बेंत का काम कम मिलने पर येही लोग बांस की तीलियों से चिकें भी बनाते हैं। किन्तु चिकें बनाने वाले अलग भी हैं और वे केवल चिकें बनाते हैं। चिक बनाने वाले अधिकांश लोग खपरा मोहाल में रेल के फाटक के पास रहते हैं। इसी प्रकार सिरकी का पाल आदि बनाने वाले पहले सिरकी मोहाल में रहते थे किन्तु अब अधिकांश नहर पार लक्ष्मण पार्क के पास रहते हैं। ये लोग जात के कंजड़ होते हैं। अब सिरकी मोहाल में दरी, तम्बू, कनात वाले रहते हैं और ये चीजें किराये पर भी उठाते हैं।

चटाई

किसी ज़माने में खजूर की चटाई और पंखे बनाने वाले एक स्थान पर इतने रहते थे कि उनके मोहाल का नाम चटाई

मोहाल पड़ गया था। किन्तु सन् १९३१ के हिन्दू-मुस्लिम दंगे के बाद दो-चार को छोड़ कर शेष चटाई बनाने वाले अब हिंजड़ा मोहाल में जाकर बस गये हैं और वहीं पर अपना कारबार करते हैं। कुछ पटकापुर में भी जा बसे हैं। इनके लग भग १५-२० परिवार हैं। इनकी स्त्रियाँ भी चटाई और पंखे बनाने में पुरुषों की सहायता करती हैं।

खजूर की पत्तियाँ कानपुर और उन्नाव में मिलती हैं। चटाई बनाने वाले ५-७ इकट्ठे होकर गाँवों में चले जाते हैं और कुछ पैसा देकर पत्तियाँ काट लाते हैं। डिप्टी के पड़ाव पर भी कुछ लोग रहते हैं जो खजूर की पत्तियों के गट्ठे बेंचते हैं।

चटाई बनाने वाला एक कारीगर दिन भर में २। इन्च चौड़ी और ४२ गज लम्बी एक पट्टी तैयार कर लेता है। ये कारीगर लोगों के घर में अपनी पट्टियाँ लेजाकर और उन्हें जोड़कर कमरों में फिट कर देते हैं। अधिकांश चटाइयाँ तो शहर ही में बिक जाती हैं किन्तु इलाहाबाद और हमीरपुर के कुछ लोग आकर खरीद भी ले जाते हैं। चटाई और पखों के अतिरिक्त इन पत्तियों की कुछ झाड़ू भी बनती हैं जिन्हें 'कूंचा' कहते हैं।

कानपुर शहर में कुछ माल उन्नाव, अजगैन और कानपुर जिले से भी बनकर आता है। कानपुर जिले के "बनी" नामक गाँव में खजूर के पेड़ काफी हैं।

कंघी

नये-नये फैशन के कंघे बाजार में आ जाने से शहर के लोग सींघ की कंघियाँ बहुत कम इस्तेमाल करते हैं। परन्तु बेगमगंज और पेंच बाग में आज भी पच्चीसों परिवार ऐसे हैं जो भैंस के सींघों की कंघियाँ बनाते हैं। इन कंघियों का प्रचार गाँवों में काफ़ी है। कंघी बनानेवालों के एक स्थान में अधिक बसने से एक मोहाल का नाम भी कंघी मोहाल पड़ गया है।

इन कंघियों को बनाने की विधि भी बहुत सरल है। सींघ एक चाकू से काटकर खोल लिये जाते हैं, फिर गरम करके और दबाकर चपटे कर लिये जाते हैं। इसके बाद एक आरी से छोटे-छोटे टुकड़े काट लिये जाते हैं और प्रत्येक टुकड़े में दांतुए बना लिये जाते हैं।

कंघियों के बनाने का काम एक प्रकार का कुटीर उद्योग है। बनाने वाले अपना माल लाते हैं और बनाकर स्वयं बेंचते हैं। उनकी स्वयं की दूकानें भी हैं। यहीं माल बिकता है। शहर और देहात के व्यापारी वहीं से आकर माल ख़रीद ले जाते हैं।

ऐसा अन्दाज़ है कि प्रतिदिन दो हजार कंघियाँ तैयार होती हैं और एक आदमी ५० कंघी रोज़ बना लेता है। सींघ मनों के हिसाब से खरीदे जाते हैं और कंघियाँ सैकड़ा के हिसाब से बिकती हैं। एक मन सींघ में लगभग ४०० कंघियाँ बनती हैं।

सींघों की कतरन भी बिक जाती है और वह आलू की खाद के काम में आती है, और प्रायः फ़र्रुखाबाद जाती है जहाँ आलू की खेती बहुतायत से होती है।

सींघों को सीधा और मुलायम करने का काम ऐसिड में भिगोकर किया जा सकता है और यदि सींघों के सिरों को बटन बनाने अथवा छातों की मूठें बनाने में प्रयोग किया जाय तो लाभ भी अधिक हो सकता है।

सुअर के बालों का व्यवसाय

सन् १८८० के लगभग से भारत में भी सुअर के बालों का व्यवसाय प्रारम्भ हुआ है। इस व्यवसाय को जन्म देने वाला भी कोई यूरोपियन अंगरेज़ अथवा जर्मन ही था। उसने लोगों को बदले में रुपये का लालच देकर बालों को गाँवों से इकट्ठा कराना आरम्भ किया। इस प्रकार कानपुर जैसे बड़े केन्द्र तथा समय-समय पर ग्रामीण क्षेत्रों में लगने वाले मेलों में लोग बाल लाने लगे। इन बालों को सफा करने वाले लोग जिन्हें अंगरेजी में ड्रेसर कहते हैं, इन मेलों आदि में जाकर उन्हें एकत्र करते हैं और उन्हें छाँट कर उनके प्रकार बनाते थे।

ये बाल जंगली तथा पालतू दोनों ही प्रकार के सुअरों के होते हैं। सुअर के बाल की लम्बाई ही मुख्य चीज़ है। जितना ही लंबा बाल होगा उसका मूल्य भी उसी अनुपात में अधिक होगा। चूँकि लंबाई के साथ मोटाई भी बढ़ती है अतएव लंबे बाल अधिक कड़े होते हैं। गर्म जलवायु के कारण

भारत के सुअरों के बाल अधिक लम्बे नहीं होते। वे आमतौर से सवा इंच से लेकर पौने सात इंच तक होते हैं। कभी-कभी इससे भी लम्बे बाल मिल जाते हैं।

भारत में सुअरों के बाल मुख्यतः उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेश, पंजाब तथा भूपाल में मिलते हैं। कानपुर सुअर के बालों की सफ़ाई कर उन्हें बेचने का सबसे बड़ा केन्द्र है। अन्य केन्द्रों में लखनऊ, जबलपुर, इलाहाबाद तथा बरहज बाज़ार की गणना की जा सकती है।

कानपुर में सुअर के बालों का यह व्यवसाय मुख्यतः खटिक लोगों के हाथ में है। बालों को साफ़ कर तथा लम्बाई और रंग के हिसाब से उन्हें छाँट कर उन्हें २५ से ५० पौंड तक के बंडलों में बन्द कर दिया जाता है। ये बाल मुख्यतः ब्रिटेन खरीदता है जो कलकत्ता तथा बम्बई के बन्दरगाहों से जहाज़ों द्वारा वहाँ भेजे जाते हैं। कानपुर में इनकी सफ़ाई तथा निर्यात व्यवसाय के अतिरिक्त ब्रुश बनाने का एक कारख़ाना भी है जो ब्रुश वेयर्स लिमिटेड के नाम से प्रसिद्ध है।

इस प्रकार इस व्यवसाय में भी कानपुर का भारतवर्ष में प्रमुख स्थान है। कानपुर में सुअर के बालों का काम करनेवाली ये फ़र्मं हैं :—

(१) मेसर्स हरविलास राय एन्ड सन्स, लाटूश रोड
(२) मेसर्स ऐलन एम० सदरी एन्ड को०, मालरोड
(३) मेसर्स मुकुन्दलाल हीरीलाल, लाटूशरोड

(४) सूद एन्ड को० लि० डिप्टी का पड़ाव

(५) मिट्ठूलाल रोशनलाल

(६) मेसर्स अमर एन्ड को०

(७) मेसर्स के० एफ० कोटवाल एन्ड सन्स

(८) मेसर्स डी० बी० मेहता एन्ड सन्स

(९) मेसर्स खुमानचन्द श्यामलाल

(१०) मेसर्स एच० रेडियस एन्ड को०

(११) मेसस कावस जी एन्ड सन्स

(१२) मेसर्स हजेला ब्रादर्स

(१३) मेसर्स डी० का० मेहता एन्ड सन्स

(१४) मेसर्स बन्दीदीन भगवती प्रसाद

(१५) मेसर्स संगमलाल दुलारेलाल

(१६) मेसर्स इण्डियन ब्रिसल सप्लाई कं०

श्री हरविलासराय "रिलायन्स ब्रुशवेयर के मालिक भी हैं।

कानपुर में सुअर के बालों को देहात से लोग लाते हैं और उपर्युक्त फर्मों में दे जाते हैं। हर गठरी का भाव माल देखकर निश्चित किया जाता है।

कानपुर ब्रुश वेयर लिमिटेड में शीशी साफ़ करने के, फार्म साफ़ करने के ब्रुश तथा विभिन्न प्रकार ब्रुश बनाये जाते हैं। इन ब्रुशों में प्रायः लकड़ी भी देशी ही लगती है। बढ़िया किस्म के ब्रुशों में चीन तथा युरुप से आये हुये बाल लगते हैं। कम्पनी की पूँजी लगभग दो लाख है और उसमें ५०० आदमी काम

करते हैं। कानपुर में इण्डियन ब्रुश फैक्टरी के नाम से एक तीसरी कम्पनी भी है।

लकड़ी

हमारे नगर की व्यापारिक उन्नति का सबसे प्रमुख कारण इसकी स्थिति ही रही है। नगर की स्थिति की उपयोगिता में पुण्य सलिला भगवती भागीरथी का सबसे महत्वपूर्ण स्थान है। जैसा कि पहले कहा जा चुका है, देश का समस्त व्यापार नदियों द्वारा ही होता था और यही कारण है कि देश के प्रायः समस्त व्यापारिक नगर किसी न किसी नदी के किनारे पर ही स्थित हैं। अन्य व्यापारों की अपेक्षा लकड़ी के व्यवसाय में नदियों का सबसे अधिक महत्व रहा है और पहाड़ी स्थानों में अब भी है। लकड़ी के बड़े-बड़े टुकड़े ले जाने के लिये नावों की भी आवश्यकता न थी। उनके बेड़े बनाकर नदी में छोड़ दिये जाते थे और इस प्रकार एक नदी से उसकी दूसरी सहायक नदी तथा उससे किसी अन्य नदी द्वारा वे बेड़े अपने गन्तव्य स्थान तक पहुँचाये जाते थे और नदियों के संगम स्थल वर्तमान रेलवे जंकशनों का काम करते थे।

हमारे नगर में प्राचीन समय में लकड़ी के व्यापार, उसके लाने और ले जाने का यही ढंग प्रचलित था। वर्तमान बाँस मंडी का तो पहले कोई पता ही न था! आज भी आवागमन की सुविधा के कारण स्टेशनों के समीप ही बस्तियाँ बस जाती हैं इसी प्रकार प्राचीनकाल में नदियों के घाट के पास ही बस्ती बन

जाया करती थी। लकड़ी ढोने और यथा स्थान पहुँचाने की कठिनाई से बचने के कारण लकड़ी की सर्व प्रथम बाज़ार छावनी क्षेत्र में गोलाघाट के समीप सत्ती चौरा पर था। सत्ती चौरा ही नगर का प्रमुख लकड़ी का बाज़ार था। यहाँ पर लकड़ी प्रमुख रूप से बहरामघाट, गोला गोकरन नाथ तथा पीलीभीत की ओर से आती थी। पीलीभीत की लकड़ी सकरा नदी द्वारा देवा नदी और उसके पश्चात् शारदा नदी के मार्ग से गंगा नदी में लायी जाती थी और इस प्रकार गंगा नदी द्वारा कानपुर के गोला घाट पर उतारी जाती थी। बहराम घाट और गोला गोकरन नाथ की लकड़ी घाघरा नदी द्वारा गंगा में लाई जाती थी और लकड़ी के बड़े-बड़े बेड़े कानपुर में आते थे। उस समय आजकल के समान लकड़ी का कोई बहुत बड़ा बाज़ार न था, थोड़े से दूकानदार थे और वे ही अपनी सुविधानुसार आपस में माल बेच लिया करते थे।

गोलाघाट के पश्चात् लकड़ी बाज़ार उठ कर नहर के किनारे जहाँ आजकल विश्वेश्वरनाथ मूलचन्द फर्म है आ गया। यह बाज़ार यहाँ किस सन् में आया इसका कहीं ठीक-ठीक विवरण प्राप्त नहीं होता किन्तु अनुमान किया जाता है कि गंगा की नहर बन जाने से जल मार्ग द्वारा ही लकड़ी को शहर के अन्दर ला सकने की सुविधा के कारण बाजार नहर के किनारे आ गया। नहर के किनारे से बढ़ते-बढ़ते तथा रेलवे चालू हो जाने से यह बाजार सन् १८७५ से ८० के आस-पास कोपरगंज मालगोदाम

के निकट आ गया। स्व० बाबू विक्रमाजीत सिंह के नगर-पालिका के अध्यक्ष होने पर सड़कों का प्रसार हुआ और यह बाज़ार वर्तमान बाँस मंडी में आ गया।

प्रारम्भिककाल में लकड़ी के व्यापारी स्थाई रूप से कानपुर में नहीं रहते थे। उनमें से अधिकांश अमरोहा, मुरादाबाद, रामपुर तथा बरेली के थे जो अक्टूबर से जून तक नगर में व्यापार करते थे तथा जून से अक्टूबर तक ४ महीने अपने घर चले जाया करते थे। यह ढंग सन् १९०० तक चलता रहा। बाद में वे व्यापारी यहीं रहने लगे तथा अपने पुराने स्थान को भूल कर कानपुर के ही नागरिक बन गये। नगर के पुराने फर्मों में मुश्ताक अहमद एण्ड सन्स, हिकमतउल्ला कुदरतउल्ला, सी० पी० टिम्बर वर्क्स, हाजी मुहम्मद हमज़ा, मूलचन्द विश्वेश्वर नाथ, पूसीलाल, छंगीलाल, दामोदरदास तथा अहमदुद्दीन दुर्रानी खाँ, के फर्म प्रमुख हैं। इसके अतिरिक्त गुलज़ार सफ़दर अली; एतमादुद्दीन खाँ, नजफ़ अली, नज़ीर हुसेन, बनारसीदास मूलचन्द के फर्म भी पुराने हैं।

वर्तमान समय में हमारे नगर में बाँस नजीबाबाद, बरेली और मुरादाबाद से आते हैं। इसके अतिरिक्त बिहार तथा नैपाल से भी पर्याप्त मात्रा में लकड़ी आती है। सागौन की लकड़ी मध्य प्रदेश तथा विन्ध्य प्रदेश से आती है तथा चीड़ और साखू की लकड़ी पठानकोट, हरद्वार, बैरामघाट एवं टनकपुर से आती है। इसके अतिरिक्त देवदार, महोगनी बरमा टीक आदि पर्याप्त

मात्रा में यहाँ खपती है और प्राचीन १० या बारह दूकानदारों से बढ़ते-बढ़ते अब नगर के विभिन्न भागों में सैकड़ों बड़ी-बड़ी दूकानें हो गई हैं जिनमें आधुनिक ढंग से आरा मशीन द्वारा चिराई के साधन उपलब्ध हैं। बरमा टीक का प्रचलन सन् १९१०-११ के लगभग एक पारसी सज्जन ने किया था तथा सी० पी० टीक का प्रचलन सन् १९३०-३१ के लगभग वर्तमान सी० पी० टीक वर्क्स के हाजी मुहम्मद हमज़ा द्वारा किया गया।

आज हमारे नगर में हर प्रकार की लकड़ी का उपयोग और प्रयोग होता है। बाँस मंडी के अतिरिक्त लाटूश रोड, अनवरगंज-इख्तियाराबाद तथा ५ नं० गुमटी में सन् १९४४-४५ से सैकड़ों दूकानें स्थापित हो गई हैं और लकड़ी का व्यापार बड़े ज़ोर से चल रहा है। आवागमन के आधुनिकतम साधन रेल और मोटर ट्रकों के हो जाने पर भी अब भी जलाने की बहुत सी लकड़ी बरसात के दिनों में गंगा नदी द्वारा आती है जो परमट घाट तथा बाबा गिरधरानन्द घाट पर उतारी जाती है। इसके अतिरिक्त नहर गंग शाख कानपुर द्वारा भी बहुत सी लकड़ी आती है जो पहले जुही में उतारी जाती थी किन्तु रास्ता के आवागमन में बाधा पड़ने के कारण अब पनकी कटरा के समीप उतारी जाती है। जलाने की लकड़ी की सैकड़ों टालें भिन्न-भिन्न मोहल्लों में हैं। हमारे नगर के लकड़ी के व्यवसाय का भविष्य बहुत उज्ज्वल है।

कारचोबी

कारचोबी, ज़रदोज़ी और तारकशी के काम का घर लखनऊ है। वहाँ यह काम ख़ूब होता है। चूँकि कानपुर लखनऊ के नज़दीक है अतः यहाँ भी ५०–६० कारीगर लखनऊ से आकर बस गये थे और उन्हें बराबर काम मिलता रहता था। यद्यपि पहले की अपेक्षा तारकशी की टोपी और कुर्ते बहुत ही कम पहने जाते हैं फिर भी सलमें-सितारे का काम होता ही है। ज़रदोज़ी का तार बाल से पतला होता है। अच्छा कारीगर दो तोले तार तक का काम कर लेता है।

गोटा, किनारी, लचका, कलाबत्तू, कामदानी आदि कानपुर में बनते नहीं, परन्तु बाहर से मँगाये जाते हैं और काफ़ी बिक्री होती है। यह चलन मुसलमानों से शुरू हुआ था और इसके कारीगर प्रायः मुसलमान ही हैं। पहनने के लिये सभी जातियाँ इसका प्रयोग करती हैं और सलमें-सितारों से मनोहारी डिज़ाइन कपड़े पर बनाई जाती हैं।

तम्बू-कनात

अच्छे प्रकार के तम्बू-कनात कपड़े के मीलों में बनते हैं। कुछ दूकानदार भी तम्बू बनाकर बेंचते हैं। तम्बू बनाने वाले मीलों में ये हैं :—

कानपुर डाइंग एण्ड क्लाथ प्रिंटिंग कम्पनी लिमिटेड, एलगिन मिल कम्पनी लिमिटेड, म्योर मिल कम्पनी लिमिटेड, कानपुर काटन मिल्स कम्पनी लिमिटेड, मेसर्स एच० बेविस एण्ड कम्पनी।

दूकानदारों में प्रसिद्ध नाम ये हैं :—मोहम्मद निसार कम्पनी, कर्नेलगंज; शहाबुद्दीन कम्पनी, सलार बख़्श कम्पनी। घुमनी मोहाल के भी कई दूकानदार यह काम करते हैं।

तमाखू

तमाखू का उपयोग खाने, पीने और सूँघने में व्यसन-प्राप्त मनुष्य किया करते हैं। सूँघने की परिपाटी शनैः शनैः कम होती जा रही है। सूँघने वाली तमाखू सुँघनी के नाम से प्रख्यात है, इसे शौकीन मनुष्य बनारस से मँगवाते थे क्योंकि अधिकतर बढ़िया सुँघनी बनारस में ही बनती रही है। कानपुर में फुटकर फिराने वाले और जनरलगंज में बही बेचने वाले सुँघनी बेचते थे। यह पत्तों की सुन्दर बने चोंगे में आया करती थी और प्रायः इसके रखने के लिये काष्ठ की सुरम्य छोटे मुँह की डिब्बियाँ भी आया करती थीं। साधारणजन मामूली डिबियों में भी रखते थे और कुछ लोग हाथी के खाये हुये कैथे के खोखले को भी इस काम में लाते थे। सुँघनी आजकल यहाँ नहीं-सी बिकती है। कोई खास दूकानदार नहीं हैं।

पीने और खाने की तमाखू कानपुर में बिहार के जिलों मुँगेर, पूर्निया, गया, खजौली, लत्तीपुर, सरेसा, बच्छौर साढ़ और दियर आदि से आती है। मोतीहारी की तमाखू बहुत बढ़िया मानी जाती है और फर्रुखाबाद, कायमगंज पटियारी और रामपुर से रस्सा तमाखू अधिकांश में

आती है। कानपुर जिले के बिल्हौर तहसील से भी रस्सा बड़ी मात्रा में आती है।

बिहार की तमाखू ज्यादातर खाने के लिये प्रयुक्त होती है और पीने के लिये रस्सा बहुधा काम में लिया जाता है। तमाखू की लकड़ी को कूट पीस कर पीने की तमाखू में मिलाते हैं। पीने की तमाखू की लकड़ी और गर्दा सिंघाड़ा, खरबूजा और तरबूज आदि के कीड़े मारने के लिये खाद के काम में भी लाई जाती है। कानपुर में थोक तमाखू का व्यापार रामगंज मुहल्ले में होता है। श्री बद्दूमल दुर्गाप्रसाद, श्री लालताप्रसाद गौरीशंकर, श्री गुलजारीलाल गिरधरलाल, श्री सोमेश्वर बैजनाथ, श्री छोटेलाल जगन्नाथ, श्री गौरीदत्त गनपतराय, श्री पुरुषोत्तमदास बनारसीदास की दूकानें पुरानी हैं।

श्री बद्दूमल दुर्गाप्रसाद की दूकान समाप्त हो गई है। यह बहुत पुरानी दूकान थी। श्री दुर्गाप्रसाद जी उर्फ मुन्शी जी के कोई लड़का नहीं था, वे नौघड़ा में एक मन्दिर श्रीराधाकृष्ण जी का बनवा गये हैं। श्री लालताप्रसाद गौरीशंकर फर्म बँट गया है। पहले लालताप्रसाद कामताप्रसाद नाम पड़ा और बाद में रामेश्वर रामगोपाल का नाम हुआ। श्री गौरीशंकर के पुत्रों की श्री प्रयागनारायण जयदेव प्रसाद के नाम से दूकान है। अब पौत्र भी काम कर रहे हैं।

श्री गुलजारीलाल गिरधरलाल जो निःसंतान थे। वे अपने पिता तथा अपने नाम से श्री साँवले प्रसाद गुलजारीलाल भट्ट

संस्कृत पाठशाला व मन्दिर बनवा गये हैं। इस दूकान के साझो-दारों ने श्रीमुनईलाल पुत्तूलाल के नाम से दूकान खोली। अब श्री पुत्तूलालजी के पुत्र श्री मन्नालाल तमाखू का व्यापार करते हैं। श्री छोटेलाल जगन्नाथ फर्म बन्द हो गया, कुछ समय तक श्री रामचरण भगवानदीन नाम से रहा, फिर रामचरण छेदीलाल और श्यामविहारी श्री नरायण के नाम से अलग-अलग कारो-बार होता रहा। श्री गौरीदत्त गणपतराय फर्म में कई परिवर्तन हुये। श्री हीरालाल घनश्यामदास, गिरधारीलाल ब्रह्मदत्त के नाम पड़ कर अब श्री द्वारिकाप्रसाद कुन्जबिहारीलाल के नाम से है। श्री पं० द्वारिकाप्रसाद जी सभी फ़र्मों में मुख्य कार्यकर्ता रहे हैं और आज भी हैं। श्री पुरुषोत्तमदास बनारसीदास फर्म में मुख्य कार्यकर्ता ला० सुन्दरमल, उनके बाद उनके पुत्र श्री सीताराम, और ला० सीताराम के पुत्र श्री अमरनाथ देवीप्रसाद आज-कल काम कर रहे हैं। इनके नाम से भी फर्म रहे हैं और हैं। श्री सोमेश्वर बैजनाथ फर्म बन्द हो गया है। श्रीबैजनाथ पांडेय के वंशज बद्रीप्रसाद प्रभाशंकर के नाम से शकर पट्टी के पास तमाखू का भी व्यापार करते हैं। श्री कल्लू महराज की तमाखू की दूकान पुरानी है उनके भाई मन्नूलाल जी शुक्ल तथा उनके पुत्र श्री रमानाथ (रम्मन) अपने दोनों छोटे भाइयों के साथ तमाखू का काम करते हैं। रामगंज में निम्नलिखित दूकानों में भी तमाखू का व्यापार हो रहा है। राधेश्याम मधुवनकिशोर, बालकृष्ण श्रीगोपाल, रामऔतार सुरेशचन्द्र, राजाराम सीताराम,
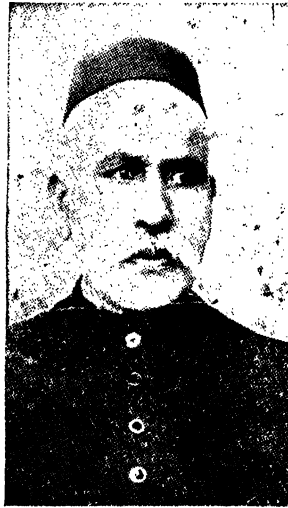
बा० वंशीधर

रामआसरे बालकराम, सरयूप्रसाद जोगनारायण, किशनचन्द्र बद्रीप्रसाद और लक्ष्मीनारायण रामनारायण आदि—फकीरेलाल मुन्शीलाल की भी दूकान थी। श्री हुलासीलाल रामदयाल की भी तमाखू की दूकान थी जो बन्द हो गई।

फुटकर दूकानदारों के यहाँ खाने व पीने की तमाखू फुटकर निम्नलिखित दूकानों में बिकती रही है—

श्री हाजीहुसेन बक्स बदलू मियाँ सिरकी मुहाल, बाबू खाँ छुट्टन मियाँ नयागंज, कल्लू मियाँ अब्दुलहमीद ग्वालटोली, अँगनू हाजी कुली बाज़ार।

इन सब के यहाँ वर्ष में लाखों रुपये की सनौवा (पीने की बनी हुई) तमाखू बिकती थी। इनके अलावा मामूली दूकानदार थे। सम्प्रति नन्हें मियाँ, याकूबअली, अमीर अली, रहमतउल्ला, रज्जब अली, याकूबअली, राधामोहन, रामकुमार अनन्तमाधव पांडेय, हरीशचन्द्र जगदीश चन्द्र, श्री त्रिभुवननाथ शुक्ल और हजारीलाल बाबूलाल की अच्छी दूकानें सनौवा की है। इनके यहाँ खाने की तमाखू भी बिकती है।

पीने की तमाखू चार आने सेर से लेकर ८०) रुपये सेर तक बिकती रही है।

खाने की तमाखू को सुरती जरदा का रूप देकर श्री प्यारेलाल शुक्ल ने खूब चलाया। अब उनके पुत्र श्री विश्वनाथ शुक्ल श्री सिद्धनाथ शुक्ल आदि वही काम करते हैं। मूलगंज में मुनीम जी के नाम से मैनपुरी तमाखू की परिपाटी चली। अब

तो सारे शहर में मैनपुरी तमाखू चल रही है, इसमें श्री आनन्द किशोर गुप्त विशेष प्रख्यात हैं।

शीरे का व्यापार तमाखू के साथ चलता है। रामगंज की अधिकांश दूकानों में शीरे का भी व्यापार होता रहा है और अब भी है। श्री राधेलाल, श्री रमाकान्त मिश्र, श्री शीतल प्रसाद तमाखू व शीरे में प्रसिद्ध रहे हैं। श्री रमाकान्त मिश्र कांग्रेस सेवक थे और इनका क़त्ल चलती गाड़ी में कर डाला गया था। श्री राधेलाल के पुत्र श्री किशोरीलाल अब भी यहीं काम करते हैं। परन्तु मिश्र जी के पुत्र अब इधर से उदासीन हैं। खाने की बर्नी तमाखू लखनऊ और बनारस आदि से भी बिकने आती है। शीरे से शराब भी बनाई जाती है।

कानपुर के शक्कर मिलों में कानपुर शुगर मिल और बैजनाथ बालमुकुन्द मिल में शराब और मैथीलेटेड स्प्रिट बनती है। इन मिलों में और गुटैहा शुगर मिल में जो अब श्री कमलापति मोती-लाल के नाम से है, शक्कर नहीं बनती। इसलिये यहाँ से अब शीरा उपलब्ध नहीं होता। शीरे से पेट्रोल बनाने का भी प्रयास किया जा रहा है—कानपुर में अभी इसका श्रीगणेश नहीं हुआ। दिल्ली के श्री लक्ष्मीनारायण शर्मा एण्ड कम्पनी जो कि यहाँ घड़ी के मशहूर कारोबारी हैं उनके भाई ने श्री बैजनाथ बाँकेबिहारीलाल मिल को स्प्रिट बनाने के लिए ठेके पर ले रक्खा है।

उत्तर प्रदेश के अधिकांश शुगर मिलों का शीरा रामगंज में आता है। अनवरगंज के ला० कुन्जबिहारीलाल शीरे के प्रख्यात व्यापारी थे। उनके बाद कुछ दिन काम चला, अब बन्द हो गया है। फर्म का नाम श्री हरप्रसाद कुन्जबिहारीलाल पड़ता था। श्री शिवदत्त दीक्षित कानपुर शुगर मिल के दलाल थे वेही शीरे मिल के शीरे की दलाली करते थे।

पीने की तमाखू का प्रचार क्रमशः कम होता जा रहा है क्योंकि बीड़ी का प्रचार अत्यधिक हो गया है। देहातों में भी बीड़ी चलने लगी है। कानपुर में ब्रिटिश इण्डिया इम्पीरियल टुबैको कम्पनी सिगरेट बेचने वाली मालदार कम्पनी है। अब ये विदेशी सिगरेटें यहाँ भी बनने लगे हैं। मैनपुरी तमाखू में कहीं-कहीं पीने वाली सूखी तमाखू का भी उपयोग होने लगा है।

विदेशी सिगरेट और सिगार बहुत चलते हैं। देश में विदेशी कम्पनियाँ कारखाने खोल रही हैं, कुछ खुल भी गये हैं। सम्प्रति बीड़ी सिगरेट का इतना अधिक प्रचार बढ़ गया है कि पीने की तमाखू की खपत बहुत न्यून हो गई है।

बिजली

कानपुर एलेक्ट्रिक सप्लाई कारपोरेशन को बेग सदरलैंड कम्पनी ने बहुत दिनों तक चलाया और कुछ दिनों तक बिजली के द्वारा सरसैया घाट से पुराने ई० आई० आर० स्टेशन तक ३ मील ट्राम भी चलाई। अब इस कारपोरेशन को उत्तर प्रदेश

की सरकार ने अपने अधिकार में ले लिया है और इसका नाम अब कानपुर एलेक्ट्रिक सप्लाई एडमिनिस्ट्रेशन हो गया है। इसके द्वारा घरेलू काम के लिए तथा उद्योगधंधों के लिये बिजली प्राप्त होती है। जब कभी बिजली फेल हो जाती है तब बड़े-बड़े मील बन्द हो जाते हैं।

जिस समय बिजली कम्पनी बनी थी उसके पहले म्युनिसिपेलिटी मिट्टी के तेल के लैम्प शहर में जलवाती थी किन्तु बिजली कम्पनी और म्युनिसिपेलिटी में एक इक़रारनामा लिखा गया जिसके द्वारा म्युनिसिपेलिटी ने बिजली कम्पनी को आर्थिक सहायता देना स्वीकार किया और कम्पनी ने म्युनिसिपेलिटी को बिजली देना मंजूर किया, इस शर्त के साथ कि म्युनिसिपेलिटी जितने मोटर लगायेगी उसके प्रत्येक हार्सपावर से कम से कम १००० युनिट प्रति वर्ष खर्च करेगी और यदि बिजली कम खर्च होगी तो कमी के दाम देने पड़ेंगे। उस समय घरेलू खर्च की बिजली की दर आठ आना प्रति युनिट था। यदि बिजली का भुगतान १५ दिन के अन्दर हो जाता था, तो दो आना रुपया की छूट मिलती थी। उद्योग के लिये लगे हुये मोटर द्वारा खर्च होने वाली बिजली के प्रथम ९० युनिट की दर दो आना ६ पाई थी और ९० के ऊपर खर्च होने वाली बिजली की दर एक आना ३ पाई थी। छोटे-बड़े समस्त कारखानों के लिये एक ही दर थी। आजकल के रेट इस प्रकार हैं।

छोटी पावर—फी युनिट दो आना ३ पाई

घरेलू—फी युनिट तीन आना

समस्त बिजली पर चार आना फी रुपया सरकारी ड्यूटी लगा दी गई है।

बिजली का सामान बेचने वाली करीब २०० दूकानें कानपुर नगर में हैं। इनमें से लगभग ४० दूकानें तो मनीराम बगिया अर्थात् गयाप्रसाद लेन में हैं। शेष आर्य नगर, सीसामऊ, बिरहाना रोड, मेस्टन रोड और परेड पर हैं।

ये दूकानदार दो प्रकार के होते हैं। एक तो कन्ट्रेक्टर कहलाते हैं जो फिटिंग आदि का काम करते हैं। इनके यहाँ एक लाइसेन्स प्राप्त मिस्त्री होता है, जिसे लखनऊ के इलेक्ट्रिक इन्सपेक्टर से परमिट मिला होता है और उसे 'वायरमैन' कहते हैं। इस मिस्त्री के साथ एक 'एपरेन्टिस' भी रखा जा सकता है। दूसरे प्रकार के दूकानदार फिटिंग आदि नहीं कर सकते, केवल माल बेंच सकते हैं। कानपुर में कन्ट्रेक्टर प्रकार के लगभग ११५ दूकानदार हैं। इनमें भी दो ग्रेड होते हैं। एक तो 'ए' ग्रेड वाले जो उत्तर प्रदेश के किसी भी नगर में जाकर काम कर सकते हैं और दूसरे 'बी' ग्रेड वाले जो अपने ही नगर में काम कर सकते हैं।

कन्ट्रेक्टरों के यहाँ लगभग ३००० रुपये का माल रहता है और अन्य दूकानदारों के यहाँ चार-पाँच हजार का। किन्तु बड़े-बड़े दूकानदारों के यहाँ पचास हजार रुपये तक का माल भी रहता है। कानपुर के कुछ बड़े-बड़े दूकानदार ये हैं :—

१—कानपुर एलेक्ट्रिक एण्ड ट्रेडिंग कम्पनी जिसके मालिक श्री जुगलो बाबू हैं। यह कन्ट्रेक्टर भी हैं। २—आर० एन० कपूर, यह केवल दूकानदार हैं। ३—हरी कलसी एण्ड सन्स।

इमारती सामान

१—ईंटों के भट्ठे

ज़िले भर में ईंटों के भट्ठे सौ से ऊपर होंगे। इनमें से अधिकांश कानपुर तहसील में हैं और कुछ थोड़े से अन्य तहसीलों में। कुछ देशी पजावे भी हैं। सब भट्ठों से साल में १०० करोड़ ईंटें तैयार होती हैं। भट्ठे चलाने वाले तीन वर्ष के लिए ज़मीन पट्टे पर ले लेते हैं और भट्ठा खुदवा कर ईंटें पथवाते हैं। अब तक ज़मीन ३००-४०० रुपया फ़ी बीघा के हिसाब से मिल जाती रही है। ईंटें ५ प्रकार की होती हैं, प्रथम श्रेणी, दूसरी श्रेणी, तीसरी श्रेणी, काला मुँह, और खंजड़। सब का भाव भी अलग-अलग होता है और प्रति हज़ार के हिसाब से होता है। अगर किसी भट्ठे में १००० ईंट तैयार होंगी, तो उसमें से ५०० अव्वल निकलेंगी, १०० दोयम, १५० तीसरे नं० की, १०० काला मुँह, १०० खंजड़ और ५० टूटी-फूटी।

ईंटें तैयार करने में मिट्टी और पानी के अतिरिक्त कोयले के चूरे की भी ज़रूरत पड़ती है। पथाई और भराई के अलावा निगरानी का ख़र्च भी देना पड़ता है। ढोआई ख़रीदार के ज़िम्मे होती है।

२—चूना और सुर्खी

चूना और सुर्खी की २०-२५ चक्कियाँ शहर के विभिन्न मोहल्लों में हैं, जैसे बाँस मंडी, भन्नाना पुरवा, कोपरगंज और छावनी आदि। एक चक्की में ५०० घन फुट चूना तैयार होता है और सुर्खी लगभग ३०० फुट तैयार हो सकती है। चूना कंकड़ को जलाकर तैयार किया जाता है, जो अजगैन और कालपी से आता है।

अब चूने का काम कम हो गया है उसके स्थान पर बिजली घर, मीलों और रेलवे से निकली हुई पत्थर के कोयले की राख और सीमेंट तथा सीमेंट और बालू से काम लिया जाता है।

शराब की भट्ठी

लाला बाँकेबिहारीलाल की इण्डियन डिस्टिलरी सन् १९१३ में शुरू हुई थी। यह महुए और शीरे से शराब बनाती थी। इसमें १५० आदमी काम करते थे। ५०००० मन महुआ प्रति वर्ष ख़र्च होता था, जो युक्तप्रान्त (युक्त प्रदेश) और मध्य भारत के विभिन्न ज़िलों से मँगाया जाता था। इतना ही शीरा भी इस कारख़ाने में खप जाता था जो अनवरगंज स्थित स्वयं बाबू बाँकेबिहारी की शक्कर फैक्टरी से प्राप्त हो जाता था।

इस कारख़ाने में ह्विस्की, ब्रान्डी, रम, जिन, रेक्टीफायड, स्प्रिट और मेथीलेटेड स्प्रिट तैयार होती थी।

प्रारम्भ में यह डिस्टिलरी १ लाख ५० हज़ार रुपये से शुरू की गई थी। किन्तु २१ ज़िलों में शराब भेजने का ठेका सरकार

से मिल जाने के कारण ६ वर्ष में इसकी पूँजी बढ़ा कर ७ लाख कर दी गई थी। किन्तु घाटा होने के कारण डिस्टिलरी अर्थात् शराब की भट्ठी बन्द हो गई।

टीन की डिबिया

हाथ से डिबिया बनाने वाले कारीगरों के अलावा दो-तीन मशीनें भी डिबिया बनाती हैं। इन डिबियों को तम्बाकू वाले और मरहम आदि के लिये डाक्टर लोग ख़रीद लेते हैं। एक फेक्टरी ८-१० हज़ार रुपये की डिबिया बना लेती है। कानपुर में ख़र्च होने से जो माल बच जाता है वह इलाहाबाद बनारस आदि चला जाता है।

डिबिया काट लेने के बाद जो कतरन बच रहती है वह फेंक दी जाती है। यदि इस कतरन से बटन बना लिये जाया करें तो और भी लाभ हो।

चीड़ के सन्दूक़ों पर टीन जड़ कर बेचने वाले भी बीस-पच्चीस दूकानदार कानपुर में हैं। इनमें से कई एक तो हटिया और जनरलगंज में हैं और कुछ अन्य मोहल्लों में भी। इन टीनों पर मोर, मछली, तथा अन्य चिड़ियों के ठप्पे भी लगाये जाते हैं। ये ठप्पे लोहे के बने होते हैं और शहर में ही मिल जाते हैं।

टीन जड़े हुए सन्दूक़ प्रायः पूरे साल भर बनते रहते हैं और इन्हें कानपुर तथा फ़तेहपुर के देहातों से आने वाले लोग

अक्सर ले जाते हैं। मकनपुर और कुम्भ आदि के मेलों में इन टीन-जड़ित सन्दूकों की अच्छी बिक्री होती है।

छाते

किसी जमाने में बादशाही नाके पर छाते बनाने का भी एक कारखाना खुला था, जिसमें दर्जी आदि मिलाकर १०–१५ आदमी काम करते थे। किन्तु यह कारखाना थोड़े ही समय के बाद बन्द हो गया। यह तीलियाँ और डंडियाँ कलकत्ते से मंगाते थे और कपड़ा कानपुर से लेकर चढ़ाते थे। यह कारखाना १२ दर्जन छाते रोज बना लेता था और इसका नाम "युक्त प्रान्तीय छाता निर्माण कम्पनी" था।

इस समय छातों के चार बड़े व्यापारी हैं। श्री नन्दूराम, श्री रामलाल बहरे, श्री सुदर्शन महाराज और श्री अहमद अमीर।

लोहे के कारखाने

कानपुर में लोहे का व्यापार कब प्रारम्भ हुआ इस सम्बन्ध में कुछ पता नहीं चलता है। बड़े-बूढ़ों से इतना पता चला है कि सन् १८६० के लगभग कानपुर में लोहे का कारबार होता था। उस समय मध्यभारत, विन्ध्य प्रदेश तथा उत्तर प्रदेश के भी कुछ स्थानों से जैसे छतरपुर, बिजावर, दीपपुर, मगरौना, आमौल, कुलैथ आदि से अनगढ़ रूप से लोहा कानपुर आया करता था। उल्लिखित स्थानों में लोहे की मिट्टी निकाली जाती

थी, जिसे मट्टी की कच्ची भट्ठियों में, जिन्हें खोंड़ा कहा जाता था, गलाया जाता था। जिस मट्टी से लोहा निकलता था उसे धाऊ कहते थे। भट्टियों से निकलने वाला लोहा अनगढ़ रूप में छोटे-छोटे थक्कों में जमा लिया जाता था और फिर कानपुर आया करता था। यहाँ भट्टियों में गरम करके तथा कूट-पीट कर उससे आवश्यक वस्तुयें बना ली जाती थीं।

सन् १८६० में इस प्रकार से आने वाले लोहे का कारबार करने वाली केवल एक ही गद्दी का पता चलता है जिसका नाम "खुशालचन्द गंगादीन" था। धीरे-धीरे इस कारबार में और लोग भी आने लगे जिनमें प्रायः सबके सब कानपुर से बाहर के थे। कानपुर के किसी निवासी ने लोहे का कारबार किया हो यह पता नहीं चलता है। इन बाहर से आने वालों की अनेक गद्दियाँ सन् १९१० से पहले ही लोहे का काम करने लगी थीं—जिनमें कुछ प्रमुख ये थीं।

१—प्यारेलाल कन्हैयालाल, २—बिहारीलाल भजनलाल, ३—लक्ष्मणदास बाबूराम, ४—जीवनराम कन्हैयालाल, ५—तेजनलाल दीनानाथ, ६-ऋषीनाथ मनोहरलाल, ७—केदारनाथ तुलसीराम। ये बड़ी-बड़ी फर्में थीं। इनमें से कई एक की गद्दियाँ कलकत्ता में भी थीं। ये कलकत्ता तथा बम्बई से ही माल नहीं मँगाते थे अपितु विदेशों से भी लोहे का आयात करते थे। इनमें आढ़त का भी काम होता था। इससे स्पष्ट है कि सन्

१९१० के आस-पास कानपुर में लोहे का कारबार पर्याप्त रूप में बढ़ गया था।

ऊपर लिखी फर्में इस प्रकार पक्के माल का काम करतीं थीं और कुछ गद्दियाँ ऐसी थीं जो केवल बने हुये माल का ही काम करती थीं। जैसे १—हजारीलाल हेमराज, २—मूलचन्द चम्पाराम, ३—चन्दूलाल बाबूराम, ४—दाधराज हीरालाल, ५—गोपालदास मन्नोलाल, ६—कुन्दूलाल बाबूराम, ७—लल्लू-प्रसाद शिवरत्नलाल, ८—देवीप्रसाद मालवीय इत्यादि।

सन् १९१४-१५ के आस-पास टाटा आयरन स्टील कम्पनी लिमिटेड की स्थापना हो चुकी थी और टाटा नगर में उसका कारखाना लग रहा था। सन् १७-१८ में टाटा का माल कानपुर के बाजार में प्रथम-प्रथम आया जिसमें गार्डर, लट्ठा तथा पटरी मुख्य थे। गार्डर तो चला किन्तु लट्ठा और पटरी सुघड़ और सुडौल न होने के कारण विदेशी माल के आगे नहीं चली। सन् १९२१-२२ के लगभग टाटा ने चद्दर और प्लेट भी निकाली जो कानपुर आई।

इस समय तक टाटा का बहुत माल कानपुर में आने लगा था। टाटा ने देखा कि कानपुर में तवा, कड़ाही आदि बने हुये माल का काम भी बहुत होता है अतः उसने तवा और कड़ाही के गोल चन्दे भी काट कर भेजना प्रारम्भ किया किन्तु विदेशी गोल चन्दों के सामने टाटा के चन्दे टिक नहीं सके। टाटा के कारखाने में पक्के माल के साथ-साथ चद्दर तथा प्लेट को कतरन

(कटिंग) भी बढ़ने लगी। अन्ततः कतरन भी बाज़ारों में पहुँचने लगी। कानपुर में टाटा की कतरन सर्वप्रथम बिहारीलाल भजनलाल के स्वामी लाला बाबूराम जी लाये।

टाटा का काम दिन दुगना रात चौगुना बढ़ रहा था। उधर कानपुर की लोहे की मंडी से माल केवल उत्तर प्रदेश में ही नहीं जाता था परन्तु देहली, पंजाब, राजस्थान, मध्य भारत, विन्ध्य-प्रदेश, नैपाल आदि में भी जाता था। ऐसी उत्तम दूसरी कोई मंडी उत्तरीय भारत में नहीं थी। अतः टाटा कम्पनी ने सन् १९१९ में अपना एक गुदाम कूपरगंज में खोल दिया और अब तो कालपी रोड के समीप एक विशाल भूमि लेकर टाटा ने एक बहुत बड़ा गुदाम बना रखा है।

कानपुर की लोहे की मंडी की उन्नति देखकर दिल्ली की कई गद्दियों ने भी अपने कार्यालय यहाँ खोले। कलकत्ते के भी एक दो कार्यालय यहाँ खुले। और यहाँ लोहे के दूकानदारों की संख्या भी बढ़ने लगी जो आज तक बढ़ती ही जाती है।

रोलिंग मिल्स

रोलिंग मिल्स के इतिहास का अनुसंधान करने पर पता चलता है कि सन् १९०४-५ के लगभग श्री हाफ़िज़ मुहम्मद फ़ख़रुद्दीन महोदय ने कानपुर में ही नहीं भारत में सबसे प्रथम रोलिंग मिल कानपुर में खोला था। यह रोलिंग मिल सब्ज़ी मंडी में इण्डिया रोलिंग मिल के नाम से खोला गया था। गलाने की भट्ठी न होने के कारण रेलवे के स्क्रेप से ही इसमें मोटा

माल तैयार किया जाता था। सरदार इन्द्रसिंह जी, जो आज "सिंह इञ्जीनियरिंग मिल्स लिमिटेड" के स्वामी हैं, उस समय श्री फ़ख़रुद्दीन महोदय की इस रोलिंग मिल में काम करते थे। यह रोलिंग मिल सस्ते तथा सुघड़ विदेशी माल के मुक़ाबिले में अधिक दिन चल नहीं सका। यह ध्यान देने की बात है कि उस समय तक टाटा मिल की स्थापना भी नहीं हुई थी। श्री फ़ख़रुद्दीन जी ने रोलिंग मिल के काम की शिक्षा जर्मनी में प्राप्त की थी और बड़े उत्साह तथा लगन से इसे खोला और चलाया था।

विदेशी माल के सामने पड़ता न खाने के कारण यह रोलिंग मिल बन्द कर देना पड़ा। इस बीच में सरदार इन्द्रसिंह जी इण्डिया रोलिंग मिल छोड़कर टाटा के यहाँ चले गये थे। इस मिल के बन्द हो जाने पर इसका बहुत-सा सामान और मशीनें ला० श्यामलाल जी ने जो केदारनाथ तुलसीराम फर्म के स्वामी थे, खरीद कर दूसरा रोलिंग मिल "श्याम आयरन एण्ड स्टील कं०" के नाम से फजलगंज में खोला और सरदार इन्द्रसिंह जी को टाटा से पुनः कानपुर लाकर इसका कुल संचालन प्रबन्ध उनके ऊपर डाल दिया। किन्तु दुर्भाग्य से इन्हें भी सफलता नहीं मिली और ऐसी आर्थिक चोट बैठी कि फिर उससे आज तक वे उबर नहीं सके। सरदार इन्द्रसिंह जी ने "श्याम आयरन एण्ड स्टील कं०" का सामान नीलाम में खरीद कर "सिंह इञ्जीनियरिंग कं०" के नाम से अपना रोलिंग मिल लाटूशरोड पर खोला। यही मिल बढ़ते-बढ़ते आज प्रथम श्रेणी का रोलिंग मिल हो

गया है और जरीब की चौकी तथा कर्नलगंज में इसके कारखाने चल रहे हैं।

नियन्त्रण तथा भारत विभाजन के बाद से लोहे का व्यापार या व्यवसाय कानपुर के किसी एक बाजार या सड़क पर केन्द्रित नहीं रह गया है। नियंत्रण से पूर्व लोहे का व्यवसाय कानपुर के हटिया, हालसी रोड (जिसे अब बल्लभ भाई मार्ग कहा जाता है) घुमनी बाजार तथा कूपरगंज इन चार स्थानों पर केन्द्रित था। लोहे के व्यापार की दृष्टि से हटिया सबसे पुराना बाजार है। एक समय था जब लोहे के बड़े-बड़े दूकानदारों की गद्दियाँ इसी बाजार में थीं। इस समय यह बाजार लोहे के बने हुये माल की फुटकर बिक्री का सबसे बड़ा बाजार है।

हटिया से लगा हुआ बल्लभ भाई मार्ग (हालसी रोड) है। यह बाजार नगर के मुख्य मार्ग पर है और आधी शताब्दी के ऊपर से लोहे का प्रमुख बाजार है। इसमें लोहे के पक्के बाने का काम करने वालों तथा बने माल का काम करने वालों की बड़ी-बड़ी गद्दियाँ हैं। इस बाजार से लगी हुई गलियाँ राजगद्दी, कुली बाजार तथा गढैया आदि भी लोहे के दूकानदारों की दूकानों से भरी हुई हैं। आजकल यही लोहे का कानपुर में प्रमुख बाजार है।

कूपरगंज पुराने लोहे के व्यापार के लिये प्रसिद्ध है। रेलवे के कारखानों, गुदामों तथा जहाजों के नीलाम होने वाले पुराने लोहे के माल इस बाजार की विशेषता हैं। जब से टाटा कम्पनी

ने अपना काम कानपुर में प्रारम्भ किया तब से पक्के बाने का काम भी इस बाज़ार में होने लगा है और इस समय दो-तीन पक्के बाने का काम करने वालों की दूकानें भी यहाँ खुल गई हैं।

कूपरगंज के सदृश घुमनी बाज़ार भी पुराने माल का ही बाज़ार है किन्तु इसकी अपनी दो विशेषतायें हैं। प्रथम यह कि यहाँ हार्डवेयर का कुल सामान भी मिलता है। दूसरे यह कि छोटे से छोटे लोहे के पुराने कल पुर्जे और माल यहाँ मिल सकते हैं। धैर्य और लगन के साथ घूमने वाले इस बाज़ार से बहुत सस्ते में ऐसे माल पा सकते हैं जो छोटे-मोटे कारखानों के लिये आवश्यक होते हैं। यह बाज़ार कलवार भाइयों के हाथ में है। पुराने लोहे का इन्हें विशेषज्ञ ही समझना चाहिये।

नियंत्रण के साथ लोहे के दूकानदारों की संख्या अनियंत्रित होकर कई गुना बढ़ गई थी। विभाजन के बाद उस संख्या में और भी वृद्धि हो गई। इस प्रकार इस समय रजिस्टर्ड स्टाकिस्टों, फैब्रिकेटरों, तथा स्वतन्त्र लोहे का काम करने वालों को मिला कर लोहे का कारबार करने वालों की संख्या नियंत्रण के पूर्व की संख्या से कई गुना अधिक हो गई है जो कि कानपुर के अनेक मुहल्लों और सड़कों पर छा गये हैं। रमचन्नी का हाता, पान-दरीबा तो लोहे का माल बनाने वालों के गढ़ हो रहे हैं। डिप्टी के पड़ाव के पास दो लोहे के कारखाने खुले हुये हैं। जनरलगंज तथा किराना बाज़ार में भी लोहे का काम करने वाले बड़े-बड़े

दूकानदारों की गद्दियाँ हैं। आर्य नगर, बेनाझाबर, सीसामऊ, ग्वालटोली, पाँच नम्बर गुमटी, कौशलपुरी तथा जूही में लोहे के काम करने वाले फैले हुये हैं। हरीशगंज, जरीब की चौकी तथा फज़लगंज में तो लोहे के बड़े-बड़े मिल ही खुले हुये हैं।

मिल्स

कपड़ा, गल्ला, चमड़ा तथा तेल के सदृश लोहे के व्यापार और व्यवसाय में भी कानपुर बहुत बढ़ा-चढ़ा है। इस समय भी पौन दर्जन री-रोलिंग मिल्स यहाँ चल रहे हैं जिनमें तीन तो प्रथम श्रेणी के हैं। सहस्रों टन पक्के बाने का माल इनमें उत्पन्न किया जाता है।

१—सिंह रोलिंग मिल्स :—कानपुर में ही नहीं भारत में सफलता से चलने वाले प्रथम रोलिंग मिल्स का सौभाग्य इस रोलिंग मिल को प्राप्त है। इसकी स्थापना सन् १९३० में हुई थी। प्रथम लाटूश रोड पर, फिर जरीब की चौकी पर और इसके साथ ही फज़लगंज में यह आजकल चल रहा है। इस समय इसमें सैकड़ों मनुष्य काम कर रहे हैं। इसकी वार्षिक उत्पादन शक्ति भी सैकड़ों टन है। इसके प्रवर्तक और स्वामी सरदार इन्द्रसिंह जी हैं। इस रोलिंग मिल के साथ ही एक सिंह प्लेट मिल भी है जिसमें छोटे-छोटे सूत, डेढ़ सूत और दो सूत तक के प्लेट के टुकड़े बेल कर तैयार किये जाते हैं।

२—दूसरा लोहे का रोलिंग मिल "कानपुर रोलिंग मिल्स लि०" है। यह कारख़ाना रेल के पुल के नीचे हरीशगंज मुहल्ले

ला० पूरनचन्द

बा० बिहारीलाल

में है। इसके स्वामी बाबू कालीचरण जी हैं। इस मिल में बहुसंख्यक मजदूर काम कर रहे हैं। इसकी उत्पादन शक्ति भी सैकड़ों टन वार्षिक है। इस मिल के साथ एक "कानपुर प्लेट मिल लि०" लगा हुआ है जिसमें अनेक प्रकार की वस्तुयें तैयार की जाती हैं।

३—जुग्गीलाल कमलापति आयरन एण्ड स्टील फैक्टरी लि० फजलगंज में स्थित है। इसके स्वामी श्री जुग्गीलाल कमलापत हैं। इसकी नींव सन् १९३४ में पड़ी थी। इस विशाल कारखाने में मजदूरों की एक बहुत बड़ी संख्या काम कर रही है। इसकी भी वार्षिक उत्पादन शक्ति सैकड़ों टन है। इस मिल की दो विशेषतायें हैं। प्रथम यह कि इसमें बिजली की भट्ठी लगी हुई है जिसमें किसी प्रकार का भी पुराना लोहा गलाया जा सकता है तथा जिसमें आवश्यकतानुसार विभिन्न प्रकार से स्टील बनाये जा सकते हैं और री-रोलिंग के लिये बिलट तैयार किये जा सकते हैं। भारतवर्ष में इस प्रकार की भट्ठियां ४–५ ही हैं। उनमें यह एक है। किन्तु उत्तरीय भारत में अपने रूप की यही है। यहाँ का बनाया हुआ बिलट दूसरी रोलिंग मिलों को गोल चौकोर सरिया तथा पटरी आदि बनाने के लिये दिया जाता है। दूसरी विशेषता इसकी यह है कि जूट तथा कपड़े की गाँठें बाँधने के लिये जिस प्रकार की पत्ती की आवश्यकता होती है वह भारत भर में केवल यही मिल बनाता है। अब इस फैक्टरी का एक भाग उठ कर कलकत्ता ले जाया

गया है फिर भी भट्ठी यहीं है। ये तीनों मिलें प्रथम श्रेणी की रोलिंग मिलें हैं। इनमें प्रत्येक प्रकार की गोल तथा चौकोर सरिया तथा पटरी आदि बनती हैं।

इनके अतिरिक्त महावीर रोलिंग मिल्स, महावीर प्लेट मिल्स, यू० पी० रोलिंग मिल्स, जैन रोलिंग मिल्स, राधेलाल रोलिंग मिल्स, लक्ष्मण रोलिंग मिल्स तथा विन्धेश्वरी प्रसाद बनवारीलाल रोलिंग मिल्स, इण्डिया रोलिंग मिल्स, रारूठ आत्मासिंह स्टील रोलिंग मिल्स, भाटिया सेफ़ वर्क्स, चरन सेफ़ वर्क्स, शेरे पंजाब सेफ़ वर्क्स आदि अनेक री-रोलिंग मिल्स लोहे की सरिया पटरी आदि बनाने का काम कानपुर में कर रही हैं जिनसे कई सहस्र टन पक्के बाने का लोहा प्रतिवर्ष उत्पन्न होता है और कई सहस्र व्यक्ति अपनी जीविका पाते हैं। भाटिया और चरन सेफ़ वर्क्स की दूकानें बिरहाना रोड पर भी हैं।

लोहे के कारखाने

कड़ाही, तवा, परात, गगरे (विभिन्न प्रकार के) कीलें, सन्दूक़, ट्रंक आदि अनेक प्रकार के सामान यहाँ पहले से बनते चले आये हैं, किन्तु इस समय यहाँ बाल्टी, जंजीरें आदि अनेक प्रकार के सामान तथा लोहे के ढलाई के और खराद के कारखाने खुल गये हैं जिनमें कानपुर की मिलों के सैकड़ों प्रकार के सामान तैयार किये जाते हैं और लोहे का कारबार बराबर उन्नति पर है। इस समय ७० के लगभग रजिस्टर्ड स्टाकिस्ट तथा ३६९

फेब्रिकेटर कानपुर में लोहा नियंत्रण में काम कर रहे हैं और सैकड़ों नियंत्रण के बाहर स्वतन्त्र रूप से अपना-अपना लोहे का काम कर रहे हैं। पौन दर्जन री-रोलिंग मिल्स लोहे की सरिया पटरी तैयार कर रहे हैं। दो-तीन लोहे की मेज़ें, कुर्सियाँ, तिजोरियाँ और अल्मारियाँ आदि बनाने के कारखाने चल रहे हैं। पम्प बनाने के भी एक कारखाने में काम हो रहा है। ढलाई तथा खराद मिलें भी अनेक हैं। कन्ड्यूइट पाइप का भी एक कारखाना चल रहा है। सम्पूर्ण उत्तर प्रदेश में जितना लोहा खर्च होता है उसका आधे से अधिक कानपुर से उठता है।

लोहे के रजिस्टर्ड स्टाकिस्टस की सूची

१—अग्रवाल ब्रदर्स, २—अरुण आयरन ट्रेडिंग कम्पनी, ३—आयरन ट्रेडर्स लि०, ४—उग्रचन्द्र गजानन्द, ५—कानपुर आयरन सिन्डीकेट, ६—कालिकाप्रसाद उमारमण, ७—कामता प्रसाद ब्रजमोहनलाल, ८—किशोरीलाल अग्रवाल, ९—कुन्दनलाल बाबूराम, १०—खण्डेलवाल ब्रदर्स लि०, ११—खैरातीलाल जगदीश नारायण, १२—गुरनारायण ईश्वरदयाल, १३—गोदरमल दामोदरदास, १४—गुप्ता आयरन एण्ड स्टील कम्पनी, १५—गोपीनाथ जैन, १६—जस्साराम जयकिशन, १७—जीवनराम कन्हैयालाल, १८—जवन्दामल धन्नामल, १९—तेजनलाल दीनानाथ, २०—दिल्ली आयरन सिण्डीकेट, २१—देवकुमार जैन, २२—देवराज प्रेमराज, २३—देवीदयाल पन्नालाल २४—

देवीदयाल हरिकिशन, २५—देवीप्रसाद मालवीय, २६—द्वारका-प्रसाद मनोहरलाल, २७—द्वारकाप्रसाद शिवकरण दास, २८—नानकचन्द शादीराम, २९—नेशनल आयरन ट्रेडिंग कम्पनी, ३०—पी० सी० पाल एण्ड सन्स, ३१—प्यारेलाल कन्हैयालाल, ३२—बख्शीराम राजकुमार एण्ड कम्पनी, ३३—बंशीलाल विलायती राम, ३४—भूदेवप्रसाद बलदेवप्रसाद, ३५—भगवान दास राजेन्द्र कुमार, ३६—मानामल गुलजारीलाल, ३७—मूल-चन्द नन्हेंमल, ३८—मिश्रा आयरन एन्ड स्टील कम्पनी, ३९—यू० पी० आयरन स्टोर्स, ४०—रघुनाथ प्रसाद कन्हैयालाल, ४१—राधेलाल मन्नालाल, ४२—रामकृष्ण ध्यानी एन्ड सन्स, ४३—राधाकृष्ण लक्ष्मीनारायण, ४४—रामचरण मूलचन्द्र, ४५—रत्नचन्द्र परमानन्द, ४६—राममूर्ति प्यारेलाल, ४७—रा० सा० जुल्लामल श्यामलाल, ४८—लल्लूप्रसाद शिवचरनलाल, ४९—लालमन रोशनलाल, ५९—वहीदुद्दीन एन्ड सन्स, ५१—शिवकुमार रामप्रकाश, ५२—शिवरत्न गोवर्धन मेहता, ५३—शीतलप्रसाद मातादीन, ५४—सीताराम हरगोविन्द, ५५—सुखा-नन्द रामनारायण, ५६—एस० एम० इश्तियाक अहमद सुलतान अहमद, ५७—हिन्दुस्तान स्टील कम्पनी, ५८—हेमराज लक्ष्मी-चन्द्र, ५९—हिन्दुस्तान स्टील कारपोरेशन, ६०—स्वदेशी आयरन एन्ड स्टील कम्पनी, ६१—कानपुर आयरन एन्ड स्टील ट्रेडर्स लि०, ६२—यू० पी० आयरन एन्ड स्टील कम्पनी, ६३—मुकुन्दामल रामदत्तामल, ६४—प्यारेलाल हजारीलाल,

६५—रघुबरदयाल बाबूराम, ६६—देवीदयाल रामलखन, ६७—जीवनराम रामलखन।

उत्तर प्रदेश में जितना लोहा आता है उसका आधे से अधिक ये रजिस्टर्ड स्टाकिस्ट मँगाते हैं। इनके अतिरिक्त २४०००-२५००० टन माल का उलट-फेर प्रतिवर्ष कानपुर के टाटा कार्यालय से होता है। इनके अतिरिक्त सहस्रों टन लोहे का स्क्रेप टाटा आदि कारखानों का अलग आता और बिकता है। यह स्क्रेप उस स्क्रेप से सर्वथा अलग है जो रेलवे के कारखानों, गुदामों, जहाजों की जेटियों, डिस्पोजल के गुदामों तथा अन्य स्थानों से नीलाम में कानपुर आता है। सहस्र टन पिग आयरन कानपुर के कारखानों में गलने के लिये आता है। सहस्रों टन रोलिंग मिलों में पिरने के लिये आता है

जे० के० काटन मिल के पास भारत इन्जीनियरिंग वर्क्स लोहे का एक प्रसिद्ध कारखाना है जो मशीनों के पुर्जे बनाने का काम करता है।

प्रेस (छापाखाना)

अन्य स्थानों की तरह कानपुर में भी छपाई का काम 'लीथो' प्रेसों से शुरू हुआ था। हिन्दी, उर्दू और अन्य सभी भाषाओं की पुस्तकें 'चर्बे' पर लिखी जाती थीं और उन्हें पत्थरों पर उतार कर छापा जाता था। जब कम्पोज़ करने में टाइप का प्रादुर्भाव हुआ तभी से हैन्ड प्रेसों का भी जन्म समझना

चाहिए। सिलेन्डर मशीन और ट्रेडिलें तो बहुत बाद में आईं। अब मोनो टाइप और लीनो टाइप के साथ, आटोमेटिक और 'आफ़सेट' मशीनें भी चलने लगी हैं और नित नये आविष्कारों का सिलसिला अभी समाप्त नहीं हुआ है।

लाला दुर्गाहीलाल की "तारीखें कानपुर" १८७५ में प्रकाशित हुई थी, वह "शोलएतूर प्रेस" में छपी थी। यह प्रेस लीथो का था और कदाचित कानपुर का पहला प्रेस था।

सन् १९०० के आस-पास खुलनेवाले प्रेस लगभग २५-३० ही थे। उनमें से प्रमुख ये हैं :—

स्टार प्रेस, ला प्रेस, लाईट प्रेस, जाब प्रेस, स्टेण्डर्ड प्रेस, मर्चेन्ट प्रेस, ओंकार प्रेस, भार्गव प्रेस, इन्तज़ामी प्रेस, क़यूमी प्रेस, रघुनन्दन प्रेस, कारोनेशन प्रेस, हिन्दी जाब प्रेस, मरकेन्टाइल प्रेस, राम प्रेस, शिव प्रेस, कमर्शियल प्रेस, ब्राह्मण प्रेस, खन्ना प्रेस, रायल प्रेस, बर्वेरवाल प्रेस।

जैसे-जैसे कानपुर में व्यापार की उन्नति होती गई और जनता में जाग्रति बढ़ती गई तैसे-तैसे प्रेसों की संख्या भी बढ़ने लगी क्योंकि छपाई का काम बढ़ गया। ऊपर लिखे हुए प्रेसों की संख्या बढ़कर सौ से ऊपर हो गई।

स्टार प्रेस—का जन्म सन् १९०२ में हुआ और उसके संस्थापक श्री द्वारिकाप्रसाद जी भार्गव थे। प्रारम्भ में यह प्रेस बहुत छोटा था। छापने के लिए उसमें पुरानी किस्म का एक चिड़ियादार प्रेस और थोड़ा-सा टाइप था। दो-तीन जोड़ा टूटे हुए केसों

से बचा हुआ टाइप केसों में न होकर टीन के डिब्बों में भरा हुआ था। प्रेस का स्थान गिलिस बाजार का एक छोटा-सा मकान था जिसका किराया ८) रुपया था और उसी में भार्गव परिवार रहता भी था। इसके बाद स्टार प्रेस महेश्वरी मोहाल में उस स्थान पर आ गया जहाँ आजकल कमलाटावर है। इसी मकान में श्री द्वारिकाप्रसाद जी का ३६ वर्ष की आयु में स्वर्गवास हुआ और प्रेस का काम १९०३ श्री अयोध्याप्रसाद जी भार्गव ने सम्हाला। इनकी शिक्षा दर्जा ८ तक हो पाई थी कि इन्हें प्रेस चलाना पड़ा। इन्होंने प्रेस की काफी तरक्की की और उसे उठाकर रामनारायण की बाजार में अपने निजी मकान में ले गये। वहाँ से प्रेस परेड पर गया और अब चुन्नीगंज में केक्स्टन हाउस में है। श्री अयोध्या प्रसाद भार्गव ने यह प्रेस अपने पुत्र कैलाशनाथ भार्गव के नाम कर दिया है जो उसे बड़े ठाठ से चला रहे हैं। श्री अयोध्या प्रसाद अब कलकत्ते में रहते हैं और वहाँ अयोध्यापुरी में फोटो टाइप प्रेस चलाते हैं तथा अपने छोटे लड़के पृथ्वीनाथ को प्रेस के काम में निपुण बना रहे हैं। इनकी एक टाइपफौन्ड्री भी है। इस प्रेस में आफसेट और चेक छापने वाली बेबीटाइप खास चीजें हैं।

जाब प्रेस—कानपुर के उत्तम प्रेसों में जाब प्रेस का भी स्थान है। यह पहले मालरोड पर पुराने आर्यसमाज भवन में था और इसके मालिक श्री कृष्ण खन्ना और प्रबन्धक श्री इन्दू भूषण जी

थे। बाद में इसे श्री लक्ष्मीनारायण खन्ना ने ४ लाख रुपये में खरीद लिया और करेन्सी के पास अपनी लक्ष्मी बिल्डिंग में ले गये, जहाँ वह आज आधुनिक मशीनों से सुसज्जित होकर ठाठ से चल रहा है। इस समय इसके प्रबन्धक श्री लच्छू बाबू के छोटे पुत्र हैं।

कारोनेशन प्रेस—इसकी स्थापना पं० यशोदानन्दन शुक्ल ने १९०३ में चटाई मोहाल में की थी। सन् १९१३ में यहीं से श्री गणेशशंकर विद्यार्थी और श्री नारायणप्रसाद अरोड़ा के उद्योग से साप्ताहिक 'प्रताप' निकला था। १९३३ में कारोनेशन प्रेस से बदल कर इसका नाम 'ओंकार प्रेस, हो गया है। अब इसे पं० यशोदानन्दन जी शुक्ल के पुत्र श्री गंगारतन जी शुक्ल चला रहे हैं। ओंकार प्रेस में कलेन्डर और डेट पेड काफ़ी छपते हैं। अब यह पीली कोठी में है। यहाँ स्टेशनरी भी बिकती है।

नवलकिशोर भार्गव प्रेस—अपने लखनऊ प्रेस की कानपुर शाखा थी। यह सन् '१९१३ या १४ में बन्द हो गया। यह सरसैयाघाट के पास अपने निजी हाते में स्थित था।

खन्ना प्रेस—की स्थापना सन् १९१६ में हुई थी और इसमें मोहन प्रेस भी विलय हो गया था। इसके संचालक श्री गोवर्द्धन दास जी खन्ना हैं। इस प्रेस से १९२१ में ढाई वर्ष तक "संसार" मासिक पत्र निकलता रहा और बाद में कुछ दिन "व्यापार जगत" मासिक भी निकला। अब खन्ना प्रेस में बाहर का

किताबी और जाब का काम होता है। इस प्रेस के साथ-साथ खन्ना बाक्स फैक्टरी भी चल रही है।

नेशनल फ्रंटजर्नलस लि०—यह प्रेस सर हरगोविन्द मिश्र का है और इससे इसी नाम का एक पत्र भी निकलता था। प्रेस अभी है परन्तु पत्र बन्द हो गया।

ब्राह्मण प्रेस—कानपुर का काफ़ी पुराना प्रेस है। इसके संस्थापक पं० उमादत्त जी थे जो किसी प्रेस में पहले कम्पोजीटर रहे थे। और यह रामनारायण बाज़ार में स्थित था। इस प्रेस में प० प्रतापनारायण मिश्र का लिखा हुआ "कानपुर का आल्ह-खण्ड" नामक पुस्तक छपी थी। इसीसे एक प्रेस ख़रीद कर प्रताप प्रेस स्थापित हुआ था। प० उमादत्त जी बाजपेयी के पुत्र पं० राधामोहन और ललितमोहन इसे काफ़ी दिनों तक चलाते रहे। भाइयों में बटवारा होने के बाद ब्राह्मण प्रेस बन्द हो गया। ब्राह्मण प्रेस से श्रीछैलविहारी 'कंटक' ने "सन्ध्या" नामक दैनिक कुछ दिन निकाला था।

छावनी में ईसाइयों का एक प्रेस था जिसका नाम 'कैथोलिक प्रेस' था, यह भी अब बन्द हो गया है।

चौक, हाता सवाईसिंह में "चन्द्रा फैन्सी प्रेस" नामक प्रेस था। इसके संचालक श्री शिवनारायण वैश्य थे जो श्री विश्वम्भर नाथ कौशिक के मित्र थे। इसी प्रेस में कौशिक जी की मासिक पत्रिका "मनोरंजन" छपती थी। इस प्रेस की छपाई-

सफ़ाई भी अपने जमाने में प्रसिद्ध थी। प्रेस बन्द करके श्री शिवनारायण ने चौक में शराफ़ी की दुकान करली थी और धर्म कांटा लगा लिया था।

सिटी प्रेस—के संचालक श्री सत्यनारायण टण्डन हैं। यह प्रेस ए० बी० रोड पर शुरू ही से है। श्री सत्यनारायण जी के पिता श्री नानकचन्द जी जाब प्रेस में काम कर चुके थे अतः इन्होंने अपने दोनों पुत्रों, श्री सत्यनारायण और श्री जगतनारायण को प्रेस की लाइन में लगाया और श्री नारायणप्रसाद अरोड़ा से सन् १९२४ में २७००) रु० में एक रीबिल्ट सिलेन्डर मशीन लेकर प्रेस शुरू करा दिया। यह प्रेस जाब वर्क की अपेक्षा किताबी काम अधिक करता है।

कमर्शियल प्रेस—मनीराम बगिया में था और इसके संचालक श्री भगवानदास जी गुप्त थे। यहाँ भी किताबी काम होता था। इन्होंने स्वर्गीय पं० शिवनारायण मिश्र द्वारा प्रकाशित कई किताबें छापी थीं।

ईस्टर्न प्रेस—फीलखाने में है। इसके संस्थापक श्री शंकर लाल टंडन हैं। इसके सहायकों में श्री परशुराम मेहरोत्रा भी थे। अपने प्रारम्भिक काल में 'स्त्री दर्पण' और साप्ताहिक 'रामराज्य' इसी प्रेस में बहुत दिनों तक छपते रहे। जब तक शंकरलाल जी इस प्रेस की देख-भाल करते थे तब तक कानपुर में अच्छे काम छापने वालों में इस प्रेस का भी शुमार होता था। शायद

यह सन् १९२३ में स्थापित हुआ था। अब इसकी गणना साधारण प्रेसों में है।

ला प्रेस—के संस्थापक मुँशी श्यामलाल वकील थे। यह प्रेस अब तक परेड पर है किन्तु किसी जमाने में इसके बड़े नाम थे। इसमें टाइप और लीथो दोनों प्रकार का काम होता था। यहां से हिन्दी और उर्दू दोनों में "कानपुर गजट" प्रकाशित होता था।

मर्चेन्ट प्रेस—रेल बाजार में है। श्री हरनारायण बाथम के बड़े भाई श्री सीताराम जी इसके संस्थापक थे। इस प्रेस से काम सीखकर निकलने वाले कई लोगों ने अपने-अपने प्रेस स्थापित कर लिए थे। जुही में श्री सीतारामजी का एक आर्मी प्रेस भी था। उसी में स्वर्गीय आचार्य महावीर प्रसाद जी द्विवेदी रहते थे और वहीं से सरस्वती का सम्पादन करते थे। द्विवेदी जी के कारण ही वहाँ बड़े-बड़े लोग पहुँचते थे। एक बार हिन्दी के प्रसिद्ध लेखक और पत्रकार स्वर्गीय बाल मुकुन्द जी गुप्त भी द्विवेदी जी से मिलने गये थे। यह स्थान नवीन लेखकों की भाषा में जुही का गुरुद्वारा कहलाता था।

रायल प्रिन्टिंग वर्क्स — हैरिसगंज में है और इसके मालिक सरकार बाबू हैं। इसी के साथ रायल टाइप फौंड्री भी है। सरकार बाबू कन्टूमेंट बोर्ड के मेम्बर भी रहे हैं।

प्रताप प्रेस—सन् १९१३ में पीली कोठी में स्थापित हुआ था और इसके संस्थापक श्री गणेशशंकर विद्यार्थी, श्री शिवनारायण

मिश्र और श्री नारायणप्रसाद अरोड़ा थे। इस प्रेस की स्थापना का मुख्य उद्देश्य साप्ताहिक 'प्रताप' का छापना था। किन्तु यहाँ से कई किताबें भी छपीं। कई वर्षों तक मासिक 'प्रभा' भी निकली। दैनिक प्रताप जब से निकला है तब से अब तक निकल रहा है। प्रताप प्रेस की मशीन और अपने निजी टाइप से सन् २३-२४ में दैनिक 'विक्रम' भी १४ महीनों तक यहीं विक्रम प्रेस के नाम से छपा। गणेश जी के प्रभाव से प्रताप प्रेस एक संस्था बन गया है। पं० बालकृष्ण शर्मा यहीं से प्रकाश में आये हैं और कृष्णदत्त जी पालीवाल भी 'प्रताप' के भूतपूर्व सम्पादक रहे हैं।

वर्तमान प्रेस—को स्थापित हुए लगभग ३० वर्ष हो गये। इसके संचालक श्री रमाशंकर जी अवस्थी प्रयाग से आकर 'प्रताप' में काम करने लगे और कुछ दिन बाद अपना प्रेस स्थापित करके दैनिक 'वर्तमान' २७-२८ वर्ष तक निकाला और अब साप्ताहिक 'वर्तमान' निकालते हैं। कुछ दिन यहाँ से मनसुखा भी निकला था। प्रेस के प्रारम्भिक काल में श्री गयाप्रसाद शुक्ल 'सनेही' भी इसके साझीदार थे। श्री छैलबिहारी 'कंटक' ने भी कुछ समय तक वर्तमान पत्र में काम किया है। श्री ब्रज-बिहारी अवस्थी तो बहुत दिनों तक वर्तमान में रहे और दैनिक के बन्द होने ही पर अलग हुए। उन्होंने अपना "विनोद" प्रेस बादशाही नाके पर स्थापित कर लिया है, और कभी-कभी साप्ताहिक 'कानपुर समाचार' निकाल देते है।

जागरण प्रेस—बिरहाना रोड पर श्री पूर्णचन्द गुप्त द्वारा

झाँसी से लाकर स्थापित किया गया है। अब दैनिक 'जागरण' कानपुर और रीवां दोनों से निकलता है और साप्ताहिक 'स्वतंत्र' झाँसी से।

विश्वमित्र प्रेस—कलकत्ते से आकर चुन्नीगंज में स्थापित हुआ और उस समय दैनिक विश्वमित्र के सम्पादक श्री देवदत्त जी मिश्र थे, फिर सुन्दरलाल जी हुए। अब प्रेस मालरोड के क्लाइड हाउस में है और वहाँ से विश्वमित्र तथा अँग्रेज़ी दैनिक एडवांस श्री शम्भूनाथ झा के सम्पादकत्व में निकलते हैं। प्रेस में मोनोटाइप मशीन भी है और काफ़ी बड़ी मशीनें लगी हैं।

वीरभारत प्रेस—के संस्थापक श्री बेनीमाधो बाजपेयी हैं और इन्होंने श्री नारायणप्रसाद अरोड़ा से एक मशीन लेकर इसे चालू किया था। बाजपेयी जी बड़े साहसी और परिश्रमी हैं। कुछ दिन इस प्रेस का संचालन श्री बालकृष्ण जी महेश्वरी ने किया था और उस समय ऐसा प्रतीत होता था कि प्रेस काफ़ी उन्नति कर जायेगा। परन्तु कालचक्र ने फिर प्रेस को बाजपेयी जी के हाथों में सौंप दिया और वह श्री बेनीमाधो बाजपेयी की हिम्मत से बिना पूंजी के चल रहा है और अपने पुराने स्थान लाठी मोहाल में ही श्री बालकृष्ण महेश्वरी के मकान में स्थित है।

टलीग्राफ़ प्रेस—और पत्र के संस्थापक श्री वेंकटराम जी हैं। पहले यह जनरलगंज में था और अब परेड पर है।

सिटीज़न प्रेस—के संस्थापक श्री सूरजप्रसाद मेहरा हैं। यह प्रेस भार्गव स्टेट में है और यहाँ से अंग्रेजी में साप्ताहिक सिटी-

जन और हिन्दी में साप्ताहिक 'नागरिक' निकलते हैं। कुछ दिनों से यहाँ से मासिक "सिविक एफ़ेयर्स" भी निकल रहा है। सिटीजन प्रेस बिल्कुल आधुनिक प्रेस है। इसकी प्रिंटिंग मशीन और मोनो टाइप मशीन एकदम नवीन है। यह मिस्टर मेहरा के निजी उद्योग का फल है। यहाँ बाहर का जाब तथा किताबी काम भी होता है। यहाँ का काम अपनी अच्छी छपाई-सफ़ाई के लिए मशहूर है।

सन् १९५३ में स्थापित *'न्यूइन्डिया—प्रेस* मजीद रोड पर है। यहाँ से श्री वासदेव जी मिश्र के सम्पादकत्व में 'न्याय' साप्ताहिक और श्री जैतली के सम्पादकत्व में दैनिक 'त्रिशूल' निकलते हैं।

रामराज्य प्रेस—साप्ताहिक 'रामराज्य' को निकालने के लिए आर्य नगर में स्थापित हुआ था। परन्तु संचालकों में फूट पड़ जाने के कारण प्रेस बन्द पड़ा है और साप्ताहिक 'रामराज्य' डिप्टी पड़ाव से अपने निजी *'छाया'* प्रेस में छपता है। छाया प्रेस में पत्र के अतिरिक्त बाहरी काम भी होता है।

जवाहर प्रिन्टिंग प्रेस—नौघड़ा में अर्ध साप्ताहिक "फक्कड़" छपता था। प्रेस अब बन्द हो गया है और साप्ताहिक 'फक्कड़' पटकापुर स्थित *'नारायण-प्रेस'* में छपता है। पत्र और प्रेस के स्वामी और सम्पादक श्री वेदनारायण बाजपेयी हैं जो पहले 'वर्तमान' के सिटी रिपोर्टर थे।

शुक्ल प्रेस—बिरहाना रोड पर था किन्तु अब *उद्योग मन्दिर*-प्रेस में रूपान्तर होकर मनीराम बगिया से चौक जाने वाली गली में स्वर्गीय कन्हैयालाल खज़ाँची के मकान में चल रहा है। श्री विष्णुदत्त जी शुक्ल ने कलकत्ते से आकर बिरहाना रोड पर शुक्ल-प्रेस स्थापित किया और वहीं से साप्ताहिक 'सहयोगी' निकाला। अतः शुक्ल प्रेस *सहयोगी* प्रेस के नाम से मशहूर हो गया। यहाँ जाब वर्क और किताबी काम दोनों ही होते थे। शुक्ल प्रेस साहित्यिकों का अड्डा था। अब साप्ताहिक सहयोगी बन्द है। उद्योग मन्दिर में किताबी और जाब का बाहरी काम होता है और प्रेस उन्नति के मार्ग पर है।

बम्बई छापाखाना—उद्योग मन्दिर प्रेस के पास ही है। इसके स्वामी श्री कृष्ण पहलवान हैं। इनके प्रेस की एक शाखा लच्छू की बगिया धनकुट्टी में भी लगी है। दोनों ही जगह श्री कृष्ण पहलवान की अपनी ही किताबें छपती हैं। यह बड़े बुकसेलर हैं। इनकी चौक में किताबों की दो दुकानें हैं। किन्तु इनके यहाँ छपने वाली पुस्तकें सिनेमा के गीत, आल्हा और प्रेमसागर ही होते हैं।

नेशनल-प्रेस—छपर मोहाल में है। इसके स्वामी मेहता जी बड़े उद्योगी हैं। उसे पुरानी कांग्रेस कमेटी का पूरा सहयोग प्राप्त था। मेहता जी के पास नेशनल हेरल्ड की एजेन्सी भी है।

तारा प्रेस—सन् १९२४ में श्री नारायणप्रसाद जी अरोड़ा द्वारा स्थापित हुआ था और पांच-चार वर्ष चलकर बन्द हो

गया। फिर सन् १९४० में श्री अरोड़ा जी ने *कृष्णा-प्रेस* और कृष्णा टाइप फौंड्री चलाई। कुछ ऐसी पुस्तकें छपीं जिसके कारण प्रेस से जमानत माँगी गई। अरोड़ा जी ने जमानत नहीं दी और प्रेस बन्द कर दिया और प्रेस का अधिकांश सामान श्री हरगोबिन्द मिश्र के नेशनल फ्रन्ट प्रेस के हाथ बेंच दिया। इसके बाद ही *शिवाजी*-प्रेस का डिक्लेरेशन अरोड़ा जी ने पं० ब्रह्मानन्द तिवारी के नाम से दाखिल किया किन्तु १० दिन चलने के बाद इस प्रेस से भी जमानत माँग ली गई अतः चलते ही यह भी समाप्त हो गया। ये तीनों ही प्रेस पटकापुर में थे।

साधना प्रेस—को श्री पुरुषोत्तमलाल कपूर ने स्थापित किया है। इसमें दो 'जायन्ट' मशीनें हैं और कुछ किताबी काम भी होता है। परन्तु उचित देख-भाल न होने के कारण जैसा इसे चलना चाहिये वैसा नहीं चलता। यहाँ दो पुस्तकें भी प्रेस की ओर से प्रकाशित हुई हैं। एक है श्री बालकृष्ण शर्मा की "रश्मि रेखा" और दूसरी है श्री नीरज की 'विभावरी';

कुछ साधारण प्रेस जो बन्द हो गये थे—एक्सेलसियर प्रेस, ए० बी० रोड; इम्पीरियल प्रेस, मेस्टन रोड; प्रेमप्रिंटिंग प्रेस, सिरकी मोहाल; लाइट प्रेस, हिजड़ा मोहाल; मून प्रेस।

कुछ चालू प्रेसों के नाम

१. सेन्ट्रल प्रेस, रामनारायण बाजार; २. सिंह प्रिंटिंग प्रेस, रामनारायण बाजार; ३. विजय प्रेस, रामनारायण बाजार; ४. प्रीमियर प्रिंटिंग प्रेस, रामनारायण बाजार; ५. महेश प्रेस,

हाफ़िज़ मुहम्मद सिद्दीक़

नौघड़ा; ६. योगेन्द्र प्रेस, इटावा बाज़ार; ७. आर्ट प्रेस, इटावा-बाज़ार; ८. आधुनिक प्रेस, चावल मण्डी; ९. श्री लक्ष्मी जी प्रेस, मनीराम बगिया; १०. इंग्लिश प्रिंटिंग प्रेस, पेचबाग; ११. दीक्षित प्रेस, डिप्टी पड़ाव; १२. तिवारी प्रेस, डिप्टी पड़ाव; १३. गोपाल-प्रेस, परेड; १४. सुपरप्रिन्टर्स, महेश्वरी माहाल; १५ बाजपेयी-प्रेस, माल रोड; १६. बेरी प्रिंटिंग प्रेस, रामकृष्ण नगर; १७. मिश्रा प्रेस, चटाई मोहाल; १८. आनन्देश्वर प्रेस, लाठी-मुहाल; १९. ब्रह्मावर्त प्रेस, राममोहन का हाता; २०. आदर्श प्रिन्टर्स, काहू कोठी; २१. रामजी प्रेस, चटाई मुहाल; २२. इंड-स्ट्रियल आर्ट प्रेस, शालीमार बिल्डिंग; २३. हिन्द कैमिकल प्रेस, सेन्ट्रल स्टेशन; २४. कपूरप्रिन्टर्स, मैकराबटगंज; २५. देवी प्रेस, दर्शनपुरवा; २६, गंगा प्रिन्टिंग प्रेस, न० ५ गुमटी; २७. विमल प्रेस, धनकुट्टी; २८. निर्मल प्रेस, कुरसवाँ; २९. शंख-नाद प्रेस, धनकुट्टी (इसमें कुछ दिन तक 'शंखनाद' नामक साप्ता-हिक पत्र निकला था जिसके सम्पादक श्री मन्नीलाल द्विवेदी थे) ३०. आश्रम प्रेस, धनकुट्टी; ३१. विश्वनाथ प्रेस, धनकुट्टी; ३२. कुशवाहा प्रेस, धनकुट्टी; ३३. लक्ष्मण प्रेस, सब्जी मण्डी ३४. जार्ज प्रेस, चौक; ३५. कानून प्रेस, सब्जी मंडी (इसमें कानून की बहुत-सी पुस्तकें छपी हैं) ३६. सुधा प्रेस, रामदास का मन्दिर (इसमें 'सविता' नामक मासिक पत्रिका निकलती थी जिसके सम्पादक श्री देवीप्रसाद धवन थे); ३७. सिलवर प्रिंटिङ्ग प्रेस, हाता सवाईसिंह (इसमें कुछ दिन तक 'जयशिव नामक

साप्ताहिक छपता था) ३८. बाजपेयी प्रेस, चौक; ३९. युगान्तर प्रेस, सीसामऊ (इसमें साप्ताहिक युगान्तर छपता है जिसके सम्पादक श्री रामकुमार जी हैं); ४०. स्वाधीन प्रेस, शतरंजी मुहाल; ४१. कला कृष्ण प्रेस, डिप्टी का पड़ाव; ४२. समाज प्रेस, डिप्टी का पड़ाव; ४३. गांधी प्रिन्टिग प्रेस; डिप्टी का पड़ाव ४४. वाणी प्रेस, रामबाग सीसामऊ; ४५. मनोहर प्रेस, पी रोड सीसामऊ; ४६. मनहर प्रेस, पुरानी दाल मन्डी; ४७. कृष्ण प्रेस, बिरहाना रोड; ४८. पुस्तक मुद्रण प्रेस, माल रोड (यह श्री हीरालाल जी खन्ना का है); ४९. डी० ए० वी० कालेज प्रेस, ५०. निवल के बल राम प्रेस, गुप्तारघाट। ५१. राज प्रिंटस, बिरहाना रोड, (इसमें राही जी की 'छाँह' नामक पुस्तक छपी है)।

लेथो प्रेस

लेथो प्रेसों में 'क़यूमी प्रेस' बहुत पुराना है और इसके मालिक हाजी कमरूद्दीन हैं। यह पटकापुर में जामा मस्जिद के पास है। इसमें मुस्लिम धर्म की पुस्तकें ही अधिक छपती हैं।

इन्तजामी प्रेस मखनिया बाज़ार में है और काफ़ी पुराना है। इसमें ख्वाजा अब्दुल सलाम का 'सदाक़त' अख़बार छपता है।

इसके सिवाय मजीदी प्रेस तथा रज्ज़ाक़ी प्रेस में भी लेथो की छपाई अच्छी होती है।

कागज़ के दूकानदार

कानपुर में पुस्तकों की छपाई का काम कम होने से ज्यादा· तर व्यापारी जाब वर्क के लिये फुटकर माल बेचने वाले हैं जिनके यहाँ जाब वर्क के लायक देशी·विदेशी कागज मिलता है। इनके नाम नीचे दिये जाते हैं :--

(१) रामलाल कपूर एण्ड संस, (२) करमचन्द चोपड़ा एण्ड संस, (३) कानपुर पेपर ट्रेडर्स, (४) कृष्णा पेपर मार्ट, (५) जे० एन० सिंह एण्ड को० लि०, (६) इण्डियन प्रिंट एण्ड पेपर मार्ट, (७) शारदा पेपर मार्ट, (८) भोलानाथ सीताराम, (९) अवध पेपर मार्ट, (१०) अनन्तराम एन्ड संस, (११) जयनारायण कपूर, (१२) स्याल एन्ड कम्पनी (ये सब दूकानें बिरहाना रोड पर हैं), (१३) केदारनाथ शिवप्रसाद, (१४) लक्ष्मण प्रसाद जैन, (१५) बांकेबिहारीलाल देवीसिंह भार्गव, (ये तीनों दूकानें जनरलगंज में हैं), (१६) पेपर ट्रेडिंग कारपोरेशन, गिरधर भवन, बगिया मनीराम।

टाइप फौण्डरी

(१) के० सी० टाइप फौण्डरी, निमहरा, नहर पार।

(२) आदर्श टाइप फौण्डरी, गड़रिया मुहाल, नहर पार।

(३) मालवीय टाइप फौण्डरी, ग्वालटोली।

(४) मन्नासिंह टाइप फौण्डरी, नाचघर।

(५) स्वाधीन टाइप फौण्डरी, शतरंजी मुहाल।

तेल

हमारे भोज्य पदार्थों में तेल का भी एक प्रमुख स्थान है। खाने के अतिरिक्त तेल मालिश और सिर में लगाने के काम भी आता है, दवाओं में प्रयोग किया जाता है और साबुन बनाने में तो उसका मुख्य स्थान रहता ही है। चिराग़ जलाने में भी वह उन स्थानों में प्रयुक्त होता है जहाँ बिजली नहीं है। इस देश में तेल इतना इस्तेमाल होता था कि तेल तैयार करने वालों की एक प्रथक जाति बन गई और उसे तेली कहने लगे।

मशीन युग के पहले तेल घानियों और कोल्हुओं से निकाला जाता था। अंडी, सरसों और तिल ही कच्चे माल थे जिनसे तेल तैयार किया जाता था। किन्तु अब तो महुआ, अलसी, मूंग-फली, कुसुम के बीज, और न जाने किन-किन चीज़ों का तेल निकाला जाता है। पहले पोस्ते का तेल भी निकाला जाता था और अब राम तिल्ली का।

कानपुर में जितना तेल तैयार होता है उसमें आधे से ज़्यादा सरसों और लाही का बनता है और शेष अन्य सब चीजों का।

बैल से चलने वाले हाथ कोल्हुओं के अतिरिक्त कानपुर में लगभग २५ मिल तो बड़े-बड़े हैं जिनमें एक या एक से अधिक एक्सपेलर लगे हैं। और छोटे-छोटे मिल कई हैं। बैल से चलने वाले कोल्हुओं की संख्या तो सैकड़ों है।

कानपुर में ही नहीं समस्त उत्तर प्रदेश में सबसे पुराना तेल मिल यहाँ का नारायणदास लक्ष्मणदास तेल मिल है। किन्तु अब एक कम्पनी बन गई है और इसका नाम 'नार्दर्न इन्डिया आयल इन्डस्ट्रीज़ लिमिटेड' हो गया है और यह रायपुरवा में है। इसके मैनेजिंग एजेन्ट वही नारायणदास लक्ष्मणदास हैं।

कानपुर में तेल के ऐसे कई मिल थे जो अब बन्द हो गये हैं, जैसे :—

(१) भन्नानापुरवा का 'युनाइटेड प्राविन्सेज़ सेन्ट्रल मिल्स।' (२)कोपरगंज का 'प्रीमियर आयल मिल्स कम्पनी।' (३) हज़ारी लाल बाबूलाल का तेल मिल। (४) हरवंश-मोहाल का 'माधो आयल मिल्स।' (५) अनवरगंज का 'ओम काटन जिनिंग एण्ड आयल मिल्स।' (६) काल्पी रोड का 'श्री कृष्ण जिनिंग, प्रेसिंग एण्ड आयल मिल्स।' (यह ३ वर्ष से ही बन्द है।) (७) कोपरगंज का 'बिजली तेल मिल' बन्द होकर अब 'टिम्बर वर्क्स' हो गया है। (८) फैक्टरी एरिया का 'नागरथ मिल' बन्द होकर अब 'पेन्ट फैक्टरी' हो गया है।

तेल के जो मिल्स चालू हैं उनमें से प्रमुख ये हैं :—

१. मातादीन भगवानदास तेल मिल, बांस मण्डी। इसे शक्कर के प्रमुख व्यापारी स्वर्गीय लाला मातादीन ने चलाया था और अब उनके सुयोग्य पुत्र लाला दयाराम जी की निगरानी में चल रहा है। दयाराम जी कानपुर गोशाला के सब कुछ हैं और अन्य सार्वजनिक कार्यों में भी भाग लेते रहते हैं।

२. राजेन्द्रप्रसाद आयल मिल्स, जूही स्टेशन—इसका पुराना नाम 'कुटला आयल मिल्स' था और अब बदल कर उपर्युक्त नाम हो गया है। यह निहालचन्द किशोरीलाल का एक कारखाना है।

३. जे० के० आयल मिल्स, बांस मण्डी, श्री पदमपत सिंघानिया द्वारा संचालित ४०-४५ कारखानों में से एक है। इसमें साबुन भी बनता है।

४. रेल बाजार के तेल मिल का नाम 'कानपुर आयल मिल्स' है। इसके मालिक श्रीराम महादेव फर्म के लाला कामता प्रसाद हैं।

५. गंगा आयल मिल, बांस मण्डी, फिलहाल ३ महीने से बन्द है, वैसे चालू मिल है। इस मिल को कलकत्ते की फर्म जगन्नाथ बीजराज ने १९१७ में खरीदा था और वही इसे आज भी चालू किये हैं। इसका पुराना नाम 'गंगा आयल मिल्स, काटन जिनिंग फैक्टरी एण्ड हाइड्रालिक प्रेस' था।

६. निहालचन्द किशोरीलाल जिनिंग फैक्टरी एंड आयल मिल्स, बांस मण्डी, के मालिक लाला रामेश्वरप्रसाद हैं। इनके कई चालू तेल मिल हैं, जैसे कोपरगंज का ७. 'न्यु कानपुर फ्लावर मिल' आदि।

८. गोविन्द आयल मिल्स, बांसमंडी, की स्थापना सन् १९३० में हुई थी और यह २२-२-३० को चालू किया गया था। इसमें ४ हाइड्रालिक केज प्रेस लगे हुये हैं। इसके

'पुराने मालिक रायसाहब गोपीनाथ के भाई लोग थे किन्तु अब इसके मालिक दुलीचन्द उमरावलाल हैं जिनका अपना एक तेल मिल पहले से है। ९. जो उनके फर्म के नाम ही से प्रसिद्ध है और फैक्टरी एरिया में स्थित है। इसमें ९ एक्सपेलर लगे हुए हैं। इस समय दुलीचन्द उमरावलाल तेल के एक बहुत बड़े व्यापारी हैं। इस फर्म के श्री रतनलाल जी सार्वजनिक कामों में भी दिलचस्पी लेते हैं।

१०. डिप्टी के पड़ाव पर 'गणेश आयल एण्ड सोप मिल्स' के मालिक श्री हरप्रसाद मोतीलाल हैं।

११. रतीराम एंड सन्स तेल मिल बन्द होकर अब 'अम्बिका तेल मिल हो गया हैं।

१२. गुटैया स्थित 'कमलापत मोतीलाल आयल मिल्स' भी तेल का एक बड़ा कारखाना है।

१३. रेलबाजार के गैन्जेज फ्लावर मिल में 'गैन्जेज आयल मिल' के नाम से तेल का एक कारखाना है। इसके मालिक ला० सादीराम गंगाप्रसाद हैं।

१४. स्वदेशी आयल फैक्टरी, कोपरगंज में थोड़ा काम होता है और इसके मालिक रामकृष्ण गिरधारीलाल हैं।

१५. फैक्टरी एरिया में राधाकृष्ण सीताराम के नाम से एक छोटा-सा तेल मिल और है।

१६. जूही में पहले चौधरी सोप फैक्टरी के नाम से जो

कारखाना था उसका नाम अब 'प्रहलादराय आयल मिल्स' हो गया है। प्रहलादराय जी ही उसके मालिक हैं।

कानपुर शहर के समस्त तेल मिलों और तेलियों के कोल्हुओं से लगभग २०--२२ लाख मन तिलहन का तेल साल में निकाला जाता है। और लगभग ७--८ लाख मन तेल तैयार होता है। इन मीलों में करीब १००० कोल्हू और ८०--९० एक्सपेलर होंगे। तेलियों के कोल्हुओं की संख्या भी ५०-६० होगी, जो अधिकतर बैलों से चलते हैं।

पुखरायाँ, झींझक और उत्तरीपूरा में भी तेल पेरने के छोटे-छोटे मिल थे। किन्तु झींझक और पूरा के बन्द हो गये। इन सबका विवरण प्राप्त नहीं हो सका।

अब प्रश्न होता है कि क्या कानपुर के ज़िले में ही इतना तिलहन पैदा हो जाता है जो इन मिलों की खपत को पूरा कर सके अथवा बाहर से भी तिलहन दाना यहाँ आता है? कानपुर ज़िले की तिलहन की पैदावार तो यहाँ खप ही जाती है। और पश्चिम में फ़र्रुखाबाद, इटावा, पूर्व में फतेहपुर और उत्तर में उन्नाव, रायबरेली, तथा हरदोई के इलाकों से माल आता है। कुछ थोड़ा माल गोंड़ा बहराइच, नैपाल की तराई से भी आता है। और फ़सल ख़राब होने पर पंजाब, अलवर, भरतपुर, चन्दौसी तथा हलद्वानी से भी माल आता है।

मूंगफली—अधिकांश हरदोई, माधोगंज, सीतापुर, मिसरिक, बरेली, फ़र्रुखाबाद और मैनपुरी से आती है। इसका अर्थ यह

है कि गंगा के उत्तरी और दक्षिणी दोनों कछारों में मूंगफली की पैदावर होती है, और कछार के पास की मण्डियों से कानपुर आती है।

बड़े दाने की *अलसी और तिल्ली*—झांसी लाइन में झांसी तक से और दूसरी ओर बांदा तक से आती है। छोटे दाने की अलसी गोरखपुर, गोंडा और बहराइच से आती है। अलसी कानपुर में बहुत कम पैदा होती है।

महुआ—रायबरेली, प्रतापगढ़ और इलाहाबाद से आता है। कुछ मध्य प्रदेश से भी आ जाता है और कुछ कानपुर में भी पैदा होता है।

अरण्डी—अधिकतर लखीमपुर और बिहार प्रांत से आती है। कुसुम के बीजों को *कर्डी*—कहते हैं। पहले देहात के लोग इसका तेल निकाल कर अपने काम में ले आया करते थे। पिछले साल १९५३ में मूंगफली की कमी होने से वनस्पति-तेल के मिल वालों की ओर से कर्डी की माँग बढ़ी। अतः तेल मिल वालों ने कर्डी का तेल भी निकाल कर वनस्पति के मिल वालों को देना शुरू कर दिया और यह जारी है। किन्तु इसका तेल कम निकाला जाता है क्योंकि इसमें तेल का प्रतिशत कम होता है। पहले यह केवल विदेशों को जाया करती थी और अब भी जाती है।

जो तेल तैयार होता है उसमें से सरसों और लाही का अधिकांश तेल बिहार, बंगाल, आसाम और उड़ीसा जाता है।

अलसी का तेल प्रान्त की पेंट फैक्टरियों में खप जाता है और जो बच रहता है वह बम्बई तथा पहाड़ी इलाकों को भेज दिया जाता है। यह काश्मीर तथा विदेशों को भी भेजा जाता है।

मूंगफली का तेल कानपुर के वनस्पति मिल में खप जाता है या यहीं बिक जाता है और बचा-खुचा बंगाल भेज दिया जाता है।

महुआ का तेल साबुन बनाने के काम में आता है और दिल्ली तथा पंजाब भेजा जाता है। तिल्ली का तेल भी वनस्पति तेल के काम में इस्तेमाल किया जाता है।

अंडी का तेल "लुब्रीकेटिंग" के काम आता है। इसे गवर्नमेंट खरीदती है और स्थानीय मिल भी लुब्रीकेटिंग के काम में इसका प्रयोग करते हैं। बचा-खुचा यह बम्बई और कलकत्ते से विदेशों को भी भेजा जाता है। रेलवे में भी अंडी का तेल लुब्रीकेटिंग के लिए काम में लायाजाता है।

चमड़े वाले अलसी का तेल इस्तेमाल करते हैं। तेल को विदेशों में भेजने वाली कम्पनियाँ कलकत्ते और बम्बई में हैं और वे अधिकतर विदेशियों की ही रही हैं। किन्तु अब देशी लोगों की भी कम्पनियाँ खुल गई हैं। ये सब कम्पनियाँ विदेशों को तेल का निर्यात करती हैं।

सरसों की खली--पंजाब और पश्चिमी उत्तर प्रदेश को तथा कभी-कभी बिहार को भेजी जाती है। मूंगफली और अंडी की खली खाद के काम में लाई जाती है और तिल्ली की राज-

स्थान तथा दिल्ली भेजी जाती है। काले तिल की खली पान की खाद में काम आती है और महुए की खली का कोई प्रयोग नहीं होता, वह केवल जलाने के काम में आती है। अलसी की खली पहाड़ी इलाकों में जाकर चाय की खेती में खाद के लिए प्रयोग की जाती है और बिहार, मुरादाबाद, चन्दौसी, आसनसोल से कलकत्ते तक जाती है। इसका खपत अपने प्रान्त के गोरखपुर में काफ़ी है तथा पंजाब के उन ज़िलों में भी है जहाँ गन्ने की खेती होती है। अलसी की खली गन्ने की खेती के लिए बड़ी उपयोगी होती है।

किस चीज़ में कितना तेल निकलता है, इसका ब्योरा इस प्रकार है :—

कर्डी में	२०	प्रतिशत
बड़े अलसी के दाने में	३५·३६	,,
अलसी के छोटे दाने में	३२·३०	,,
लाही में	३३·३४	,,
अंडी में	३६·३७	,,
महुआ में	३६·३७	,,
मूंगफली दाना में	३७·३८	,,
सरसों में	३८·४०	,,
तिल में	४०·४१	,,

कानपुर के मौजूदा समस्त मिलों में लगभग ३५०० आदमी काम करते हैं, जिनमें पल्लेदार, लाइनदार, मिस्त्री, माचा;

लोहार, बढ़ई, आयलमैन, फिटर, खरादी, इन्जीनियर, ड्राइवर, फायरमैन, कोयला डालने वाला, सफाई करने वाला और कुली आदि हैं। नीचे एक नकशा है जिसमें इन सबकी आज की और पच्चीस वर्ष पहले की तनख्वाह का व्योरा है :—

	१९२१		१९४४	
पल्लेदार	१२)	रु०	४५-५०)	रु०
लाइनदार	२४-३०)	,,	६० ६५)	,,
मोची	१८)	,,	५५-६०)	,,
मिस्त्री	४५-५०)	,,	१२५-१५०)	,,
आयलमैन	१५)	,,	५०-५५)	,,
लोहार	३५-४०)	,,	९०-१००)	,,
घनवाहा	१६)	,,	५०-५५)	,,
बढ़ई	२५-४०)	,,	५० ६०)	,,
खराद	५०)	,,	८०-९०)	,,
फिटर	२५-४०)	,,	८०-१२०)	,,
फायरमैन	२२-२५)	,,	६५-७०)	,,
कोलमैन	१५-१६)	,,	४५)	,,
कुली	२०-३०)	,,	४०-४५)	,,
इन्जन ड्राइवर	२५-३०)	,,	६०)	,,
एक्सपेलर मिस्त्री			१२५-१५०)	,,
एन्जीनियर सेकन्ड क्लास	१३०-१७५)	रु०	२५०)	,,
,, फर्स्ट		,,	५००)	,,

हाइड्रालिक के मिस्त्री	६०-७५) ,,	१५०-१७५)	,,
केमिस्ट		२५०-३००)	,,
,, फर्स्ट क्लास		५००)	,,

फर्स्ट क्लास के केमिस्ट कुछ ही बड़े-बड़े मिलों में हैं जैसे जे० के० मिल में। हाइड्रालिक मिल कानपुर में केवल १०-१२ हैं। सफ़ाई करने वाले टेम्परेरी आदमी रख लिए जाते हैं। उनकी तनख़्वाह निश्चित् नहीं है। जो औरतें काम करती हैं उन्हें पहले २०-३०) रु० मिलते थे और अब ३०-४०) रु० मिलते हैं।

होज़री

'होज़री' शब्द में हाथ से बुनी हुई सब प्रकार की वस्तुएँ शामिल है, जैसे छोटे और बड़े मोजे, बनियाइन और मफ़लर आदि। मोजा बनियाइन की पहली मशीन हिन्दुस्तान में १८९२ में किदरपुर में लगाई गई थी। १९०५ के स्वदेशी आन्दोलन ने इस उद्योग को बढ़ावा दिया और देश के विभिन्न भागों में कई मशीनें लग गईं।

दूसरे विश्वव्यापी युद्ध में कानपुर भी होज़री उत्पादन का एक केन्द्र बन गया। बड़े-बड़े कारखानों में 'पुलओवर', कोट आदि बनते थे, और छोटे-छोटे कारखानों ने मोजे, बनियाइन और मफलर बनाने में विशेषता प्राप्त कर ली।

विभिन्न कारखानों में सूती, ऊनी, रेशमी और नकली रेशम के डोरे काम में लाये जाते हैं किन्तु अधिकांश डोरे अर्थात् ८५% सूती का ही प्रयोग होता है। होज़री की मशीनें तो विदेशों से

आती हैं किन्तु उनकी सुइयों का कारखाना भारत में ही खुलना चाहिये, क्योंकि सुइयाँ रोज़ खर्च होती हैं।

सस्ती बनियाइनें कुटीर उद्योग ही से बन सकती हैं और इन्हें प्रोत्साहन मिलना चाहिए।

कानपुर के मिलों में होज़री बुनने का काफ़ी सूत तैयार होता है और लखनऊ आदि कई नगरों में जाता है। यहाँ कलकत्ते आदि से काफ़ी होज़री आती है और वह यहाँ के माल के मुकाबिले में सस्ती पड़ती है और इसीलिए चलती भी अधिक है।

स्थानीय मिलों में "कानपुर टेक्सटाइल" मिल में होज़री का विशेष स्थान है। और यह 'काटेक्स' के नाम से प्रसिद्ध है। एलगिन मिल वाली मशीन इसमें लगी है। एल्गिन मिल में भी होज़री बनती थी और कमला होज़री तो प्रसिद्ध ही थी। इसके मैनेजर श्री जागेश्वर प्रसाद थे।

श्री हरगोबिन्द मिश्र की फैक्टरी तो केवल होज़री का ही काम करती है। परन्तु उसका भी काम ढीला है। यह होज़री १९२७ में खुली थी।

पक्का होज़री के मालिक श्री शान्तिनारायण चड्डा हैं और लाला दीवानचन्द के पुत्र हैं। पक्का होज़री का काम अच्छा चल रहा है। इसकी मेस्टन रोड पर नारायण एण्ड कम्पनी के नाम से एक दूकान है।

रामनगर में "दी टैक्सटाइल सीविंग एंड फिनिशिंग कं० लि०" होज़री की एक और फैक्टरी है।

शहर में होज़री की पचासों दूकानें हैं और चौक से लेकर मनीराम बगिया तो होज़री के दूकानदारों से पटी पड़ी है। यहाँ पर स्थानीय और बाहर से आई हुई होजरी की अच्छी थोक बिक्री होती है। सैकड़ों ही 'हाकर' इन थोक व्यापारियों से माल लेजाकर गली-गली में बेंचते हैं।

नन्दराम खत्री और सुदर्शन महराज होज़री के थोक और मुख्य व्यापारी हैं। पहले दोनों एक में थे और सुदर्शन महराज नन्दराम के नाम से काम होता था किन्तु अब दोनों की दूकानें अलग-अलग हो गई हैं। सन् १९२७ में जब ये दोनों दूकानें एक में थीं तब होज़री के अन्य व्यापारी चौक में ये थे :—

(१) बैजनाथ खत्री (२) कन्हैयालाल रामेश्वरप्रसाद (३) कन्हैयालाल जागेश्वरप्रसाद । और माल रोड पर (४) ट्रिवेलियन एन्ड क्लार्क तथा (५) ह्वाइट-अवेलेडला एन्ड कम्पनी। माल रोड की ये दोनों दूकान अब उठ गई है।

होजरी के वर्तमान कुछ व्यापारी :—

१. अमरनाथ विश्वनाथ, चौक; २. जागेश्वर प्रसाद राम-नारायन, गयाप्रसाद लेन; ३. शकर होजरी स्टोर्स, चौक; ४. पंजाब होजरी स्टोर्स, मनीराम बगिया; ५. शिवप्रसाद जगत नारायन, मनीराम बगिया; ६. हरीशंकर कमलनारायन, मनीराम बगिया; ७. कृष्ण मुरारी अग्रवाल, मनीराम बगिया, ८. परषो-त्तमदास महेशचन्द्र, मनीराम बगिया; ९. कानपुर होजरी स्टोर्स

मनीराम बगिया; १०. हजारीलाल चरनदास, मनीराम बगिया; ११. गंगा होजरी स्टोर्स, मनीराम बगिया; १२. प्रदीप कुमार एन्ड कम्पनी, मनीराम बगिया; १३, रामनारायन अग्रवाल, मनीराम बगिया; १४. अग्रवाल होजरी स्टोर्स, मनीराम बगिया; १५. कान्त अरुण क०, मनीराम बगिया; १६. एस० बी० पंडित जी चौक; १७. एस० के० पडित जी, चौक; १८. ज्वाला एन्ड क० चौक, ठठराई; १९. अलाबक्स अब्दुलहक, बिसाती बाजार; २०. मोहम्मद हुसेन, बिसाती बाजार; २१. मोहम्मद उमर, बिसाती बाजार; २२. अकबर हुसेन, बिसाती बाजार; २३. लियाकत हुसेन, बिसाती बाजार; २४. मोहम्मद समी बिसाती, बाजार; २५. नईम ब्रादर्स मछली बाजार।

थोक की ५-१० दूकानें और भी होंगी।

और फुटकर की लगभग ५० दूकान होंगी जो नहर किनारे, बादशाही नाका, परेड, माल रोड, ५ नम्बर गुमटी, कलक्टरगंज आदि में हैं।

दाल

कानपुर दाल की एक खास मण्डी है। जो दाल पहले हाथ चक्की से बनती थी उसके बनाने में अब मशीनों का प्रयोग होता है जो बिजली से चलती हैं। दाल बनाने की सौ से ऊपर मशीनें लगी होंगी। ये मशीने ज्यादातर नहर किनारे और दाल मण्डी में लगी हैं और थोड़ी-सी रामगंज, तेलियाना और डिप्टी के पड़ाव पर भी हैं।
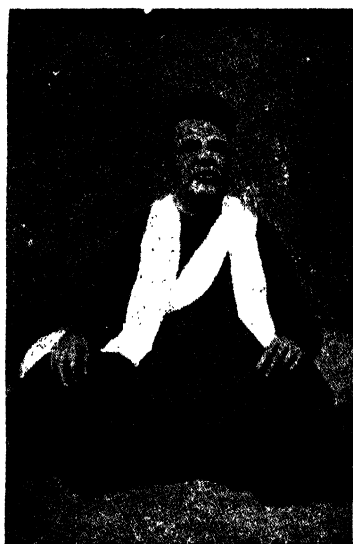
ला० गयाप्रसाद कपूर

इन मशीनों के अतिरिक्त दाल तैयार करने के कई मिल भी हैं जिनमें आटोमेटिक मशीनें लगी हुई हैं। इस प्रकार के मिलों में एक तो है 'यू० पी० दाल मिल' जो फ़जलगंज में लगा हुआ है और उसके मालिक रमेशचन्द्र ब्रजेशचन्द्र हैं। दूसरा है 'न्यू कानपुर दाल मिल'—यह रेल बाज़ार में शालीमार टाकीज़ के पीछे बना हुआ है और श्रीराम महादेव फ़र्म का मिलकियत है। तीसरे का नाम 'जयहिन्द दाल मिल' है और यह अक़ाम की काठी के पास स्थित है। इसके मालिक उमरावलाल शिवरतनदास हैं। चौथे कारख़ाने का नाम 'महाबीर' दाल मिल है और यह रेल बाज़ार में स्थित है। इसके मालिक रामदेव जैन हैं।

इन सब मशीनों और मिलों से प्रतिदिन तीन-चार हज़ार बोरा दाल तैयार होती है। अतः साल में लगभग दो करोड़ की दाल बन कर बिक जाती है। कानपुर की दाल दूर-दूर जाती है, जैसे कलकत्ता, बम्बई, आसाम, बिहार, गुजरात और सीलोन आदि। वैसे तो अरहर, चना, मूँग, उर्द, मसूर और मटर की दाल बनती हैं परन्तु बाहर केवल अरहर और चने की दाल ही जाती हैं।

कानपुर की अरहर की दाल मशहूर है। जब यहाँ की दाल बर्मा जाती थी तब यहाँ दो प्रकार का अरहर की दाल तैयार होती थी, एक छोटे दाने की और दूसरी बड़े दाने की। किन्तु अब बर्मा को दाल का जाना बन्द हो गया है अतः अब बड़े दाने की दाल नहीं बनती, केवल छोटे दाने की बनती है।

कानपुर में दाल का व्यापार करने वाले सैकड़ों ही व्यापारी हैं। किन्तु पाँच-सात बड़े व्यापारी हैं, जैसे मुर्लीधर सन्तराम, दीनदयाल केशवलाल, रामावतार गुरुदयाल, छेदीलाल कैलाशनाथ, बुद्धूलाल गौरीशंकर आदि।

जो सौ से ऊपर छोटी-छोटी मशीनें लगी हैं, उनमें १५-१५ आदमी काम करते हैं और आटोमेटिक मशीनों वाले मिलों में उससे ज्यादा काम दस ही आदमी कर लेते हैं। अतः ये मिल, छोटी मशीनों से दाल तैयार करने वालों के लिए एक समस्या हैं और छोटे-छोटे कारखानों को चौपट करने वाले हैं।

जिस प्रकार दाल की मशीनें लगी हुई हैं उसी तरह प्रायः हरएक दाल वाले के यहाँ एक-आध धान की मशीन भी लगी हुई है, जहाँ पर धान से चावल तैयार होता है। अतः यह काम भी यहाँ काफ़ी होता है परन्तु उतना नहीं जितना कि दाल का होता है। दाल तो यहाँ का एक ख़ास व्यापार है।

कोल्डस्टोरेज

कानपुर में दो बड़े और एक छोटा कोल्डस्टोरेज हैं। सबसे पहला कानपुर का कोल्डस्टोरेज बागला बन्धुओं का है जो १९४९ में खुला था। उसका नाम है 'अपर इण्डिया कोल्डस्टोरेज'। इसमें सात लाख रुपया लगा है और लगभग २०००० मन सामान रखा जा सकता है। आलू के बीज, दवाएँ और फल आदि इसमें रखे जाते हैं। जो माल रखा जाता है वह अधिकांश

व्यापारियों का होता है। किन्तु बागला बन्धु भी अपनी ओर से माल ख़रीद कर रख लेते हैं। इसका वार्षिक ख़र्च लगभग एक लाख रुपया होता है। मार्च से अक्टूबर तक माल भरा जाता है। अतः इन महीनों में काम अधिक रहता है। नवम्बर से फरवरी तक काम कम रहता है। इसलिये ये महीने कोल्डस्टोरेज के डल सीज़न में शुमार हैं और इन दिनों ख़र्च भी कम रहता है। इन्हीं महीनों में मशीन आदि की सफ़ाई और मरम्मत भी होती है।

कोल्डस्टोरेज के युग के पहले किसान ज़मीन में गाड़ कर आलू रखते थे। इस विधि में ६०-७० प्रतिशत माल ख़राब हो जाता था। किन्तु कोल्डस्टोरेज में केवल ५-६ प्रतिशत ही माल ख़राब होता है और रखवाई ८॥) रु० मन लगती है। इस प्रकार किसान को बचत हो जाती है। कोल्डस्टोरेज से वापिस करते समय माल ५ प्रतिशत कम लौटाया जाता है क्योंकि कुछ सड़ जाता है। माल की बराबर देख-भाल होती रहती है और जो बीज सड़ जाता है उसके आस-पास के सारे माल को बाहर निकाल कर फिर से रखा जाता है शेष को साफ़ करके रख दिया जाता है और सड़े हुये को फेंक दिया जाता है। सड़े हुये माल की पहचान एक औजार से कर ली जाती है जिससे सड़े हुए की गंध तुरन्त मालूम हो जाती है।

कानपुर का दूसरा कोल्डस्टोरेज कमलापत मोतीलाल का है। इसकी लागत, ख़र्च और माल की तैयारी आदि सभी बातें

'अपर इण्डिया कोल्डस्टोरेज' के समान ही समझनी चाहिए। इसके मालिक श्री महावीर प्रसाद जी हैं जो शक्कर का बहुत बड़ा काम करते हैं।

तीसरा कोल्डस्टोरेज छोटा है और वह डिप्टी के पड़ाव पर गोविन्द आयल मिल्स में है। इसके मालिक दुलोचन्द उमराव लाल हैं, जो एक बड़े और कुशल व्यापारी हैं।

फलों और तरकारियों के उद्योग की उन्नति करने के लिये अधिक कोल्डस्टोरेजों की आवश्यकता है। इनके अधिक होने से फलों और तरकारियों के व्यापार की वृद्धि होगी।

साबुन

सन् १९०५ में पटकापुर के मनीराम पाण्डे के हाते में अखाड़े के पास साबुन का एक कारखाना "कैसर सोप" के नाम से था। इसमें बहुत बढ़िया क़िस्म के साबुन बनते थे। इसके मालिक श्री गोपालचन्द्र बैनर्जी थे। यह कानपुर के प्रसिद्ध फ़ौजदारी के वकील बाबू त्रिलोकीनाथ बैनरजी के छोटे भाई थे। श्री गोपाल बाबू का साबुन इतना सुगन्धित होता था कि यह जो छोटी-छोटी टिकियाँ नमूने की बाँटा करते थे उसे लोग बजाय लगाने के सूँघने के काम में अधिक लाते थे। १९०५ में बनारस कांग्रेस के साथ होने वाली "इन्डस्ट्रियल कान्फरेन्स" में देश में साबुन की उन्नति के सम्बन्ध में गोपाल बाबू का बड़ा सुन्दर भाषण हुआ था।

इस समय कानपुर में 'मार्वेल सोप' और 'रमेश सोप' के कारखाने अच्छे चल रहे हैं और इनका माल भी खूब बिकता है। कपड़ा धोने का साबुन कई तेल मिलों के अतिरिक्त छोटे-छोटे कारखानों में काफ़ी बनता है और बाज़ार में प्रायः यही देखने में आता है और एक रुपये सेर तक बिकता है। कानपुर के चौधरी सोप के कारख़ाने को बन्द हुए काफ़ी समय हो गया। बड़े पैमाने पर साबुन का कोई कारख़ाना नहीं के बराबर है। हाँ, "गणेश सोप फैक्टरी" अवश्य काफ़ी साबुन बनाती है।

वनस्पति

वनस्पति तेल जो घी की शक्ल का बना दिया जाता है, उसका कानपुर में केवल एक ही कारख़ाना है और उसका नाम है 'गणेश फ्लावर मिल। इसका हेड आफ़िस दिल्ली में है जो १८९१ में स्थापित हुआ था। इसके संस्थापक रायबहादुर महानारायण जी हैं जो दिल्ली आफ़िस में रहते हैं और उसके जनरल मैनेजर हैं। इसकी दो शाखाएँ हैं। एक तो लायलपुर, पाकिस्तान में है और दूसरी कानपुर में। कानपुर की शाखा १९३४-३५ में खुली थी और इसके जनरल मैनेजर श्रीकृष्ण नारायण जी माथुर हैं। कानपुर के इस वनस्पति के मिल में प्रतिदिन ५० टन माल बनाने की क्षमता है। किन्तु व्यापार की परिस्थिति के अनुसार माल कम या ज्यादा बनता है। इसमें ४५० आदमी काम करते हैं और यह फज़लगंज में है। इसमें

मूँगफली या बिनौले का तेल ही घी के रूप में परिवर्तित किया जाता है।

सन् १९५० तक इसके भाव पर कन्ट्रोल था। किन्तु अब कन्ट्रोल हट जाने पर आजकल इसके ३६ पौंड के टीन का भाव छब्बीस रुपया आठ आना है और दो रुपया सेल टेक्स लगता है।

रासायनिक उद्योग

(*केमिकेल इन्डस्ट्रीज़*)

रासायनिक उद्योग के भी कानपुर में कई कारखाने हैं। "माथुर मंजूर" कम्पनी में दवाएँ बनती हैं; "कानपुर केमिकेल्स" में बड़े पैमाने की वस्तुएँ बनती हैं। "सलफ्यूरिक एसिड" तैयार करने में यह कारखाना विशेषता रखता है। कुछ दिनों से यहाँ कलकत्ते की बंगाल केमिकल कम्पनी की एक शाखा खुल गई है, जिसमें स्पिरिट से तैयार होने वाले रासायनिक पदार्थ बनते हैं।

सन् १९३४ में डा० जवाहरलाल रोहतगी ने छोटे रूप में "हिन्द केमिकल" नाम से एक कारखाना दवाएँ बनाने के लिए खोला था जहाँ प्रामाणिक दवाएँ बनती हैं। यह कारखाना एक लिमिटेड कम्पनी है और इसने पर्याप्त तरक्की कर ली है। इसकी देखभाल डा० साहब के पुत्र श्री महेन्द्र रोहतगी करते हैं। इसमें ऐसी दवाएँ बनती हैं जो विदेशी दवाओं से मुकाबिला कर सकती हैं। कुछ दवाएँ ये हैं :—

अतिसार और पेचिस में 'इन्टोकार्ब', 'इन्टोजीन' तथा 'हाई इन्टरोल'; 'एक्स-रे' के लिये 'क्रोमोबार'; परिवार नियोजन के लिये 'सार्नाटैब'; भारत निर्मित अद्वितीय कैल्शियम 'हाई-ग्लूकोन' आदि कुछ ऐसी औषधियाँ हैं जिनकी क्रियाशीलता उत्कृष्ट समझी जाती है।

विशिष्ट पेटेन्ट औषधियों के अतिरिक्त हिन्द कैमिकल्स में 'गलेनिकल्स' 'इन्जेक्शन', केमिकल्स', कृमिनाशक औषधियाँ, 'हाइपोडरमिक' टिकियाँ, 'बायोकेमिक' टिकियाँ, आयुर्वेदिक औषधियाँ तथा अनेक अन्य प्रकार की आवश्यक और लाभकारी औषधियों का निर्माण होता है।

वेस्ट काटन

कानपुर में 'वेस्ट-काटन' के दो-तीन कारखाने हैं। एक तो परेड पर श्री चुन्नालाल गर्ग का है, जो बहुत पुराना है। इसीके नाम से ये लोग गूदड़ वाले कहलाते थे। दूसरा कारखाना श्री मातादीन हरीनाथ का है और कूपरगंज में है।

छोटे उद्योग

कानपुर एक औद्योगिक और व्यापारिक नगर है अतः यहाँ सैकड़ों ही छोटे-छोटे उद्योग धंधे चालू हैं। रंगाई-छपाई का काम यहाँ खूब होता है। टाट पट्टी, मूँज, निवाड़, ऐनक के शीशे, पतंग, डोर, मोढ़े, कुर्सियां, फुल्ला, बकसुए, फीते, कम्पट, बिस्कुट और मिट्टी के खिलौने आदि काफी मात्रा में बनते हैं और सैकड़ों नहीं हजारों ही आदमी इन वस्तुओं के निर्माण तथा व्यापार में

लगे हुए हैं। लाख की चूड़ियाँ यहाँ पहले बहुत बनती थीं। जहाँ अधिक चूड़ी वाले रहते थे उस स्थान का नाम ही चूड़ी मोहाल पड़ गया था। किन्तु अब तो बाहर की चूड़ियाँ ही आकर अधिक बिकती हैं।

शहर में ढलाई और खराद की मशीनें भी अनेकानेक लगी हुई हैं। लाटूश रोड पर मशीनें तथा उनके पार्टस पर्याप्त मात्रा में बिकते हैं और हर प्रकार की मशीनों के पुर्जे बनते भी हैं, कई मशीनें भी चालू रहती हैं। यह स्थान तो मशीनरी अथवा इञ्जीनियरिंग का बाजार बन गया है।

मशीनों के पुराने पुर्जे तो घुमनी मोहाल में भी मिल जाते हैं परन्तु लाटूश रोड तो नई मशीनों तथा पुर्जों और मिल स्टोर का बाजार है।

मजीद अहमद रोड पर पुराने टायरों पर नया रबड़ चढ़ाने की एक मशीन 'कानपुर टायर' के नाम से लगी हुई है। चौक में शीशे के दो बड़े व्यापारी हैं, बाबा ग्लास वर्क्स और श्यामसुन्दर पिक्चर मर्चेन्ट। इनके यहाँ शीशे का काफ़ी कारबार होता है। इनके अतिरिक्त बीसों तस्वीर जड़ने वाले विभिन्न मोहल्लों में हैं।

कानपुर में फाउन्टनपेन भी बनते हैं। राकी, गोयल और प्रकाश फाउन्टेनपेन का काम अच्छा चलता है। जैप ब्रादर्स भी फाउन्टेनपेन के एक बड़े स्टाकिस्ट हैं। अन्य कई लोग भी

अनेक प्रकार के फाउन्टेनपेन बेचते हैं और टूटे-फूटे पेनों की मरम्मत करते हैं।

पुस्तकें

इलाहाबाद और बनारस की अपेक्षा कानपुर में किताबों का काम कम है, फिर भी यहाँ कई प्रकाशक और पुस्तक विक्रेता हैं।

१. श्रीकृष्ण पुस्तकालय की बिक्री कानपुर में सबसे अच्छी है। इनकी दूसरी दूकान बम्बई पुस्तकालय भी चौक ही में है, जहाँ रामायण और उपन्यास आदि भी मिलते हैं, तथा गीता प्रेस गोरखपुर की पुस्तकों का स्टाक भी रहता है। इनका अपना प्रेस भी है। इनके यहाँ आल्हा, सुखसागर और सिनेमा के गाने आदि ही छपते हैं।

२. सरस्वती पुस्तकालय में रामायण छपी है। इनका भी अपना प्रेस है। इनके यहाँ हरप्रकार की पुस्तकें बिकती हैं।

३. स्टैन्डर्ड बुकडिपो में अंगरेजी की अधिक और हिन्दी की थोड़ी पुस्तकें बिकती हैं।

४. विद्या-मन्दिर पुस्तक भण्डार चौक में स्थित है और बनारस के विद्या-मन्दिर की एक शाखा है। यह स्कूल और कालेज की पुस्तकों के साथ साहित्यिक तथा बालोपयोगी पुस्तकें भी रखते हैं। इनकी कुछ किताबें तो काफ़ी सस्ती और अच्छी है।

५. भारती पुस्तक भण्डार में भी प्रायः साहित्य की पुस्तकें मिल जाती हैं। उपर्युक्त पुस्तक विक्रेताओं के अतिरिक्त चौक के अन्य पुस्तक विक्रेता स्कूली और कालेज की पुस्तकें तथा स्टेशनरी बेचते हैं। श्रद्धानन्द पार्क के सामने साहित्यिक पुस्तकों के दो बड़े दूकानदार हैं।

६. एक तो साहित्य निकेतन है जो प्रकाशक भी है और पुस्तक विक्रेता भी।

७. दूसरे हैं साहित्य रत्नाकर। इनके प्रकाशन का नाम है पद्मजा प्रकाशन। इन दोनों ही दूकानों में साहित्य की प्रायः सभी प्रकार की पुस्तकें मिल जाती हैं। जो साहित्यिक पुस्तक यहाँ न मिलेगी उसका कानपुर में मिलना मुश्किल ही है।

८. मालरोड पर करेन्ट बुकडिपो में रूस और चीन के साहित्य के साथ-साथ हिन्दी की अन्य पुस्तकें भी मिलती हैं। इन्होंने अपना भी कुछ प्रकाशन किया है।

९. बिरहाना रोड पर सीता प्रकाशन में अपनी प्रकाशित पुस्तकों के अतिरिक्त बाहरी उपन्यासों और कहानियों का अच्छा संग्रह है।

१०. नराना एक्सचेन्ज के पास यूनिवर्सल बुक स्टाल पर अंगरेजी की पुस्तकों का अच्छा जखीरा है। अब ये लोग थोड़ी-सी हिन्दी की पुस्तकें भी रखने लग गये हैं किन्तु प्रायः वे भी स्कूल और कालेज से सम्बन्धित हैं।

२१. मालरोड की अडवानी कम्पनी मासिक पत्रिकाओं के अतिरिक्त कुछ बाल साहित्य भी रखता है, अंगरेज़ी का अधिक और हिन्दी का बहुत थोड़ा। इनका एक छोटा-सा प्रेस भी है।

२२. गौतम ब्रादर्स की दूकान ए० बी० रोड पर है। ये स्कूली पुस्तकों के बड़े प्रकाशक हैं। इनकी एक शाखा लखनऊ में है।

२३. पटकापुर की गलियों में "ज्ञान-मन्दिर" के नाम से एक छोटा-सा पुस्तक भण्डार है जहाँ से लगभग ७० पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं। इनकी तीन सीरीज़ चल रही हैं, कोकिल, बुलबुल और सुधा। सुधा सीरीज़ में बाल साहित्य है और कोकिल और बुलबुल में सब कुछ। पटकापुर से ही 'कानपुर का इतिहास' प्रथम भाग निकल चुका है और दूसरा छप रहा है।

२४. विश्वनाथ तिवारी 'विश्व' ने कई नाटक लिखकर स्वयं प्रकाशित किये हैं।

२५. छोटे-छोटे अन्य प्रकाशक भी हैं जो साहित्यिक तथा अन्य प्रकार की पुस्तकें कभी-कभी निकाला करते हैं।

नये एरिया सीसामऊ और गांधी नगर में भी कई पुस्तक विक्रेता हैं। वे सभी स्कूल और कालेज की पुस्तकें ही बेचते हैं। इसी तरह परेड की प्रायः एक दर्जन पुस्तकों की दूकानों पर स्कूल और कालेज की नई और पुरानी पुस्तकें ही बिकती हैं।

कपड़ा बाजार

कानपुर एक नया नगर है और मोटे तौर पर डेढ़ सौ वर्ष का बालक है। इसकी आधुनिक उन्नति का बहुत कुछ श्रेय यहाँ के मिलों को है, जिनकी बदौलत यह हिन्दुस्तान का 'मैनचेस्टर' कहलाता है। किन्तु यहाँ के मिलों की स्थापना के पहले, कानपुर एक मंडी बन चुका था, और इस मंडी में कपड़ा बाज़ार प्रमुख स्थान था। लाला दरगाहीलाल ने अपनी "तारीखे. कानपुर" में जो सन् १८७५ में प्रकाशित हुई थी, कुछ कपड़े वालों और हुन्डी वालों के नाम दिये हैं। इससे स्पष्ट है कि कानपुर में मिलों का जन्म होने से पहले ही कपड़े की मंडी स्थापित हो चुकी थी।

यह कपड़ा बाज़ार जनरलगंज, काहू की कोठी, पचकूँचा और चौक तक फैला हुआ था। दो-एक दूकानें नौघड़े में भी थीं।

थोक कपड़े का बाज़ार, जनरलगंज, काहू कोठी और पचकूँचे में था। फुटकर बाजार जनरलगंज बजाज़ा और चौक में था। बिलायती माल की थोक बिक्री की दो दूकानें इन मुहल्लों के अलावा थीं। एक तो थी हटिया में पूरनचन्द परमेश्वरीदास की, जिनके यहाँ कई पुश्त से बजाज़ी होती थी और दूसरी चावल मंडी से जो रास्ता घुमनी मोहाल को जाता है उसमें एक बड़े-से फाटक में थी जिसमें परमेश्वरीदास प्रभूदयाल नाम पड़ता था और वह आगे चलकर गोपीनाथ छंगामल के नाम से प्रसिद्ध हुई। पहली दूकान तो उठ गई और

दूसरी अब भी चालू है। इनका अपना एक दफ़्तर भी है जो पहले विलायत से और अब देशी मिलों से सीधा माल मँगाता है।

कपड़े की फुटकर बिक्री में वे बाजार भी हैं जो सप्ताह के विभिन्न दिनों में विभिन्न मोहल्लों में लगा करते थे और आज भी लगते हैं।

परेड का बाजार मंगल, वृहस्पति और शनीचर को पहले लगता था और आज भी लगता है। यही हाल बेगमगंज के बाजार का है जो आज भी बुध और इतवार को लगता है। रानी की गढ़ैया, तरकारी मंडी और कलक्टरगंज में कुछ कपड़े वाले नित्य बैठते रहे हैं। हटिया का बाज़ार सोमवार और शुक्रवार को लगता है। परन्तु आजकल उसकी जोरदारी कम हो गई है। हूलागंज का बाजार बुध और इतवार को लगता रहा है और मीरपुर का सोमवार, वृहस्पति और शनीचर को। पहले नवाबगंज में रोज बाजार लगता था। परन्तु अब स्थायी रूप से कपड़े की दो-तीन दूकानें हो गई हैं। ग्वालटोली में भी इतवार का बाजार जोर से लगता है और कुछ स्थायी दूकानें भी हो गई हैं। चुन्नीगंज का बाजार नया है और बाबूपुरवा का भी नया ही है।

कपड़े की फेरी वाले भी काफ़ी बिक्री कर लेते हैं और इनकी संख्या लगभग १००० है।

आजकल कई मोहल्लों में छोटी-मोटी दूकानें खुल गई हैं और उनमें भी पर्याप्त बिक्री हो जाती है।

यह कहना अनुचित न होगा कि कानपुर की मंडी आस-पास के जिलों की मण्डियाँ टूट कर बनी थी। कपड़े के ख़ास-ख़ास व्यापारी जिनमें खत्री, ब्राह्मण और मारवाड़ी थे, फर्रुखाबाद से आकर कानपुर में बसे, रस्तोगी फतेहपुर से आये, अग्रवाल इटावा से आये और कुछ व्यापारी मिर्जापुर और लखनऊ से भी आकर यहाँ व्यापार करने लगे। इस मंडी को जोरदार बनाने में उपर्युक्त व्यापारियों के अतिरिक्त गुजराती, मारवाड़ी और बैसवाड़ी व्यापारियों का भी विशेष स्थान है।

यहाँ तीन प्रकार का कपड़ा बिकता था—देशी, विलायती और गावठी। देशी कपड़े में संगी, खारुवाँ, गलता, बाफ्ता और गर्दा आदि हाथ के बने कपड़े मुख्य थे, जो टाँडा, इटावा और फर्रुखाबाद आदि से आते थे। फर्रुखाबाद की छपी हुई फ़र्दें, लिहाफ़ और छींटें, यद्यपि विलायती कपड़ों पर छपी होती थीं, परन्तु उनका शुमार देशी माल में होता था। इस देशी कपड़े के व्यापार का केन्द्र-स्थान पचकूँचा था और यहीं प्रायः सारी दूकानें थीं, जहाँ संगी आदि के कारीगर अपना माल बेंच जाते थे और टांडा, फर्रुखाबाद की गाँठें भी इन्हीं दूकानों पर आती थीं। जिन अढ़तियों और व्यापारियों को देशी माल ख़रीदना होता था वे यहीं आकर पटते थे। इन देशी कपड़ों के कुछ दलाल भी अलग ही थे, जो किसी न किसी अढ़तिये से सम्बन्धित थे।

यद्यपि इस देशी माल पर दलाली अधिक मिलती थी किन्तु विलायती के मुकाबिले में इसकी बिक्री कम होती थी, फिर भी लाखों ही रुपये का माल प्रतिवर्ष बिकता ही था और आज भी बिकता है।

विलायती माल को कानपुर में मँगाने वाले कई दफ्तर थे और कुछ माल कलकत्ते के दफ्तरों से भी आता था। जनरलगंज और काहू की कोठी तथा उसके आस-पास के अधिकांश व्यापारी विलायती माल ही बेंचते थे।

जो २०–२५ दफ्तर विलायत से सीधा कानपुर माल मँगाते थे उनमें मुख्य ये हैं :—

१ एलन ब्रादर्स कम्पनी लिमिटेड;
२ बालका शिव जी एन्ड कम्पनी, दलिहाई;
३ बालमुकुन्द बाँकेबिहारीलाल, काहू कोठी;
४ द्वारिकादास शिवजी एन्ड कम्पनी, जनरलगंज (इस दफ्तर में बाबू लालबिहारी खन्ना काम करते थे)।
५ फकीरचन्द जैनी, काहू कोठी;
६ गोवर्द्धनदास रामगोपाल, जनरलगंज;
७ फतेहचन्द जैनी, एन्ड कम्पनी, जनरलगंज;
८ हीरालाल बाबूलाल, काहू कोठी;
९ खान खान, काहू कोठी;
१० कर्तार एन्ड कम्पनी, जनरलगंज;
११ एल० एन० गाड़ोदिया एन्ड कम्पनी जनरलगंज;

१२ राजनाथ कम्पनी, जनरलगंज;

१३ रामस्वरूप कानोडिया एन्ड कम्पनी, नाचघर;

१४ आर० जे० उड कम्पनी, नाचघर;

१५ रामजी लाल एन्ड ब्रदर्स, नाचघर;

१६ सुशीलचन्द्रदास एन्ड कम्पनी, जनरलगंज;

१७ हैंगरली सुलजर, जनरलगंज; यह फर्म स्विटजरलैंड का था। इसमें दिल्ली के लाला हरकिशनदास काम करते थे और उनके सहायक थे पं० ब्रह्मानन्द तिवारी। बाद में इस दफ्तर का नाम बदल कर सुलजर ब्रूड एन्ड कम्पनी हो गया और यह पहले मनीराम की बगिया में और फिर श्री रामेश्वर वैद्य की दूकान के पास नाचघर में आ गया और पं० ब्रह्मानन्द तिवारी इसके मुख्य कर्ता-धर्ता हो गये।

१८ बासदेव शिवकरनदास सरीखे कुछ ऐसे दूकानदार थे जिनके अपने निजी दफ्तर भी थे।

ये लोग केवल विलायती माल बेंचते थे :—भगवानदास गोयनका, भोलानाथ मुन्नालाल, गंगाधर बैजनाथ, गोपीनाथ छंगामल नौरंगराय कालूराम, चतुर्भुज पीरामल, चन्द्रिकाप्रसाद रामस्वरूप, हरनामदास देवकीनन्दन, ज्वालाप्रसाद राधाकृष्ण, जगन्नाथ वलभद्रप्रसाद, मथुराप्रसाद मातादीन, जैनी ब्रदर्स, रामनारायण रामलाल मनीराम की, बगिया; रामनाथ बैजनाथ, (जुग्गीलाल कमलापत के पूर्वज, यहाँ श्री नारायणप्रसाद अरोड़ा ने भी १९०२

हाफ़िज़ मोहम्मद हलीम　　मोहम्मद बशीर बार-एट-ला

में दफ़्तर का काम सीखा था और कुछ दिन नौकरी भी की थी।)

गाँवठी माल में वे मोटे धोती जोड़े आदि थे जो प्रायः देहात में प्रचलित थे। इनको बेंचने वाले केवल तीन-चार दूकानदार थे जिनमें रामप्रसाद सेठ, राधाकृष्ण बागला, केदारनाथ बाबूलाल और बिहारीलाल रामचरन थे। ये लोग अहमदाबाद से माल मँगाते थे और उनके एजेन्ट के रूप में माल बेंचते थे। अहमदाबाद के मिलों का एक-एक प्रतिनिधि इन दूकानों पर रहता था। उस समय अहमदाबाद का १० गज का मोटा जोड़ा ॥≡) में बिकता था और ४ गज का जोड़ा ≡) में। रामप्रसाद सेठ की दूकान पर लाला कालूराम जी एजेन्ट के रूप में काम करते थे। बाद में उन्होंने अपनी निजी दूकान नौरंगराय कालूराम के नाम से खोल ली और उस पर विलायती माल बेंचने लगे। उनकी दूसरी दूकान जिस पर गाँवठी माल बिकता था मंगलसेन मन्नीलाल के नाम से थी।

कपड़े का व्यापार करने वालों की उस समय और आज भी ६ श्रेणियाँ थीं। १ बिकवाल श्रेणी, २ अढ़तिया श्रेणी, ३ बजाज श्रेणी, ४ दलाल श्रेणी, ५ बजरिया श्रेणी और दर्जी श्रेणी।

आज इन समस्त श्रेणियों के लगभग ३००० व्यापारी हैं। ६० वर्ष पहले २५-३० दूकानें थीं किन्तु श्रेणियाँ सब थीं।

कानपुर में कपड़े के पुराने व्यापारियों में ला० गुटीराम का

नाम प्रसिद्ध है। इनकी दूकान का नाम श्रीनाथ शंकरलाल पड़ता था। चूँकि उस समय इतने बैंक न थे अतः इस फर्म में कपड़े के साथ-साथ हुन्डी-पुर्जे का काम भी होता था। अन्य पुराने व्यापारियों के नाम ये हैं :—

सरजूमल शिवप्रसाद, वेगराज हरद्वारीमल, जालीराम शिवदत्तराय, शिवरतनदास मोतीलाल (यह शराफ थे), रामनारायण रामलाल, (इनका विलायती दफ्तर भी था। फर्म के मालिक ला० चोखराज थे), भोजराज बाबूलाल, केदारनाथ बाबूलाल, गंगाधर केदारनाथ, सरदारमल हरदत्तराय, गौरीदत्त शिवनारायण, राधाकृष्ण बागला, सागरमल महेश्वरीदास, रामचन्द्र जानकीप्रसाद (इस फर्म के दूकानदार श्री डालूराम जी थे), रामकरन रामविलास, निहालचन्द बलदेव सहाय, (यह म्योर मिल के एजेन्ट थे), ताराचन्द घनश्यामदास, (यहाँ के दूकानदार श्री हिरना मल जी थे, जो ला० शिवदानमल के पिता थे), शिवप्रसाद शिवदत्त राय, (बाद में इस फर्म का नाम शिवदत्त राय बनारसीदास हो गया), जोखीराम रामचन्द्र, वासदेव शिवकरनदास, मनसाराम जयनारायण, पन्नालाल जवाहरमल, (यह छींट के प्रमुख व्यापारी थे और काहू कोठी में दूकान थी। इस फर्म के दूकानदार ला० भगवानदास थे), जयनारायण सनेहीराम, मुरारजी बेलजी, विलासराय हरदत्तराय, हरसहाय मल जानकीदास, देवीदास रणछोड़दास, नैनसुखदास नागरमल, नैनसुखदास घनश्यामदास, मक्खनलाल बजरंगलाल, (यहाँ के

दूकानदार ला० काशीराम थे और हेड मुनीम श्री कन्हैयालाल गौड़ थे। यहाँ श्री नारायणप्रसाद अरोड़ा ने मारवाड़ी अक्षर सीखे थे)। कपड़े बाजार में नागपुर के एम्प्रेस मील की दूकान भी प्रसिद्ध है। इसके नाम पड़ता है रामनारायण किशुन दयाल। इसके संचालक थे स्वर्गीय रामकुमार जी और उनके बाद इसके संचालक हुए उनके छोटे भाई ला० विश्वेश्वरनाथ जी, जो कानपुर कपड़ा बाजार में ख़ूब तपे। क्योंकि नागपुर के माल को बगैर लिये किसी व्यापारी का काम चलता ही न था।

अढ़तिये

कानपुर के पुराने अढ़तियों में ला० देवीदास खत्री का नाम ख़ास है। इनकी दूकान लाठी मोहाल में थी और श्री नारायण प्रसाद अरोड़ा के ताऊ श्री भन्नूलाल उनके दलाल थे। यह किसी दूकानदार का रुपया बाकी नहीं रखते थे, बल्कि उल्टा अपना रुपया उनके यहाँ पेशगी जमा रखते थे। अतः बाजार में इनकी और इनके दलाल की धाक थी। ला० देवीदास वर्तमान कपड़े के व्यापारी श्री ब्रजनारायण टन्डन के बाबा थे और फीलख़ाने के रहने वाले तथा बड़े सादे स्वभाव के सज्जन थे। इनके यहाँ किराने की भी आढ़त होती थी और उसके दलाल स्वर्गीय लल्लूमल खत्री थे।

'छम्मूलाल छंगामल' की आढ़त की दूकान मनीराम की बगिया में आज भी वहीं है जहाँ वह पहले थी। इनके दलाल महाराज बल्देवप्रसाद थे, जिनका दलाली में बड़ा नाम था और

वे कई दूकानों के दलाल थे। ला० छम्मूलाल श्री पुरुषोत्तमलाल कपूर के बाबा थे।

'ज्वालाप्रसाद रामाधीन' फर्रुखाबाद के कान्यकुब्ज ब्राह्मण थे। इनकी आढ़त की दूकान जगन्नाथ की गली में थी। अन्त में इनका काम बिगड़ गया था। इनके दलाल श्री नारायणप्रसाद अरोड़ा के पिता श्री कन्हूलाल थे। वे ला० कालूराम के बड़े घनिष्ठ मित्र थे। इन्हीं की दूकान पर श्री नारायणप्रसाद अरोड़ा ने १८९२ से १८९५ तक अपने पिता जी के साथ दलाली की थी।

'शीतलप्रसाद श्यामलाल' की आढ़त की दूकान माह सुदी १३ सम्बत् १९५६ में फीलखाने में खुली थी और आज भी ला० गोपालदास की देख-रेख में धड़ल्ले से अपने निजी मकान, चटाई मोहाल में चल रही है। ला० शीतलप्रसाद अपनी दूकान खुलने के बीस वर्ष पहले फर्रुखाबाद से आये थे और दलाली करते थे। इनकी दलाली में इनके भाई ला० मुर्लीधर और विश्वेश्वरनाथ आधे के साझीदार थे। शीतलप्रसाद के सामने ही उनके पुत्र श्री श्यामलाल ने सारा काम दलाली और आढ़त का सम्हाल लिया था। स्वर्गीय श्यामलाल के पश्चात् ला० गोपालदास, राधाकृष्ण और शिवनारायण ने ऐसे अच्छे ढंग से कारबार किया कि दिनदूनी और रात चौगुनी तरक्क़ी होती गई। आजकल इनकी दूकानें इस प्रकार हैं :—

१—ज्वालाप्रसाद राधाकृष्ण, काहू कोठी की दूकान श्री गोकुलदास के साझे में भादों सुदी १४ सं० १९७४ में स्थापित

हुई थी और आज भी अच्छा कारबार करती है। किन्तु श्री गोकुलदास जी अलग हो गये हैं और अब मुरारीजी गोकुलदास के नाम से गोशाला सोसाइटी के नीचे एक दूकान पर अपना स्वतन्त्र कारबार करते हैं।

९—ला० गोपालदास ने श्री हीरालाल खन्ना के साथ पीस गुड्स का एक दफ़्तर भी खोला था जिसमें पहले विलायती कपड़े का काम होता था और अब देशी कपड़े का होता है। इसका सारा कार्य भार गोपालदास जी के अनुज श्री शिवनारायण टन्डन के सिपुर्द था। किन्तु उनके सार्वजनिक काम में व्यस्त रहने के कारण दफ़्तर की सारी जिम्मेदारी गोपालदास जी के पुत्र श्री बनारसीदास टन्डन के ऊपर आ गई थी। किन्तु श्रीशिवनारायण जी ने एम० पी० से स्तीफा देकर फिर दफ़्तर का कार्य भार सम्हाल लिया है इस फर्म की अन्य दूकानें लखनऊ, बरेली और फ़र्रुखाबाद में हैं। लखनऊ में शिवनारायण शिवप्रसाद नाम पड़ता है, बरेली में पशुपतिनाथ कैलाशनाथ और फ़र्रुखाबाद में छंगामल बालकृष्ण। लखनऊ की दूकान में पहले बाबू बिहारीलाल नेता काम करते थे। किन्तु अब उन्होंने अपनी स्वतन्त्र दूकान कर ली है।

उस समय के अन्य प्रसिद्ध अढ़तिये थे, श्री मनीराम गंगादीन, श्री ललितराम मंगीलाल, मनोहरदास खत्री, श्री मनोहरदास रामप्रसाद (श्री गणेशनारायण के पिता), हुलासी लाल रामदयाल, जसराम भगतराम, भजनलाल लक्ष्मीनारायण,

(जहाँ ला० कन्हूलाल के पौत्र स्वर्गीय द्रोण अरोड़ा ने एक साल दलाली की थी।

दलाल

कानपुर के कपड़े के दलालों में श्री बलदेव महाराज का नाम प्रसिद्ध है। यह कई दूकानों के दलाल थे जैसे ... मुन्नालाल छंगामल, हेमराज बालचन्द, घासीराम नारायणदास, (जिनका बाद में नारायणदास गोपालदास नाम हो गया), शंकर सहाय नानकराम। लोगों का कहना है कि कानपुर के कपड़े बाजार की आधी दलाली बलदेव महराज के हाथ में थी और आधे में अन्य सारे दलाल थे। उनके लड़के गोकुलप्रसाद और अन्य भाई बन्धु उनके सहायक थे जिनमें श्री बनवारीलाल जी अभी जीवित हैं। उनके पास खन्ने के दफ्तर की दलाली भी थी। आढ़त की दलाली ≡)॥ सैकड़ा थी और दफ्तर की ॥) सैकड़ा। खन्ने का दफ्तर काहू की कोठी के फाटक के ऊपर एक कमरे में था यह दफ्तर "राबर्ट बारबरा" का एजेन्ट था। दूसरे प्रसिद्ध दलाल श्री शीतलप्रसाद थे जो लगभग सम्वत् १९३६ में फ़र्रुखाबाद से आये थे। उनके सहायक उनके पुत्र लाला श्यामलाल थे। दलाली में शीतलप्रसाद के साझी उनके भाई मुर्लीधर, विश्वेश्वरनाथ भी थे।

इन पंक्तियों के लेखक के पिता ला० कन्हूलाल श्री ज्वालाप्रसाद रामाधीन, के दलाल थे और ताऊ ला० भन्नूलाल ला० देवीदास खत्री के। दोनों ही की बाजार में काफ़ी धाक थी, क्योंकि दोनों ही

के अढ़तिये बहुत मजबूत थे। अन्य प्रसिद्ध दलालों में थे, ला० खुन्नूलाल, (यह गंगाधर बाबूलाल के दलाल थे), ला० माधोराम गिरधारीलाल बनवारीलाल, ला० नन्हेमल; श्री पुत्तनलाल, ला० छुटकनलाल (श्री सिद्ध बाबू के पिता इन्होंने बाद में अपना आढ़त का काम कर लिया था, जो आज भी चालू है) श्रीकामता प्रसाद (यह मनीराम गंगादीन के दलाल थे)। इन नामों के अतिरिक्त कई प्रसिद्ध दलाल थे, जिनके बारे में कुछ ज्ञात नहीं हो सका। इसी तरह कई प्रसिद्ध अढ़तिये भी थे। देशी माल के दलालों में ला० नारायणदास भी एक खास दलाल थे, जो श्री शिवनाथ दलाल के नाना थे।

कानपुर कपड़ा कमेटी

२७ अगस्त १९२५ को वर्तमान कपड़ा कमेटी रजिस्टर्ड हुई। प्रारम्भ में श्री गुर्टीराम जी ने मारवाड़ी कपड़ा कमेटी के नाम से इसे चलाया था परन्तु बाद में मारवाड़ी शब्द हटाकर कानपुर शब्द लगा दिया गया। नीचे लिखे ३२ फर्मों ने इसकी रजिस्ट्री कराई थी।

१ रामकुमार रामेश्वरदास के श्री रामकुमार
२ गोपीनाथ छंगामल के श्री गोपीनाथ
३ बस्तीराम मातादीन के श्री गुरुप्रसाद कपूर
४ बंशीधर गोपालदास के श्री रघुनन्दनलाल
५ गोवर्द्धनदास रामगोपाल के श्री नत्थनलाल
६ पुरुषोत्तमदास जगन्नाथ प्रसाद के श्री जगन्नाथप्रसाद

७ द्वारिकादास प्रभूदास के श्री त्रिभुवनदास
८ शीतलप्रसाद श्यामलाल के श्री गोपालदास
९ मथुराप्रसाद मातादीन के श्री हरप्रसाद कपूर
१० शिवचरनलाल सीताराम के श्री लच्छूमल
११ देवीदास रणछोड़दास के श्री नागजी भाई
१२ हरीसिंह सन्तोषचन्द के श्री रद्धनलाल
१३ ज्वालाप्रसाद राधाकृष्ण के श्री गोकुलदास
१४ फूलचन्द फतेहचन्द के श्री महादेव प्रसाद
१५ मदनचन्द रामचन्द के श्री मदनचन्द खन्ना
१६ शेरसिंह रणवीरसिंह के श्री रामेश्वरदास
१७ हरकिशनदास जगेश्वरप्रसाद के श्री हरिकिशनदास
१८ जगन्नाथ रामचरन के श्री प्रेम सुखदास
१९ छुम्मूलाल छंगामल के श्री छंगामल
२० जुगलकिशोर बलदेवदास के श्री वृन्दावन
२१ पन्नालाल देवकीनन्दन के श्री शिवदानमल
२२ ललितराम मंगीलाल के श्री बुद्धलाल
२३ विलासराय बैजनाथ के श्री बैजनाथ
२४ कल्लूमल जगन्नाथ के श्री जगन्नाथ
२५ मत्तूलाल बलदेवदास के श्री पुत्तनलाल
२६ रामलाल बुलाकीदास के श्री सालिगराम
२७ गंगाराम महादेव के श्री मिश्रीलाल
२८ भग्गा महराज के श्री भग्गा महराज

२९ रामेश्वरदास गंगाप्रसाद के श्री रामेश्वरदास

३० रामचरनदास कन्हैयालाल के श्री रामचरनदास

३१ रामस्वरूप दलाल के श्री रामस्वरूप

३२ रामप्रसाद दामोदरदास के हरनारायणदास, लखनऊ।

कपड़ा कमेटी का उद्देश्य व्यापारियों की भलाई के कार्य करना और उनके आपस के झगड़े निपटाना रहा है। नियमानुसार इसके १५०० तक मेम्बर हो सकते हैं, जिनकी ३३ आदमियों की एक प्रबन्धकारिणी कमेटी होती है। इस कमेटी के सदस्य १५ बिकवाल श्रेणी के, १५ खरीदार श्रेणी के और ३ दलाल श्रेणी के होते हैं। कमेटी की ओर से बिकवाल से एक पैसा गाँठ और अढ़तियों से दो पैसा गाँठ गोशाला की लाग बँधी हुई है। कमेटी का वर्ष अषाढ़ सुदी २ से शुरू होता है, जब कि अधिकांश कपड़े वालों के नये बसने होते हैं।

कन्ट्रोल के जमाने में कपड़ा कमेटी की सारी कर्तृत्व शक्ति केवल सरकार से सम्बन्धित क्षेत्र में लगी रही। कमेटी ने अपनी आय से १२५०००) में एक मकान भी खरीद लिया है। कपड़ा कमेटी की एक सिन्डीकेट भी है और हर चुनाव पर इसके दो डाइरेक्टर नियुक्त होते हैं।

कानपुर की औद्योगिक और व्यवसायिक उन्नति का बीज ईस्ट इण्डिया कम्पनी के समय में पड़ा था, जब उसने यहाँ रुई ओटने का एक कारखाना लगाया था। सन् १८४७ में कानपुर में हरप्रकार का माल केवल ६० लाख रुपये का आया और ३४ लाख

का यहाँ से बाहर गया। किन्तु अब केवल कपड़ा ही कई करोड़ रुपये का बाहर जाता है। इसकी उन्नति करने वाले वे व्यापारी और कारीगर हैं जो फ़र्रुखाबाद और लखनऊ आदि से आकर यहाँ बस गये हैं। इसकी उन्नति के भागीदार वे लाखों ही लोग भी हैं जो आस-पास के गाँवों से आकर बसे हैं।

१८५९ में जब ईस्ट इण्डियन रेलवे की लाइन कानपुर आई, तब से इसके व्यापार को और भी प्रोत्साहन मिला।

१८६० में कानपुर के स्टेशन मास्टर मिस्टर "बूइस्ट" के उद्योग से यहाँ एक काटन कमेटी स्थापित हुई जिसका उद्देश्य पल्टनों को कपड़ा देना था। इसीसे यहाँ के कपड़ा व्यापार की जड़ पड़ी और १८६४ में कानपुर का पुराना पुतलीघर—एलगिन मिल—स्थापित हुआ। म्योर मिल १८७४ में बना और लाल इमली ऊलन मिल १८७६ में चालू हुआ।

आज १९५४ में कानपुर कपड़े की ऐसी मंडी है जहाँ करोड़ों रुपये का माल बाहर से आता है और करोड़ों का ही बाहर जाता भी है। बाहर से कानपुर आने वाला माल पहले विलायती और जापानी अधिक था, और अब अहमदाबाद, बम्बई, इन्दौर आदि का अधिक है।

अब कानपुर में आया हुआ तथा यहाँ के मीलों का बना हुआ माल सारे सूबे में तो जाता ही है बल्कि अन्य सूबों में भी जाता है, जैसे बिहार, राजपूताना, पंजाब, कलकत्ता आदि और नैपाल तक भी पहुँच जाता है। स्थानीय मिलों का माल आसा

मिलने पर बर्मा पूर्वी अफ्रीका, और पूर्वी एशिया के कुछ देशों में भी जाता है।

कानपुर के वर्तमान कपड़ा बाज़ार में यहाँ के स्थानीय मिलों का बोल-बाला है। प्रत्येक मिल के कई-कई 'डीलर' हैं और प्रायः सभी के डीलरों की एक-एक 'सिन्डीकेट' है। इन स्थानीय मिलों के डीलरों अर्थात् थोक माल बेंचने वालों के अतिरिक्त बम्बई, अहमदाबाद से माल मँगाने वाले भी काफ़ी व्यापारी हैं। थोक और फुटकर मिलाकर लगभग १००० दूकानदार होंगे। क्योंकि जगह-जगह कपड़े की दूकानें खुल गई हैं, शरणार्थी बाज़ार क़ायम हो गये हैं। सब के नाम देना तो असम्भव है अतः कपड़ा कमेटी के वर्तमान सदस्यों के नाम ही दिये जाते हैं। इसमें प्रायः सभी श्रेणियाँ आ गई हैं। कपड़ा कमेटी के पदाधिकारियों तथा सदस्यों में बाज़ार के सभी मुख्य-मुख्य व्यापारियों के नाम तो आही गये हैं। कपड़ा बाज़ार को कन्ट्रोल करने वाले निम्न-लिखित सज्जन रहे हैं :—सर्वश्री रायसाहब गोपीनाथ, रामकुमार नेवटिया, गोपालदास टण्डन, बुद्धूलाल मेहरोत्रा, लल्लूमल दलाल, जीवनलाल, छंगामल, सिद्ध बाबू, अल्लू बाबू, गिल्लूमल बजाज रामजी मेहरोत्रा आदि और कृष्णचन्द्र सेठ। मिलवालों में सर्वश्री पदमपत जी सिंघानियाँ, रामेश्वर प्रसाद जी बागला, मंगतूराम जी जयपुरिया, देव शर्मा, कैलाशनाथ अग्रवाल आदि महानुभाव अपने डीलरों के द्वारा बाज़ार पर काफ़ी प्रभाव रखते हैं।

कपड़ा कमेटी के १९५२-५३ के सदस्य ये दूकानदार हैं :—

बिकवाल श्रेणी

कन्हैयालाल ब्रजकिशोर, कृष्णगोपाल ओमनाथ, कृष्णकुमार एण्ड ब्रादर्स, कानोडिया ब्रादर्स, कुमार एण्ड कम्पनी, कालूराम मन्नीलाल, कृष्णकुमार अशोककुमार, कमलकिशोर कृष्णकुमार, कालिकाप्रसाद भगवतीप्रसाद, काका टेक्सटाइल, गोपीनाथ छज्जामल, गयाप्रसाद गुरुप्रसाद, गयाप्रसाद शम्भूनाथ, गिरधारी लाल हीरालाल, गोपाल जी गनपतराय, गोबर्धनदास अमरनाथ, गोपालदास श्यामलाल, गौरीशंकर पन्नालाल, गुलाबराय महादेव प्रसाद, गिल्लूमल जयनारायन, गोपीराम त्रिलोकीनाथ, गोपाल-कम्पनी; चेतराम बन्सीधर, चन्दूलाल सूरजमल, चिम्मनलाल थावरदास, ज्वालाप्रसाद राधाकृष्ण, जनकराज एण्ड कम्पनी, जमुनाधर जी महाबीरप्रसाद पोद्दार, जयन्तकुमार एण्ड ब्रादर्स, जवाहरमल दानमल, दामोदरदास नरोत्तमदास, दुर्गाप्रसाद बद्रीप्रसाद, देवीप्रसाद ललितकुमार, दि टेक्सटायल ट्रेडर्स, दुर्गाप्रसाद एण्ड कम्पनी, द्रोण जी रामजी, नानकचन्द्र मानिक-चन्द्र, नौरंगराय मंगलचन्द्र, पुरुषोत्तमदास प्रेमचन्द, पन्नालाल बन्शीधर, पांडेय ब्रादर्स, प्यारेलाल आनन्दस्वरूप, बाबूलाल बनारसीदास, बिहारीलाल रामचरन, बलभद्रचन्द्र मुन्नालाल, बैजनाथ ओमर, बाबूलाल बद्रीप्रसाद, बिरधीचन्द्र बद्रीविशाल, ब्रजलाल मन्नीलाल, बल्देवप्रसाद हीरामन, बिट्ठलदास झवेरचन्द्र,

बाबूलाल जीवनराम, विश्वम्भरनाथ पृथ्वीनाथ, विश्वनाथ बद्री प्रसाद, बी० एम० बल्लूमल, विश्वम्भरनाथ स्वरूपनारायण, बाबूलाल ज्ञानसागर, बद्रीप्रसाद विश्वनाथ, बैजनाथ चावलवाले, भोलानाथ मन्नूलाल, भाटिया एन्ड सन्स, भंवरलाल सेठिया, भगवतीप्रसाद घनश्यामदास, महेशप्रसाद सीताराम, मोरार जी गोकुलदास, महाबीरप्रसाद मुन्नालाल, मत्तूलाल बल्देवप्रसाद, मातादीन हरीनाथ, मारुतीप्रसाद मोतीलाल, मानिकचन्द्र बन्शगोपाल, मुन्नालाल गुप्ता, मन्नूलाल सिद्धगोपाल, मोहन ब्रदर्स, मातादीन हरप्रसाद, मुरलीधर बद्रीप्रसाद, मन्नीलाल बेनीमाधव मन्नीलाल सत्यनारायण, मोहता अग्रवाल कम्पनी, रामगोपाल रामेश्वरदास, राजाराम रमेशचन्द्र, शाह रेवालाल रघुनाथ जी, रमणीकलाल प्रेमचन्द्र, राजनारायण दिनेशकुमार, रुइया ब्रादर्स एण्ड कम्पनी, रामगोपाल रामप्रसाद, रामरतनलाल शिवरतन लाल, रासबिहारीलाल कृष्णमुरारीलाल, राघवराम लखमाचन्द्र, रामकुमार नन्दकिशोर; रामकुमार छेदीलाल, ललितराम मंगीलाल, लल्लूमल गयाप्रसाद, लक्ष्मीचन्द जैन, लक्ष्मीनारायण हृदयनारायण, विजय एन्ड कम्पनी, शिवनारायण नारायणदास, शङ्करलाल रामलाल, शिवबक्सराय बन्शीधर, शाह ब्रादर्स, शम्भूदयाल गंगाविष्णु, शिवनाथ प्रसाद हरीकिशन, सागरमल राधाकृष्ण, सिट्टूलाल छोटलाल, सिद्धगोपाल अमरनाथ, सुमनलाल कालीदास, सीताराम शुभकरन, हरिकिशनदास जागेश्वर प्रसाद, हरिश्चन्द्र बागला, हरिहर केशवलाल, हरनामल देवकी

नन्दन, हरिश्चन्द्र महेशचन्द्र, हरिकिशनदास फूलचन्द, हरनारायन प्रेमनारायण, हरीनाथ खत्री, हीरालाल रामप्रकाश, अर्जुनदास कुशालचन्द्र, आनन्दराम पूरनमल, अयोध्याप्रसाद सन्तोषचन्द्र, अनन्दीप्रसाद सिट्टूलाल, अमरनाथ विश्वनाथ, अश्विनीकुमार लीलाधर, अवतार सिंह अमरीक सिंह।

आढ़त श्रेणी

कल्लूमल रामचरन, काशीप्रसाद लालमन, कन्हैयालाल शीतलाप्रसाद, कनीराम घनश्यामदास, कन्हैयालाल रामकिशोर, कैलाशनाथ दलाल, कालूराम सत्यनारायन, गिरधारीलाल शंकरलाल, गुलाबराय महादेव प्रसाद, गयाप्रसाद विशम्भरनाथ, गनपतराय मदनलाल, गोपीराम त्रिलोकीनाथ, गोपीचरण वाजपेयी, गोपीकिशन गिरधरलाल, गुरुबक्सराय गोपालदास, चन्द्रकिशोर प्रेमकुमार, चुन्नीलाल नन्दलाल, चन्दूलाल ओमप्रकाश, छंगामल भालोटिया, छाजूराम रामकुमार, जगन्नाथ भोलानाथ, जगन्नाथ विशंभरनाथ, जयशंकरप्रसाद विजयकुमार, जुगुलकिशोर बल्देवसहाय, जयचन्द्रलाल कृष्णकुमार, जगन्नाथ रामेश्वरप्रसाद, देवीसहाय बल्देवसहाय, देवीदीन पूसूलाल, दयालदास चाननशाह, दुर्गाप्रसाद बैजनाथ, दामोदरदास गोविन्दराम सूरी, दानमल बनारसीदास, दासूराम नौरंगराय, नारायनसिंह रामरतन, नरायनदास गोपालदास, नवलकिशोर छेदीलाल, पन्नालाल बाबूलाल, पुरुषोत्तमदास राधेश्याम, पुरुषोत्तमदास जगन्नाथप्रसाद, पग्गीलाल कन्हैयालाल, पन्नालाल देवकीनंदन, पुरुषोत्तमलाल कपूर,

पुत्तनलाल दलाल, पांडेय ब्रदर्स, टेक्सटायल ट्रेडर्स, फूलचन्द गजानन्द, फूलचन्द रामेश्वरदास, बिहारीलाल रामचरन, 'बद्री-प्रसाद लक्ष्मीचन्द्र, बिहारीलाल रामसहाय, विश्वनाथ प्रसाद डिडवानियाँ, विश्वम्भरनाथ खत्री, वंशीधर हनुमान दास, विश्वम्भरनाथ सुरेन्द्रनाथ, बालमुकुन्द श्यामबिहारी; बद्रीदास सीताराम, बिहारीलाल श्रीकृष्ण, ब्रजलाल माता-दीन, भोलानाथ रामप्रसाद, भगवानदास काशीप्रसाद, भवानीप्रसाद हेमचन्द्र, मामराज मनीराम, मनोहरदास रामप्रसाद, मिट्टूलाल बनारसीदास, महेशप्रसाद सीताराम; मन्नूलाल किशनगोपाल, महादेवप्रसाद गोपीकिशन, मुन्नालाल नन्दकिशोर, मुरारीलाल रामअवतार, मानिकलाल हरीलाल पारिख, मदनमोहनलाल बालकृष्ण, मुन्नालाल गुप्ता, मोतीलाल चिरंजीलाल, रामप्रसाद रामलाल, राजाराम खत्री, रामराय जोखीराम, रामचन्द्र मोतीलाल, रायबहादुर सेठ जेसाराम फतेह-चन्द, रूपराम कैलाशनाथ, रेखचन्द्र गनपतराय, रामचन्द्र राज-नारायन, रामकिशन ओंकारनाथ, राजाराम रामकुमार, राम-प्रसाद शिवप्रसाद, राधेश्याम रामकुमार, रघुबरदयाल कैलाशनाथ, रामगोपाल रामेश्वरदास, रामकिशन बैजनाथ, लक्ष्मीमल खत्री, लक्ष्मणप्रसाद प्रेमनाथ, वाजिदअली आबिदअली, विनायकप्रसाद शिवप्रसाद, शीतलप्रसाद श्यामलाल, शम्भूनाथ दलाल, श्याम-लाल दलाल, सरदार तीरथसिंह वीरेन्द्रसिंह, श्रीनिवास मोहन-लाल, सागरमल बनारसीदास, सरजूप्रसाद जमुनाप्रसाद, सरजू

प्रसाद पन्नालाल, सालिगराम कन्हैयालाल, सूर्यकुमार मिश्र दलाल, सरदार पंजाबसिंह भगवानसिंह, सत्यनारायन कन्हैयालाल श्रीराम मोतीलाल, शम्भूनाथ मेहरोत्रा, शैलबिहारी शिवमोहन-लाल, श्रीनारायन जगतनारायन, शिवबिहारी अवस्थी, शिव-नारायन तीरथराम, स्वराज्यसिंह स्वतन्त्रसिंह, हुलासीलाल राम-दयाल, हरदेवदास मन्नोलाल, हजारीलाल लालमन, हनुमानदास केशरीप्रसाद, हरीशंकर गुप्ता, हरीकिशन श्रीकिशन, हरिश्चन्द्र दलाल अग्रवाल, हरमुखराय जीतमल, हरीसिंह संतोषचन्द्र, हीरालाल पुरुषोत्तमदास, ओरीलाल अढ़तिया, ओमर ब्रदर्स, आनन्देश्वर प्रसाद जगतनारायण, इन्द्रचन्द्र विजयकुमार।

बजाज श्रेणी

कृष्णचन्द्र पन्नालाल, कालिकाप्रसाद रामचरन, कैलाशनाथ टण्डन, कपूर ड्रेपर्स, केशरीमल जैन, गौरीशङ्कर शिवशङ्कर गंगासागर दलाल, गोरखनाथ एण्ड सन्स, गुलजारीलाल सालिक, राम, गिरजाशंकर तिवारी, चहिन्दाराम भगत बजाज, जगन्नाथ रामलाल, जगन्नाथप्रसाद आनन्दस्वरूप, जवाहरलाल अग्रवाल, ठाकुरप्रसाद छोटेलाल, डालचन्द्र ज्वालाप्रसाद, धनीराम सूरज-कुमार, नरायनदास पन्नालाल, नन्दकिशोर दुर्गाप्रसाद, पाटन-वाला स्टोर, फूलचन्द्र दलाल, बन्शीधर हीरालाल, बैजनाथ शम्भूनाथ, बल्देवप्रसाद मोहनलाल, विजय क्लाथ हाउस, भोलानाथ महेशप्रसाद, भगत नौबतराय सुरेन्द्रमोहन, मनोहरलाल

श्री बुद्धूलाल मेहरोत्रा

लाला अनन्तराम

मन्नूलाल, मन्नूलाल रामगोपाल, मन्नीलाल श्यामसुन्दर गुप्त, रामकिशन रामशरन, राधाकिशन परशुराम, रामनारायण बैजनाथ, रामजी कम्पनी, लक्ष्मीनारायन रामेश्वर, वैष्णवदास जगतराम खन्ना, शम्भूनाथ राधाकृष्ण, शादीलाल शङ्करलाल, श्रीराम विश्वनाथ, सालिगराम राधाकृष्ण, अर्जुनदास, शंकरलाल, ऐसान इलाही।

दलाल श्रेणी

कालूराम दलाल ठि० पुरानी दलिहाई, कन्हैयालाल पुरुषोत्तमदास, केदारनाथ मेहरोत्रा, केशवनाथ कपूर, गौरीनाथ मेहरोत्रा, गंगासागर गंगारतन, गौरीशंकर श्यामलाल, गंगाप्रसाद उर्फ गंगाबाबू, गंगाराम दलाल ठि० गिरधारीलाल हीरालाल, गयाप्रसाद दलाल, गगानारायण पूरनचन्द्र, चन्द्रशेखर श्यामलाल, छोटेलाल मिश्र, छोटेलाल दलाल, जगन्नाथ दलाल, जगन्नाथ प्रसाद शुक्ल, तपेश्वरीप्रसाद शुक्ल, दुर्गाचरन मिश्रीलाल, दिब्बन महाराज दलाल पुरुषोत्तमदास जगन्नाथप्रसाद, पन्नालाल पांडे, ठि० देवी० बलदेवसहाय, प्रह्लाददास दलाल, फूलचन्द वैश्य गजनेरवाला, बजरंगलाल खेतान, विश्वनाथ टण्डन दलाल, विश्वेश्वरनाथ दलाल ठि० विश्वम्भरनाथ विश्वेश्वरनाथ दलाल, बद्रीनाथ टण्डन, विश्वम्भरनाथ मेहरोत्रा, विश्वनाथ टण्डन, विजयशंकर पांडेय, ब्रजनाथ मेहरोत्रा, भगवतीप्रसाद दलाल ठि० राधेश्याम रामकुमार, मोहनलाल गोंदका, मुन्नूलाल महाराज,

मन्नीलाल नेवटिया, मदनगोपाल कानोडिया, मूलचन्द्र दलाल, रामनाथ टण्डन, रूपराम दलाल, राजाराम खत्री, रामराय जोखीराम, रामप्रसाद दलाल, रामनाथ दूबे, राधेमोहन कपूर, लक्ष्मीकांत पांडे दलाल, लालताचरन गुप्त दलाल, लक्ष्मीनरायन वैश्य दलाल, लल्लूमल दलाल, लक्ष्मीनारायण महेश्वरी, शिवनाथ दलाल, शम्भूनाथ दलाल, शम्भूनाथ वाजपेई, शिवकुमार द्विवेदी, सरजू महराज, पन्नालाल, हरीनारायण दलाल, हरीकिशन टण्डन।

दर्जी श्रेणी

जमुनाप्रसाद शुक्ल टोपी वाले।

बजरिया श्रेणी

केदारनाथ सीताराम अमीनाबाद, लखनऊ।

छन्नूलाल द्वारिकाप्रसाद, लहरपुर, सीतापुर।

जगमोहनदास मदनलाल अमीनाबाद, लखनऊ।

मोहनलाल कन्हैयालाल, अमीनाबाद, लखनऊ।

लक्ष्मणप्रसाद रघुबीरप्रसाद, अमीनाबाद, लखनऊ।

बी० आई० सी०

सन् १९२० में ऊलेन मिल के मैनेजिंग डाइरेक्टर सर अलेक- ज़ेन्डर मैकराबर्ट ने ब्रिटिश इण्डिया कार्पोरेशन नामक संस्था की स्थापना की। उक्त कार्पोरेशन में कानपुर की ६ बड़ी-बड़ी कम्प- नियाँ सम्मिलित की गईं और उनके प्रबन्ध के लिए एक डाइरे- क्टर बोर्ड नियुक्त हुआ। उक्त ६ कम्पनियों के नाम ये हैं :—

कानपुर ऊलन मिल, कूपर एलेन एन्ड कम्पनी, नार्थ वेस्ट टैनरी, एम्पायर इन्जीनियरिंग कम्पनी, कानपुर काटन मिल्स तथा न्यू ईगरटन ऊलेन मिल्स, धारीवाल। डाइरेक्टर बोर्ड में सर लोगी वाटसन, मेसर्स सी० टी० एलेन, ए० डब्ल्यू० लिवी, बी० आर० ब्रिस्को, एस० पी० लिली तथा सर ट्रेसी गैविन जोन्स थे। कार्पोरेशन की पूँजी ५॥ करोड़ रुपये था। सर अलेक- ज़ेन्डर मैकराबर्ट डाइरेक्टर बोर्ड के अध्यक्ष थे।

प्रथम महायुद्ध की समाप्ति के बाद देश में जो आर्थिक संकट आया उस अवसर पर इस कार्पोरेशन को भी बड़ी कठिनाई का सामना करना पड़ा।

सन् १९२२ में सर अलेक्जेन्डर की मृत्यु हो गई और सर लोगी वाटसन उनके स्थान पर अध्यक्ष नियुक्त हुये। श्री लिली तथा श्री सिलवर संयुक्त जेनरल मैनेजर नियुक्त किये गये। सर लोगी को व्यापारिक मामलों से कहीं अधिक आध्यात्मिक मामलों में रुचि थी। जेनरल मैनेजर भी कुछ अधिक योग्य प्रमाणित न हो सके। फलतः इसका भयंकर परिणाम हुआ और

कार्पोरेशन की साख को गहरा धक्का लगा। सर्व श्री सिलवर तथा लिली ने सन् १९३० में कम्पनी से सम्बन्ध विच्छेद कर लिया और उनके स्थान पर सर्व श्री कारनेगी, लेविस तथा सर मेंजीज नियुक्त हुये। आपस में बड़ा झगड़ा होने लगा। कारनेगी और लेविस एक ओर हो गये। मेंजीज अकेले थे यद्यपि उन्हें सर अलेक्जेंडर मैकराबर्ट के परिवार का समर्थन प्राप्त था। कटुता बढ़ती ही गई, अन्त में मामला इलाहाबाद हाईकोर्ट तक पहुँचा। अंततोगत्वा लेडी मैकराबर्ट अपने ज्येष्ठ पुत्र सर एलासडेयर मैकराबर्ट के साथ स्काटलैंड से कानपुर आईं और अथक प्रयत्नों के पश्चात् कार्पोरेशन में पुनः शांति स्थापित की। श्री लेविस को इस्तीफा देना पड़ा, परन्तु श्री कारनेगी को बोर्ड में रहने दिया गया। श्री लेविस बहुत ही चतुर तथा प्रतिभाशाली व्यक्ति थे। चेम्बर की अध्यक्षता से भी उन्हें इस्तीफा देना पड़ा।

सर राबर्ट मेंजीज के कार्यकाल में कार्पोरेशन ने अच्छी प्रगति की है। द्वितीय महायुद्ध ने भी उसकी उन्नति एवं प्रगति में विशेष सहायता की है। आठ आने वाले आर्डिनरी शेयर का मूल्य १८ रु० तक से ऊपर पहुंच गया। ८ रु० प्रतिशत प्रेफरेंस का १०० रु० वाला शेयर जो किसी समय केवल ४० रु० का था, २५० रु० तक पहुँच गया।

सर राबर्ट के ही समय में बेग सदरलैंड कम्पनी भी कार्पोरेशन में शामिल हो गई, जो कार्पोरेशन की एक महान् सफलता का परिचायक है। उक्त कार्पोरेशन केवल उत्तर की ही नहीं किंतु

सम्पूर्ण भारत की प्रमुख औद्योगिक संस्थाओं में से एक है। बी० आई० सी० ग्रुप के नाम से वह भारत भर में प्रसिद्ध है।

बेग सदरलैंड एण्ड कम्पनी

उक्त कम्पनी उत्तरी भारत में अपने ढंग की सबसे पुरानी कम्पनी कही जा सकती है। इसका मूलाधार मेसर्स जान किर्क एन्ड कम्पनी थी, जो सन् १८४२ के पूर्व कानपुर में एक फर्म के रूप में स्थापित हुई थी। उक्त फर्म का नाम बाद में बदल कर "बाथगेट केम्पबेल एन्ड कम्पनी" हो गया। सन १८५६ में कम्पनी का नाम फिर बदल कर "बेग क्रिस्टी एन्ड कम्पनी" रखा गया। मि० डैविड बेग तथा मि० क्रिस्टी दोनों ही व्यक्ति पहले वाली कम्पनी में साझीदार रह चुके थे। सन् १८५७ के विद्रोह में मि० क्रिस्टी तथा उनके परिवार के समस्त व्यक्ति, सिर्फ मि० क्रिस्टी की एक लड़की को छोड़कर जो उस समय पहाड़ पर थी, कानपुर के भयानक विद्रोह में मार डाले गये। ग़दर के बाद सन् १८६६ में कम्पनी के नाम में फिर परिवर्तन हुआ और अब उसका नाम "बेग मैक्सवेल एन्ड कम्पनी" हो गया। इसी समय इस कम्पनी का एलगिन मिल से घनिष्ठ सम्बन्ध स्थापित हुआ, क्योंकि एलगिन मिल के संस्थापक मि० मैक्सवेल इस कम्पनी के भी साझीदार थे। सन् १८७२ में एलगिन मिल के साथ उसका यह सम्बन्ध समाप्त हो गया। ४० वर्ष बाद यह सम्बन्ध पुनः स्थापित हुआ, जब स्व० मि० हक मैक्सवेल के पुत्र मि० राल्फ मैक्सवेल ने एलगिन मिल के प्रबन्ध

का भार फिर बेग सदरलैंड एन्ड कम्पनी के ही सिपुर्द कर दिया।

सन् १८७२ में "बेग मैक्सवेल एन्ड कम्पनी" का नाम बदल कर "बेग सदरलैण्ड एन्ड कम्पनी" रखा गया था। सन् १८९४ तक उक्त फर्म मुख्यतः नील, तम्बाकू तथा अन्य देशी चीजों का ही व्यापार करती रही। सन् १८९४ में कम्पनी ने कानपुर शक्कर मिल की स्थापना की जो उत्तरी भारत में साफ़ सुथरी शक्कर का निर्माण करने वाला प्रथम कारखाना था। इसके साथ ही आपने महुआ तथा गुड़ से स्प्रिट तैयार करने का भी एक कारखाना खोला। इसके बाद उक्त कम्पनी ने चम्पारन शक्कर मिल, रैयाम शक्कर मिल, समस्तीपुर सेन्ट्रल शुगर कम्पनी तथा सन् १९३३ में बलरामपुर शक्कर मिल की स्थापना की। उत्तर प्रदेश तथा बिहार में इस कम्पनी के अन्य अनेक मिल हैं। उक्त कम्पनी प्रतापपुर कम्पनी लिमिटेड की भी मैनेजिंग एजेन्ट्स है। सन् १९२२ में कम्पनी को प्राइवेट लिमिटेड कम्पनी बना दिया गया। इसके पूर्व बनने वाली शक्कर में हड्डी का चारकोल तथा रंग में अंतर लाने वाली चीजों का प्रयोग किया जाता था। सन् १९४६ में कम्पनी बी० आई० सी० में शामिल हो गई।

शक्कर के व्यवसाय के अतिरिक्त मेसर्स बेग सदरलैण्ड एन्ड कम्पनी लिमिटेड अन्य कई बड़ी औद्योगिक संस्थाओं के जन्म तथा प्रबन्ध के लिए भी जिम्मेदार है। इनमें कानपुर इलेक्ट्रिक सप्लाई कार्पोरेशन भी शामिल है जो अब १५ सितम्बर सन्

१९४७ से युक्त प्रान्तीय सरकार के प्रबन्ध में चला गया है। पहले इसमें ट्राम्वे कम्पनी भी थी। कानपुर टेक्सटाइल लिमिटेड, अशवेयर लिमिटेड भी कम्पनी के ही अधिकार में है। कानपुर एरियेटिंग गैस कम्पनी लिमिटेड की स्थापना भी बेग सदरलैएड एन्ड कम्पनी ने ही की थी जिसका प्रबन्ध आजकल मेसर्स स्पेन्सर एन्ड कम्पनी के अधीन है। हावड़ा की दी सारन इन्जीनियरिंग कम्पनी लिमिटेड भी बेग सदरलैएड कम्पनी के ही प्रबन्ध के अंतर्गत है।

इस काल के अन्य अंगरेज व्यवसायिओं में से कुछ का जिक्र किया जाता है। मेसर्स फार्ड मैकडानल्ड बहुत समय से ईंट के भट्टों का काम कररहे हैं और 'बाटला साहब' के भट्टा के नाम से वे अधिक प्रसिद्ध हैं। ये बाटला साहब कौन थे इसका कुछ पता नहीं है। फ्रिजानी एन्ड कम्पनी भी यही व्यवसाय कर रही थी।

कलकत्ता की एलेन एन्ड ब्रादर्स फर्म की एक शाखा भी यहाँ मिल स्टोर तथा सुअर के बालों का व्यापार करती थी। मेसर्स एम० एक्स० डी० नरोना पुराने आक्शनियर्स अथवा नीलाम का काम करने वाले थे। इसी प्रकार बेकर एन्ड सन्स भी यही काम करते थे। चार्ल्स एन्ड कम्पनी औषधि विक्रेता, बैरम जी फ्रामजी शराब विक्रेता तथा एस० वर्मा वस्त्र विक्रेता के रूप में प्रसिद्ध थे। इनकी दूकानें माल रोड पर फूलबाग के सामने थीं। श्री एन० बैरम जी ने सन् १९०२ में माल रोड पर कमर्शल बिल्डिंग

का निर्माण किया था जो बैराम जी की कोठी के नाम से अधिक प्रसिद्ध है ।

फ्वाय-ब्रदर्स

कानपुर की व्यावसायिक-प्रगति में फ्वाय ब्रदर्स का भी नाम उल्लेखनीय है । ये दो भाई थे—ए० आर० फ्वाय तथा एडवर्ड फ्वाय। सन् १८५७ में इनका पदार्पण खीरी लखीमपुर जिले में हुआ। वहाँ इन्होंने जंगलात खरीदे और एक स्टेट फजलगंज नाम की स्थापित की तथा टिंबर मर्चेन्ट का काम प्रारम्भ किया। श्री एडवर्ड फ्वाय भारतवर्ष के चुंगी (कस्टम) विभाग में हो गये और नमक का काम करने लगे ।

सन् १८६९ में ये कानपुर आये। यहाँ इन्होंने फ्वाय ब्रदर्स के नाम से एक फर्म खोला और जनरल सप्लायर का काम आरम्भ किया। इनका दफ्तर मरे कम्पनी के बगल में माल रोड पर था। यह काम गवर्नमेंट फ्लावर मिल के बड़े इञ्जीनियर श्री टी० टी० बांड के साझे में था। इनका नाम बेल्टिंग वर्क्स में सर्वोपरि था। इनके पास चमड़े का काम इतना बढ़ा कि इन्हें एक टैनरी खोलनी पड़ी जो नार्थ वेस्ट टैनरी के नाम से प्रसिद्ध है। सन् १९०४ में उक्त टैनरी तथा कूपर एलेन एन्ड कम्पनी को एक में मिला दिया गया। फ्लेक्स के प्रसिद्ध जूते उक्त टैनरी में ही बनते हैं। इसके बाद इन्होंने कानपुर फ्लावर मिल भी खोला।

ए० आर० फ्वाय बाद में मसूरी चले गये और एडवर्ड फ्वाय फ्वाय-ब्रदर्स का काम देखने लगे। कुछ दिन बाद कानपुर फ्लावर मिल्स बांड साहब को देकर सन १९०२ ई० में एडवर्ड फ्वाय भी रिटायर्ड हो गये।

फ्वाय ब्रदर्स सच्चे दिल से ईसा मसीह के उपासक थे। पैसा पैदा करने के साथ उसका उपयोग भी उन्होंने अच्छी तरह किया। बड़े दिन के अवसर पर २४ ता० हो को आप साधु-सन्यासियों को अन्न तथा वस्त्र वितरण करते थे। सिविल लाइन व परेड पर इन्होंने गिर्जाघर बनवाये और गर्ल्स हाई स्कूल की स्थापना की।

गवर्नमेंट सेन्ट्रल टेक्सटाइल इन्स्टीट्यूट

गवर्नमेंट स्कूल आफ डाइंग एन्ड प्रिंटिंग का प्रारम्भ सन् १९१४ में एक छोटे से क्लास के रूप में नवाबगंज में हुआ। सन् १९१७ में यह एक किराये के बंगले में चला गया और इसमें दो साल का डिप्लोमा कोर्स तथा एक साल का आर्टीजन कोर्स रखा गया। सन् १९२३ में वह अपने वर्तमान भवन में आ गया जहाँ मशीनों तथा प्रयोगशालाओं से युक्त एक डाइंग हाउस खोला गया। कोर्स में कैलिको-प्रिंटिंग तथा रंगों के परीक्षण के विषय भी शामिल कर लिए गये। इस स्कूल में शिक्षा पाने के लिए भारतवर्ष के सभी भागों से छात्र आते हैं। इसके शिक्षा पाये हुये छात्रों को स्थानीय या बाहर की अन्य मिलों के रंग विभाग में काम मिल जाता है अथवा वे रंग तथा छपाई

के अपने निजी काम को गृह-उद्योग के रूप में प्रांत तथा देश के विभिन्न भागों में जारी करते है।

गवर्नमेंट टेक्सटाइल स्कूल की स्थापना सन् १९२३ में की गई। इसके पूर्व उक्त विषय की शिक्षा टामसन सिविल इञ्जीनियरिंग कालेज रुड़की में दी जाती थी। बोर्ड आफ इन्डस्ट्रीज तथा स्थानीय मिल मालिकों के अनुरोध पर उक्त विभाग को रुड़की कालेज से अलग कर यहाँ एक स्वतन्त्र स्कूल के रूप में खोला गया। आधुनिक सूती वस्त्र निर्माण प्रणाली की आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए समय-समय पर इसके स्टाफ तथा सामान में वृद्धि होती रही है। इस समय इसमें (१) तीन साल का डिप्लोमा कोर्स तथा उसके बाद १ साल मिल में व्यावहारिक ज्ञान प्राप्त करने का कोर्स पूरा करना पड़ता है। (२) कुछ समय के लिये मिल-एप्रेन्टिस का काम तथा (३) कुछ समय मिल-आर्टीजन का काम भी करना पड़ता है। इसके पास हुये छात्रों को स्थानीय या बाहर के सूती मिलों में नौकरियाँ मिली हैं। इस समय यह स्कूल टेक्सटाइल इन्स्टीट्यूट का टेक्सटाइल टेकनालोजिकल सेक्शन है।

नार्दर्न इण्डिया एम्प्लायर्स एसोसियेशन

कानपुर के प्रमुख उद्योगपतियों ने अपने कल-कारखानों के सुचारु रूप से संचालन के उद्देश्य से सन् १९३७ को २ अगस्त

को उक्त असोसिएशन की स्थापना की। जिस समय असोसिए-शन का निर्माण हुआ कानपुर के उद्योगपतियों के समक्ष मजदूरों की आम हड़ताल की भीषण समस्या उपस्थित थी। इस हड़ताल के समाप्त करने के सम्बन्ध में ९ अगस्त सन् १९३७ को असो-सिएशन तथा कानपुर मजदूर सभा में समझौता हो गया परन्तु कुछ परिस्थितियों वश कायम न रह सका। सर ट्रैसी गैविन जोन्स असोसिएशन के प्रथम अध्यक्ष निश्चित हुये। प्रारम्भ में इसके कुल २८ सदस्य थे जो सभी कानपुर के थे। धीरे-धीरे कानपुर के बाहर के अन्य नगरों के मिल मालिक भी उसके सदस्य हो गये। सन् १९४८ में असोसियेशन की सदस्य संख्या २०३ थी। कानपुर के समस्त कल-कारखानों के मालिक तथा उत्तरी भारत के अन्य कई नगरों के प्रमुख उद्योगपति भी असोसिएशन के सदस्य हैं।

असोसिएशन मिल मालिकों की सामूहिक कठिनाइयों को हल करने के अतिरिक्त मजदूरों तथा मिल मालिकों के पारस्प-रिक झगड़ों को दूर कराने का भी प्रयत्न करता है। इसके लिए उसका अपना लेबर कमिश्नर है जो मजदूरों की शिकायतों को समझ कर उनका उचित निर्णय करता है। युद्धकाल में मजदूरों के लिये राशन आदि के प्रबन्ध का कार्य भी असोसिएशन ही करता रहा है।

अपर इण्डिया चेंबर आफ कामर्स

१९वीं शताब्दी के अंतिम भाग में कानपुर नगर की बढ़ती हुई व्यापारिक उन्नति को देखकर विभिन्न व्यापारिक हितों की रक्षा के लिये एक व्यापारिक संघ की आवश्यकता अनुभव की जाने लगी। सन् १८८८ के १२ सितम्बर को नगर के प्रमुख उद्योगपतियों की एक बैठक कानपुर के "असेम्बली हाल" नामक स्थान में हुई जिसमें कूपर एलेन एण्ड कम्पनी के मि० लेगार्ड के प्रस्ताव तथा ऊलेन मिल्स कम्पनी लिमिटेड के मि० ए० मैकराबर्ट के समर्थन के पश्चात् एक व्यापारिक संघ की स्थापना का निश्चय किया गया तथा उस संस्था के नामकरण तथा विधान आदि के लिये एक अस्थाई कमेटी नियुक्त कर दी गई। इस प्रकार अपर इण्डिया चेंबर आफ कामर्स के निर्माण का प्रारम्भ १२ सितम्बर सन १८८८ को हुआ।

प्रथम वार्षिक बैठक

चेंबर की प्रथम वार्षिक बैठक १५ जनवरी १८८९ को मेसानिक लाज में हुई। प्रारम्भ में २१ व्यापारिक फर्म इसके सदस्य हुये जिनमें कई कानपुर से बाहर के भी थे।

चेंबर का आफ़िस

सन् १८८९ की मई तक चेंबर की सारी बैठकें मैसानिक लाज में ही होती रहीं। चेंबर के पुराने कागज़ातों से पता चलता है कि सन् १८९२ में सर्वप्रथम चेंबर के लिये निजी इमारत की आवश्यकता अनुभव की गई। फलस्वरूप ५० रु० वार्षिक

किराये तथा ९९ वर्ष के पट्टे पर जमीन ली गई और १४ सितम्बर १८९४ को इमारत मोहल्ला परमट पर बनकर तैयार हो गई और अब भी है। उस समय इमारत बनाने में कुल १६४०० रुपया खर्च हुये।

चेंबर के प्रथम अध्यक्ष

चेंबर के प्रथम अध्यक्ष मि० विलियम अर्नशा कूपर थे। आपके पिता इङ्गलैंड के एक बहुत बड़े किसान थे। यह आपकी माता की प्रेरणा का फल था कि आप में भारत आने की आकांक्षा उत्पन्न हुई। १८ वर्ष की अवस्था में आप इङ्गलैंड से रवाना हुये। इसके कुछ ही दिनों बाद आपकी माता की मृत्यु हो जाने के कारण आपको भारत में ही रहने का निश्चय करना पड़ा। इसके बाद आप भारत में ४० वर्ष रहे। अपनी प्रारंभिक अवस्था में आपने कई काम किये। आपने नील की खेती की, तम्बाकू की खेती करते रहे। इसके बाद आप इन चीजों के क्रय-विक्रय का कार्य करने लगे। अंत में आप भारत के एक सबसे बड़े वस्तु निर्माता और भारत ही क्यों संसार में अपने ढंग के एक सबसे बड़े मिल-समूह के प्रधान हो गये।

आप सन् १८८९ से १८९७ तक अपर इण्डिया चेंबर आफ कामर्स के अध्यक्ष रहे। सन् १८९३ से १९०० तक आप चेंबर की ओर से युक्त प्रांतीय असेम्बली के सदस्य भी रहे। वालंटियर आन्दोलन में आप विशेष दिलचस्पी लेते थे और कई साल तक उसके कर्नल रहे। सन् १८९७ में आपको सी० आई०

ई० तथा १९०३ में सर की उपाधि प्रदान की गई। सन् १९२४ की जुलाई में ८१ वर्ष की अवस्था में आपका इंगलैंड में देहावसान हो गया।

चेंबर के प्रथम मंत्री

चेंबर के प्रथम मंत्री मि० विलियम बर्कले विशार्ट का जन्म १८१३ में इंगलैंड में हुआ था। आपके भारत आने की निश्चित तिथि तो नहीं ज्ञात हो सकी परन्तु आपने सर्व प्रथम गाजीपुर के पास तम्बाकू की खेती करने वाली एक फर्म में काम शुरू किया। यह फर्म मेसर्स बेग सदरलैंड एण्ड कम्पनी की थी। यहीं पर मि० विलियम अर्नेशा कूपर से आपकी सर्वप्रथम भेंट हुई। बाद में यहाँ से आपको बेग सदरलैंड कम्पनी का इन्चार्ज बना कर कानपुर भेज दिया गया और सन् १९०४ में अपनी मृत्यु के समय तक आप कानपुर ही में काम करते रहे।

यद्यपि मि० विशार्ट प्रकाशन से बहुत दूर रहना पसंद करते थे परन्तु चेंबर की स्थापना में आपने विशेष रूप से भाग लिया और सन् १९०४ तक उसके मंत्री रहे। मि० विशार्ट की प्रकाशन से दूर रहने की भावना इसी से प्रमाणित हो जाती है कि यद्यपि नगर की उन्नति के लिये होने वाले प्रायः सभी आन्दोलनों के आप उन्नायक थे परन्तु उनका सारा श्रेय दूसरों को ही मिला। उदाहरण स्वरूप स्थानीय म्युनिसिपैलिटी में आक्ट्राय डयूटी के स्थान पर टर्मिनल टैक्स की व्यवस्था, नगर में नई तथा चौड़ी सड़कों एवं गलियों के निर्माण का प्रस्ताव, नगर के लिये साफ़

पानी की सफ़ाई का आरम्भ तथा बाद में सीवेज का निर्माण आदि इन सब योजनाओं के मूल-निर्माता आपही थे। नगर तथा चेंबर के केवल यूरोपियन सदस्य ही नहीं किन्तु सभी वर्गों के भारतीय भी आपका समान रूप से सम्मान करते थे।

चेंबर का प्रांतीय असेम्बली में प्रतिनिधित्व

उत्तर पश्चिमी प्रांत तथा अवध के लें० गवर्नर ने सर्व प्रथम सन् १८९१ में प्रांतीय व्यवस्थापिका कौंसिल में चेंबर को अपना एक प्रतिनिधि नामजद करने का अधिकार दिया। मार्ले मिन्टो सुधार के अन्तर्गत चेंबर को प्रांतीय कौंसिल में एक सीट प्रदान की गई। सन् १९१९ के भारतीय शासन विधान के अनुसार चेंबर को दो सीटें मिलीं। सन् १९३५ के नवीन विधान के अन्तर्गत चेंबर की ये दो सीटें कौंसिल से हटाकर छोटी धारा सभा में कर दी गईं।

मि० रायन

स्व० मि० जस्टिन ग्लिन रायन एम० बी० ई०, बी० डी० सन् १९१२ से १९३६ तक प्रायः एक चौथाई शताब्दी तक चेंबर के मंत्री रहे। सन् १९२६ में जब असोसिएटेड चेंबर आफ़ कामर्स का सदर मुकाम कानपुर में था आपने उस वर्ष उसके मंत्री का भी कार्य किया। आप सन् १९१२ से इण्डियन शुगर प्रोड्यूसर्स असोसियेशन (भारतीय शक्कर उत्पादक संघ) के भी मंत्री रहे तथा आपने अनेक अवसरों पर विभिन्न शाही कमीशनों एवं समितियों के समक्ष चेंबर की ओर से गवाही दी। जब तक

सन् १९२५ में अवध रुहेलखंड रेलवे ईस्ट इण्डियन रेलवे में न मिला दी गई, आप उसकी परामर्शदात्री समिति में चेंबर की ओर से प्रतिनिधि रहे। इसके बाद ईस्ट इण्डिया रेलवे की युक्त प्रांतीय परामर्शदात्री समिति तथा सन् १९२७ से जी० आई० पी० रेलवे की परामर्शदात्री समिति में भी आप चेंबर के प्रतिनिधि रहे। सन् १९०८ में आप कानपुर म्यूनिसिपल बोर्ड के सदस्य निर्वाचित किये गये और १९१२ तक उक्त पद पर रहे। इसके बाद सन् १९१२ में ही चेंबर ने उन्हें म्यूनिसिपल बोर्ड में अपना प्रतिनिधि नामजद कर दिया और तब से आप मृत्यु पर्यन्त कुल मिला कर ३६ वर्ष तक उक्त पद पर चेंबर की ओर से प्रतिनिधि रहे।

सन् १९२७ में आपको ओ० बी० ई० की उपाधि मिली। एक सुप्रसिद्ध मासिक पत्रिका ने मि० रायन की सेवाओं की प्रशंसा करते हुये लिखा था :—

"भारतीय उद्योग, व्यवसाय, वाणिज्य, शिक्षा तथा नागरिक मामलों में मि० रायन की जो बहुमुखी तथा ठोस सेवायें हैं उनकी समता बहुत थोड़े अंगरेज कर सकते हैं। रिटायर होने के समय मि० रायन उन लोगों की हार्दिक शुभ कामनायें अपने साथ ले जायेंगे जिनकी उन्होंने अभी तक इतनी अच्छी भाँति सेवा की है।"

श्री पुरुषोत्तमदास सिंहानियाँ
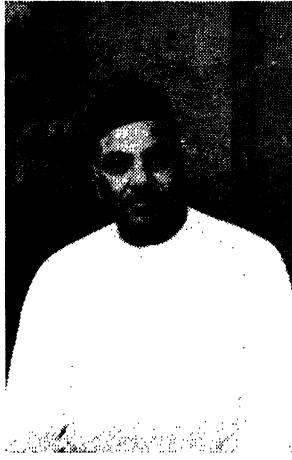
श्री राधेश्याम गुप्त

अन्य अध्यक्ष

चेंबर के अन्य अध्यक्षों के नाम ये हैं :—

(१) सर अलेक्जेंडर मैकराबर्ट जो उत्तरी भारत के उद्योग-पतियों में बिना छत्र के राजा कहलाते थे। (२) श्री एस० एम० जान्सन—आप म्योर मिल के प्रधान थे। आप में और श्री मैक-राबर्ट में बहुत पुरानी घोर शत्रुता थी। दोनों एक दूसरे को अत्यधिक घृणा करते थे। दोनों की महत्वाकांक्षा ही इसका एक-मात्र कारण थी। (३) सर हेनरी लेगार्ड—आप कूपर एलेन के थे। आप टाउन एक्सपेन्शन कमेटी के भी अध्यक्ष थे, जिसकी सिफ़ारिश पर सन् १९१९ में कानपुर इम्प्रूवमेंट ट्रस्ट की स्थापना हुई थी। (४) श्री टी० आर० स्ट्रैची—आप बैरिस्टर थे। परन्तु बाद में बैरिस्टरी छोड़कर आप एलगिन मिल में आ गये थे। (५) सर टामस स्मिथ—आप पहले इलाहाबाद बैंक में थे और बाद में म्योर मिल में चले आये। म्योर मिल को इतना प्रसिद्ध तथा समुन्नत बनाने का श्रेय आपको ही है। (६) श्री अर्नेस्ट वेस्ट—आप वेस्ट पेटेन्ट प्रेस के प्रधान थे। (७) श्री डब्ल्यू० जी० बेविस—आप एल्गिन मिल में थे। आप मिन्टो-मार्ले सुधारों के अंतर्गत बनने वाली प्रांतीय व्यवस्थापिका कौंसिल में चेंबर के प्रथम प्रतिनिधि थे। (८) सर लोगी वाटसन—आप कूपर एलेन के संचालक थे। (९) सर ट्रैसी गैविन जोन्स। (१०) श्री ए० एच० सिलवर। (११) श्री एस० एच० टेलर—आप बेग सदर-लैण्ड कंपनी के संचालक थे। आप प्रांतीय एसेम्बली में भी चेंबर

की ओर से प्रतिनिधि रहे। आप सन् १९२६ में असोसियेटेड चेंबर्स आफ कामर्स के भी अध्यक्ष रहे थे। (१२) श्री ए० बी० शेक्सपियर—आप भी बेग सदरलैंड कम्पनी में थे। लार्ड कर्जन द्वारा ईरान भेजे गये व्यापारिक मिशन में आप भी थे। (१३) श्री डब्ल्यू० आर० वैट—लाल इमली में थे। (१४) श्री जे० एम० लोगी—आप भी बेग सदरलैंड में थे। (१५) श्री ए० एल० कार-नेगी—आप कूपर एलेन में थे। (१६) श्री जी० बी० बेविस। आपको इस्तीफा देना पड़ा था। (१७) सर हेनरी हार्समैन—आप स्वदेशी काटन मिल के मालिक थे। श्री बेविस के इस्तीफा देने के बाद आप उनके स्थान पर चुने गये थे।

इनमें से कुछ लोग तो एक से अधिक बार अध्यक्ष चुने गये। चेंबर के प्रायः प्रत्येक अध्यक्ष को सर की उपाधि से विभूषित करने की परम्परा-सी पड़ गई थी। परन्तु पीछे अन्य चेंबरों की स्थापना के बाद उक्त परम्परा समाप्त-सी हो गई।

यू० पी० चेंबर आफ़ कामर्स

उक्त चेंबर की स्थापना सन् १९१४ में हुई। इसके पूर्व युक्त प्रांत में भारतीयों का कोई चेंबर न था। अपर इण्डिया चेंबर आफ़ कामर्स की स्थापना अवश्य हो चुकी थी परन्तु उसमें अंगरेजों का ही बोलबाला था। अतएव युक्त प्रांत के व्यव-साइयों तथा कुछ अन्य लोगों ने एक चेंबर की स्थापना का

निश्चय किया जिससे कि भारतीय व्यवसाइयों के हितों की रक्षा हो सके। इनमें से कुछ प्रमुख लोगों के नाम ये हैं :—

सर्व श्री रायबहादुर लाला विश्वम्भरनाथ, कृष्णाराम मेहता (डाइरेक्टर न्यूज पेपर्स लिमिटेड), बाबू विक्रमाजीत सिंह तथा श्री सी० वाई० चिन्तामणि जो बाद में 'लीडर' के प्रधान संपादक हुये। सन् १९१४ में बाबू विक्रमाजीत सिंह के निवास स्थान पर इन लोगों की एक बैठक हुई और चेंबर की स्थापना का निश्चय किया गया। रायबहादुर मुन्शी प्रयागनारायण भार्गव चेंबर के प्रथम अध्यक्ष निर्वाचित किए गये। सन् १९१६ में रायबहादुर मुन्शी प्रयागनारायण की मृत्यु के बाद राय बहादुर लाला विश्वम्भर नाथ चेंबर के अध्यक्ष निर्वाचित हुये। इस वर्ष चेंबर की ओर से भारतीय औद्योगिक कमीशन के समक्ष एक स्मृति-पत्र पेश किया गया जिसमें भारतीय उद्योगों के विकास के लिए संरक्षणों की माँग की गई थी। चेंबर के आन्दोलन के ही फलस्वरूप युक्त प्रांत में एक औद्योगिक बोर्ड की स्थापना की गई। सन १९१५ में बम्बई में होने वाली व्यापारिक कांग्रेस में चेंबर ने अपने १६ प्रतिनिधि भेजे।

असोसियेटेड चेंबर आफ़ कामर्स आफ़ इण्डिया की स्थापना के लिये जो एक अस्थायी समिति बनाई गई उसमें चेंबर के भी दो सदस्य रखे गये। अवध रुहेलखंड रेलवे की परामर्शदात्री समिति का निर्माण होने पर चेंबर को उसमें प्रतिनिधित्व दिया

गया। बाद में उक्त रेलवे तथा ई० आई० आर० की परामर्श-दात्री समिति के संयुक्त कर दिये जाने पर भी चेंबर को उसमें अपना प्रतिनिधि भेजने का अधिकार मिला।

सन् १९२६ में रायबहादुर लाला विश्वम्भरनाथ की मृत्यु हो गई। आपके बाद श्री डब्ल्यू० सी० नरोन्हा अध्यक्ष निर्वाचित हुये। आपने चेम्बर का निजी भवन बनाने के लिये २० हजार रुपये दिये। सन १९३२ में श्री नरोन्हा का स्वर्गवास हो जाने पर रायबहादुर बाबू विक्रमाजीत सिंह चेम्बर के अध्यक्ष निर्वाचित किए गये। इस वर्ष भारतीय होजरी व्यवसाय तथा सूती वस्त्र उद्योग को संरक्षण प्रदान किये जाने के सम्बन्ध में चेम्बर ने सरकार के समक्ष स्मृतिपत्र पेश किये। इस समय जापानी माल की बहुतायत के कारण उक्त भारतीय व्यवसायों के लिये घोर संकट उपस्थित हो गया था। सन १९३३ में भारतीय शासन-विधान में संशोधन के लिये नियुक्त संयुक्त सेलेक्ट कमेटी के समक्ष गवाही देने के लिए चेम्बर को अपने ५ प्रतिनिधि भेजने का निमंत्रण मिला। चेम्बर ने सर्वश्री बी० एन० चोपड़ा, रामेश्वर प्रसाद बागला, आई० डी० वार्ष्णेय, रायबहादुर राम शरणदास तथा श्री कुन्दनलाल मेहता को इस कार्य के लिए चुना। सन १९३७ में जापान स्थित भारतीय ट्रेड कमिश्नर श्री आर० आर० सक्सेना चेम्बर में पधारे और उनसे भारत-जापान-व्यापारिक सम्बन्धों पर बातचीत हुई। प्रांतीय सरकार द्वारा नियुक्त गृह उद्योग जाँच समिति में चेम्बर के जो दो प्रति-

निधि थे उनकी बहुत-सी सिफ़ारिशें सरकार ने उपयोगी समझ कर स्वीकार कर लीं। कानपुर नगर के सुधार के लिये नियुक्त टाउन इम्प्रूवमेंट ट्रस्ट कमेटी को चेम्बर ने जो स्मृतिपत्र भेंट किया उसमें मज़दूरों के लिये साफ़-सुथरे वास-स्थान बनाने के साथ ही साथ मध्यम वर्ग के लोगों के लिये भी मकान बनाने की माँग की गई थी।

रायबहादुर बाबू विक्रमाजीत सिंह (सन् १९१४—१९३२) रायबहादुर लाला रामेश्वर प्रसाद बागला (सन १९३३-१९३७) तथा लाला रामचन्द्र (सन १९३८) तक चेम्बर के अवैतनिक मंत्री रहे। सन् १९१४ में स्थापना के समय चेम्बर की सदस्य-संख्या ८२ थी जिनमें ४८ कानपुर नगर के तथा ३४ प्रांत के अन्य स्थानों के सदस्य थे। सन् १९३९ में सदस्य संख्या बढ़कर १८२ पहुँच गई। इनमें कानपुर के ११४ तथा अन्य स्थानों के ६८ सदस्य थे।

जिन सार्वजनिक संस्थाओं में चेम्बर को अपने प्रतिनिधि भेजने का अधिकार है अथवा समय-समय पर मिलता रहा है उनके नाम ये हैं :—

प्रांतीय असेम्बली में यू० पी० चेम्बर तथा मर्चेन्ट्स चेम्बर को एक संयुक्त निर्वाचन क्षेत्र मानकर एक सीट प्रदान की गई। कानपुर म्यूनिसिपल बोर्ड में चेम्बर को दो प्रतिनिधि भेजने का अधिकार मिला। इनके अतिरिक्त ई० आई०, जी० आई० पी० तथा बी० एन० डब्ल्यू० रेलवे की स्थानीय परामर्शदात्री समि-

तियों तथा प्रांतीय औद्योगिक बोर्ड, प्रांतीय इम्प्लायमेंट बोर्ड, प्रांतीय यातायात बोर्ड, प्रांतीय शिक्षा बोर्ड, प्रांतीय कृषि बोर्ड, भारतीय वाणिज्य-संघ आदि में भी चेम्बर को प्रतिनिधित्व प्रदान किया गया। इनके अतिरिक्त कई स्थानीय सार्वजनिक संस्थाओं, जैसे उर्सिलाहार्समैन अस्पताल, हरबर्ट टेकनालाजिकल इन्स्टीट्यूट, एग्रीकल्चर कालेज आदि की प्रबन्धक कमेटियों में भी चेम्बर के प्रतिनिधि रहे हैं।

मर्चेन्ट्स चेम्बर आफ यू० पी०

युक्त प्रांत के भारतीय व्यवसाइयिओं का कोई निजी संगठन अथवा संस्था न होने के कारण अपने उचित अधिकारों एवं शिकायतों को सरकार तक पहुँचाने तथा विदेशों से व्यापार करने के सम्बन्ध में आवश्यक जानकारी प्राप्त करने के लिये अत्यधिक कठिनाइयों का सामना करना पड़ता था। फलतः एक ऐसे कामर्स चेम्बर की स्थापना का विचार किया गया जो उन लोगों की इस असुविधा को दूर कर सके।

इस विचार को कार्य रूप में परिणत करने के लिए स्वर्गीय लाला कमलापत जी सिंघानिया ने "मर्चेन्टस चेम्बर आफ यू०पी० की स्थापना की और नवम्बर १९३२ में इन्डियन कम्पनीज एक्ट की धारा २६ में उसकी रजिस्ट्री कराई। इस चेम्बर के संविधान में प्रजातान्त्रिक विचारों का इतना ध्यान रखा गया कि उसमें एक नियम यह भी बना दिया गया कि चेम्बर का कोई अधिकारी

दो वर्ष से अधिक लगातार किसी पद पर नहीं रह सकेगा। इस चेम्बर का प्रभाव इतना अधिक और इतनी तेज़ी से बढ़ा कि सन १९२३ में ही इसे ज्वाइन्ट पार्लियामेन्टरी कमेटी के सामने गवाही देने के लिए निमंत्रण मिल गया था। और उसे यू० पी० चेम्बर के साथ मिलकर प्रन्तीय धारा सभा में अपना प्रतिनिधि भेजने का अधिकार मिल गया। १९३५ के गवर्मेंट आफ़ इन्डिया एक्ट के अनुसार चुनी जाने वाली प्रथम प्रान्तीय धारा सभा में उसी के प्रतिनिधि श्री पदमपतजी सिंघानिया चुने गये। सन १९४६ के चुनाव में भी उस के प्रतिनिधि श्री कृष्णचन्द पुरी को बहुमत प्राप्त हुआ।

इस चेम्बर के निमय ३ के अनुसार इसकी सदस्य संख्या २५० निर्धारित थी। किन्तु व्यापारिक समुदाय में यह चेम्बर इतना लोकप्रिय हो गया कि नियम ३ को बदलना पड़ा और अधिकतम संख्या २५० से बढ़ा कर ४०० करनी पड़ी।

यह चेम्बर शासन के उच्च अधिकारियों से घनिष्ट सम्पर्क बनाए रखता है। इसके वार्षिक और अर्ध-वार्षिक उत्सवों में उत्तर प्रदेश के राज्यपाल और केन्द्र के वित्तमंत्री भाषण करते रहते हैं। इससे चेम्बर के सदस्यों को देश के उच्च अधिकारियों के सम्पर्क में आने का सुअवसर प्राप्त होता है।

सट्टा बाजार

सट्टा यानी फाटका उस सौदे का नाम है जिसमें व्यापारी-गण आपस में माल को लेते-बेचते हैं—तैयार माल यदि नहीं मिलता तो आमदनी का यानी भविष्य की तिथियों का व्यापार करते हैं। पैसे की तत्काल लागत न होने के कारण ऐसे लोग भी सौदा लेने-बेचने लगते हैं जिनके पास लागत लगाने को रुपया नहीं होता है, और अक्सर लोग अपनी समाई से ज्यादा व्यापार कर लेते हैं। नियमित तिथि यानी ड्यू डेट पर जब वे रुपये की कमी से माल की डिलेवरी नहीं ले सकते तो मजबूरन उन्हें लेवाल की मनमानी कीमत पर माल बेचना पड़ता है, ऐसी ही बात बिकवाल के लिए भी है, और ऐसे ही सौदों को सट्टा या फाटका कहते हैं।

सन् १९१४ के प्रथम महायुद्ध ने ही कानपुर को 'सट्टेबाजी' का चस्का लगा दिया, इसके पहले हमारे नगर के सभी व्यापारी केवल मजदूरी करके रुपये के सवा सोलह आने या पौने सोलह आने का व्यापार करते थे। इस महायुद्ध में ही चीजों की कीमत बढ़ना प्रारम्भ हुआ और यही समय था जब नगर के नवयुवकों में सट्टेबाजी की लत पड़ी।

पहिले पहल यहाँ रंग का सट्टा हुआ। उसके प्रसिद्ध व्यापारी जगन्नाथ जी की गली (जनरलगंज) में थे और वही सट्टेबाजी का प्रमुख अड्डा था। बड़े-बड़े कपड़े, लोहे, गल्ले के व्यापारी इस का सट्टा करने आते और व्यापार करके घाटा मुनाफा करते थे।

बाद में कपड़े और शकर आदि का सट्टा भी खूब हुआ। उस समय लड़ाई के दरम्यान हमारे नगर के व्यापारियों ने कई करोड़ रुपया कमा कर अपनी तिजोरियों में रक्खा, क्योंकि उस समय 'इन्कम टैक्स' या 'अतिरिक्त लाभकर' ने हिन्दुस्तानी व्यापारियों के घर नहीं देखे थे।

इस समय चांदी सोने के सट्टे का बाज़ार नयागंज की बागला बिल्डिंग है। वहाँ प्रतिदिन चांदी की सिलों का सौदा होता रहता है और ड्यू पर भुगतान होता है।

बैंक

गेज़ेटियर के लेखक के मतानुसार सन १९०८ में कानपुर में केवल पांच बेंक थे। बेंक फ़आ बंगाल की कानपुर की शाखा १८६३ में खुली थी, एलायन्स बेंक फ़आ शिमला की शाखा १८८७ में, इलाहाबाद बेंक की शाखा १८८८ में, नेशनल बेंक आफ़ इन्डिया की शाखा १८९८ में और पीपुल्स बेंक आफ़ इन्डिया की शाखा ने १९०८ में काम करना शुरू किया।

इन बेंकों के अतिरिक्त अनेक मारवाड़ी दूकानदार हुण्डी पुर्जे और लेन-देन का कार्य करते थे। कुछ की बड़ी गद्दियां कानपुर में ही थीं और जिनकी बड़ी गद्दियां अन्यत्र थीं उनकी शाखाएं कानपुर में खुल गई थीं। वैजनाथ रामनाथ का फर्म दो भागों में बँट गया था। एक का नाम बैजनाथ जुग्गीलाल पड़ा और दूसरे का नाम बलदेव दास केदारनाथ। पहले का काम श्री जुग्गीलाल जी देखते थे और दूसरे का लाला मूल चन्द। दोनों ही गद्दियां

चटाई मुहाल में थीं और, लेन-देन, रुई, गल्ला आटा और अन्य वस्तुओं का कारबार करती थीं। लाला मूलचन्द गेंजेज फ्लावर मिल और गेंजेज शुगर वर्क्स का भी प्रबंध देखते थे। यह सिंहानिया परिवार फ़रुखाबाद से आकर कानपुर में बसा था। चटाई मोहाल में ही दो बड़ी गद्दियां और थीं। एक थी हाथरस वालों की जिसका नाम फूलचंद जयनारायण पड़ता था और दूसरी थी मिर्जापुर वालों की जिसका नाम बिहारीलाल कुंजी लाल पड़ता था।

काहू कोठी में तेजपाल जमनादास, श्रीनाथ शंकरनाथ और शिवरतनदास मोतीलाल बेंकर्स थे। नयेगंज के बेंकर्स दुलीचीराम रामदयाल, तुलसीराम जियालाल, निहालचंद बलदेवसहाय और जानकीदास जगन्नाथ थे। जानकीदास जगन्नाथ और निहालचंद बलदेवसहाय पहले एक ही में थे। कलेक्टरगंज के बेंकर्स रामचंद जानकीदास, राधाकृष्ण मंगतराय, मथुरादास सत्यनारायण और शिवसुखराय रामकुमार थे। जनरलगंज में बेंकिग का काम करनेवाले मोतीलाल फतेहचंद, गौरीदत्त तुलसीराम, गंगाधर बैजनाथ, रामकर्णदास रामविलास थे। सरकारी खजांची रायबहादुर कंहैयालाल भी बेंकिग का काम करते थे।

× × ×

इस समय शेडयूल्ड (रिजर्व बैंक से स्वीकृत) बैंकों में से निम्न-लिखित बैंकों की शाखायें कानपुर में स्थापित हैं :—

१—इलाहाबाद बैंक लिमिटेड (दो ब्रांच) २—बैंक आफ

बिहार लिमिटेड ३—चार्टर्ड बैंक आफ इण्डिया, आस्ट्रेलिया एण्ड चाइना ४—कलकत्ता नेशनल बैंक (२ ब्रांच) ५—कोमिल्ला बैंकिंग कारपोरेशन ६—सेन्ट्रल बैंक आफ इण्डिया (२ ब्रांच) ७—गाडोदिया बैंक लिमिटेड ८—हिन्दुस्तान कमर्शल बैंक लिमिटेड (६ ब्रांच) ९—हिन्दुस्तान मरकेन्टाइल बैंक १०—इम्पीरियल बैंक आफ इण्डिया (२ ब्रांच) ११—नेशनल बैंक आफ इण्डिया १२—नाथ बैंक १३—न्यू बैंक आफ इण्डिया १४—पंजाब नेशनल बैंक १५—बैंक आफ जयपुर १६—बैंक आफ बीकानेर १७—हबीब बैंक १८—रिजर्व बैंक

(नान शेड्यूल्ड बैंकें)

१९—प्रभात बैंक २०—सोनार बंगाल बैंक २१—यू० पी० प्राविंशियल कोआपरेटिव बैंक २२—उन्नाव कमर्शल बैंक २३—दास बैंक

इलाहाबाद बैंक

दी इलाहाबाद बैंक लिमिटेड ने, जिसकी स्थापना सन् १८६५ में इलाहाबाद में हुई थी, कानपुर में सन् १८८८ में माल रोड पर क्राइस्ट चर्च (गिरजाघर) के पास एक छोटे-से बँगले "बर्दवान की कोठी" में अपनी शाखा खोली। २० वर्ष बाद काम अत्यधिक बढ़ जाने पर बड़े पोस्ट आफिस के पास ठंडी सड़क पर ही एक नया प्लाट खरीद कर बैंक के लिये एक विशाल

इमारत तैयार की गई। सन् १९०२ से बैंक इसी इमारत में चली आई और इस समय बैंक का स्थानीय सदर मुक़ाम इसी में है।

कानपुर जैसे विशाल औद्योगिक नगर का एक आफ़िस से काम चलता न देखकर सन् १९२१ में जनरलगंज बजाजे में सिटी ब्रांच के नाम से बैंक की एक और उप-शाखा खोली गई। उक्त बैंक गत ५० वर्षों से भी अधिक समय से कानपुर नगर के औद्योगिक विकास में महत्वपूर्ण सहयोग प्रदान करती आ रही है। कानपुर के आस-पास का प्रदेश बहुत ही उपजाऊ है अतः देहात में कृषि सम्बन्धी पैदावार के एकत्रीकरण, नगरों तक उसे पहुँचाने तथा बेंचने के काम में भी उक्त बैंक ने विशेष दिलचस्पी ली है और इस दिशा में अन्य बैंकों का पथ-प्रदर्शन किया है।

देहात में इस कानपुर ब्रांच ने अपने ६ पे-आफिस खोल रखे हैं, जो गंगा नदी के सम्पूर्ण मैदान में फैलीहुई बैंक की शाखाओं के बीच जोड़ने वाली एक महत्वपूर्ण कड़ी का काम करते हैं।

चार्टर्ड बैंक

इस बैंक का पूरा नाम 'दी चार्टर्ड बैंक आफ़ इण्डिया, आस्ट्रेलिया एण्ड चाइना' है। इसका निर्माण सन् १८५३ की २९ दिसम्बर को हुआ था। यह ब्रिटेन को उन कतिपय प्रवासी बैंकों में से है जिन्हें ज्वाइन्ट स्टाक बैंकों के प्रारम्भिक दिनों में शाही चार्टर प्राप्त हुआ था। इस प्रकार की अब केवल दो ही बैंकें रह गई हैं। इसलिये यह कोई आश्चर्य की बात नहीं है

कि उक्त बैंक भारतवर्ष में 'चार्टर्ड बैंक' के संक्षिप्त नाम से ही विशेष रूप से प्रसिद्ध है।

इस बैंक की कानपुर शाखा सन् १९२० में चटाई मुहाल में खुली थी। सन् १९२२ में बैंक ने मालरोड पर 'टाटा इन्डस्ट्रियल बैंक लिमिटेड' की इमारत खरीद ली और उसमें अपना आफिस उठा लाई। सन् १९३८ में बैंक ने इसी स्थान पर अपनी नई इमारत बनाई। बैंक की यह इमारत आधुनिक कानपुर की भव्य इमारतों में से एक है। यह बैंक कानपुर की दो एक्सचेंज बैंकों में से एक है जिनके द्वारा कानपुर नगर का अधिकांश निर्यात तथा आयात व्यापार होता है।

इम्पीरियल बैंक

दी इम्पीरियल बैंक आफ इण्डिया के निर्माण का उद्देश्य, दी बैंक आफ बंगाल (स्थापित सन् १८०६), दी बैंक आफ बाम्बे (स्थापित सन् १८४०) तथा बैंक आफ मद्रास (स्थापित सन् १८४३) के काम को एक में मिला देने का था। इम्पीरियल बैंक की स्थापना सन् १९२१ की २७वीं जनवरी को हुई। इसके भारतवर्ष में कलकत्ता, बम्बई तथा मद्रास में स्थानीय हेड आफिस हैं तथा समस्त भारत, बर्मा तथा सीलोन में इसकी कुल २५० शाखायें हैं।

बैंक आफ बंगाल की कानपुर शाखा का उद्घाटन २० सितम्बर सन् १८६४ को हुआ था। यह ठीक उस स्थान पर

खोली गई जो 'असेम्बली रूम्स' के नाम से प्रसिद्ध था तथा जिसने सन् १८५७ के ग़दर में इतनी अधिक ख्याति प्राप्त की थी। उस समय कानपुर का व्यापार शैशवावस्था में था। बैंक आफ़ बंगाल और उसकी उत्तराधिकारी दी इम्पीरियल बैंक आफ़ इण्डिया का तब से अब तक होने वाले कानपुर के औद्योगिक विकास से निकट और महत्वपूर्ण सम्बन्ध रहा है।

नेशनल बैंक

दी नेशनल बैंक आफ़ इण्डिया लिमिटेड की स्थापना सन् १८६३ में हुई थी। बैंक की कानपुर ब्रांच सन् १८९६ की ६ जनवरी को माल रोड में खोली गई थी। सन् १८९८ से १९२२ तक बैंक की ब्रांच नयागंज में तथा सन् १९२२ से १९२४ तक कैनालरेंज (नहर की पटरी) पर रही। सन् १९२४ में सिविल लाइन्स की एक विशाल इमारत में बैंक ने अपना आफ़िस खोला और तब से अब तक उसी में है। यह बैंक एक्सचेंज का काम करती है और कानपुर के व्यवसाइओं को निर्यात तथा आयात व्यापार में सहायता पहुँचाती है। पहले यह बंगालियों की एक संस्था थी किन्तु बाद में ब्रिटेन वालों ने इसे ख़रीद लिया।

पीपुल्स बैंक की, जिसका सदर मुकाम लाहौर था, एक शाखा सन् १९०८ में हटिया में खुली थी। कुछ काल बाद इसका काम बन्द हो गया।

कुछ व्यापारिक परिवार

कानपुर की व्यापारिक उन्नति का श्रेय उन व्यापारियों को है जिन्होंने सन् १७७८ के आसपास बस कर यहाँ व्यापार शुरू किया था, जब कि यहाँ ईस्ट इन्डिया कम्पनी की एजेन्सी स्थापित हुई थी। वैसे तो नगर की तरक्की का यश सभी छोटे-बड़े व्यापारियों को है जिनका अब कोई पता नहीं है। परन्तु कुछ परिवार ऐसे हैं जो अब तक कानपुर के उद्योग और व्यापार की वृद्धि में अपना सहयोग प्रदान कर रहे हैं। उनमें से सिंघानियां परिवार, नारनौलिये, बागला बन्धु, कानोडिया लोग आदि कई ऐसे व्यापारी हैं जिनका संक्षिप्त हाल कानपुर के उद्योग और व्यापार के सम्बन्ध में देना आवश्यक है। जिन व्यापारियों का वर्णन हमें प्राप्त नहीं हो सका उनका भी हाथ कानपुर के बनाने में अवश्य रहा होगा परन्तु हमारी अज्ञानतावश ही उनका नाम छूट गया है।

नारनौलियों के मूल पुरुष लाला सवाईराम थे, जो महिम के रहने वाले थे और औरंगजेब के जमाने में भाग कर नारनौल आये थे। उनके पुत्र रामसहाय, जिनके पुत्र चैनसुखदास के चार लड़के मंगनीराम, हरगोपाल, बहालराम और गोविन्दराम हुए। इन्हीं मंगनीराम और हरगोपाल से कानपुर के सारे नारनौली परिवार चालू हुए हैं। कानपुर में नारनौलियों में सब से पहले आने वाले लाला जानकीदास थे जो लाला मंगनीराम के जेष्ठ

पुत्र थे और लाला अमरचन्द के पिता थे। ला० अमर चन्द के पुत्र नित्यानन्द और उनके पुत्र लाला देवकीनन्दन हुये। जानकीराम जी नारनौल से १८३५ में लखनऊ आये। उनकी उम्र उस समय १४ वर्ष की थी। उनको लाने वाले श्री शिवबक्स महेश्वरी थे। उन्होंने नमक, गल्ला, गुड़ और रुई का काम किया। इनके साथी शिवबक्श महेश्वरी इनके ≥) के पार्टनर बने। इनके फर्म का नाम मंगनीराम जानकीदास पड़ा। कानपुर में श्री शिवबक्स महेश्वरी की दुकान का नाम शिवबक्स श्रीनारायण पड़ता था। श्री बलदेवसहाय १८५४ में श्री जानकीराम के साथ लखनऊ आये। १८५५में कानपुर के नयेगंज मोहल्ले में जानकीदास बलदेवसहाय फर्म खुला। मंगनीराम के दूसरे पुत्र लाला जगन्नाथ के पुत्र लाला महादेवप्रसाद हुए जिनके दत्तक पुत्र श्री रघुनाथप्रसाद जी हैं, जो श्रीराम महादेवप्रसाद फर्म के पार्टनर हैं।

लाला हरगोपाल के तीन पुत्र हुए लाला निहालचन्द, बलदेवप्रसाद और रामजसमल। कानपुर में आने वाले दूसरे नारनौली लाला बलदेवप्रसाद थे। इनके पुत्र लाला छंगामल के तीन लड़के हुए, लाला गयाप्रसाद, लाला रूपनारायण और लाला रामचन्द्र। श्री मोतीचन्द और श्रीकृष्णचन्द लाला रामचन्द्र जी के पुत्र हैं जो अपनी गद्दी को चला रहे हैं। लाला निहालचन्द के तीन पुत्र हुए, लाला किशोरीलाल, लाला रामानन्द लाला बृजलाल। किशोरीलाल जी के तीन पुत्रों में से लाला

श्री नन्हेमल गुप्त

लाला लच्छीराम घी वाले

रामबिलास को स्वर्गवास हो गया और लाला रामेश्वरदास तथा लाला विष्णुदयाल निहालचन्द किशोरीलाल की गद्दी चला रहे हैं। लाला रामानन्द के पाँच पुत्र हैं—लाला रामकृष्ण, लाला अयोध्याप्रसाद, लाला सूरजप्रसाद, लाला नर्वदाप्रसाद और लाला रामजीलाल। इन्हीं पाँचों भाइयों के पास विक्टोरिया मिल की एजेन्सी है। लाला निहालचन्द और लाला बलदेवप्रसाद के तीसरे भाई लाला रामजसमल के ६ पुत्र हुए। पहले, लाला जयनारायण का काम गड़बड़ हो गया है, दूसरे, लाला हरनारायण बड़े भक्त थे और इनके पुत्र लाला चुन्नीलाल तथा मोहनलाल लाला श्रीराम महादेव के फर्म में पार्टनर हैं।

सम्वत १९३० विक्रमी में (बाबा) तुलसीराम और (लाला) मानसिंह इस फर्म में गुमाश्ते मुकर्रर हुए। सन् १८६७ में श्री जानकीदास का स्वर्गवास हो गया। इनके पुत्र श्री अमरचन्द ने अपने फर्म जानकीदास बलदेवसहाय की तरफ से भगवद्दास घाट पर सम्वत १९४१ में एक घाट और एक शिवालय बनवाया। स्वामी दयानन्द जी सरस्वती के कानपुर आने पर उनके सम्पर्क में आकर श्री अमरचन्द उनसे प्रभावित हुए और उन्होंने संस्कृत की तीन पाठशालाएं खोलीं तथा तीन सदावर्त भी स्थापित किये। इन पाठशालाओं में से फैजाबाद और नारनौल की पाठशालाएं चालू हैं किन्तु कानपुर की पाठशाला बन्द हो गई है। इन्हीं अमरचन्द जी ने कई कुएं और धर्मशालाएं भी बनवाई थीं।

सम्वत १९४२ में फर्म जानकीदास बलदेवसहाय बंट गया। श्री अमरचन्द ने अपने फर्म का नाम जानकीदास जगन्नाथ डाला। अपनी औद्योगिक प्रवृत्ति से प्रेरित होकर इन्होंने सन् १८८८ में अनवरगंज मोहल्ले में अमरचन्द बदरीदास के नाम से ओम काटन जिनिंग फैक्टरी, स्थापित की जिसमें ४० जीनें थीं। इस फैक्टरी में इनके साझी लाला बदरीदास जी थे, जो हमारे नगर के बाबू रामनारायण खजांची के पिता थे। यह फैक्टरी आजकल श्री देवकीनन्दन के पास है। इसके पूर्व ही सम्वत १९५६ में लाला महादेवप्रसाद अपने परिवार से अलग हो गये थे। सम्वत १९६१ में श्री अमरचन्द के तीनों लड़कों में भी बँटवारा हो गया। बँटवारे के बाद श्री नित्यानन्द ने अपने फर्म का नाम मंगनीराम जानकीदास रखा और बँटवारा में इन्हें ओम मिल, फैजाबाद की जायदाद तथा नयेगंज का मकान मिला। सम्वत १९८० में श्री नित्यानन्द जी का स्वर्गवास हो गया। उस समय श्री देवकीनन्दन की अवस्था केवल ८ वर्ष की थी। अतः उन्होंने बाबा तुलसीराम की निगरानी में नयेगंज में काम सीखा और सम्वत १९९१ में अपना काम सम्हाल कर अपने फर्म का नाम नित्यानन्द देवकीनन्दन रखा। इस समय इनके मिल में तेल, चावल और दाल का काम होता है और कलक्टरगंज की दुकान में गल्ला, तिलहन, रुई, नमक, गुड़ और शकर की आढ़त का काम होता है तथा नयेगंज में यह फर्म हुण्डी-पर्चों, बैंकिंग और शेयरों का काम करती है।

जानकीदास बलदेवसहाय में संवत १९४२ में बटवारा हुआ और श्री बलदेवसहाय ने अपने फर्म का नाम बलदेवसहाय रामजस रखा। १९४५ में श्री रामजस अलग हो गये और फर्म का नाम निहालचन्द बलदेवसहाय पड़ा। इस फर्म ने गल्ले का काम छोड़कर म्योर मिल की एजेन्सी ले ली, अफ़ीम की कोठी मोहल्ले में जानसन जिनिंग मिल खरीदा और दिल्ली, अमृतसर आदि में कपड़े की दुकानें खोलीं। बाबा तुलसी-राम और लाला मानसिंह के कार्य से प्रसन्न होकर फर्म ने उन्हें बजाय मुनीम के सम्बत १९५० में अपना पार्टनर बना लिया।

लखनऊ में बाग़ियों को खाना देने के अभियोग में लाला जानकीदास और लाला बलदेवसहाय पर आफ़त आगई थी। अतः ये दोनों सज्जन भाग कर कानपुर आगये और यहाँ से नारनौल चले गये। ये लोग दो वर्ष बाद लौटे और १००००)रु० दण्ड देने पर इनकी जान बची। इसी दस हज़ार रुपये से यहाँ का मेमोरियल गार्डन बना। सम्वत १९६७ में लाला बलदेव सहाय का स्वर्गवास होगया। इनके फर्म ने आगे चल कर रूपना-रायण रामचन्द्र के नाम से एलगिन मिल और टेक्सटाइल मिल की एजेन्सी प्राप्त कर ली और जनरलगंज में दूकान खोल ली। इस फर्म के इनचार्ज लाला मोतीलाल जी बनाये गये। इस परिवार के लाला जानकीदास, लाला बलदेवसहाय, लाला अमर चन्द्र और लाला श्रीराम बड़े कुशल व्यापारी थे।

सम्वन १९७१ में फर्म निहालचन्द बलदेवसहाय से लाला किशोरीलाल अलग हुए और उन्होंने अपने फर्म का नाम निहालचन्द किशोरीलाल रखा। इस नये फ़र्म ने कोपरगंज का न्यू फ्लावर मिल ख़रीद लिया और तेल के तीन मिल बनाये; १ राजेन्द्रआयल मिल, जूही, २ निहालचन्द किशोरीलाल तेल मिल, बांस मड़ी और ३ तेल मिल इटावा। बांस मंडी का मिल अब श्री दुर्गा बाबू के पास आगया है।

मरते समय लाला बलदेवसहाय बाबा तुलसीराम को अपने फर्म का एकमात्र उत्तराधिकारी बना गये। इनका फर्म उस समय बैंकिंग का तथा मिलों को रुई सप्लाई करने का काम करता था। ये उस समय के सबसे बड़े आदमी समझे जाते थे और दुकान पर दो-ढाई लाख रुपया नक़द रखते थे। इनकी नयेगंज की दुकान पर २०-२५ मुनीम काम करते थे। लाला बलदेवसहाय करोड़पती हो चुके थे।

लाला रूपनारायण ने अपने बाबा की स्मृति में सम्वत १९-७७ में श्री बलदेवसहाय संस्कृत महाविद्यालय नयेगंज में स्थापित किया, जो इस समय ममरखांताल में है और पं० चन्द्रशेखर शास्त्री उसके अध्यक्ष हैं। सम्वत १९८३ में लाला रूपनारायण का स्वर्गवास अल्प आयु में ही हो गया सम्वत १९८३-८४ में लाला रामचन्द्र ने अपने पिता लाला छंगामल की स्मृति में गुप्तार घाट पर एक दिव्य घाट बनवाया। लाला रामचन्द्र का भी थोड़ी उम्र में सम्वत २००२ में स्वर्गवास होगया।

इस फर्म ने सम्वत १९०७ में बसना पूजकर फर्म निहालचन्द बलदेवसहाय को बन्द कर दिया। किन्तु फर्म के पुराने हिस्सेदारों की पार्टनरशिप फर्म रूपनारायण रामचन्द्र में है, अर्थात इस फर्म के हिस्सेदार श्री सरवनलाल, श्री मोतीचन्द, श्री कैलाशनाथ, तथा लाला मानसिंह के अन्य पुत्र और श्री रामानन्द के ५ पुत्र हैं।

लाला निहालचन्द और लाला बलदेवसहाय के तीसरे भाई रामजसमल ने अपने फर्म का नाम रामजसमल श्रीराम रखा था। श्रीराम जी इनके तीसरे पुत्र थे। कुछ दिन बाद इनके लड़के श्री जयनारायण और श्री रामकरण दास इनसे अलग हो गये। लाला रामजसमल की मृत्यु के बाद लाला श्रीराम ने लाला महादेवप्रसाद के साझे में शुरू-शुरू में छोटेलाल गयाप्रसाद से रेल बाजार में एक फ्लावर मिल खरीदा और बाद में प्रीमियर तेल मिल और बिजली तेल मिल खरीदे, भिवानी में कपड़े का एक कारखाना लीज़ पर लिया। इस फर्म ने कमसरियट में भी काम किया था। लाला श्रीराम बड़े पुण्यात्मा थे और महीने में लगभग ४०००) रु० पुण्य किया करते थे।

सम्वत १९५८ में रेल बाजार का जो मिल इन्होंने खरीदा था वह मिल आज भी चालू है। इसमें कई नई-नई मशीनें लगाई गई हैं और इसमें आटा और तेल आदि का काफ़ी काम होता है। इस मील ने प्रथम जर्मन युद्ध में करीब-करीब तीस पैंतीस लाख रुपया कमाया था। लाला कामताप्रसाद ने इस मील की काफी तरक्की की है और दाल तथा धान आदि की मशीनें

लगा कर नया कारखाना भी चलाया है। इनकी गल्ले की आढ़त की एक दुकान कलक्टरगंज में भी है जिसमें कामताप्रसाद रघुनाथप्रसाद नाम पड़ता है। श्रीराम जी के दूसरे पुत्र लाला सूरजप्रसाद भी शामिल फर्म श्रीराम महादेवप्रसाद हैं।

लाला हरनारायण लाला रामजसमल के दूसरे पुत्र थे और बड़े भक्त आदमी थे। इनके पुत्र श्री चुन्नीलाल और श्री सोहन-लाल भी फर्म श्रीराम महादेवप्रसाद में भागीदार हैं। श्री चुन्नीलाल के पुत्र श्री हरीशंकर और गौरीशंकर हैं। श्री हरीशंकर ने जापान से सीख आकर ड्रम की एक फैक्टरी खोली है।

लाला रामजसमल के चौथे पुत्र लाला कन्हैयालाल और पांचवें रामकरनदास तथा छठे श्री परमानन्द थे। श्री रामकरन दास के पुत्र श्री मनोहरलाल और श्री रामनाथ हैं। श्री परमानंद के पुत्र श्री हरप्रसाद तथा लाला मुन्नालाल हैं, जो शामिल फर्म श्रीराम महादेवप्रसाद हैं।

इस परिवार का हाल अधूरा ही रह जायेगा यदि बाबा तुलसीराम का ज़िक्र न किया जाये। यह नारनौल के गौड़ ब्राह्मण थे और पण्डित मनीराम के गोद आये थे। इनके दो पुत्र जगन्नाथ और रामनाथ हुये। जगन्नाथ ने एक मेम से शादी कर ली और ईसाई हो गये। रामनाथ के दो पुत्र रामकुमार और छुन्नू हुए। रामकुमार का लड़का दिल्ली में है।

फर्म निहालचन्द बलदेवसहाय के दूसरे गुमाश्ते लाला मानसिंह थे, जिनके ५ पुत्र हुए: -

१ ला० शिवप्रसाद, २ ला० मुसद्दीलाल, ३ ला० मोतीलाल, ४ ला० राधेलाल और ५ लाला श्रीराम। सब का काम अलग-अलग है और रूपनारायण रामचन्द्र का काम लाला मोतीलाल के जेष्ठ पुत्र श्री कैलाशनाथ सम्हाले हुए हैं और काम को तरक्की दे रहे हैं। अब इनके पास काटन मिल की एजेन्सी भी आ गई है जो ला० मोतीचन्द की देख रेख में है। श्री कैलाश बाबू बड़े होनहार प्रतीत होते हैं।

कानोड़िया

पटियाला प्रान्त के कानोड़ स्थान के श्री राधाकृष्ण जी ने लखनऊ में आकर व्यापार शुरू किया और सन ५७ के गदर के एक साल बाद सन १८५८ में लखनऊ से वह कानपुर आये। सम्वत १९१०—१४ तक उनकी दुकान लखनऊ में भी रही। सम्वत १९१५ में उन्होंने कानपुर के रेल बाजार में नमक की दुकान की। उस समय रेल बाजार में चुंगी नहीं लगती थी। अतः रेल बाजार ही उस समय की मण्डी थी। सम्वत १९५२ तक रेल बाजार की चुंगी बन्द रही। श्री राधाकृष्ण के ६ लड़के थे और सब से बड़े लड़के श्री मंगतराय थे। दुकान का नाम राधाकृष्ण मंगतराय पड़ता था। सं० १९५२ में श्री राधाकृष्ण का देहान्त हो गया। सं० १९५३ में इस फर्म की तीन दुकानें कानपुर में थीं। नमक और तेल की कलक्टरगंज में, गल्ले और नमक की आढ़त की नयेगंज में और शकर की आढ़त की जनरलगंज में।

इस फर्म का बँटवारा सं० १९५७ में हुआ जिसकी लिखा पढ़ी श्री राधाकृष्ण जी सं० १९४८ में कर गये थे। राधाकृष्ण मंगतराय के नाम की दो दुकानें रहीं और तीसरी कलक्टरगंज वाली दुकान का नाम बैजनाथ ताराचन्द पड़ा। राधाकृष्ण जी के दूसरे पुत्र श्री गनपतराय ने झांसी, मऊ रानीपुर तथा ललितपुर में शिवसुखराय रामकुमार के साझे में दुकानें कीं। सं० १९६५ में श्री गनपतराय ने गनपतराय विश्वनाथ के नाम से दुकान की। विश्वनाथ उनके बड़े लड़के थे और दूसरे का नाम श्री बिन्देश्वरीप्रसाद था। १९८२ तक दोनों भाई एक में साम्हर और मुरादाबाद में दुकानें करते रहे। तीसरे पुत्र श्री सादीराम ने अपने छोटे भाई श्री रामनिरंजन के साथ नयेगंज और जनरलगंज में दो दुकानें कीं। सं० १९६० में श्री सादीराम और श्री रामनिरंजन भी बँट गये। अतः सादीराम जी की दुकानों का नाम सादीराम गंगाप्रसाद पड़ा। किन्तु स० १९६५ में श्री सादीराम जी का काम फेल हो गया और वह कलकत्ते चले गये। सं० १९७४ में कलकत्ते से लौट कर सादीराम जी ने श्री मुर्लीधर सिंहानियां का "गैंजेज फ्लावर मिल" नीलाम में खरीदा और अपना १९६५ का कर्ज़ अदा किया।

श्री राधाकृष्ण के चौथे पुत्र श्री नन्दकिशोर ने सं० १९५२ में अपने छोटे भाइयों के साथ नयागंज और कलक्टरगंज में दो दुकानें कीं। नयेगंज की दुकान सं० १९३१ से थी और उसका गनपतराय सादीराम नाम पड़ता था किन्तु अब उसका

नाम नन्दकिशोर हरप्रसाद पड़ा। इस पर नमक और गल्ले की आढ़त का काम होता था। इसमें श्री रामनिरंजन भी शामिल थे और श्री शंकरदास भी साझी थे। कलक्टरगंज वाली दूसरी दुकान पर राधाकृष्ण नन्दकिशोर नाम पड़ा और यह १९५२ से १९५७ तक रही। श्री नन्दकिशोर जी १९६५ तक कानपुर में रहे और बाद में भिवाणी चले गये। इनके लड़के सर्वश्री रामचन्द्र, गौरीशंकर, चेतराम भिवाणी और साम्हर में दुकाने करते हैं और कानपुर में नहीं हैं। १९६५ तक उनके दोनों छोटे भाई श्री रामनिरंजन और श्री हरप्रसाद उनके साथ ही रहे किन्तु इसी सालमें श्री रामनिरंजन और हरप्रसाद ने अलग होकर अपने फर्म का नाम रामनिरंजन हरप्रसाद रखा। इन्होंने १९७० में अपनी एक ब्रांच साम्हर में भी स्थापित कर दी।

सम्बत १९८९ में श्री रामनिरंजन श्री हरप्रसाद से अलग हो गये और नयेगंज की दुकान का नाम रामनिरंजन काली चरन पड़ा जो अब तक है। श्री कालीचरण श्री रामनिरंजन के लड़के हैं। श्री हरप्रसाद को साम्हर की दुकान मिली जिसका नाम हरप्रसाद पूरनमल पड़ा। श्री हरप्रसाद जी सं० १९७० में साम्हर चले गये और १९८९ तक वहीं रहे। सं० २००० में वह फिर कानपुर लौट आये और कलक्टरगंज में हरप्रसाद जगदीश प्रसाद के नाम से नमक, शक्कर आदि की दुकान स्थापित की। सं० २००७ में श्री हरप्रसाद का देहान्त हो गया किंतु दुकान है और उनके बड़े लड़के श्री जगदीशप्रसाद उसका संचालनकरते हैं।

सिंहानिया

सिंहानिया परिवार के मूल पुरुष ला० विनोदीराम जी लगभग २०० वर्ष पहले बिसाऊ से फरुखाबाद आये और वहां विनोदीराम रामसुख के नाम से कारबार शुरू किया। ला० रामसुखदास उनके पुत्र थे जिनके दो पुत्र ला० सेवाराम जी और ला० हरनन्दराम जी हुए। इन्हीं सेवाराम जी के नाम से आज भी रेल बाजार में सेवाराम सागर बना हुआ है जो एक पक्का तालाब है, जिसके बीच में पत्थर का एक स्तम्भ खड़ा है और उत्तर किनारे पर एक जनाना घाट बना है। तालाब के आसपास एक बाग भी लगा हुआ है जो आजकल बिना देख भाल के पड़ा हुआ है और तालाब सूखा है। ला० सेवाराम जी लगभग ५० वर्ष बाद अर्थात अब से १५० वर्ष पहले अपने दोनों पुत्रों श्री बलदेवदास जी और श्री मुन्नालाल जी उर्फ रामकिशनदास जी के साथ फरुखाबाद से मिर्जापुर गये और उसी समय के लगभग कानपुर भी आये और यहां भी कारबार शुरू किया। ला० बलदेवदास के छः पुत्र थे—(१) विशेश्वरलाल जी (२) बाबूलाल जी (३) बैजनाथ जी (४) केदारनाथ जी (५) रामनाथ जी (६) जुग्गीलाल जी। उस समय कानपुर की फर्म का नाम बैजनाथ रामनाथ था। और मिर्जापुर में सेवाराम बलदेवदास नाम पड़ता था तथा उसी नाम से कलकत्ते में भी काम होता था। ला० सेवाराम ने अपने लड़कों का बँटवारा कर दिया। इसके बाद मिर्जापुर की फर्म का नाम सेवाराम मुन्नालाल हो गया। ला०

विशेश्वरलाल के पुत्र श्री काशीनाथ जी और श्री सत्यनारायण जी हुए। ला० बलदेवदास जी के दूसरे पुत्र श्री बाबूलाल जी का वंश आगे नहीं चला तथा तीसरे पुत्र श्री बैजनाथ जी के दो पुत्र हुए—श्री पोखीराम जी और श्री बालमुकुन्द जी उर्फ गिन्नी बाबू। श्री पोखीराम जी के पुत्र श्री गंगाप्रसाद जी हुए और गिन्नी बाबू ने लाला जुग्गीलाल के दूसरे पुत्र श्री बांकेबिहारीलाल को गोद ले लिया जिनके पुत्र श्री मदनबिहारीलाल हुए। श्री बलदेवदास जी के चौथे पुत्र ला० केदारनाथ के दो विवाह हुए। पहली स्त्री से श्री मुर्लीधर जी हुए और दूसरी से श्री नन्हेमल जी उर्फ नन्हे बाबू। श्री मुर्लीधर जी के ५ पुत्र हुए—१ श्री हरद्वारीलाल जी, जिनके पुत्र श्री प्यारेलाल और श्री मदनलाल हुए, २ श्री दुर्गाप्रसाद जी जिनके पुत्र श्री गौरीशंकर और श्री बनारसीलाल हुए, ३ श्री हीरालाल, ४ श्री पुरुषोत्तमदास जी, जो जे० के० जूट मिल के डाइरेक्टर हैं और इनके तीन पुत्र हैं श्री बनवारी, श्री रघुवीर और श्री कन्हैयालाल, ५ श्री सोहनलाल जी जो जे० के० काटन मिल के डाइरेक्टर हैं, इनके २ पुत्र हैं श्री सीताराम और श्री ललितकुमार। श्री नन्हे बाबू के भी ५ पुत्र हुए—१ श्री ऐश नारायण जिनके लड़के पन्नालाल हैं, २ श्री रोशनलाल जिनके लड़के कृष्णकुमार हैं, ३ श्री सत्यनारायण, ४ श्री श्यामनारायण, ५ श्री हरीनारायण, ।

श्री बलदेवदास जी के पाँचवें पुत्र ला० रामनाथ जी थे और छठे तथा सब से छोटे ला० जुग्गीलाल जी थे। जब श्री पोखी-

राम जी अलग हुए तब फर्म का नाम "बैजनाथ जुग्गीलाल" पड़ा और ३० वर्ष के बाद जब श्री बांकेबिहारी अलग हुए तब से फर्म का नाम जुग्गीलाल कमलापत पड़ा। यह घटना सम्वत १९६२ की है। ला० जुग्गीलाल के तीन पुत्र हुए—१ ला० कमलापत, २ ला० बांकेबिहारी, जो गिन्नी बाबू के गोद चले गये, और तीसरे ला० राधाकृष्ण जी जो अभी जीवित हैं और जिनके पुत्र श्री हेमन्तपत हैं। ला० कमलापत के तीन पुत्र हैं। सब से बड़े सर पद्मपत जी जो कानपुर की गद्दी सम्हाले हैं, मंझले श्री कैलाशपत जी बम्बई का कारबार देखते हैं और सबसे छोटे श्री लक्ष्मीपत जी कलकत्ते में एलम्युनियम आदि के काम की देखभाल करते हैं। श्री पद्मपत जी के चार पुत्र हैं १ श्री गोपालकृष्ण, २ श्री गौरहरी, ३ श्री गोविन्दकृष्ण, ४ श्री गिरधर कृष्ण। श्री कैलाशपत के दो पुत्र हैं—श्री विजयपत और श्री अजयपत। श्री लक्ष्मीपत के तीनों पुत्र के नाम हैं श्री हरीशंकर, श्री भरतपत और श्री रघुपत।

बैजनाथ रामनाथ के नाम का फर्म सम्वत १९६२ तक चलता रहा। उस समय उसके निम्नलिखित कारबार थेः—

१—द्वारिकाधीश जूट मिल, बिहारीलाल कुंजीलाल जूट मिल और महेश्वरीदेवी जूट मिल।

२—कानपुर हाइड्रोलिक प्रेस एसोसियेशन।

३—जिनिंग फैक्ट्री

४—गंजेज फ्लावर मिल्स

५—कानपुर फ्लावर मिल्स
६—इटावा जिनिंग फैक्ट्री
७—करवी जिनिंग फैक्ट्री

यह फर्म कानपुर काटन मिल्स की सेलिंग एजेन्ट भी थी और ला० मुरलीधर काकोमी के मैनेजिंग एजेन्ट थे। वह ५०००) मासिक तनख्वाह पाते थे। जिस समय मिस्टर वेस्ट विक्टोरिया मिल के मैनेजिंग एजेन्ट थे उस समय बैजनाथ रामनाथ का फर्म विक्टोरिया मिल्स के कमीशन एजेन्ट था और कुछ समय तक ये लोग एलगिन मिल्स के भी कमीशन एजेन्ट रहे। उसी समय ला० जुग्गीलाल ने ला० भगवानदास के साझे में "पीसगुड्स" का दफ्तर काहू की कोठी में खोला था जिसमें श्री नारायणप्रसाद अरोड़ा ने कुछ दिन दफ्तर का काम सीखा था। यह घटना सन १९०२ की है।

सम्वत १९६२ के बाद फर्म दो भागों में बंट गया। एक का नाम हुआ बैजनाथ जुग्गी लाल और दूसरा नाम पड़ा बलदेव दास केदार नाथ। गद्दी भी दो हो गईं; आधी गद्दी के मालिक लाला जुग्गीलाल हुए और आधी के मुरलीधर जी। बाद में मुकदमेंबाजी हुई और लाला मुरलीधर को कानपुर छोड़ना पड़ा

सम्वत १९७५ में फर्म बैजनाथ जुग्गीलाल भी दो हिस्सों में बँट गई। एक का नाम पड़ा जुग्गीलाल कमलापत और दूसरी का बैजनाथ बालमुकुन्द। आगरा के चार मिल्स जिनका काम मिस्टर जोन देखते थे वे जुग्गीलाल कमलापत के फर्म के पास

आये और यह १५-२० वर्ष तक उनके कमीशन एजेन्ट रहे। और ऊलन मिल, शराब मिल तथा शकर मिल जो अब तक लाला जुग्गीलाल के पास थे वे श्री बाँके बाबू के पास चली गईं। इस बीच में लाला कमलापत ने १९२० में अपने कानपुर जे० के० काटन मिल्स की नीव डाली जो आज एक लहलहाता हुआ वृक्ष बन गया है।

इस मिल की प्रारम्भिक अवस्था में इसमें २५००० तकुए और ५०० लूम्स थे किन्तु आज इसमें ४४९६४ तकुए और १११६ लूम्स हैं।

इस समय इस फर्म के निम्नलिखित कारखाने हैं:—

१ जे० के० काटन स्पिनिंग एंड वीविंग कम्पनी लिमिटेड, कानपुर
२ जे० के० काटन मेन्युफैक्चरर्स लिमिटेड, कानपुर
३ न्यू कैसरे हिन्द स्पिनिंग एंड वीविंग कम्पनी लिमिटेड, बम्बई
४ जे० के० जिनिंग फेक्टरीज़ कानपुर, इटावा और कर्वी
५ रेमण्ड ऊलन मिल्स लिमिटेड, बम्बई
६ जे० के० ऊलन मेन्यूफैक्चरर्स, कानपुर
७ जुग्गीलाल कमलापत होज़री फैक्टरी, कानपुर
८ जे० के० होज़री फैक्टरी लिमिटेड कलकत्ता
९ जे० के० जूट मिल्स कम्पनी लिमिटेड कानपुर
१० कमलापत मोतीलाल शकर मिल्स कानपुर और फैज़ाबाद

११ मोतीलाल पद्मपत शक्कर मिल्स कम्पनी लिमिटेड मभौली
१२ जे० के० तेल मिल्स और सोप फैक्टरी, कानपुर
१३ कमलापत आइस फैक्टरी, कानपुर
१४ रिफार्म फ्लावर मिल्स लिमिटेड, कलकत्ता
१५ स्नोव्हाइट फूड प्रोडक्टस कम्पनी लिमिटेड, कलकत्ता
१६ हवड़ा सोप कम्पनी लिमिटेड, कलकत्ता
१७ भूपाल तेल और आटा मिल्स लिमिटेड, भूपाल
१८ जे० के० आइरन एंड स्टील कम्पनी लिमिटेड, कानपुर
१९ एलम्यूनियम कारपोरेशन आफ इन्डिया लिमिटेड कलकत्ता और जे० के० नगर
२० जे० के० एलआयज लिमिटेड, कलकत्ता
२१ जे० के स्टील लिमिटेड कलकत्ता
२२ बिहार माइन्स लिमिटेड, कलकत्ता
२३ मध्य प्रदेश माइन्स लिमिटेड नागपुर
२४ प्लास्टिक प्रोडक्टस, लिमिटेड, कानपुर
२५ प्लाइउड प्रोडक्टस सीतापुर
२६ स्ट्रा प्रोडक्टस लिमिटेड भूपाल
२७ ईस्टर्न केमिकल्स कम्पनी, बम्बई
२८ जे० के० केमिकल्स लिमिटेड, बम्बई
२९ आयुर्वेदिक और यूनानी मेडिसन्स लिमिटेड कानपुर
३० होई राबसन बार्नल एन्ड कम्पनी लिमिटेड कलकत्ता
३१ जुग्गीलाल कमलापत बैंकर्स कानपुर

३२ हिन्दुस्तान कमर्शल बेंक लिमिटेड, कानपुर (मय ४६ शाखाओं के)

३३ नेशनल इन्शोरेन्स कम्पनी लिमिटेड, कलकत्ता (मय ४५ शाखाओं के)

३४ नेशनल फायर एन्ड जनरल इंशोरेन्स कम्पनी लिमिटेड, कलकत्ता (मय २१ शाखाओं के)

३५ जे० के० इन्वेस्टमेंट ट्रस्ट लिमिटेड, कानपुर

३६ बेङ्गाल और आसाम इन्वेस्टर्स लिमिटेड, कलकत्ता

३७ जे० के० इन्वेस्टर्स लिमिटेड, बम्बई

३८ जे० के० प्रोपरटीज लिमिटेड, कलकत्ता

३९ जे० के० सुल्तानपुर जिमीन्दारी, फार्विसगंज

४० न्यू इडिया बिल्डिग एन्ड लैंड इम्प्रूवमेंट सोसायटी लिमिटेड, कलकत्ता

४१ टालीगंज सिल्क प्राडक्टस लिमिटेड, कलकत्ता

बागला

राजस्थान की बीकानेर रियासत के चूरू नामक स्थान से बागला बन्धुओं के पूर्वज सौ वर्ष से ऊपर हुए तब आकर फरुखाबाद नगर में बसे और व्यापार करने लगे। उस समय फरुखाबाद एक ऐतिहासिक स्थान तथा कपड़े और अनाज की एक बड़ी मंडी थी। ला० रामेश्वरप्रसाद और ला० हरीशंकर बागला के परदादा ला० गंगाधरजी सन १८५७ के आसपास फरुखाबाद से कानपुर आ गये और गंगाधर

श्री बंशीधर कसेरा

श्री के० जी० ठाकुरदास

केदारनाथ के नाम से अपना कारबार शुरू किया। इसी फर्म के वंशज आज गंगाधर बैजनाथ के नाम से गद्दी चला रहे हैं। सन १९१७ में ला० गंगाधर जी का स्वर्गवास हो गया। उनके एकमात्र पुत्र का नाम ला० मद्दीलाल था, जिनके पुत्र ला० दीनानाथ जी थे। यह अपने पिता और बाबा के समय से ही दुकान का कारबार देखने लगे थे। ला० दीनानाथ बड़े मिलनसार कारबारी और सार्वजनिक कामों में रुचि रखने वाले थे। उन्हें मारवाड़ी समाज की उन्नति का सदैव ख्याल रहता था। मारवाड़ी विद्यालय, यू० पी० चेम्बर आफ़ कामर्स, तथा अपर इन्डिया चेम्बर आफ़ कामर्स की स्थापना में उनका पूरा सहयोग था। किन्तु दुर्भाग्य से केवल ३६ वर्ष की आयु में ही सन १९१८ में उनका स्वर्गवास हो गया।

अपने पिता के देहान्त के समय ला० रामेश्वरप्रसाद बागला केवल १४ वर्ष के थे। दोनों भाइयों में बड़े होने के कारण फर्म और परिवार की सारी ज़िम्मेदारी उन्हीं के सर पर आ पड़ी। अतः उन्हें अपना अध्ययन छोड़ कर व्यापार में लगना पड़ा। उस समय गंगाधर बैजनाथ का फर्म कानपुर के स्वदेशी काटन मिल्स का एकमात्र सेलिंग एजेन्ट था। चूंकि बागला बन्धु छोटे थे अतएव मिस्टर हार्समैन ने उन्हें व्यापार में कुशल बनाने की ज़िम्मेदारी अपने सर ओढ़ली। व्यापार में कुशलता प्राप्त करते ही दोनों भाइयों ने अपने कारबार में

उन्नति करना प्रारम्भ कर दिया। इस समय 'बागला ग्रुप' में कई कारखाने शामिल हैं। एशिया की कपड़े की सबसे बड़ी इकाई "इन्डिया युनाइटेड मिल्स लि० बम्बई" सन १९४३ में सर विक्टर सासून के अधिकार से श्री रामेश्वरप्रसाद जी के हाथ में आ गई। उन्होंने 'अग्रवाल एन्ड कम्पनी' की स्थापना करके इन्डिया युनाइटेड मिल्स की मैनेजिंग एजेन्सी प्राप्त कर ली। उन्होंने १९३६ में महेश्वरीदेवी जूट मिल को चालू किया और १९५० में म्योर मिल्स का अधिकार प्राप्त किया।

बागला बन्धुओं का एक और कारबार "अपर इन्डिया कोल्ड स्टोरेज लि०" भी है। श्री रामेश्वरप्रसाद जी कल्याण मिल्स, इन्डिया युनाइटेड मिल्स, और म्योर मिल्स के बोर्ड आफ डाइरेक्टर्स के चेयरमैन हैं तथा १० वर्ष तक म्युनिसिपल बोर्ड के चेयरमैन रहे हैं। २६ वर्ष की उम्र में चुने जाकर १९३० से १९३४ तक यू० पी० के शहरों की ओर से केन्द्रीय धारा सभा के मेम्बर भी रहे हैं। वह यू० पी० चेम्बर आफ कामर्स के मंत्री और सभापति भी रह चुके हैं तथा कई बार विदेश यात्रा भी कर आये हैं। सन १९४८ की जेनेवा कानफरेन्स में वह व्यापारियों के प्रतिनिधि स्वरूप शामिल हुए और ज्वाइन्ट पार्लामेन्टरी कमेटी के सामने उन्होंने गवाही भी दी थी। बी० एन० एस० डी० कालेज की मैनेजिंग कमेटी के कई वर्ष तक सभापति भी रह चुके हैं। और उसके आजीवन सदस्य भी हैं। १५ अगस्त १९४७ को उन्होंने अपनी रायबहादुरी छोड़ दी। दीनानाथ-

पार्वती बागला अस्पताल बनाकर यू० पी० सरकार को भेंट करके उन्होंने कानपुर के नागरिकों का बड़ा उपकार किया है।

लाला हरीशंकर बागला की अवस्था उस समय केवल १० वर्ष की थी जब उनके पिता का स्वर्गवास हुआ था। तब वह मारवाड़ी स्कूल में पढ़ते थे। उसी समय श्री नारायण प्रसाद जी अरोड़ा उसके हेड मास्टर थे। बाद में श्री हरीशंकर जी उस नेशनल कालेज में भर्ती हुए जिसे मिसेज एनीबीसेन्ट ने कानपुर में स्थापित कराया था। अपने बड़े भाई की तरह व्यापार का बोझ पड़ जाने से इन्हें भी अपनी शिक्षा समाप्त करनी पड़ी। यह कई वर्ष तक फेडेरेशन आफ इंडिया चेम्बर्स आफ कामर्स की कमेटी के, अपर इन्डिया चेम्बर आफ कामर्स, तथा यू० पी० चेम्बर आफ कामर्स के सदस्य रहे हैं। यू० पी० चेम्बर के तो वह कई वर्ष तक सभापति भी रहे हैं। वह नई दिल्ली के आल इन्डिया इन्डिस्ट्रियल एम्पलायर्स के संगठन के अवैतनिक कोषाध्यक्ष भी रहे हैं। वह कानपुर म्युनिसिपल बोर्ड और इम्प्रूवमेंट ट्रस्ट के भी सदस्य वर्षों तक रहे हैं और 'बाद में डेवेलपमेंट बोर्ड के भी सदस्य रहे। यह बी० एस० एस० डी० कालेज कमेटी के सदस्य तथा मारवाड़ी औषधालय के सभापति रह चुके हैं। आप यू० पी० मारवाड़ी सम्मेलन के कई वर्ष तक सभापति रहे और इन्होंने मारवाड़ी जाति में सामाजिक सुधार को प्रोत्साहित किया। दीनानाथ-पार्वती अस्पताल के निर्माण में अपने बड़े भाई के साथ इनका पूरा सहयोग रहा।

लाला हरीशंकर जी बागला के एक मात्र पुत्र श्री सत्यनारायण जी बागला हैं, जो म्योर मिल्स और महेश्वरी देवी जूट मिल्स का सारा कामकाज देखते हैं। उनका विद्यार्थी जीवन सदा बड़ा सफल रहा है। उन्हों ने एम० ए० और (एल० एल० बी०) इम्तिहानों में सर्वप्रथम स्थान प्राप्त किये हैं और बड़े होनहार हैं।

बिहारीलाल रामचरन

इस परिवार की स्थापना स्वर्गीय लाला बिहारीलाल जी द्वारा बहुत साधारण स्थिति में हुई थी। लाला बिहारीलाल जी के पूर्वपुरुष राजस्थान से चलने के पश्चात इटावा जिले के औरैया नामक उन्नतिशील ग्राम में आकर बसे थे। आपके पितामह औरैया से आकर कानपुर में बस गये। लाला बिहारी लाल जी के पिता एक साधारण व्यापारी थे तथा संगीत एवं गोपालन में उन्हें विशेष रुचि थी। लाला बिहारीलाल जी को एक साधारण पारिवारिक झगड़े के फलस्वरूप केवल १२ वर्ष की अवस्था में ही पारिवारिक संरक्षण से अलग हो जाना पड़ा तथा परिवार की सम्पत्ति से भी वंचित रहना पड़ा। इस प्रकार की गम्भीर परिस्थति एवं अल्प आयु में सन् १८८० में आपने जग्गूमल मनोहरदास के नाम से एक कपड़े की दूकान की स्थापना की। आपके अध्यवसाय, कठिन परिश्रम एवं धैर्य के फलस्वरूप पाँच वर्ष के अल्प समय में ही दूकान में आशातीत सफलता एवं लाभ हुआ। परिणाम स्वरूप आपके हिस्से के प्रति ईर्षा

उत्पन्न होना स्वाभाविक ही था और लाला बिहारीलाल से अपना हिस्सा घटाने के लिये कहा गया। लाला बिहारीलाल जी ऐसे अनपेक्षित प्रस्ताव को न सहन कर सके और अपने हिस्से का हिसाब होने के पूर्व ही आपने दूकान से सम्बन्ध विच्छेद कर लिया तथा बिना किसी झगड़े अथवा मनमुटाव के जो कुछ भी उन्हें दिया गया स्वीकार कर लिया। इसके पश्चात आपने अपना स्वतंत्र व्यवसाय स्थापित करने का निश्चय किया और इस प्रकार अपने छोटे भाई रामचरन जी के साथ सन् १८८४ में बिहारीलाल रामचरन नामक फर्म की स्थापना की।

लाला बिहारीलाल जी बहुत ही सादगी का जीवन व्यतीत करते थे। वे धुले हुए सफेद कपड़े कभी नहीं पहनते थे। ऐसा प्रसिद्ध है कि धुले हुए कपड़ों को मैला कर लेने के बाद ही वे उन्हें पहनते थे। वे अपने ग्राहकों को निश्चित मुनाफ़े पर ही सौदा बेचते थे, यह उनका दृढ़ व्यापारिक सिद्धान्त था। यद्यपि यह सत्य है कि सस्ता माल शीघ्र बिकता है और तेज मूल्य वाला वर्षों पड़ा रहता है किन्तु इतना होने पर भी लालाजी अपने सिद्धान्त पर दृढ़ रहे और हर प्रकार के माल पर एक समान निश्चित लाभ लेते रहे। वे अपने ग्राहकों की सहायता के लिये सदैव तैयार रहते थे और हर सम्भव उपाय द्वारा उनके व्यापार को स्थायी बनाने में प्रयत्नशील रहते थे। यही कारण है कि कानपुर, उन्नाव, फर्रुखाबाद, फ़तेहपुर, हरदोई, और इटावा के

समस्त कपड़े बाजार पर उनका एकछत्र अधिकार हो गया था। आज भी सैकड़ों ऐसे व्यापारिक परिवार हैं जो अपने व्यापार के जन्म का श्रेय लाला बिहारीलाल जी को देते हैं। आपकी दूकान प्रातःकाल ५ बजे खुलती थी तथा रात में २ बजे बन्द होती थी और इस बीच बराबर व्यापारियों का ताँता लगा रहता था। आपकी दूकान में नक़द रोकड़ कभी नहीं मिलाई जाती थी। ग्राहकों को एक पर्चे पर बकाया और बढ़ती हिसाब लिख कर दे दिया जाता था जो ग्राहक को दुबारा माल लेते समय दिखाना पड़ता था। ग्राहकों की इतनी भीड़ में सही हिसाब रख सकना कठिन था इसी कारण यह ढंग अपनाया गया था।

लालाजी अपनी निजी दूकानदारी छोड़ कर ग्राहकों के पारिवारिक और निजी मसलों की सहायता के लिये तुरन्त चल देते थे। उन्होंने पूरे ६५ वर्ष की अवस्था तक अपने दैनिक जीवन का एक ही क्रम बराबर चालू रक्खा। आपका निजी पारिवारिक व्यय बहुत कम था और किसी भी साझीदार के व्यापार में रुपया लगाने को वे सदैव तैयार रहते थे। उनमें और उनके नौकरों में अन्तर बता सकना कठिन था। उन्होंने अपने बड़े भाई के लड़कों का भी पालन पोषण किया तथा व्यापार में बराबर हिस्सा दिया जिसके कि वे हक़दार न थे। इन्हीं भाई के कारण उन्हें परिवार से अलग भी होना पड़ा था किन्तु इस पर उन्होंने कभी ध्यान नहीं दिया।

लाला बिहारी लाल जी के सबसे बड़े पुत्र लाला रामरतन गुप्त ने सन् १९१७ में ११ वर्ष की अवस्था में व्यापारिक क्षेत्र में प्रवेश किया। आपकी रुचि पुराने ढंग के व्यापार में न थी अतएव थोक बाज़ार में उनके लिये एक नवीन दूकान खोली गई जिसके साथ एक आयात-निर्यात कार्यालय भी खोला गया। लाला रामरतन गुप्त सन् १९२५ से ही कांग्रेस आन्दोलन में दिलचस्पी रखते रहे हैं और समय-समय पर इसमें भाग भी लेते रहे हैं। सन् १९३१ के आन्दोलन में आपको १ वर्ष की सज़ा हुई थी। जेल से वापिस आने के बाद आपने संसार के भिन्न-भिन्न देशों और नगरों का भ्रमण किया जिसके फल स्वरूप आपको स्वतन्त्र देशों के व्यापार एवं उद्योग के अध्ययन का अवसर मिला। विदेश यात्रा से वापस आने पर आपने लाला कमलापत जी के सहयोग एवं साझेदारी में लक्ष्मी रतन काटन मिल्स की स्थापना की। बिहारीलाल रामचरन फ़र्म के इतिहास में यहीं से एक नया अध्याय प्रारम्भ होता है। जिस दिन इस मिल की नींव की पहली ईंट रक्खी गई थी उसके ९ माह के अन्दर ही मिल में उत्पादन प्रारम्भ हो गया था। आज यह कारखाना समस्त उत्तर भारत में अपने माल के गुण के लिये प्रसिद्ध है। इस सम्बन्ध के फलस्वरूप जुग्गीलाल कमलापत तथा बिहारीलाल रामचरन के सहयोग में सन् १९३४ से १९४३ तक बराबर नये उद्योगों की स्थापना होती रही। सन् १९४३ से दोनों परिवारों में व्यापारिक बँटवारा हो गया। आज बिहारी-

लाल रामचरन परिवार में निम्नलिखित कारखाने शामिल हैं;—

कानपुर

१ लक्ष्मी रतन काटन मिल्स कं० लि०

२ रघुनाथ एनेमिल्स लि०

३ ग्वालियर थर्मलाइट कारपोरेशन लि०

४ इन्डिया सप्लाईज़

बम्बई

१ बिहारीलाल रामचरन काटन मिल्स लि०

२ लक्ष्मीरतन इंजीनियरिंग वर्क्स

३ इण्डियन काटन सप्लाइज़

४ स्टोर (इण्डिया) लि०

सोमानी परिवार

सेठ दौलतराम धूलियावाले ने कानपुर में सं० १९४१ वि० में नानकचन्द शादीराम सोमानी के नाम से साहूकारे की कोठी और बाद में 'दी कानपुर आइरन और ब्रासवर्क्स' की स्थापना की। आपबड़े दानी थे। आपने अपने अंत समय में पचास हज़ार रुपये के दान का संकल्प किया था जिसे आपके पौत्र राय साहब सेठ मीनामल जी सोमानी ने पूर्ण किया। सेठ दौलतराम जी ने अपने समय में ही अपने द्वितीय पुत्र सेठ शादीराम जी के पुत्र सेठ मीनामल जी सोमानी को सं० १९४९ वि० में दत्तक बना लिया। इनकाजन्म सं० १९३६ में बोहका में हुआ था। इन्होंने अल्पावस्था में ही अपने पितामह के विशाल व्यापार को संभाल लिया

और अपने व्यापार को खूब चमकाया।

आपके चार पुत्र; सर्वश्री हरीकृष्णजी, रामकृष्णजी, राधाकृष्णजी और बालकृष्णजी हैं। चारों ने मिलकर अपने प्रति- ष्ठित परिवार के पूर्व व्यापार को और भी चमकाया है। श्री हरिकृष्ण जी एवं बालकृष्ण जी कानपुर में ही रहते हैं। आप लोगों ने सन् १९४४ में कानपुर में धूलियावाला आइल मिल्स तथा हालसी रोड पर लोहे की बहुत बड़ी दूकान खोल कर यहां के काम को बढ़ाया है। श्री रामकृष्ण जी एवं राधाकृष्ण जी अपने पूज्य पिताजी के पास दिल्ली में रहते हैं। कानपुर में श्री हरीकृष्ण जी कई संस्थाओं, एसोसियेशन आदि के सभासद, मंत्री, मैनेजिंग डाइरेक्टर आदि रहकर समाज सेवा के कार्य को भली प्रकार कर रहे हैं।

सेठ हरीकृष्ण जी के पाँच पुत्र- और सेठ बालकृष्ण जी के तीन पुत्र हैं। इस परिवार का व्यापार कानपुर में नयागंज की दुकान के अतिरिक्त हालसी रोड पर लोहे की दूकान तथा दी कानपुर आइरन एन्ड ब्रास वर्क्स एन्ड फ्लोवर मिल, कार- खाना डिप्टी के पड़ाव पर है।

श्री ज्वालाप्रसाद राधाकृष्ण

कानपुर में श्री शीतलप्रसाद श्यामलाल (इनका कुछ परि- चय कपड़े के 'अढ़तिये' शीर्षक में पृष्ठ २२८-२२९ में आ चुका है) और श्री ललितराम मंगीलाल नामक दो बहुत पुराने कपड़े के आढ़ती फ़र्म हैं। इनकी गद्दियाँ ५६ वर्ष के

लगभग से हैं। इन दोनों फर्मों ने सन १९१७ में कपड़े का व्यापार करने का भी निश्चय किया। परिणामस्वरूप उक्त दोनों फर्मों के सहयोग से, उस फर्म की स्थापना हुई जिसका नाम 'ज्वालाप्रसाद राधाकृष्ण' है, और जिसकी उत्तर भारत में कपड़े की कई दुकानें हैं। चूंकि दोनों ही आढ़ती फर्मों के पास, प्रदेश के भिन्न-भिन्न जिलों के, बड़े-बड़े व्यापारियों की अच्छी खरीद थी अतः ज्वालाप्रसाद राधाकृष्ण ने व्यापार में शीघ्र उन्नति करली। 'श्री ज्वालाप्रसाद', कानपुर के प्रसिद्ध समाजसेवी, लाला बुद्धलाल मेहरोत्रा के स्वर्गीय पूज्य पिताजी का नाम है और श्री राधाकृष्ण, कानपुर के सम्मानित नागरिक लाला गोपालदास जी के अनुज एवं कांग्रेस के पुराने सेवक श्री शिवनारायण टन्डन के जेष्ठ भ्राता हैं।

उन दिनों अर्थात् १९२० से १९३० के लगभग भारत का औद्योगिक विकास बहुत कम हो पाया था और हिन्दुस्तान के कपड़े की आवश्यकता अधिकतर लंकाशायर पूरी किया करता था। श्री ज्वालाप्रसाद राधाकृष्ण ने भी विदेशी कपड़े के इम्पोर्ट का काम १९१८, १९ में प्रारम्भ किया था। इनका कामकाज इग्लैंण्ड और इटली के कारखानों से सीधा होता था। उन दिनों इस फ़र्म में कानपुर के प्रसिद्ध व्यवसायी श्री गोकुलदास देवचन्द और कानपुर के प्रसिद्ध शिक्षा-शास्त्री प्रिन्सपल हीरालाल जी खन्ना भी शामिल थे और अपनी योग्यता एवं सूझबूझ से फर्म के कारबार को उन्नति प्रदान कर रहे थे।

ज्वालाप्रसाद राधाकृष्ण के फर्म का एक आफिस कलकत्ता में भी चलता था। पर सन १९२९ में गांधीजी के नेतृत्व में जब कांग्रेस ने विदेशी वस्त्र बहिष्कार का निश्चय किया तब ज्वालाप्रसाद राधाकृष्ण के फर्म ने विदेशी वस्त्र के चलते हुए कारबार पर लात मार कर सदा सर्वदा के लिए उसका परित्याग कर दिया और आज तक विदेशी व्यापार पुनः करना स्वीकार नहीं किया है। सन १९३० और ३२ के आन्दोलनों में लाला गोपालदास जी, लाला बुद्धूलाल जी और श्री शिवनारायण टंडन ने जेल की यात्रा की और विदेशी माल के स्टाक को बांध कर डाल दिया जिसे कांग्रेस की आज्ञा प्राप्त होने पर ही बहुत समय बाद उन्होंने निकाला। तब से यह फर्म और फर्म से संबंधित सभी लोग कानपुर कांग्रेस से बहुत ही निकट से सम्बंधित रहे हैं। ज्वालाप्रसाद राधाकृष्ण के फर्म को १९३० के बाद से स्वदेशी वस्त्र व्यवसाय में आशातीत सफलता प्राप्त हुई है।

कुछ प्रमुख व्यवसायी

लाला मम्मनलाल गर्ग

लाला मम्मन लाल, गर्ग परिवार के एक स्मरणीय पूर्वज थे। इनका पैतृक स्थान पटियाला राज्य के नारनौल नामक ग्राम में है और इनके पिता जी का नाम लाला बद्रीदास था। लाला जी के एक जेष्ठ भ्राता लाला जगन प्रसाद गर्ग भी थे। उससमय के कानपुर के रईसों में आप प्रतिष्ठित ता थेहा साथ ही उस समय की प्रचलित रईसी परिपाटी का भी आप पूर्ण रूप से निर्वाह करते थे। स्वर्गीय लालाजी साधारण रूप से ही पढ़े लिखे थे किन्तु रोबदाब और दबंगी की छाप उस समय के अग्रवाल समाज में आपकी काफी थी। यही नहीं उस समय के कानपुर के नागरिक भी लालाजी की काफी इज्जत करते थे। एक लम्बे अरसे तक आप बराबर कानपुर म्युनिस्पल बोर्ड के सदस्य रहे। हर चुनाव में आप जरूर खड़े होते और बराबर जनता उन्हें चुनती थी। मौजूदा परेड रामलीला ग्राउन्ड में हद-बन्दी व सींखचे लाला जी के विशेष प्रयत्न से ही लगे थे। उस समय तक कानपुर के रईसों में बगले में रहने की परिपाटी नहीं क़ायम हुई थी। लालाजी ने ही पहले पहल बंगले में रहना शुरू किया जिसे कि उस समय के रईस समाज में एक बहुत बड़ी बात समझी गई थी। यह सब होते हुये आप ब्राह्मण और गऊ के बड़े ही भक्त थे।

आपके यहां काटन वेस्ट का व्यापार प्रारम्भ से होता आया

है। पहले यह काम कलेक्टर गंज में देवी चरन मानसिंह के गोदाम में होता था और बाद में परेड पर यह व्यवसाय हुआ जो अब तक बराबर आपके परिवार की देख-रेख में हो रहा है। जहां एक ओर लालाजी की दबंगी की छाप थी वहाँ लालाजी के गरीब-परवर होने की भी धूमथी; यहां तक कि शहर के इक्के वाले तक लाला जी की जयजयकार किया करते थे। जब कभी लाला जी को म्युनिस्पल बोर्ड की ओर से इक्कों की जांच का कार्य सौंपा जाता, तो आप एक ओर से सभी इक्कों को पास कर देते थे। अनेक कहानियाँ लाला जी की शहर में प्रसिद्ध हैं। एक साल बोर्ड में यह तय किया गया कि तमाम इक्कों पर पर्दे लगें। चूंकि लालाजी को इक्के पास करना ही था अतः आपने जिन इक्के वालों के पास पर्दे न थे उन्हें अपने पास से पर्दे देकर इक्कों को पास कर दिया।

आप स्थानीय गौशाला सोसायटी के अपने जीवन के अन्तिम समय तक बराबर सभापति रहे। आज जो गौशाला के पास इतनी बड़ी जमीन्दारी है वह उसी समय को खरीदी हुई है जबकि लालाजी सोसाइटी के सभापति थे। मौजूदा भौंती गांव लालाजी ने अपने लिए खरीदा था किन्तु उस गांव में अधिक फ़ायदा देखकर लालाजी ने उसे उतने ही मूल्य में गौशाला सोसाइटी को दे दिया। यही नहीं, इस रकम को पूरा कराने में आपने काफी चन्दा भी दिया था। इस समय आपके बड़े भाई लाला जगनप्रसाद के पुत्र लाला चुन्नीलाल गर्ग और एक कन्या

हैं। लाला मम्मनलाल जी के पुत्र १ श्रीलक्ष्मीनारायण गर्ग २ श्री चन्दनलाल गर्ग और तीसरे सबसे छोटे श्री रामनारायण गर्ग थे। किन्तु श्री लक्ष्मीनारायण जी का स्वर्गवास हो गया। अब श्री चन्दनलाल और श्री रामनारायण जी दो भाई हैं जिनका परिवार भरापूरा है। लाला मम्मनलाल जी ६५ साल की अवस्था में स्वर्गवासी हुए थे।

मि० गैविन एस० जोन्स

कानपुर नगर की औद्योगिक उन्नति में अंग्रेजों का भी विशेष हाथ रहा है। श्री गैविन एस० जोन्स अपने समय के प्रसिद्ध व्यापारी थे। आप श्री ह्यू मैक्सवेल के रिश्तेदार थे। सन् १८५७ के ग़दर में आप बड़ी कठिनाइयों के साथ अपनी प्राणरक्षा कर सके। सन् १८६४ में एलगिन मिल की स्थापना होने पर आप उसके सर्वप्रथम मैनेजर तथा सेक्रेटरी नियुक्त हुये। परन्तु कुछ समय बाद मतभेद हो जाने के कारण आपने अपने पद से इस्तीफा दे दिया। मिल के थोड़े दिनों के लिए बन्द हो जाने के बाद जब सन् १८७२ में उसे फिर चालू किया गया तो आप पुनः अपनी उसी पुरानी जगह पर नियुक्त किये गये। कुछ समय बाद आप एलगिन मिल से पुनः पृथक हो गए और सन् १८७४ में ५ लाख की पूंजी से वर्तमान 'म्योर मिल' की स्थापना की। कानपुर को दो सूती मिलें प्रदान करने के पश्चात् आपने अपना ध्यान ऊनी वस्त्र-व्यवसाय की ओर दिया। सन् १८७६ में आपने दो अन्य साथियों—डा० कान्डन तथा मि० पेटमैन के साझे में

कानपुर ऊलेन मिल्स अथवा 'लाल इमली' की स्थापना की। इस मिल की स्थापना करने के लिए आपको विशेष आर्थिक असुविधाओं का सामना करना पड़ा। उस समय रुपये की इतनी अधिक बहुतायत न थी। बैंक भी नहीं थे। नगर में केवल एक बैंक था परन्तु उसने अभी औद्योगिक कार्यों के लिए धन देना आरम्भ नहीं किया था। अतः विवश होकर मि० गैविन जोन्स को स्थानीय शराफों की सहायता लेनी पड़ी। एक मिल की स्थापना के लिए साधारण महाजनों के ऋण पर आश्रित रहना कितना खतरे से भरा हुआ कार्य था यह सरलता से समझा जा सकता है परन्तु मि० जोन्स की योग्यता तथा अनुभव का यह फल था कि सारा कार्य सुचारु रूप से चलता रहा। क्या आजकल कोई यह सोच भी सकता है कि कानपुर ऊलेन मिल के लिए किसी समय ६०० से १००० रु० तक की छोटी-छोटी रकमों के लिये भी हुंडियाँ लिखनी पड़ती थीं। सूती तथा ऊनी वस्त्र के कारखाने स्थापित करने के बाद आपने चमड़े के उद्योग की ओर ध्यान दिया और मि० बिलियम कूपर तथा मि० जार्ज एलेन के सहयोग से कूपर एलेन एन्ड कम्पनी के नाम से फौज के लिये बूट बनाने का कार्य आरम्भ किया।

सन् १८८७ में मि० गैविन जोन्स इंग्लैन्ड वापस चले गये। किन्तु हिन्दुस्तान के लिये उनकी लालसा प्रबल बनी रही। अतः सन् १८९६ में वह भारत पुनः वापस आये और एम्पायर इंजीनियरिंग एन्ड साइकिल कंपनी लिमिटेड की स्थापना की, जिसे बाद में ब्रिटिश इंडिया कार्पोरेशन में मिला लिया गया। इस

कम्पनी ने मि० जोन्स के समय में छोटी संख्या में साइकिलें तैयार करना आरम्भ कर दिया था। भारत में साइकिलों के प्रचार का यह प्रारम्भिक काल था।

सन् १९०६ अथवा १९०७ में आप भारत से अन्तिम रूप से अवकाश ग्रहण कर ब्रिटेन चले गये और सन् १९१३ में आपकी वहां मृत्यु हो गई।

मि० गैविन जोन्स ने सार्वजनिक प्रकाश में आने का कभी प्रयत्न नहीं किया। अन्य लोगों की भांति उनका उद्देश्य व्यक्तिगत प्रसिद्धि अथवा महत्वाकांक्षा नहीं थी। उनकी स्थिर गंभीरता में कोई ऐसी मूक शक्ति तथा उच्च प्रेरणा छिपी रहती थी जिसके कारण लोग उनसे परामर्श लेते तथा उनका अनुकरण करते थे।

जहां तक व्यापार का सम्बन्ध था वह अपने व्यवहार में अत्याधिक सच्चे एवं ईमानदार थे। एक बार जो बात कह देते थे फिर चाहे उसमें लाभ हो या घाटा उसका प्रत्येक दशा में पालन करते थे। आपके पुत्र सर ट्रेसी गैविन जोन्स कानपुर के प्रमुख अंग्रेज व्यवसायियों में हैं और अपने पिता के समान ही चतुर एवं कार्यकुशल हैं।

श्री ब्रह्मदत्त सुलतानिया

आप 'गिरधारी लाल ब्रह्मदत्त' फर्म के जन्म दाता और मालिक थे। आप कानपुर के एक प्रमुख व्यापारी और शक्कर के अढ़तिया थे। आपका जन्म सन् १८७८ में हुआ था। आपके

श्री कृष्णनारायण माथुर

बाबू अयोध्याप्रसाद

पिता जवाहरमल जी कानपुर में सन् १९०० से कुछ वर्ष पूर्व ही चिड़ावा से आ गए थे। कानपुरमें आते ही आपने शक्कर की दलाली शुरू कर दी और कुछ ही काल बाद शक्कर के प्रसिद्ध व्यापारी सर्व श्री रामकरणदास रामविलास राय के साझीदार बन गये। आप 'दुकानदारी' का काम करते थे और आपके मँझले पुत्र और ब्रह्मदत्त जी के बड़े भाई गिरधारी लाल जी रोकड़िया का काम देखते थे। कहते हैं कि गिरधारीलाल जी चाँदी के रुपये गिनने में अपना सानी नहीं रखते थे।

जवाहरमल जी ने अपने सबसे छोटे पुत्र ब्रह्मदत्त को अलग से विलाती कपड़े का काम करा दिया था, परन्तु जब जवाहरमल जी की मृत्यु हो गई, तो ब्रह्मदत्त जी को अपना काम उठा कर अपने स्वर्गीय पिता के स्थान में 'दुकानदारी' का काम सँभालना पड़ा। दुर्भाग्य से गिरधारीलालजी की मृत्यु भी सन् १९११ (संवत् १९६८) में हो गई। रामकरण दास रामविलास राय फर्म वालों ने एक भाई के न रहने पर अपने साझीदारों की 'पत्ती' (हिस्सा) कम कर देनी चाही, जिसको आपने अस्वीकार कर दिया और अपना हिस्सा लेकर फर्म से अलग हो गए। सन् १९१२ में आपने 'गिरधारीलाल ब्रह्मदत्त' फर्म की नींव डाली और शक्कर की आढ़त तथा मिलों की चीनी बेचने का काम शुरू कर दिया और काफ़ी काम फैला लिया। आप उस समय में 'लखपती' गिने जाने लगे थे।

महायुद्ध के समाप्त होने के कुछ काल बाद देशी शक्कर का बनना और बिकना बंद-हो चला, जो इस फ़र्म की आय का मुख्य साधन था। विवश होकर मिलों की चीनी की निजी काम शुरू करना पड़ा, जिसमें आगे चल कर कुछ हानि भी हुई। इसी बीच जावा की चीनी की आयात बढ़ जाने से बाजार में जावा की चीनी काफ़ी चल गई, लेकिन ब्रह्मदत्त जी ने उसका काम करना धर्मविरुद्ध समझा। क्योंकि वह हड्डी के कोयले से साफ़ की जाने के कारण अशुद्ध समझी जाती थी। कुछ लोगों ने उन्हें राय दी कि शीरे का काम क्यों न शुरू करें। आपने सन् १९२५–२६ में शक्कर का काम बन्द कर रामगंज में शीरे की थोक दूकान खोल दी। दुर्भाग्य से बाजार में एकदम से मंदी आ गई, जिसके फलस्वरूप गहरी हानि उठानी पड़ी, जिसे संभाला नहीं जा सका। शीरे का कारबार 'फेल' हो गया और पास की अधिकांश पूंजी तथा जायदाद घाटे में चली गई। दुःखी होकर ब्रह्मदत्त जी ने कानपुर छोड़ दिया और देवरिया चले गए, जहाँ सन् १९३६ में आपका स्वर्गवास हो गया और परिवार के दूसरे सदस्य अलग होकर अपने काम धंधों में लग गये।

राधाकृष्ण जी की मृत्यु के बाद उनकी विधवा पत्नी श्रीमती चंदी बाई द्वारा गोद-लिये पुत्र मदनलाल जी पुरानी दलियाही में गोटे का काम करने लगे।

ब्रह्मदत्त जी के एकमात्र पुत्र श्री झब्बूलाल जी आजकल

उत्तर प्रदेशीय श्रम विभाग के साप्ताहिक मुखपत्र 'श्रमजीवी' का सम्पादन-कार्य करते हैं। झब्बूलाल जी हमारे चिर-परिचित 'अज्ञात, एम० ए०' हैं, जिन्हें 'अमृत कन्या' उपन्यास पर सन् १९५२ में उ० प्र० सरकार द्वारा ६००) रु० का पुरस्कार प्राप्त हुआ था। आपके दूसरे प्रकाशित उपन्यास हैं— 'मरघट' और 'घर की ओर'। आपने अनेक नाटक, कहानियाँ और कविताएं भी लिखी हैं, जो समय-समय पर पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित होती रहती हैं।

लाला रामकुमार

लाला रामकुमार जी का जन्म सम्वत १९४५ में हुआ था। अतः वह ६० वर्ष पूरे करके परलोकवासी हुए।

लाला दिलसुखराय ने सम्वत १९६२ में कानपुर आकर रामकुमार रामेश्वरदास का फर्म स्थापित किया, जो कपड़े की लेवा-बेची और बिकवाली का काम करता था। रामकुमार जी को इस फर्म में काम करते केवल दो मास हुए थे कि लाला दिलसुखराय का स्वर्गवास हो गया। किन्तु रामकुमार जी ने अपने फर्म को इस योग्यता से चलाया कि एक जमाना कानपुर में ऐसा आया कि कपड़े के बाजार में रामकुमार रामेश्वरदास फर्म की धाक जम गई। रामकुमार जी खूब तपे और कपड़ा बाजार रामकुमार-मय हो गया। वह जमाना सन १९२७ का था। हरीबख्श नागरमल के नाम से एक दफ़्तर खुल गया और कपड़े की दूसरी दूकान राधाकृष्ण विश्वनाथ के नाम से स्थापित

हो गई। सारांश यह कि रामकुमार जी ने करोड़ों रुपये का कपड़े का काम किया।

केवल कपड़े का ही काम करके रामकुमार जी सन्तुष्ट नहीं हुए। उन्होंने गाजीपुर में तेल मिल, आइस फेक्ट्री, चावल का कारखाना, ढलाई का काम और आटा मिल भी चालू कर दिये। काम इतना बढ़ा कि बम्बई और कलकत्ते में भी रामकुमार रामेश्वरदास की दूकानें खुल गईं और काम धका-पेल होने लगा।

लाला रामकुमार जी केवल एक कुशल व्यापारी ही न थे किन्तु उन्हें सार्वजनिक कार्यों में भी काफ़ी रुचि थी और वे सार्वजनिक काम भी बड़ी लगन और योग्यता से करते थे, जिसका प्रमाण कानपुर के म्युनिसिपल बोर्ड की फाइनेन्स कमेटी है, जिसके वह दो बार चेयरमैन रहे। केवल फाइनेन्स कमेटी में ही नहीं वह बोर्ड की अन्य कई कमेटियों में भी मेम्बर रहे और सक्रिय मेम्बर रहे। वह कानपुर म्युनिसिपल बोर्ड के मेम्बर १७ वर्ष तक रहे और सदा उन्होंने कोई न कोई प्रमुख स्थान ग्रहण किया।

रामकुमार जी की सेवायें केवल म्युनिसिपल बोर्ड तक ही सीमित न थीं। वह यू० पी० चेम्बर के वर्षों मेम्बर रहे और दो बार उसके उप-सभापति चुने गये। वह बाबू विक्रमाजीत सिंह के दाहिने हाथ थे। बाबू जी के स्वर्गस्थ होने के पश्चात रामकमार जी कमलापत ग्रूप में आ गये और वहां भी उन्होंने

अपनी योग्यता प्रमाणित की। फलतः वे जे० के० लिमिटेड के डाइरेक्टर, स्ट्रा-प्रोडक्टस के मैनेजिंग डाइरेक्टर और मालवा इन्डस्ट्रीज के डाइरेक्टर नियुक्त हुए। सभी स्थानों पर उन्होंने अपनी व्यापार कुशलता का परिचय दिया और जे० के० ग्रुप के खास व्यक्तियों में समझे जाते रहे। वह नेवटिया ब्रादर्स के भी मैनेजिंग डाइरेक्टर थे।

रामकुमार जी भी मारवाड़ी विद्यालय के संस्थापकों में से थे और ३३ वर्ष तक उसके मन्त्री रहे। मारवाड़ी फेडरेशन और मारवाड़ी अग्रवाल सभा के वह जनरल सेक्रेटरी भी रह चुके थे और स्थानीय मारवाड़ी पुस्तकालय के सभापति भी वर्षों रहे। वह सदा अपने निजी धन्धों के साथ साथ कोई न कोई सार्वजनिक काम करते ही रहते थे। कानपुर कपड़ा कमेटी के वह प्रथम प्रेसीडेन्ट हुए और फिर बाद में भी कई बार कपड़ा कमेटी के सभापति चुने गये। कपड़ा कमेटी की स्थापना के पहले वह कानपुर मारवाड़ी चेम्बर के मन्त्री थे जब कि लाला दीनानाथ जी बागला उसके सभापति थे।

रामकुमार जी सदा कांग्रेस भक्त और कांग्रेस वालों के सहायक रहे। उन्होंने सदा कांग्रेस वालों का साथ दिया और कांग्रेस वालों ने भी उनकी प्रतिष्ठा बढ़ाने में कोई कसर बाकी नहीं रखी। सन १९२५ में कानपुर में होने वाले कांग्रेस के अधिवेशन के वह खज़ांची बनाये गये। अपनी व्यापार कुशलता से अधिवेशन से काफ़ी रुपया बचा कर उन्होंने कांग्रेस के

स्थायी फण्ड में पहुंचाया।

आप चुनाव इत्यादि में सदैव कांग्रेस के साथ रहते थे। सन ३० में जब कांग्रेस पर बहुत जोरों से दमन हो रहा था, उसका नाम लेना गुनाह हो गया था और हमारे नगर में एक सत्याग्रह सहायक समिति बनी थी, तब उसके अध्यक्ष ला० रामकुमार जी हुए। इस समिति ने लगभग ५० हाजर रुपये प्रान्त के उन परिवारों को सहायता के रूप में दिये जो काँग्रेस के कार्य में जेल गये थे।

धार्मिक विचारों में वह एक उदार सनातनधर्मी थे और वर्षों ही सनातन धर्म कालेज कमेटी के सदस्य रहे। उक्त कालेज की स्थापना में उनका पूरा हाथ था और उन्होंने लाखों ही रुपया मांग-मांग कर कालेज को दिलवाया।

रामकुमार जी कभी काम करते हुए थकते ही न थे, जिसका प्रमाण उनका आखिरी उद्योग कानपुर का तेल मिल था जिसे वह बनवा रहे थे और कदाचित पूरा न कर पाये थे कि स्वयं चल बसे।

मैक्सवेल परिवार

कानपुर में अंग्रेजी व्यापार की नींव डालने वाला मैक्सवेल परिवार ही था। १९ वीं शताब्दी के आरम्भ में ही इस वंश के पास कानपुर जिले में बहुत बड़ी जायदाद थी।

सन् १८३६ में मैक्सबेल बोर्नेट एन्ड कम्पनी के नाम से उक्त परिवार कानपुर में व्यापार करता था। इस कम्पनी के संचालक

मि० ऐडम मेक्सवेल ने अपने एक साथी उमरावअली से षड्यन्त्र कर बाजीराव पेशवा को जो उस समय बिठूर में थे, यह पट्टी पढ़ाई कि हम फिर आपको पेशवा पद पर आसीन करने का उद्योग कर रहे हैं और इस प्रकार उन्होंने उनसे ११॥ हजार रुपये ठग लिए। इन दोनों पर कानपुर की सेशन अदालत में मुक़दमा चला और ऐडम मेक्सवेल को ६ मास की क़ैद और एक हजार रु० जुर्माने की सजा का हुक्म हुआ। उमरावअली को भी ५ महीने की क़ैद हुई।

मि० ऐडम के बाद मि० ह्यू मेक्सवेल ने, जो सम्भवतः उनके पुत्र थे, बेग मेक्सवेल एन्ड कम्पनी के नाम से कानपुर की औद्योगिक उन्नति में पथ-प्रदर्शक का कार्य किया। सन् १८५७ के ग़दर में आप अनेक भयानक संकटों से गुजरने के बाद अपनी प्राण रक्षा कर सके थे। ग़दर के बाद होने वाली औद्योगिक उन्नति में मि० मैक्सवेल ने आशातीत सफलता प्राप्त की। सन् १८६४ में जब एलगिन मिल की स्थापना हुई तो आप उसके प्रमुख संस्थापकों में थे। मि० गैविन एस० जोन्स जो उक्त मिल के मैनेजर नियुक्त किए गए, आपके ही सम्बन्धी थे। मिल के दिवालिया हो जाने पर आप और मि० चैपमेन ने मिल कर उसे नीलाम में ले लिया। सन् १८७२ में एलगिन मिल का काम आपके संरक्षण में पुनः प्रारम्भ हुआ। इस प्रकार एलगिन मिल के वास्तविक संस्थापक आप ही कहे जा सकते हैं।

वर्तमान बेग सदरलैंड एन्ड कम्पनी से भी उक्त मैक्सवेल परिवार का घनिष्ट सम्बन्ध रहा है। इस कम्पनी का नाम कई बार बदल चुका है। सन् १८५७ में इसका नाम बेग क्रिस्टी एन्ड कम्पनी था। परन्तु ग़दर में मि० क्रिस्टी तथा उनका सारा परिवार, केवल एक पुत्री को छोड़ कर, मार डाला गया। तब इस कम्पनी का नाम बदल कर बेग मैक्सवेल एन्ड कम्पनी हो गया। सन् १८७२ तक यही नाम रहा। इसके बाद वर्तमान नाम बेग सदरलैंड एन्ड कम्पनी रखा गया। मि० मैक्सवेल के साझीदार रहते समय उक्त कम्पनी का एलगिन मिल से घनिष्ठ सम्बन्ध रहा क्योंकि उस मिल के संस्थापक मि० मैक्सवेल ही थे परन्तु सन १८७२ में यह संबंध टूट गया।

मि० ह्यु मैक्सवेल के पुत्र मि० राल्फ मैक्सवेल ने भी अपने वंश के नाम को क़ायम रखा। एलगिन मिल तथा बेग सदरलैंड एन्ड कंपनी के ४० वर्ष से टूटे हुए संबंध को आपने पुनः कायम किया और उक्त मिल का प्रबन्ध-कार्य बेग सदरलैंड कम्पनी के सिपुर्द कर दिया। मैक्सवेल परिवार अब भी है।

लाला मानसिंह

लाला मानसिंह जी की जीवनी वट वृक्ष के बीज की तरह है। कौन कह सकता था कि नारनौल (पटियाला) में जन्म लेने वाला यह साधारण बालक कानपुर के प्रमुख व्यापारियों में से एक होगा? न तो पारिवारिक स्थिति ही इस प्रकार की थी कि जिससे भविष्य का कुछ संकेत मिल सकता और न उस

समय की पढ़ाई देखते हुए शिक्षा के आधार पर कोई उम्मीद ही की जा सकती थी। शिक्षा की ओर झुकाव का तो कोई प्रश्न ही न था। प्रसिद्ध ५७ के विप्लव के समय लाला मानसिंह जी की आयु पांच साल की थी। ग़दर की धुंधली कहानियां अक्सर इनके मुंह से सुनने को मिलती थीं।

नारनौल के मिस्सरबाड़े में संवत १८०९ के लगभग लाला जी का जन्म हुआ था। पैतृक व्यवसाय मिठाई बनाना था। पिता की मृत्यु के बाद यह प्रसिद्ध फर्म निहालचन्द बलदेव सहाय के लाला बलदेवसहाय के साथ कानपुर आये। लाला बलदेवसहाय इनके बहनोई थे। दूकान (निहालचन्द बलदेव-सहाय) पर ही इन्होंने मुड़िया सीखी। उस समय स्थानीय पचकूचे में एक फर्म ईश्वरीप्रसाद हरदयाल का था इन्हीं के यहाँ लाला मानसिंह का ब्याह हुआ। मुड़िया का साधारण ज्ञान प्राप्त हो जाने के बाद लाला बलदेवसहाय के हाथ के नीचे ही इन्होंने कार्य करना प्रारम्भ किया। इनके एक बड़े भाई और थे जिनका नाम लाला मीनामल था। उन दिनों निहालचन्द बलदेवसहाय में पक्की आढ़त का काम होता था। मिलों में रुई की सप्लाई भी होती थी। सन् १८९२ में मेवर मिल की एजेन्सी नौघड़े में निहालचन्द बलदेवसहाय के नाम से खोली गई। लाला मानसिंह ने बहुत साधारण तरीके से कार्य प्रारम्भ किया और धीरे-धीरे बराबर आप उन्नति करते गये। अन्ततो-गत्वा इस प्रसिद्ध फर्म के साझीदार भी हो गये, किन्तु आपने अपनी

जबान से अपने को निहालचन्द बलदेवसहाय का साझीदार नहीं कहा। जहाँ भी इनकम टैक्स आदि में आप को जाना पड़ा वहां आपने अपने को मुनीम या नौकर ही कहा। कहना नहीं होगा कि प्रायः सभी अधिकार इस फर्म के कार्य संचालन के आपको प्राप्त हो चुके थे। लाला मानसिंह जी ने बहुत से लड़कों को पढ़ा लिखा कर तैयार किया। यह शिक्षा महाजनो की ही होती थी। इस शिक्षा के आधार पर ही बहुतों ने अपनी उन्नति की। इन शिक्षार्थियों में श्री तुलसीराम का भी नाम प्रमुख है। बाबा तुलसीराम जी और लाला मानसिंह में खूब पटी। लालाजी अपने मुंह से कभी किसी मुनीम, गुमाश्ता या नौकर को जवाब नहीं देते थे। जिसने एक बार नौकरी कर ली आजीवन वह वहीं बना रहा। यही कारण है कि इस फर्म (निहालचन्द बल्देव सहाय) में बहुत पुराने कर्मचारी देखने को मिलते हैं। लालाजी की मित्रता अधिक लोगों से तो नहीं थी किंतु वह किसी से कभी नहीं 'झगड़ते' भी नहीं पाए गए। वह बड़े ही गंभीर स्वभाव के थे। आप नित्य ही गंगास्नान को जाया करते थे, सवारी पर चलना आप को कम पसंद था अधिकतर आप पैदल ही चलते थे।

आपका पूरा समय दूकान पर ही कामकाज देखने में बीतता था। जहां तक हो सकता था आपको अपना काम अपने हाथ से करना अधिक पसन्द था। लालाजी के समय में मेवर मिल में मि० जानसन नाम के मेनेजिंग डायरेक्टर थे। लाला

जी अंगूरिया या केसरी रंग की पगड़ी बांधा करते थे। बदन में अंगरखी, घुटने तक धोती, नरी का देशी जूता और गले में दुपट्टा, सदा यही पोशाक लालाजी की थी। गौर वर्ण और कद लम्बा था। सबसे पहले आप लाठीमोहल में हजारी लाल के मन्दिर के पास बारह आने महीने के किराये में रहते थे। मनीराम की बगिया वाला मकान जिसमें आजकल आप का परिवार रहता है बाद में ख़रीदा गया। यह मकान लालाजी ने अपने जीवन काल में ही बनवाया था। लालाजी में यह विशेषता थी कि यदि कोई भी परिचित रास्ते में मिल जाता तो आप पहले ही अभिवादन के लिए हाथ उठाते थे अर्थात् इतनी बड़ी संपदा प्राप्त हो जाने के बाद भी तनिक-सा भी अभिमान आपको नहीं था। लालाजी के समय में कपड़े बाजार में लाला गुटीराम, लाला कालूराम, लाला बच्चू लाल आदि प्रमुख व्यवसायी थे। किराने बाजार के लाला गोपी किशन, और ला० कल्लूमल चपड़े वालों से आपकी काफ़ी घनिष्ठता की।

आप किसी प्रकार की सभा सोसाइटियों में भाग नहीं लेते थे। जीवन भर केवल व्यापार की ही धुन रही। लालाजी ने यज्ञोपवीत काफ़ी उम्र तक नहीं धारण किया था। पण्डितों से इस सम्बन्ध में काफ़ी छानबीन की गई। जिस दिन महारानी विक्टोरिया की मृत्यु हुई थी उसी दिन लालाजी ने जनेऊ धारण किया था। तब से बराबर इनके परिवार के व्यक्ति जनेऊ पहनने लगे।

लालाजी ने रुई की एक जिनिंग फेक्टरी भी खोली थी। चूंकि जानसन साहब मेवर मिल के डाइरेक्टर थे और वह लालाजी पर अधिक मेहरवान थे अतः उन्हीं के नाम पर यह जानसन् जिनिंग फैक्टरी खोली गई थी। लालाजी के पाँच पुत्र हुए। प्रथम लाला शिवप्रसाद जी, जो कि मेवर मिल की नौघड़े वाली दूकान का कार्य देखते थे; दूसरे लाला मुसद्दीलाल जी; आप भी बराबर निहालचन्द बलदेवसहाय का काम देखते रहते थे। अब अपने फर्म मुसद्दीलाल मोतीलाल का कार्य देखते हैं। तीसरे लाला मोतीलाल, जिन्होंने इस परिवार में प्रथम बार बी० ए० की परीक्षा दी और एलगिन मिल के एजेन्ट प्रसिद्ध फर्म रूपनारायण रामचन्द्र की व्यवस्था देखते रहे। चौथे श्री राधेलाल जी जो गद्दी का काम काज देखते हैं। और पांचवे पुत्र श्री श्रीकृष्ण हैं। लालाजी के तीन कन्याएं भी हुईं।

जिसने एक बार भी लाला मानसिंह को देखा वह प्रभावित हुए बिना नहीं रहा। लाला मानसिंह की मृत्यु के बाद बाजार में उनकी सी साखवाला व्यक्ति दिखलाई नहीं देता, उन्होंने अपनी छियासी (८६) साल की उम्र में भी चश्मा नहीं लगाया। सादगी पसन्द, तड़क-भड़क से दूर रहनेवाले रईस आजकल कहां है। उनमें अहमन्यता, अहङ्कार, लेशमात्र भी नहीं था। बहुत वृद्ध होने पर भी और घर में मोटरगाड़ी होते हुएभी लाठी टेकते पैदलही दूकान जाना उन्हें पसन्द था। वे सदा कहा करते थे कि

इस बहाने रास्ते में बाज़ार के छोटे-बड़े गरीब-अमीर से मुलाकात हो जाती है।

लाला श्रीराम

रियासत पटियाला के नारनौल नामक ग्राम में लाला श्रीराम जी का जन्म हुआ था। जिस समय आप कानपुर आये थे उस समय कल कारख़ाने लगा कर पैसा पैदा करना बड़ा ही कठिन कार्य समझा जाता था। आपके परिवार से सम्बन्धित सम्मिलित फर्म शिवबक्सराय जानकीदास कानपुर के बहुत ही पुरानी फर्मों में से एक था। इसी फर्म से बंट कर आपने अपना कार्य अलग प्रारम्भ किया। कानपुर का प्रसिद्ध व्यापारिक फर्म निहालचन्द बलदेवसहाय आपके चचा का फर्म है। लाला श्रीराम जी के पिता का नाम लाला रामजसमल था। आप छः भाई थे, १—लाला हरनामल, २—लाला जैनारायण, ३—लाला श्रीराम, ४—लाला रामकरणदास, ५—लाला रामचरण, ६—लाला परमानन्द।

ला० श्रीराम बहुत ही कट्टर धर्म-अनुयायी थे। आपके पास सदैव ही पण्डितों की बैठक हुआ करती थी। शास्त्र एवं धार्मिक चरित्रों के श्रवण एवं मनन में लालाजी को विशेष आनन्द आता था। लालाजी का जीवन भर मुख्य ध्येय व्यापार करना और मुक्त हस्त से दान देना ही रहा है। महीने में सैकड़ों मन आटा आपके यहां से गरीबों को बंटता था। तमाम ख़ानदान में जितनी प्रशंसा लालाजी की होती थी उतनी दूसरों को

प्राप्त होना कठिन था। धर्म और परोपकारमय जीवन ही आपके जीवन सिद्धान्त का सार रहा। चित्रकूट में लालाजी का बनवाया हुआ धर्मशाला अब भी मौजूद है। अपने जन्म स्थान नारनौल में भी आपने मन्दिर तथा तालाब बनवाकर सदावर्त जारी किया। लालाजी का अधिक समय धर्मकाण्ड के सम्पन्न करने में बीतता था। वास्तव में लालाजी एक बड़े ही कर्मकांडी वैश्य थे। लाला जी का फर्म रामजसमल श्रीराम और श्रीराम महादेव फ्लावर मिल अब भी लालाजी की शान को कायम किये हुए हैं।

आपकी लगाई हुई आटा मिल हमारे नगर की पुरानी मिलों में से है और उसका कार्य आपके सुपुत्र श्री० कामताप्रसाद एवं भतीजे ला० रघुनाथप्रसाद देखते हैं।

कानपुर के सराफी बसनों में आपका बहुत पुराना फर्म है। कानपुर सेन्ट्रल स्टेशन के सामने (छावनी की ओर) आपने एक बहुत विशाल बंगला अपने रहने को बनवाया था। शालीमार टाकीज का विशाल भवन अभी हाल में आपके सुपुत्रों ने निर्माण कराया है।

सर अलेकजेण्डर मैकराबर्ट

ब्रिटिश इन्डिया कारपोरेशन के संस्थापक के रूप में सर अलेक्जेण्डर मैकराबर्ट का नाम चिरस्मरणीय रहेगा। व्यवसायिक जगत में आपका महत्वपूर्ण प्रवेश सन १८८४ में हुआ। इस वर्ष आप कानपुर ऊलेन मिल्स कंपनी के प्रथम बार मैनेजर

नियुक्त हुए और सन १९२२ में अपनी मृत्यु पर्यन्त आप इसी स्थान पर बने रहे। आपके योग्य संचालन में मिल की अत्यधिक उन्नति हुई और आपके ही समय में वह भारतवर्ष में ऊनी कपड़े का सब से बड़ा मिल हो गया।

सन १९२० में आपने ब्रिटिश इण्डिया कारपोरेशन की स्थापना की। इस समय प्रथम विश्व महायुद्ध समाप्त हो जाने के कारण सभी देशों की आर्थिक स्थिति डाँवाडोल हो रही थी। कारपोरेशन की स्थापना हो जाने पर उसमें सम्मिलित किए जाने वाले ६ कारखानों—कानपुर ऊलेन मिल्स, कूपर एलेन एण्ड कम्पनी, कानपुर काटन मिल्स, धारीवाल मिल्स, नार्थ वेस्ट टैनरी तथा इम्पायर इन्जीनियरिंग कम्पनी, का कार्य सुचारु रूप से चलने लगा। उक्त कारपोरेशन की स्थापना भारत के ब्रिटिश व्यापारिक हितों के लिए सर मैकराबर्ट की बहुत बड़ी देन थी। आज उक्त कारपोरेशन भारत की सर्वप्रमुख ब्रिटिश व्यापारिक संस्थाओं में से एक है।

अपर इण्डिया चेंबर आफ कामर्स की स्थापना में भी आपका ही प्रमुख भाग था। सन १८८९ में चेंबर की स्थापना होने के समय से मृत्यु पर्यन्त आपका उससे सहयोग रहा। सन १८९८ से १९०१ तक तथा फिर १९०२ से १९०८ तक आप उसके अध्यक्ष निर्वाचित हुए। सन १९०० से १९०९ तक प्रान्तीय धारा सभा में भी आप चेंबर की ओर से प्रतिनिधि रहे। आपकी प्रसिद्धि से प्रभावित होकर ब्रिटिश सरकार ने

आपको 'सर' की उपाधि दी थी।

आपके पास प्रचुर संपत्ति थी तथा आपको उत्तरी भारत का व्यवसाय-सम्राट कहा जाता था। सन १९२२ में आपकी मृत्यु हो गई।

कानपुर ऊलेन मिल के कर्मचारियों के लिए जो क्वार्टर बनाये गये हैं उस बस्ती का नाम मेकराबर्टगंज रखा गया है। आपकी मृत्यु के पश्चात एक बार ब्रिटिश इण्डिया कारपोरेशन के डाइरेक्टरों में पारस्परिक मतभेद अत्यधिक बढ़ जाने पर आप की विधवा लेडी मेकराबर्ट अपने सबसे बड़े पुत्र सर अलास डेयर मेकराबर्ट के साथ स्काटलैंड से भारत आईं और मि० लेविस को डाइरेक्टर बोर्ड से प्रथक कर शांति स्थापित की।

सर अलेक्जेन्डर अत्यन्त कुशाग्र बुद्धि वाले मृदुभाषी और बड़े मेहनती व्यक्ति थे।

लाला कुंजीलाल ओमर

कानपुर के निकट फतेहपुर जिले में एक स्थान जहानाबाद है। वह आजकल कोड़ा जहानाबादके नाम से प्रसिद्ध तो है किन्तु जहानाबाद की वह श्री अब नहीं है। इसी जहानाबाद में एक समय ८४ बसने शराफी के चलते थे और कोई ऐसा व्यापार न था जो इस जहानाबाद में न होता हो। यहीं से यह ओमर वैश्य व्यापार व्यवसाय के लिए बांदा, नयेगांव छावनी, पन्ना लखनऊ तथा कानपुर में आकर आबाद हुए। कानपुर उन दिनों
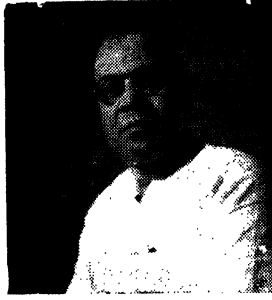
श्री बालकृष्ण महेश्वरी
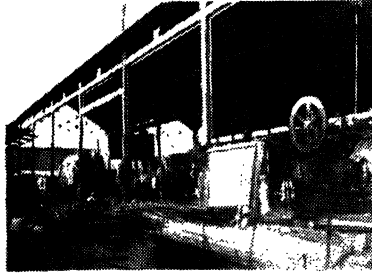
कानपुर रोलिंग मिल

इतना प्रसिद्ध नहीं था किन्तु व्यापारी वर्ग का आकर्षण कानपुर की ओर बढ़ता ही जाता था।

ला० कुंजीलाल ओमर के पूर्वज भी जहानाबाद से आज से लगभग सात पीढ़ी पहले कानपुर आये और मूलगंज में ही आकर बस गये। उन दिनों मूलगंज और ठठराई आदि में यह ऊंची ऊंची गगनचुम्बी अट्टालिकायें नहीं थीं। यहां पर बाँस के टट्टर लगी दूकानें और फूस व खपरैल से बने मकान थे। वर्तमान कचहरी उन दिनों नवाबगंज में थी। प्रारम्भ में ही लाला कुंजीलाल के पूर्वज लाला गजाधरलाल ला० बद्रीदास आदि ने शिवलाल सीताराम के नाम से ठठराई में बरतनों की दूकान की थी और आखीर तक यह बर्तनों का काम काज चलता रहा। ला० कुंजीलाल के समय में एक दूकान शिवलाल बालकिशन के नाम से भी हुई। बर्तनों का व्यापार व लेन-देन तथा गिरोगाँठ का काम ही इस परिवार का मुख्य व्यापार रहा है। ला० कुंजीलाल का जन्म सन १८२० में जहानाबाद में ही हुआ था और सयाने होने पर आप कानपुर आये। यहाँ आकर आप भी अपना पैतृक व्यवसाय बर्तनों का काम करने लगे। इन्होंने कानपुर के बाहर भी यह व्यवसाय किया था और यह भी कहा जाता है कि बहुत दिनों तक इन्होंने लखनऊ में बरतनों की फेरी भी की था।

ला० कुंजीलाल जी के पिता का नाम ला० सीताराम था

और ला० श्यामसिंह उर्फ श्यामू बाबू (जिनका कि मूलगंज में मशहूर बंगला अब भी है) इनके भतीजे थे। लाला कुंजीलाल अपने समय के ओमर वैश्यों में काफी रूपवान माने जाते थे। लम्बे और तगड़े बदन के तो थे ही साथ ही आखिरी समय तक न तो लाला कुंजीलाल ने चश्मा ही लगाया और न लाठी लेकर ही चले हालांकि अन्तिम काल में उनकी आयु अरसठ साल के लगभग हुई थी। ला० कुंजीलाल की मुख्य पोशाक मिरजई, मारकीन की धोती और पगड़ी थी। सन १९०८ में लालाजी की मृत्यु कानपुर में ही हुई। लाला कुंजीलाल ने अपने जीवन काल में जहाँ अनेक धार्मिक कार्य किये हैं वहीं सब में प्रमुख उनका बनवाया हुआ प्रसिद्ध मन्दिर है। यह मन्दिर आज भी बड़ी शान के साथ चौक के बीच मौजूद है। जिस जगह मन्दिर बना है वहाँ पर पहले कोतवाली थी। इसी कारण मन्दिर के पास जो शिवजी का मन्दिर है उसमें जिस मूर्ति की स्थापना है उसे कोतवालेश्वर महादेव कहा जाता है। ला० कुंजीलाल का यह मन्दिर जहाँ आज है वहाँ पहले नहीं था। पहले यह मन्दिर सरसैया घाट पर था। उन दिनों इस घाट पर सरसई (सिरस) के पेड़ बहुत अधिक संख्या में थे। इसी कारण इस घाट का नाम सरसैया घाट पड़ा। सन १८५७ के विप्लव के बाद जब अंग्रेजों के पैर कानपुर में जमे तो एक बार जैसा कि उन्होंने समूचे देश को तबाह व बरबाद किया है वैसे ही कानपुर को भी तोपों से उड़ा देने की आज्ञा हुई, किन्तु

बहुत दौड़ धूप व शहर के रईसों की कोशिश के कारण समूचा शहर नहीं उड़ाया गया किन्तु गंगा के किनारे की इमारतें तो उड़ाई ही गईं और इसी ध्वंस लीला में उनका मन्दिर भी उड़ा दिया गया।

कहा जाता है कि सरसैया घाट में जहाँ पर विक्टोरिया की मूर्ति है वहीं पर ला० कुंजीलाल जी के पूर्वजों का बनवाया हुआ यह मन्दिर था। जिस समय मन्दिर के उड़ाने की बात सामने आई तो ला० कुंजीलाल जी ठाकुर जी महाराज को अपने घर ठठराही उठा लाये और मन्दिर मय तमाम सामान के ध्वस्त कर दिया गया। ला० कुंजीलाल की यह टेक थी कि अब यदि मन्दिर बनेगा तो सरकारी जमीन में ही बनेगा। धीरे-धीरे यह मौका भी आया और चौक स्थित कोतवाली हटाई गई और उसकी जमीन नीलाम हुई। अतः लालाजी ने यह जमीन साढ़े तेरह हजार में ख़रीद कर मन्दिर का निर्माण कराया और बड़ी सजधज व धूमधाम से मन्दिर की प्रतिष्ठा हुई। कहा जाता है कि प्रतिष्ठा के समय पंद्रह दिन तक बराबर ब्रह्मभोज होता रहा। ला० कुंजीलाल इलाहाबाद के दारागंज स्थित रामानुज सम्प्रदाय के महन्त तुलसीदास के शिष्य थे। दारागंज की यह गद्दी 'तोतादरी रामानुज सम्प्रदाय' से सम्बन्धित है। आजकल महन्त रघुनाथ दास जी इस गद्दी के महन्त हैं। अपने गुरुद्वारे की परम्परा के आधार पर ही लालाजी भी हजारा माला की झोली अपने गले में हर समय रखते थे और प्रभु के नाम का

जप बराबर किया करते थे।

इनके भतीजे स्व० श्यामू बाबू भी हमारे नगर की एक प्रसिद्ध हस्ती थे। गोकि उनका जीवन लाला कुंजीलाल के जीवन से विपरीत था फिर भी उन्होंने हमारे नगर में काफ़ी ख्याति प्राप्त की। वे दंगलों के बहुत शौकीन थे, और बड़ी ही रंगीन तबियत उन्होंने पाई थी। दबंग ऐसे थे कि बड़े बड़े रईसों के छक्के छुड़ा देते थे। वे गनेशजी के परम उपासक थे और अन्तिम समय वे अपना सब कुछ गनेश जी के अर्पण कर गये।

मूलगंज की विशाल अट्टालिकाओं के बीचोंबीच अब भी उनके मकान का दूसरा खण्ड बँगलेनुमा बना है जिसे लोग श्यामू बाबू का बंगला अब भी पुकारते हैं।

लाला शीतलप्रसाद मामराज महेश्वरी

लाला शीतलप्रसाद मुराड़िया संवत १९०९ के लगभग लखना जिला इटावा से व्यापार करने के उद्देश्य से कानपुर आये और माहेश्वरी मोहाल में बसे। २ वर्ष बाद आपने अपने भाई लाला मामराज को भी लखना (जिला इटावा) से बुला लिया। आपने पं० राधाकृष्ण के साझे में रुई व तिलहन की दलाली का काम नौघड़े में आरम्भ किया। वह साझा सं० १९-५२ में खत्म हो गया और इस बीच लाला शीतलप्रसाद ने काफ़ी रुपया पैदा किया तथा जायदाद आदि खरीदी। भन्नाना-पुरवा में चन्द्रिका देवी का एक विशाल मन्दिर बनवाया जो अब तक विद्यमान है। भैरोंजी के पास एक शिवाला व

बारादरी भी आपने बनवाई।

सम्वत १९५१ में लाला शीतलप्रसाद ने मि० बिअर नामक एक अंग्रेज़ के साझे में काम आरम्भ किया। मि० बिअर कानपुर में बिअर ब्रादर्स के नाम से प्रसिद्ध रुई के व्यापारी थे। नये फर्म का काम बिअर शीतल के नाम से प्रारम्भ हुआ। एक कपास ओटने की मिल भन्नाना पुरवा में और उसके कुछ समय बाद औरैया जिला इटावा, तथा कोंच जिला जालौन में भी जिनिंग फैक्टरी चालू की गई। इस समय कानपुर में बिअर शीतल रूई के सबसे बड़े व्यापारी गिने जाते थे। लाला शीतलप्रसाद ने प्रचुर सम्पत्ति अर्जित की। सम्बत १९६० में रुई में लम्बा नुकसान लगा और इसी कारण से सम्बत १९६४ में काम बन्द कर दिया गया।

सम्बत १९६४ में ही लाला शीतलप्रसाद का स्वर्गवास हो गया। आपके कोई पुत्र न था। सम्बत १९७९ में लाला मामराज भी स्वर्गवासी हुये। आप बड़े ही ठाठ-बाट के आदमी थे। आपने अपने पुत्र लाला हनुमानदास के विवाह में ८० हज़ार रुपये खर्च किए थे।

लाला हनुमान दास जी बड़ी ही सात्विक वृत्ति के पुरुष हैं और आजकल अपने पैतृक भवन में ही अपना कारोबार करते हैं।

लाला कल्लूमल चपड़े वाले

लाला कल्लूमल चपड़े वाले अग्रवाल वैश्य थे। इनके पूर्वज फ़तेहगढ़ (फ़र्रुख़ाबाद) में रहते थे। उन दिनों यहीं पर फ़ौज का कैम्प था। अतः लालाजी के पिता लाला

सालिगराम जी इसी केम्प की कमसरियट के ठेकेदार थे। ला० ठाकुरदास लालाजी के बाबा थे। सन ५७ के विप्लव के समय लाखों मन अनाज इनके यहाँ से सेना को सप्लाई किया गया था किन्तु अन्त में फौजों ने ही इन्हें लूटा और एक प्रकार से इनकी सम्पूर्ण सम्पत्ति लुट गई। लगभग ६० साल के हुए जब लाला कल्लूमल फ़तेहगढ़ से कानपुर आये थे और अपने बहनोई ला० जमुनादास के यहाँ ठहरे थे। उस समय लालाजी की अवस्था लगभग १४-१५ साल की थी। लाला जी का जन्म फ़तेहगढ़ ही में सन १८४९५० के बीच हुआ था और प्रसिद्ध सन ५७ के विप्लव में ७-८ साल की अवस्था थी। फ़तेहगढ़ की दूकान पर लालाजी ने साधारण शिक्षा मुड़िया और हिन्दी की पाई थी। इसी अक्षर ज्ञान की पूँजी को लेकर लालाजी व्यवसाय क्षेत्र में उतर पड़े थे।

कानपुर आने पर चपड़े का व्यवसाय प्रारम्भ हुआ। उस समय की किराने की फर्म दुर्गाप्रसाद लक्ष्मीनारायण विभिन्न स्थानों से लाख खरीद कर चपड़ा बनाते थे। पहले पहल इनकी गद्दी बंशीधर कल्लूमल के नाम से स्थापित हुई। बेगमगंज में ही इनका चपड़े का कारख़ाना स्थापित हुआ और उसी जगह जिसे तलाक महल कहते हैं, (अब कल्लूमल स्ट्रीट में) यह गद्दी थी। यहीं पर मकान भी लिया गया और लाला कल्लूमल इनके बड़े भाई लाला बंशीधर और एक बहिन, (लाला सालिगराम की यही तीन सन्तानें हुई थीं) सब इसी बेगमगंज

वाले घर पर ही रहते थे। ५-७ साल तक यह फर्म उपरोक्त नाम से चली। बाद में भाइयों में बंटवारा हो गया और श्री० सालिगराम कल्लूमल के नाम से दूसरी फर्म कायम हुई। इस फर्म का कारोबार सन ३१ के दंगे तक यहीं कल्लूमल स्ट्रीट में होता रहा। सन ३१ के दंगे में यह कल्लूमल स्ट्रीट विशेष रूप से आक्रान्त हुई थी। अतः सारा काम काज वहां से उठ कर नयेगंज की प्रसिद्ध दूसरी फर्म कल्लूमल सत्यनारायण में होने लगा। गद्दी अब भी वहीं है जिसमें पूजनादि नियमित रूप से अब भी होता है। इसी बीच जनरलगंज में उदयराम गोपीराम के नाम से किराने की आढ़त की दूकान खोली गई। यह दूकान लाला-जी की साझे में थी और लगभग ५१ साल तक कायम रही। अब भी उसी गद्दी पर कल्लूमल गोपीराम के नाम से काम होता है।

बम्बई में भी कालबादेवी स्ट्रीट में एक दूकान किराने की आढ़त की खुली। इसमें कल्लूमल उदयराम नाम पड़ता था और यह फर्म पूरे ४१ वर्ष तक बम्बई में कार्य करती हुई ख्याति प्राप्त करती रही। सम्वत ६७–६८ में कल्लूमल सत्यनारायण फर्म नयेगंज में खोली गई जो अब भी अपने व्यवसाय में ख्याति पूर्वक कार्य कर रही है। एक दूकान टिपटूर (मैसूर राज्य) में भी खोली गई। कानपुर में कल्लूमल उदयराम में चलानी का काम और दूसरी दूकान कल्लूमल सत्यनाराण में बिकवाली का काम होता था। इस प्रकार लाला कल्लूमल अपने साधारण ज्ञान के बलबूते पर ही इतने बड़े स्तर पर अपने

व्यवसाय का संचालन करते थे। आश्चर्य होता है कि बिना किसी प्रकार की शिक्षा के लालाजी अपने व्यापार में कैसे सफल होते रहे ? इस उदाहरण से स्पष्ट हो जाता है कि भारतीय व्यवसाय पद्धति इस दिशा में पूर्ण शिक्षा देने में समर्थ है।

लाला कल्लूमल जी का विवाह फतेहगढ़ में ही हुआ था। लाला जी के पाँच पुत्र और एक कन्या हुई। उनके जेष्ठ पुत्र ला० गोपीराम थे जिनका सम्वत ६० में ही स्वर्गवास हो चुका था। द्वितीय पुत्र ला० सुखनन्दन लाल आजकल तमाम दिन पूजा पाठ भगवत चिन्तन में ही व्यतीत कर रहे हैं। तृतीय पुत्र रामचरण जी जायदाद और कत्थे का व्यवसाय देखते हैं। कानपुर से बाहर कत्थे आदि के उत्पादन की व्यवस्था इन्हीं के जिम्मे है। चतुर्थ पुत्र ला० सत्यनारायण जी बड़े ही भगवतभक्त हैं पूजन पाठ आदि के बड़े ही पक्के हैं, नएगंज की प्रसिद्ध फर्म कल्लूमल सत्यनारायण और जनरलगंज की रंग की दूकानें आदि की देखरेख व व्यवस्था इन्हीं के द्वारा हो रही है। आपने किराना सेवा समिति के मंत्रि पद पर रह कर लगभग १५ साल बहुत ही योग्यतापूर्वक काम किया है। आपके पौत्र बाबू त्रिलोकीनाथ भी व्यापार व्यवसाय की उन्नति की ओर सचेष्ट हैं। आजकल यह परिवार परमट के पास अपने निजी बँगले में ही रह रहा है।

सम्वत् १९६० में पुराने कानपुर में एक महात्मा स्वामी शंकरानन्द जी आए थे। यह परमहंस अवस्था में ही रहते थे,

वस्त्र आदि का त्याग कर चुके थे, बड़े ही पहुंचे हुए समझे जाते थे, इन्हें किसी से कुछ मतलब नहीं था, मौन ही रहते थे। लाला कल्लूमल भी इनके दर्शनों को गये थे। भेंट-पूजा उपस्थित करने पर इन सन्त महोदय ने उसे अस्वीकार कर दिया। इससे लालाजी को काफी क्षोभ हुआ। लालाजी ने स्वीकार न करने का कारण पूछा तो महात्मा जी ने लिख कर कहा 'वैष्णव होते हुए भी, सन्ध्या गायत्री नहीं करते हो? भ्रष्ट हो चुके हो।' लालाजी ने फिर इससे मुक्ति का उपाय उन महात्मा जी से पूछा। उन्होंने तारायण व्रत यज्ञ तथा संस्कृत पाठशाला के स्थापन की आज्ञा दी। तारायण व्रत में तारा निकलने पर भोजन और जव के आटे में गो-मूत्र मिला कर रोटी बनाने का आदेश दिया। लाला कल्लूमल ने सपत्नीक यह व्रत पूरे एक महीने तक किया। संस्कृत पाठशाला भी खुलवाई जो कि अब भी बांस बाजार में कल्लूमल पाठशाला के नाम से चल रही है। पंडित मथुराप्रसाद इसके अध्यापक पूर्वकाल से ही चले आ रहे हैं। यह पाठशाला गवर्नमेण्ट संस्कृत कालेज बनारस से सम्बन्धित है। फर्म की ओर से विद्यार्थियों को छात्रवृत्ति आदि की व्यवस्था है। यज्ञ भी पूरे एक महीने तक हुआ था। जिस समय बेगमगंज वाले घर में यज्ञ मण्डप बनाया जा रहा था तो पण्डितों ने कहा घर छोटा है मन्डप बड़ा बनाना चाहिये। इस पर लाला जी ने घर का एक भाग गिरवा दिया और मन्डप बना। कहते हैं जिस समय यह दीवालें गिराई जा रहीं थीं तो नींव में दो सर्प एक

स्थान पर ही बैठे हुए निकले। वहीं से गिराना बन्द किया गया। इस यज्ञ में भाग लेने के लिये दूर दूर के विद्वान आए थे। इसी यज्ञ में खेवरा जेवरा के प्रसिद्ध वेदपाठी पण्डित अयोध्याप्रसाद और पण्डित शंकटाप्रसाद तिवारी वाण-प्रस्थी भी आये थे। लाला कल्लूमल के परिवार का दृढ़ विश्वास है कि इसी यज्ञ के बाद ही यह परिवार वैभवशाली हुआ। इसी यज्ञ में ही लाला कल्लूमल ने बच्चों के यज्ञोपवीत संस्कार कराये थे।

लाला कल्लूमल जी ने काफ़ी तीर्थ यात्रा भी की थी अर्थात् श्री जगन्नाथ जी, सेतबन्धु रामेश्वर, द्वारिका जी आदि गए थे। उन दिनों द्वारिका जी जाने के लिये रेल नहीं थी अतः यह यात्रा बैल गाड़ियों पर ही हुई थी। संवत ७७-७८ में नैमिषारण्य में एक धर्मशाला भी लालाजी ने बनवाई जिसके संचालन के लिये स्थानीय लाठी मुहाल स्थित जायदाद लगी हुई है। लालाजी के नाम से ही कल्लूमल हाल सनातन धर्म कालेज होस्टल में बना हुआ है। इसका उद्घाटन तत्कालीन गवर्नर सर मालकम हेली ने किया था। लालाजी स्वास्थ्य के नियमों का अच्छी तरह पालन करते थे। नित्य ही सुबह तेल की मालिश कराना और कसरत करना उनका दैनिक नियम था। वह स्नान आदि के बाद सन्ध्योपासन और गायत्री आदि का जाप नियमित रूप से करते थे। दस बजे के लग-भग भोजनादि से निवृत्त होकर गद्दी पर पहुंच जाते थे। भोजन में हरे शाक लालाजी को अधिक प्रिय थे। गर्मी के दिनों में खस

की टट्टियां दूकान में लग जातीं और लाला कल्लूमल व उनकी दूकान का समूचा स्टाफ विश्राम करता। वे गर्मी के दिनों में दोपहर को बारह बजे से चार बजे तक किसी भी नौकर से काम नहीं लेते थे। ४ बजे शाम तक प्रायः सभी कर्मचारी भी सोया करते थे। ४ बजे के बाद लालाजी भी उठते और काम काज प्रारम्भ होता। लगभग ५ बजे के लालाजी घूमने जाते। साथ में पण्डित बलदेवप्रसाद महराज वैद्य अवश्य होते थे। भगवत दास घाट पर पहुंचकर वहीं नित्य शाम को संध्योपासन आदि करते। इसके बाद रात को प्रायः सभी दूकानों में जाते थे। किराने बाजार की दूसरी प्रसिद्ध फर्म श्रीकृष्ण गोपीकृष्ण के यहां नित्य कथा होती थी। वहाँ कथा सुनने लाला कल्लूमल जी अवश्य जाते। लाला गोपीकृष्ण महेश्वरी से लाला जी की घनिष्ठ मित्रता थी और नित्य की बैठक भी थी।

लालाजी साल में एक बार नगर की समस्त संस्कृत पाठ-शालाओं के अध्यापकों को एकत्र करके उनका सम्मान करते थे। इसी सम्मेलन में कभी कभी कोई प्रश्न भी रख दिया जाता था जिस पर विचार होता था। अक्सर विद्यार्थियों को कम्बल, लोई, छाता आदि भी वितरण करते थे। अक्सर लाला-जी बिठूर जाते और वहाँ के ब्राह्मणों का भी सम्मान करते थे।

लालाजी के मित्रों में लाला गोपीकृष्ण महेश्वरी, बा० आनन्दस्वरूप, बाबू विक्रमाजीतसिंह, हाफिज मुहम्मद हलीम, अब्बुल हसन साहब (अहमद हुसेन मजिस्ट्रेट साहब के पिता)

प्रमुख थे। लाला जी शतरंज भी खेलते थे और मुन्शी कल्लू सिंह के साथ इनकी शतरंज खूब डटती थी। मुन्शी कल्लू सिंह भी लालाजी के रात दिन के साथी थे। लालाजी के यहां एक मुनीम राजाराम थे इन्हें बानी लिखने व शायरी करने का शौक था *। लाला जी का अपने मुनीम राजाराम जी पर अटल विश्वास था और सारे काम का संचालन, यहाँ तक कि पारिवारिक सम्बन्ध भी बग़ैर इनकी सलाह के नहीं करते थे। राजाराम जी के छोटे भाई श्री० देवीचरण अच्छे कवि रहे हैं और कल्लूमल सत्यनारायण फर्म के अब भी प्रधान कार्यकर्ता हैं। लालाजी का व्यवहार (सराफी के व्यापार में) मुसलमानों से अधिक था, हुंडी पुरजे का भी काम काज होता था। लालाजी ने अपने जीवन काल में ही २५०००) का संकल्प धार्मिक कार्यों में किया था, अब तो यह रकम ब्याज जोड़ कर ४००००) तक हो गई है। लालाजी की मृत्यु सन् २६ मे चैत्र के महीने में हुई थी। मृत्यु के बाद लालाजी के योग्य पुत्रों ने 'नगरभोज' किया था जिसमें कहा जाता है कि ५००० तो सिर्फ पण्डित ही आमन्त्रित हुए थे। आज ला० कल्लूमल जी नहीं हैं किन्तु उनका लगाया हुआ यह परिवार रूपी वृक्ष प्रस्फुटित और पल्लवित हो रहा है।

---

* असवर्ण विवाह बिल पर उनकी बानी का एक नमूना यह है:—मिस्टर पटेल (विट्ठल भाई) तुम तो बड़े सुर्ख रू निकले। तुम स्वामी दयानन्द के दादा गुरु निकले।

ला० कल्लूमल की जीवनी के साथ ही यदि हम ला० उदयराम की जीवनी न प्रकाशित करें तो फिर उपरोक्त जीवनी अधूरी ही रहेगी। ला० कल्लूमल बहुत ही आराम तलब व्यक्ति थे और ला० उदयराम बड़े मेहनती। ऐसे मेहनती कि अपने जीवन भर उन्होंने केवल अपना दूकान व मकान के अलावा शायद नाटक, सिनेमा, घूमना, फिरना जाना ही नहीं था।

ला० उदयराम जोधपुर रियासत के नागोर नामक क़स्बे के रहने वाले महेश्वरी वैश्य थे, वे सम्वत १९४५ के लगभग कानपुर आये और मुनीमत करने लगे। बाद में उन्होंने ला० कल्लूमल के साझे में उदयराम गोपीराम की दूकान जनरलगंज मुहल्ले में श्री जगन्नाथ जी की गली में की। वे अत्यन्त फुर्तीले, व्यवहार के बहुत खरे व्यक्ति थे। उनकी फुर्ती की एक बात अब तक मशहूर है कि सुपारी का १ बोरा जितनी देर में तुलता था वे भोजन करके मकान से वापस आ जाते थे। लिखने में वे बहुत ही तेज थे। केवल मुड़िया और मारवाड़ी पढ़ कर उन्होंने जिस प्रकार उन्नति कर धनोपार्जन किया वह समझने और सोचने की वस्तु है।

ला० उदयराम बात के बहुत धनी थे, जिस बात पर अड़ जाते थे उसे पूरा करके ही छोड़ते थे। उन्होंने एक बार जी० आई० पी० रेलवे से इतना कड़ा मोर्चा लिया कि रेलवे और उसका एजेण्ट हिल गया था। यह सन १९२३ या १९२४

की बात है। जो माल जी० आई० पी० रेलवे से कानपुर के गुड्सशेड (माल गोदाम) में आता था और पड़ा रहता था उस पर तीन दिन तक कोई डेमारेज नहीं लिया जाता था, बाद में शायद एक पैसा मन डिमारेज लिया जाने लगा था। परन्तु जी० आई० पी० रेलवे ने उसे एकाएक बढ़ा कर एक आना मन कर दिया था और मियाद तीन दिन से घटा कर केवल एक दिन की ही कर दी थी। सबसे ज्यादा नुकसान किराने की ही मण्डी का था। यह बात हमारे लालाजी को खटकी। उन्होंने पहिले तो बाजार की ओर से रेलवे की अनुनय विनय की। जब रेलवे अधिकारियों ने इस ओर ध्यान ही नहीं दिया तो लालाजी ने किराना बाजार में संगठन किया और यह निर्णय करवाया कि जी० आई० पी० रेलवे से असहयोग किया जावे और माल मंगाना बन्द कर दिया जावे। पहिले तो रेल वालों ने इसे हंसी में उड़ा दिया। पर जब यह 'हड़ताल' बराबर ४ महीने चली तो रेल वालों के होश उड़ गये और उन्हें किराने के दूकानदारों से समझौता करना पड़ा। क्योंकि इस ४ महीने में जी० आई० पी० रेलवे से आने वाला माल बम्बई से बी० बी० एण्ड सी० आई० रेलवे से आने लगा था जिससे जी० आई० पी० रेलवे को लगभग १५ लाख की हानि उठानी पड़ी। ला० उदयराम के साथ बाजार के प्रमुख व्यक्तियों में ला० काशीराम, ला० केवलराम, ला० मन्नीलाल इत्यादि थे।

आपके कोई पुत्र नहीं था। आपने दो दत्तक पुत्र लिये वे भी

मर गये। बाद में श्री कृष्णगोपाल जी आये, खेद है कि वे भी नहीं रहे। इस समय उनके परिवार में लाला उदयराम जी की बड़ी पुत्र-वधू एवं श्री कृष्णगोपाल जी की धर्मपत्नी एवं उनका १४ साल का पुत्र ही है। उनकी दूकान उदयराम कृष्णगोपाल के नाम से अब भी नयेगंज में एक ट्रस्ट के अधीन चल रही है।

लाला उदयराम का देहान्त सन १९३० के लगभग हुआ था। उन्होंने अपने जीवन पर्यन्त लाला कल्लूमल का साझा रक्खा। यह साझा ऐसा था जिसकी मिसाल आज तक दी जाती है। लाला कल्लूमल जी ने कभी उनकी दूकान का हिसाब नहीं समझा। जो कुछ वे जमा-खर्च कर देते थे वही माना जाता था।

लालाजी ने एक धर्मशाला नैमिषारण्य में बनवाई थी जिसमें आधी रकम लाला कल्लूमल जी की लगी है। अपने अन्तिम समय वे प्रतिदिन ५ ब्राह्मण भोजन कराने को कह गये थे जो आज तक कराये जाते हैं।

लाला गुटीराम जी

स्व० लाला गुटीराम अपने समय के कानपुर के कपड़े बाजार के एक प्रकार से सर्वेसर्वा थे। लाला गुटीराम जी के पूर्वज बीकानेर राज्यान्तर्गत जैसलमेर के रहने वाले थे। आपका जन्म सं० १९०९ विक्रमीय के भादों महीने में शुक्ल पक्ष में हुआ था। कानपुर आने से पहले फरुखाबाद में उनका वाणिज्य व्यवसाय चलता था। सन १८५७ के विप्लव के बाद से

फरुखाबाद की मन्डी एक प्रकार से क्षीण हो गईथी अतः अनेक प्रसिद्ध व्यवसायी यत्र तत्र वाणिज्य-व्यवसाय की खोज में जा बसे थे। उनमें से कुछ ने कानपुर की ओर निगाह दौड़ाई और यहीं आकर बस गये। उस समय कानपुर अपने प्रारम्भ के दिनों में था, अतः इन व्यापारियों और अन्य उद्योगपतियों के सहारे चमक उठा और जो व्यवसायी इस शहर की ओर आकर्षित हुए थे उन्होंने यहां आकर काफी उन्नति की।

उपरोक्त बातों से आकर्षित होकर लाला गुटीराम जी भी फरुखाबाद से कानपुर संवत १९३२ में आये और यहां पर काहूकोठा में श्रीनाथ शंकरनाथ के नाम से कपड़े की दूकान खोली। लालाजी जितने व्यापार कुशल थे उतने ही व्यवहार कुशल भी थे। अतः व्यापार में उन्नति करना उनके लिये अधिक कठिन नहीं हुआ। लालाजी ने कोई बड़ी लम्बी रकम कमा ली हो और इसीलिये उनके जीवन चरित्र का महत्व हो, ऐसी बात नहीं है। बल्कि लाला गुटीराम जी उस समय कपड़ बाजार की न्यायमूर्ति समझे जाते थे क्या मजाल थी जो लालाजी के निर्णय के विरुद्ध बाजार में पत्ता भी हिल जाता। उस समय वर्तमान रजिस्टर्ड कपड़ा कमेटी अपने शैशव काल में थी। न तो रजिस्टर्ड ही हुई थी, न इतनी तड़क-भड़क थी, और न उसकी इतनी शान-शौकत ही कायम हुई थी। किन्तु वास्तव में वह समय कपड़ा कमेटी का स्वर्ण युग था—रामराज्य था। लालाजी ने हजारों रुपया बाजार वालों का अदालत जाने से बचाया और

श्री लक्ष्मीनारायण खन्ना

सदा नीर-क्षीर विवेक न्याय के आधार पर ही उनके निर्णय हुआ करते थे। दोषी पक्ष को गौशाले में प्रायश्चित्त स्वरूप दान देना पड़ता था। कभी-कभी दोषी पक्ष का बाज़ार भी बन्द कर दिया जाता था। उस समय बाज़ार बन्द कर देने की घोषणा 'इज्ज़तदार के लिये मरने के समान थी। किन्तु क्या मज़ाल थी जो बाजार में कोई दलाल या दुकानदार एक सूत भी ऐसी पार्टी से ख़रीद या उसके हाथ बेच सके।

लालाजी के जीवनकाल की अनेक घटनाएं आज भी बाज़ार के पुराने व्यवसायिओं को कथा-वार्ता की भाँति याद हैं और आज भी इस नई पौध के दुकानदारों के बीच चर्चा करते हुये उनकी आँखे गीली हो उठती हैं। एक बार लालाजी ने एक फर्म के 'बाज़ार बन्द' करने का ऐलान करवा दिया। कुछ लोगों ने न्याय की परीक्षा करनी चाही और लालाजी की दुकान के उस समय के दुकानदार स्व० सनेहीराम जी सिकठिया के द्वारा कुछ गाँठें उस फर्म को जिसका बाज़ार बन्द हुआ था एक रुपया थान कम भाव में बिचवा दीं। जिस समय लालाजी को इस बिक्री की ख़बर लगी, लालाजी बड़े ही दुखी हुये और तुरन्त कमेटी की बैठक बुलाने की आज्ञा दी। स्वयं पंचों के जूतों के पास जाकर बैठ गये। लोगों ने बहुत कहा किन्तु लालाजी यही कहते रहे कि मैं तो इस समय गुनाहगार हूं अतः पंचों के बराबर नहीं बैठ सकता। अन्त में लालाजी ने स्वयं ही

अपने ऊपर (१००) की दण्ड व्यवस्था तथा अपनी फर्म को तीन दिन के लिये बाजार बन्दी की घोषणा कर दी।

लालाजी की इस प्रकार की दन्ड व्यवस्था चालू करने पर कुछ लोगों ने कपड़ा कमेटी पर मुकदमा चला दिया। लालाजी ने अदालत में सभी सदस्यों को बरी करते हुये सारी जिम्मेदारी अपने ऊपर ओढ़ ली। अन्त में अदालत द्वारा आप निर्दोष साबित हुये और विरोधी पक्ष को हार खानी पड़ी। लालाजी की फर्म श्रीनाथ शंकरनाथ में लालाजी साझीदार थे। समय के उतार चढ़ाव के साथ ही इस फर्म को भी घाटा हुआ। लालाजी ने अपनी साख कायम रखने के लिये कुल रुपया अपने हिस्से से भुगतान करके सम्वत १९७० में बसना पूज कर दुकान उठा दी। इसी समय एक प्रसिद्ध फर्म को और घाटा लगा और उसके मालिकगण उस समय भुगतान न कर सके, वे लोग यहां से कलकत्ते चले गये। कुछ महीनों में ही थोड़ी पूंजी अर्जित करके इस फर्म के मालिक रात्रि में छिपके लालाजी के पास आये और लाला गुटीराम को उनका रुपया देने लगे। किन्तु लालाजी ने रुपया लेने से इनकार कर दिया और कहा कि जब तक आप बाजार में सबको रुपया न अदा कर सकें तब तक मुझे रुपया लेने का कोई हक नहीं है। उस फर्म के मालिक पुनः कलकत्ते गये और अधिक पैसा पैदा करके बाजार में आये और सबका भुगतान किया। किन्तु लालाजी उस समय इस लोक को छोड़ कर गोलोक जा चुके थे। अतः भुगतान देने वाले सज्जन लालाजी

की याद में बहुत दुःखी हुये।

लाला गुटीराम जी के ही जीवन काल में प्रसिद्ध फ़र्म नौरंगराय कालूराम की नींव पड़ी थी। यहां की दुकान उठा देने के बाद लाला गुटीराम जी कलकत्ते की प्रसिद्ध फ़र्म ताराचन्द घनश्याम दास के साथ चांदपुर में पाट का काम करने लगे और वहीं सम्वत १९७३ की पूस सुदी ६ को लालाजी गोलोक-वासी हुये। लालाजी रोजाना जनरलगंज में स्थित हनूमानजी के दर्शन करने जाया करते थे। ला० काशीराम, पं० प्रागदत्त दुबे, लाला बिहारीलाल तथा लाला सादीराम आदि लाला जी के घनिष्ठ मित्रों में से थे और इन लोगों की नित्य ही दिन में एक बार बैठक हो जाती थी। वास्तव में लाला गुटीराम का समय कानपुर के कपड़े बाजार का स्वर्ण युग था और वाणिज्य में धर्म तथा न्याय का उस समय बोलबाला था। आज भी बाजार के पुराने दुकानदार डबडबाई आँखों से उस समय के व्यवहार और वर्ताव तथा मड़क की चर्चा किया करते हैं।

लाला मातादीन हींगवाले

सन १८६० में लाला मातादीन जी के पिता लाला लालजी-मल फ़रुखाबाद से कानपुर आये। मूलतः आप पंजाब से आये थे। उस समय उनकी उम्र लगभग ८० वर्ष की होगी। इतनी उम्र में फरुखाबाद से पैदल आना एक कठिन कार्य था, क्योंकि उस समय कानपुर में रेल न थी। लाला लालजीमल के ससुर लाला वृन्दावन लाल फ़रुखाबाद में मीर साहब की

कोठी के दलाल थे और पठानों का काम करते थे। लाला लालजीमल उन्हीं के ज़ेरसाया काम करते थे। ससुर दामाद दोनों ही का काम पठानों से पड़ता था। अतएव दोनों ही पश्तो भाषा मज़े में बोल लेते थे। अपने पिता के नीचे काम करते-करते लाला मातादीन जी भी पश्तो सीख गये थे। जिस समय लाला लालजीमल कानपुर आये थे उस समय कानपुर में किराने, मेवा और हींग आदि का व्यापार कैलाश मन्दिर में होता था और काबुल आदि से काफ़िलों के रूप में आने वाले पठान व्यापारी नहर किनारे मुग़ल की सराय में ठहरते थे। जब लाला मातादीन जी कानपुर आये तब उनकी उम्र लगभग १७-१८ वर्ष की होगी। चूंकि उनके पिता वृद्ध थे और यह पठानों से पश्तो में खूब बातचीत कर लेते थे, अतः पिता ने अपना सारा कारबार धीरे-धीरे अपने पुत्रों के सिपुर्द कर दिया। लाला मातादीन के एक छोटे भाई भी थे। उनका नाम लाला छोटेलाल जी था। वह भी अपने बड़े भाई के साथ पठानों की दलाली में लग गये। फर्म का नाम लालजीमल मातादीन पड़ा और मुख्य कार्यकर्ता दोनों ही भाई रहे। लाला मातादीन जी किराने वाले पठानों को निपटाते थे और लाला छोटेलाल पठानों को कपड़ा खरिदवाते थे। काम खूब ज़ोरों से चलने लगा और दोनों भाइयों ने धन और यश दोनों ही चीजें प्राप्त करना शुरू कर दिया।

लाला मातादीन जी बड़े धार्मिक विचार के आदमी थे।

आपकी प्रवृत्ति सदा धार्मिक कार्यों ही की ओर रहती थी।

इन पंक्तियों के लेखक ने अपने बचपन में स्वयं उन्हें नित्य-प्रति तपेश्वरी देवी के दर्शन करने के लिये आते हुए देखा है। जब वह घर से बाहर गंगा स्नान या किसी मन्दिर में दर्शनार्थ जाते थे, तब अपने साथ कोई मेवा या अन्य कोई खाने की चीज़ ले जाया करते थे और छोटे बच्चों में उसे बांटा करते थे। उनका यह कार्य भी उनकी धार्मिक प्रवृत्ति का द्योतक था।

वृद्ध होने पर लाला मातादीन जी ने काशी में रहना शुरू कर दिया था। यद्यपि उन्होंने कानपुर का रहना कतई नहीं छोड़ दिया था फिर भी उनका अधिकतर समय काशी में ही व्यतीत होता था। और १९२० में उनका देहान्त भी काशी ही में हुआ था।

लाला लालजीमल के देहान्त के बाद दुकान का नाम मातादीन छोटेलाल पड़ा था और जब दोनों भाइयों का बटवारा हो गया तब दुकान का नाम मातादीन ताराचन्द पड़ा। ताराचन्द जी लाला मातादीन के पुत्र थे और इन पंक्तियों के लेखक के सहपाठीभी रहे थे। ताराचन्द जी का मन पढ़ने में कम और शरारत में अधिक लगता था। आप बड़े बिहाड़े और हथछुट थे। अपने विपक्षी पर हाथ चलाते उन्हें देर ही नहीं लगती थी। जिस समय उनकी मारपीट की शिकायतें उनके पिता के पास पहुंचती थीं उस समय वह बड़े दुखी होते थे। एक बार तो दुखी होकर उन्होंने ताराचन्द को घर से ही निकाल दिया था।

किन्तु शहर कोतवाल के आग्रह से इस शर्त पर फिर घर में रखा कि यह अपनी मारपीट की आदत छोड़ दें। इस गृह-निर्वासन का प्रभाव ताराचन्द जी पर अच्छा ही पड़ा।

ताराचन्द जी की मृत्यु सन १९३६ में हुई थी और लाला छोटेलाल शायद सम्वत १९७०-७१ में मरे थे। ला० छोटेलाल जी इन पंक्तियों के लेखक के पिता लाला कन्हूलाल जी के परम मित्रों में से थे। और बटवारा होने के बाद कपड़े की दलाली करने लगे थे।

ताराचन्द जी के पुत्र श्री किशोरचन्द जी ने अपने बुजुर्गों के यश और सम्पत्ति को बढ़ाया ही है। इनकी रुचि भी अपने दादा की ही तरह धार्मिक है। यह कानपुर के धार्मिक और सार्वजनिक कार्यों में सदा अग्रसर होकर काम करते हैं और हींग, मेवा तथा किराने का कार्य करते हैं। इन्होंने बिठूर के कई मन्दिरों का जीर्णोद्धार कराया है और वहाँ एक सुन्दर मकान भी बनवाया है।

ताराचन्द जी के सम्बन्ध में एक बात रह गई है और वह यह कि उन्हें कुश्ती का भी शौक था। उन्होंने अपने घर के ऊपर छत पर एक अखाड़ा भी बना रखा था। जहाँ वह जोर करते थे। उसी अखाड़े में पटकापुर के पं० उमाशंकर शुक्ल भी जोर करने जाया करते थे।

लाला मातादीन की धार्मिक प्रवृत्ति का एक विशेष उदाहरण देना रह गया है और वह यह था कि किसी समय उन्हें बहुत

सी ज़मीन कौड़ियों के मूल्य में मिल रही थी। किन्तु उन्होंने उसे यह कह कर लेने से इन्कार कर दिया कि मनुष्य दुनिया में कुछ कार्य करने आया है यहाँ डेरा जमाने नहीं आया और धरती तो हमारी माता है। वह ज़मीन ख़रीदना पाप समझते थे।

लाला काशीराम बेरीवाल

मामूली अक्षर ज्ञान रख कर सारे शहर में अपनी धाक जमाने वालों में लाला काशीराम जी का नाम प्रमुख था। वे अपने समय के प्रसिद्ध व्यापारी और कार्य कुशल व्यक्ति थे। मृदुभाषी तो ऐसे थे कि उनके पास जाकर कभी कोई नाराज नहीं हुआ, बड़े प्रेम से पुचकार कर अपना बना लेना उनका बाएं हाथ का खेल था। बड़े-बड़े अंग्रेज़, अधिकारी एवं शहर का कोई भी व्यापारी ऐसा न था जो लालाजी की धाक न मानता हो। कोई भी सरकारी कार्य होता लाला काशीराम आगे होते वे सार्वजनिक कार्यों से भी सदा सहानुभूति रखते थे।

बेरी नामक ग्राम लाला काशीराम जी की जन्मभूमि है। इसी ग्राम के नाम पर ही यहाँ से आये हुये व्यक्ति बेरीवाल कहलाने लगे। लाला काशीराम जी के पिता श्री गुलाबराम जी अपने समय के अत्यन्त प्रतिष्ठित व्यक्ति थे। किराने की प्रसिद्ध फ़र्म तुलसीराम जियालाल, जो अब फर्म तुलसीराम काशीराम के नाम से प्रसिद्ध है— का कारबार एक अर्से तक गुलाबराम जी की ही देखरेख में होता रहा है। गुलाबराम जी

कानपुर जब आये तो पहले पहल निहालचन्द बलदेवसहाय की आढ़तपर ठहरे। बाद को फर्म तुलसीराम जियालाल की दुकान कानपुर में खोली गई और लाला गुलाबराम जी बराबर इसी फर्म का कानपुर में और कानपुर से बाहर की शाखाओं का नियन्त्रण यहीं से करते रहे। लाला काशीराम जी का जन्म 'बेरी' में ही सन् १८६३ में हुआ था। लाला काशीराम जी का बाल्य-काल बेरी में ही बीता। अक्षर ज्ञान व महाजनी की शिक्षा उन्होंने वहीं की फर्म तुलसीराम जियालाल से ही पूरी की। अपने पिता श्री गुलाबराम के समय में लगभग २२—२३ साल की उम्र में आप कानपुर आए और उन्हीं की देखरेख में फर्म तुलसीराम जियालाल का कार्यभार संभालने में योग देते रहे। बाद में श्री गुलाबराम के गोलोकबास होने पर आप ही मुख्य कार्यकर्ता के रूप में इस फर्म का कामकाज देखते रहे। कुछ दिनों के बाद स्वर्गीय लाला कमलापत के सम्पर्क के कारण ही इन्हें जूट मिल की एजेन्सी मिली और लाला काशीराम कन्हैयालाल का प्रसिद्ध फर्म कायम हुआ।

लालाजी साधु प्रकृति के पुरुष थे। आपकी संक्षिप्त जीवनी 'बर्मशिल' कम्पनी द्वारा प्रकाशित पुस्तक में भी लिखी हुई है। लाला काशीराम जी गंगास्नान बिला नागा करते थे और स्थानीय भगवतदास घाट पर सदा जाया करते थे। आपको गंगाजी पर बड़ी श्रद्धा थी और जहां तक लालाजी

की चली वहां तक अपने सामने उन्होंने भगवान दास घाट पर किसी को साबुन नहीं लगाने दिया। आपके जीवन की विशेषतः यह थी कि कानपुर के सभी दलों के नागरिकों में समान रूप से आपका प्रभाव था। व्यवसायी वर्ग, अधिकारी और उस समय के पहलवानों आदि में लाला काशीरामजी की एकसी प्रतिष्ठा थी।

लालाजी बड़े ही पक्के ब्राम्हणभक्त थे। जीवन के पिछले दिनों में जब लालाजी की आंखें कमजोर हो गई थीं उस समय जब वे गद्दी पर आते थे और धोखे से किसी ब्राम्हण के पैर से लालाजी का पैर छू जाता था तो लालाजी उस ब्राम्हण के पैर सहलाने लगते थे। लालाजी ने जहां व्यापार में इतनी उन्नति की वहीं सार्वजनिक जीवन में विख्यात थे। बाजार के आपसी झगड़ों का निबटारा लालाजी के जीवन का मुख्य अंग-सा बन गया था। लालाजी के फैसले को सभी नत मस्तक होकर मानते थे, यहां तक कि कानपुर के एक प्रसिद्ध एवं प्रमुख व्यवसायी परिवार का फैसला जो कि शहर में महत्वपूर्ण माना गया था वह भी लाला काशीराम जी के ही हाथों हुआ था। एक बार कानपुर के पहलवानों में भी दो दल हो गये थे और बहुत कुछ अनबन पैदा हो गई थी, उस समय यह दिखाई देने लगा था कि अब क्या हो ? इस मौके पर भी लालाजी ही बीच में पड़े और दोनों दलों में समझौता कराया जो कि अब तक माना जाता है। आश्चर्य होता है कि इतने साधारण अक्षर

ज्ञान का धनी इस प्रकार के दुरूह कार्यों को कैसे निबटाता होगा, किन्तु इसमें तो लाला जी का न्याय और सत्य का सिद्धांत ही ऐसे पेचीदा मामलों के सुलझाने में लाला जी को विजयी बनाता था।

जीवन की छोटी से छोटी बात पर लालाजी की बारीक नज़र रहती थी। एक समय लालाजी के यहाँ एक सफ़ेद बूढ़ा घोड़ा था। कोचवान ने कहीं इस घोड़े को मार दिया। घोड़ा अस्तबल से छूट कर सीधा लालाजी की दूकान, नयेगंज में आकर खड़ा हो गया। लालाजी को इन दिनों कम दिखाई देता था, अतः दूकान के आदमियों से पूछा कि यह सफ़ेद-सफ़ेद क्या वस्तु है जो दूकान के सामने खड़ी है। आदमियों ने बतलाया कि अपना सफ़ेद घोड़ा है। लालाजी तुरन्त गद्दी छोड़ कर घोड़े के पास जाकर पुचकारने लगे। और कहने लगे 'मालूम पड़ता है कोचवान ने इसे मारा है इसलिये यह फ़रियाद करने आया है।' कोचवान को बुला कर पूछने पर बात वास्तव में सही निकली। लालाजी ने तुरन्त ही कोचवान को भविष्य में ऐसा न करने की हिदायत की और घोड़े को पुचकार कर अस्तबल भेज दिया।

लाला काशीराम जी स्थानीय यू० पी० किराना सेवा समिति के आजीवन सभापति रहे और इनके कार्यकाल में ही किराना सेवा समिति ने काफ़ी उन्नति तथा ख्याति प्राप्त की। गोशाला कमेटी की भी आपने बहुत सहायता की। लालाजी

जीव-दया मण्डल के भी प्रमुख संचालकों में से थे। बहराइच में होने वाले मारवाड़ी फेडरेशन के आप सभापति भी चुने गये थे। जहाँ आप शहर के प्रमुख सार्वजनिक कार्यों में भाग लेते थे वहीं आपको जातीय मामलों में भी काफ़ी दिलचस्पी थी और जातीय झगड़ों को बड़ी कुशलता पूर्वक निवटाया करते थे। इस सम्बन्ध का एक बड़ा सुन्दर विवाद उल्लेखनीय है। स्वर्गीय लाला खूबीराम (फर्म तुलसीराम जियालाल) के गोलोकवास पर कानपुर में भी ब्रह्मपुरी का आयोजन किया गया। इस समय यह विवाद चल रहा था कि वास्तव में वेरीवाल मारवाड़ी हैं या नहीं। इसका भिवानी वाले काफ़ी विरोध कर रहे थे किंतु लालाजी ने इस झगड़े को भी बड़ी चातुरी से निवटाया और अब वेरीवाल और भिवानी वाले दोनों ही मारवाड़ी माने जाते हैं। इसी ब्रह्मपुरी से यह झगड़ा भी निपट गया। लाला काशी-राम जी के प्रमुख मित्रों में लाला कमलापत, लाला बद्रीदास, ला० मातादीन, ला० केवलराम, ला० कालूराम तथा बाबा तुलसीराम आदि थे। लाला काशीराम जी आज इस संसार में नहीं हैं किन्तु उनके द्वारा लगाई व सींची अनेक संस्थायें आज प्रस्फुटित एवं पल्लवित हो रही हैं। उनके सन्मार्ग आचरण की शिक्षा आज भी कितने ही नौजवानों को जीवन संग्राम में विजयी बनाने के लिये अच्छा उदाहरण है। आपका स्वर्गवास सन ४१ के लगभग हुआ था।

अब आजकल आपका प्रसिद्ध फर्म काशीराम कन्हैयालाल

बहुत उन्नति पर है। आपके पुत्र लाला पन्नालाल एवं पौत्र श्री गोपीकृष्ण जी इस फ़र्म का कार्य संचालन बहुत योग्यता पूर्वक करते हैं।

लाला कल्लूराम जी

कपड़े के बाज़ार में ही नहीं सारे कानपुर के बाज़ारों में लाला कालूराम जी की अपूर्व साख थी। कहा जाता है कि उनके फ़र्म पर इन्कम टैक्स लगाते समय कभी भी उनके हिसाब में जो कि वे इन्कम टैक्स में देते थे—एक पाई भी ज़्यादा नहीं जोड़ी गई। ला० कालूराम कभी भी किसी भी मामले में कचहरी नहीं गये और अपना हज़ारों रुपया डूब जाने दिया। आज कानपुर में उनकी साख और प्रतिष्ठा की सचाई से व्यापार करने वाला कोई बिरला ही होगा।

ला० कालूराम जी मारवाड़ के भिवानी क्षेत्रान्तर्गत झुंझुनू नामक स्थान के निवासी थे। इनके पूर्वज भी इसी स्थान में काफ़ी दिनों से रहते आये थे। हमें लालाजी की जन्म तिथि बहुत खोज करने पर भी नहीं प्राप्त हो सकी। हां मृत्यु सन् १९४० के मई महीने में हुई थी। उस समय लालाजी की अवस्था ७८ साल की थी। अतः इस हिसाब से सन् १८६२ तदनुसार सम्वत् १९१९ जन्म काल समझना चाहिये। लगभग २०-२२ की अवस्था तक लाला कालूराम जी झुंझुनू में ही रहे और अपने पिता ला० मानिकचन्द की देखरेख में वहीं का कार्य देखते रहे। लगभग २२ साल की अवस्था प्राप्त होने पर वे

कानपुर आये और कपड़े के व्यापार में लग गये। स्वर्गीय ला० गुटीराम जी से आपका अत्यन्त घनिष्ठ सम्बन्ध था और पहले पहल श्री गुटीराम जी के यहाँ कार्य करने वाले ला० मंगलचन्द जी और श्री कालूराम जी के साझे में मंगलचन्द कालूराम के नाम से दुकान हुई। इस प्रकार के व्यापार के प्रारम्भ करने में ला० गुटीराम जी की प्रेरणा व सहयोग मुख्य था। ला० कालूराम जी कपड़े के बाजार में अत्यन्त प्रमुख स्थान रखते थे और बजाय लाला कालूराम जी के बाजार भर में बाबा कालूराम के ही नाम से प्रसिद्ध हुए।

बाबा कालूराम जी का जीवन एक आदर्श वैश्य का जीता जागता जीवन है। अब तो लालाजी की अनेक फर्में बाजार में प्रतिष्ठा के साथ कार्य कर रही हैं और उनमें फर्म नौरंगराय कालूराम बहुत पुरानी फर्म बाजार में समझी जाती है। इस तमाम साख व प्रतिष्ठा के कायम करने का सारा श्रेय कालूराम जी को ही है। उनके जीवन में अनेक विशेषतायें थीं। लालाजी जीवन पर्यन्त बाबा आनन्देश्वर के प्रधान भक्तों व सेवकों में समझे जाते थे। संसार का कोई भी कार्य आपको बाबा आनन्देश्वर के दर्शनों से नहीं रोक सकता था। यह नियम बाबा कालूराम जी का अन्तिम दिनों तक चलता रहा। जिस समय सन् १९२४ के करीब बड़ी भयंकर बाढ़ गंगा जी में आई थी उस समय परमट जाने का रास्ता अधिकारियों द्वारा कतई बन्द कर दिया गया था। परमट की सड़क पर घुटनों से लेकर

कमर तक जल राशि प्लावित हो रही थी। उस समय बाबा आनन्देश्वर के दर्शनों को जाना लाला कालूराम जी सरीखे भक्तों की लगन की चरम परीक्षा थी। पहले तो तैरने की कला आदि का ज्ञान ही बाबा कालूराम जी के लिये कठिन वस्तु थी। फिर लाठी टेककर चलने की अवस्था में इस प्रकार का साहस! आप इस जल राशि को चीरते और मंझाते हुए बाबा आनन्देश्वर के दर्शनों को गये। कहा जाता है कि उस समय बाबा आनन्देश्वर की मूर्ति के ऊपर एक सर्पराज कुण्डली मारे बैठे थे। बाबा कालूराम के प्रणाम करते ही वे उस विशाल जल राशि में विलीन हो गये। बाबा कालूराम जी को दृढ़ विश्वास था कि साक्षात भगवान शंकर ने उनकी लगन पर प्रसन्न होकर इस रूप में दर्शन दिये हैं।

बाबा कालूराम जी कचहरी जाने के प्रबल विरोधी थे और अपने जीवन काल में जहां तक बन पड़ा वे किसी भी नालिश व गवाही में कचहरी नहीं गये। बाजार में भी पेचीदा से पेचीदा मामले जब कभी आपके सामने आए तब भी उनकी पंचायत उन्होंने बाजार में ही की और वहीं बाजार में ही फैसला भी हुआ। आपकी न्यायप्रियता की धाक कानपुर के समूचे कपड़ा बाजार में थी। ला० गुटीराम के बाद यदि न्याय तथा निष्पक्षता की बाजार में साख समझी जाती थी तो वह बाबा कालूराम जी की ही थी। बाजार में विरोधी तो उनका कोई था ही नहीं। वास्तव में उस प्रकृति के पुरुषों के दर्शन ही दुर्लभ हैं। आपके

जीवन के केवल दो ही सिद्धान्त थे, सच्चा व्यापार और धार्मिक जीवन। आप जबतक जिये तबतक बराबर आनन्देश्वर ट्रस्ट के प्रमुख ट्रस्टी रहे। और हर तरह से बाबा आनन्देश्वर की सेवा ही करते रहे। इसके अतिरिक्त कानपुर कपड़ा कमेटी के भी आप कुछ समय तक प्रमुख सदस्य रहे। इसके बाद तो इन्हें अपनी दुकान पर ही समूची बाजार की व्यवस्था व आए दिन के झगडों की पंचायत व फैसला करने से फुरसत ही नहीं मिलती थी। आपने अपने जीवनकाल में ही बिठूर में धर्मशाला बनवाया था जो कि अब भी हरे-भरे बगीचे के साथ बिठूर जाकर टिकने वालों को बराबर आराम पहुंचा रहा है। इसके अतिरिक्त अपने देश में भी आपने मन्दिर, चरही और प्याऊ बनवाईं जो अब भी मौजूद हैं तथा जिसकी देख रेख आपके सुपुत्र ला० मन्नी-लाल जी बड़ी लगन के साथ कर रहे हैं। लाला कालूराम जी आज बाजार में नहीं हैं किन्तु उनका आदर्श आज भी अनेक व्यापारियों के हृदय में अपना स्थान बनाये हुए हैं।

लालाजी के सुपुत्र श्री मन्नीलाल जी और पौत्र श्री पुरुषो-त्तमदास झुंझुनू वाला आजकल आपके फर्मों का संचालन बड़ी योग्यतापूर्वक कर रहे हैं और यह विश्वास है कि ला० कालूराम की प्रतिष्ठा और साख वे बराबर कायम रक्खेंगे।

लाला बलदेवप्रसाद कत्थेवाले

नयेगंज के कत्थे वाले प्रसिद्ध फर्म मन्नालाल मुरलीधर के मालिक लाला बलदेव प्रसाद का जन्म माघ कृष्ण ३ सम्वत

१९३६ में खीरी जिले के मोहम्मदी नामक स्थान में हुआ था। इनके पूर्वज वहीं के रहने वाले थे। इनके बाबा श्रीलालजी बड़े सरल स्वभाव के और भक्त सज्जन थे। इनके पिता का नाम श्री मन्नालाल था, इनके दो पुत्र हुए, बड़े का नाम हुआ बलदेव प्रसाद और छोटे का रघुबर। लाला मन्नालाल बड़े उत्साही और परिश्रमी पुरुष थे। वह अपने बड़े पुत्र के जन्म के उपरान्त लखीमपुर में अपनी बहिन के पास आ गये। वहां पहुँचते ही उन्होंने नदी के घाट का ठेका लिया और उससे धन कमाकर अपने बहनोई श्री मोहनलाल के साझे में दूकान खोल दी। कुछ दिन पश्चात गोला मण्डी नामक स्थान पर नैपाल की रियासत में एक और दुकान खोल दी और वहीं रहने लगे। इस दुकान पर घी, पहाड़ी किराना, नमक और सोने चाँदी का काम होता था।

चूंकि यह उद्योगी तो थे ही, समय ने भी साथ दिया, अतः उन्नति होने लगी। लाला मन्नालाल उद्योगी होने के साथ ही बड़े निर्भय और परिश्रमी भी थे। जरूरत पड़ने पर गोला मण्डी से शाम को १८ मील चलकर रातों रात लखीमपुर पहुँच जाते थे और साथ में हजार, दो हजार नकद रुपया (उन दिनों नोट नहीं चलते थे) भी ले जाते थे। यह उनकी निर्भयता का लक्षण था कि इतनी जोखिम बांध कर अकेले जंगली रास्ता रात में पार कर लेते थे।

जब गोला मण्डी का काम सुचारु रूप से चलने लगा, तब

श्री ब्रजनारायण टण्डन

पं० गंगाशंकर पाण्डे

उन्होंने लखीमपुर के व्यापारी लाला नानकचन्द मुरलीधर के साथ कत्थे का काम शुरू किया और कानपुर में भी आढ़त में माल लाने लगे। जब उनके पुत्र बलदेव प्रसाद काम करने योग्य हो गये, तब सम्वत १९७० में अपनी निजी दुकान खोल दी। प्रारम्भ में कत्थे के काम में बलदेवप्रसाद के एक सम्बन्धी लाला बन्शीधर का पूरा सहयोग था, अतएव काम मजे में चलने लगा। सम्बत १९७४ में लाला मन्नालाल का स्वर्ग से देहान्त हो गया। अतः कानपुर की दुकान का पूरा भार लाला बलदेव प्रसाद पर आ पड़ा और वह कानपुर ही में रहने लगे। यह कागज के काम में बड़े निपुण थे, अपने बड़ों का आदर करते थे, सरलता कूट-कूट कर भरी थी, मृदुभाषी इतने थे कि कभी किसी ने उन्हें गुस्सा होते ही नहीं देखा। वह बड़े दानी और दयालु थे। गरीबों पर दया करना उनके स्वभाव में दाखिल हो गया था। बाजार में यह प्रसिद्ध हो गया था कि वह किसी को विमुख नहीं लौटाते, एक पैसे से हजार रूपये तक सबकी सहायता करते रहते थे। उन्होंने श्री मारवाड़ी विद्यालय को ११००) दिये थे। कांग्रेस को वे बराबर सहायता देते रहते थे। कांग्रेस के द्वारा होने वाले सभी चन्दों में लाला बलदेव प्रसाद का सहयोग अवश्य रहता था।

सम्बत १९८६ में सीतापुर ज़िले में महमूदपुर गांव खरीदा और अपनी प्राचीन धार्मिक प्रवृत्ति के अनुसार वहां सम्बत

१९९३ में श्री लक्ष्मीनारायण जी का मन्दिर बनवाया। चित्रकूट की संस्कृत पाठशाला को ५१) मासिक सहायता देना शुरू किया, जो आज तक दी जा रही है। इस पाठशाला के संचालक स्वामी सच्चिदानन्द जी हैं। कानपुर जिले के सनिगवां की सरस्वती पाठशाला को जो मासिक सहायता शुरू की गई थी वह भी आज तक जारी है। लाला बलदेवप्रसाद के ५० वर्ष की उम्र में एक पुत्र हुआ। उसका नाम कृष्ण कुमार है। वही इस फर्म के मालिक हैं। लाला बलदेवप्रसाद जी १४-१-४१ को अपनी इहलोक लीला समाप्त करके अपने पुत्र और भतीजे लाला रामस्वरूप जी को अधिकारी छोड़ गये थे। श्री रामस्वरुप का भी २९-४-४५ को स्वर्गवास हो गया।

अब भी कानपुर में इनकी कत्थे की कोठी मौजूद है जिसका शहर में इतना सम्मान है कि जहां सारे बाजार में माल की रकमें १५ दिन बाद चुकती हैं वहां मेसर्स मन्नालाल मुरलीधर की रकम दूसरे दिन ही चुकती है। हाल ही में एक आढ़त की नई दूकान भी खोली गई है। कानपुर कत्थे की बहुत बड़ी मण्डी है और नगर में बिकने वाला सफ़ेद कत्था अधिकांश इसी फ़र्म द्वारा बेचा जाता है।

लाला मातादीन

ला० मातादीन का जन्म स्थान पटियाला रियासत में कानौड़ नाम का ग्राम है। इसी 'कानौड़' में सं० १९४० में आपका जन्म हुआ। लालाजी के पिता का नाम श्री० भोजीराम

जी था। आप दो भाई थे। दूसरे भाई का नाम भगवानदास था जो युवावस्था में ही स्वर्गवासी हो गये थे। लगभग बारह साल की अवस्था तक ला० मातादीन कानौड़ में रहे। बारह साल की अवस्था या एक प्रकार से शैशवकाल पूर्ण होने पर आप कानपुर आये। यहां रेल बाजार स्थित प्रसिद्ध फर्म लाला राधाकिशन मंगतराम के मकान में आप रहने लगे, साथ ही उपरोक्त फर्म में व्यापारिक कार्य भी करने लगे। कुछ दिनों कार्य करने के बाद ही आपने अपना निज का छोटा सा व्यापार प्रारम्भ किया। कलेक्टरगंज में एक छोटी-सी दूकान में मिट्टी का तेल और दियासलाई का धन्धा प्रारम्भ किया। कौन जानता था कि यह साधारण-सी दूकान एक दिन कानपुर की प्रसिद्ध फर्म मातादीन भगवानदास के नाम से व्यापारिक, धार्मिक एवं सार्वजनिक क्षेत्रों को आलोकित करेगी। लालाजी गंगाभक्त, ब्राह्मणभक्त, गोभक्त और पक्के भगवत् भक्त थे। व्यापारिक बुद्धि तो मालूम होता है आपके ही हिस्से में पड़ी थी। इस छोटे से धन्धे के प्रारम्भ करने के बाद कुछ ही समय में आपने शक्कर का व्यापार प्रारम्भ किया। इसी शक्कर के व्यापार के साथ ही चावल का व्यापार भी प्रारम्भ हुआ। यह दोनों व्यापार लाला जी की कुशल व्यापारिक बुद्धि के सहारे खूब ही चमके। इतने लम्बे पैमाने पर व्यापार करने वाले दूसरे शहरों में ढूंढ़ने से ही मिलेंगे। चावल आप सीधा बरमा से मंगाया करते थे।

शक्कर के व्यापार में तो आपका एकछत्र राज्य था। कानपुर

में शक्कर की मण्डी कायम करने का श्रेय यदि किसी को दिया जा सकता है तो वह लालाजी को ही है। व्यापारिक जगत में आपको शक्कर का राजा (शुगर किंग) की उपाधि थी। बड़े-बड़े शक्कर मिलों की साल भर की पैदावार आप एक मुश्त खरीद लेते थे। जिस समय आप शक्कर की खरीद शुरू करते तो बाजार में उथल-पुथल और हलचल मच जाती और बिकवाली निकाल देने पर समूचे बाजार में सन्नाटा छा जाता। वास्तव में इस व्यापार में आप से टक्कर लेने की हिम्मत बिरले ही व्यापारी की होती थी। जिस समय आप अपना निज का शक्कर मिल बनाना चाहते थे उस समय आपको बेग सदरलैंड के डाइरेक्टर गण अपनी कुल मिलों का कमीशन सिर्फ इसी शर्त पर देते थे कि आप शक्कर मिल खुद न चालू करें। किन्तु लालाजी ने अपना मिल बना कर ही दम लिया और बाराबंकी में बुढ़वल शुगर मिल आज भी आपकी हिम्मत, उत्साह और लगन की कहानी कह रहा है।

जहां आप इस प्रकार व्यापारिक क्षेत्र में चमक रहे थे वहीं दूसरे क्षेत्रों में भी अग्रसर थे। आप नित्य गंगा नहाने जाते थे और स्थानीय भगवतदास घाट के पुराने नहाने वाले आज भी बड़े प्रेम से आपकी कथा कहते हैं। लालाजी को दमे का रोग था और अन्त तक बना रहा। दान देने में आप सदैव मुक्त हस्त रहे। एक बार (सन् १९२०) में पण्डित मोतीलाल नेहरू को लेकर ला० देवीदास भगत आपकी दूकान पर चन्दे के लिये

गये। पण्डित मोतीलाल जी ने जाते ही ११००) की माँग लालाजी के सामने पेश की। उस समय ग्यारह सौ की बड़ी क़दर थी। लालाजी ने बड़ी प्रसन्नता से रुपये दे दिये। पण्डित मोतीलाल जी यह कहते चले गये कि 'यह सेठ बड़ा उदार है।' इन्हीं दिनों विदेशी वस्त्रों पर धरना भी चल रहा था। धरना देने वालों की सहायता करने वालों पर सरकार की बड़ी टेढ़ी नजर थी। स्वयंसेवकों के भोजनादि का प्रबन्ध स्थानीय काहू कोठी में था। लालाजी ने गुप्त रूप से हजारों रुपयों की सहायता दी। आप उद्योग-धन्धों के बड़े कायल थे। और बराबर लोगों को सलाह दिया करते थे कि नए-नए कल कार-पैख़ाने खोल कर देश का पैसा देश में ही रखना चाहिये। आपकी दूकान से कोई दलाल कभी खाली नहीं लौटता था। हर दलाल का काम अवश्य बने इस पर लालाजी का बड़ा ध्यान रहता था। कितने बेकार व्यक्तियों को आश्रय आपके सहारे मिलता था यह आज भी एक छिपी पहेली है।

लाला छंगामल कपूर

लाला छंगामल जी का जन्म सम्वत १९३५ में स्थानीय हटिया बाजार में हुआ था और बैसाख शुक्ल चतुर्दशी सम्वत २००४ रविवार के दिन ६९ वर्ष की आयु में आप गोलोकवासी हो गए। आपके पिता श्री स्वर्गीय लाला छम्मूलाल जी कपूर नगर में कपड़े के प्रमुख दलाल थे। लाला छंगामल जी ने मिशन स्कूल, गवर्नमेण्ट स्कूल और खत्री स्कूल

में शिक्षा प्राप्त की थी।

प्रारम्भिक जीवन

प्रारम्भिक जीवन में ही आपको समाचार पत्रों को मंगाने का तथा देशी, विदेशी समाचार जानने का चाव तीव्र हो उठा था, अतः तत्कालीन पत्र आबजर्वर, एडवोकेट, इण्डियन पीपुल, स्पेक्टेटर, पायनियर, अमृतबाजार पत्रिका, हिन्दू आदि विभिन्न भारतीय प्रान्तों के पत्र आप बराबर मंगाते थे। उस समय आपकी धारणा-सी हो गई थी कि संसार में सबसे अच्छा कार्य अखबार पढ़ना और सबसे सुन्दर दान साहित्यक उन्नति के लिए धन तथा समय देना है। धीरे-धीरे आपके बैठके (कमरे) में अखबारों के ढेर इकट्ठा होने लगे।

इन्हीं दिनों आप से कतिपय युवकों ने प्रार्थना की कि यदि आप अपने पत्रों के एक वर्ष के अंक दे दें तो वे एक पुस्तकालय बनावें। जिस समय आप अपने द्रव्य से अयोध्या में एक धर्मशाला बनवा रहे थे वहीं आपसे आपके एक सम्बन्धी ने कहा था कि बाहर धूम धड़क्का करने से क्या? अपने नगर में कुछ करो तो जानें! अतः नवयुवकों के उपरोक्त प्रस्ताव के फल-स्वरूप आपने 'नवजीवन पुस्तकालय तथा वाचनालय' की स्थापना कर हटिया स्थित अपना एक मकान दान कर रजिस्ट्री कर दी और ट्रस्ट के हाथों सौंप दिया। नगर के हृदय भाग में सम्भवतः हवेली जैसे मकान में यह सबसे पहला सुव्यवस्थित हिन्दी पुस्तकालय स्थापित हुआ। यह पुस्तकालय तब से अब

तक हिन्दी के साहित्यिक समारोहों का केन्द्र रहा और है। नगर के बड़े पुस्तकालयों में इसको गणना है और हिन्दो पुस्तकों, मासिकपत्रों की पुरानी फ़ाइलों के वृहत संग्रह तथा वाचनालय से पाठक लाभान्वित होते रहते हैं।

स्वदेशी के भक्त

सन १९०५ में आप तत्कालीन 'प्रेम प्रचारिणी सभा' में सम्मिलित हो समाज एवं देश सेवा के कार्यों में भाग लेने लगे। स्वदेशी वस्त्र पहनने की स्वयं प्रतिज्ञा की तथा अन्य सज्जनों से कराई। इसके बाद हिन्दू सभा तथा कांग्रेस कार्यों में भी आपने सदैव ही यथाशक्ति हिस्सा बटाया। अपनी युवावस्था से ही अधिकारियों से मुठभेड़ द्वारा या मिल-जुल कर नगर अहितकारी योजनाओं को कार्यान्वित होने से यथासाध्य रुकवाया तथा उन्हें बनाने वाले स्वार्थी लोगों की पोल खोली।

सन २२ में गंगाजी में बाढ़ आई। हाहाकार मच गया। लोग त्राहि त्राहि करने लगे। मनुष्य, पशु, स्त्री, बच्चे गंगा जी की धारा में बहे चले जा रहे थे। ऐसे समय कई दिन तक अभूतपूर्व सेवा कार्य करने के बाद आपने अपने कार्यालय के ऊपर तिरंगा झण्डा फहरा दिया। इस कारण आपसे कुछ सरकार भक्त लोग रुष्ट हो गए। आपको रायबहादुर बा० बिहारीलाल से सर्व प्रथम इस कार्य में बड़ी सहायता प्राप्त हुई थी। किन्तु तिरंगा देख कर उन्होंने कहा कि सरकार तुम्हारी सेवाओं के बदले तुम्हें रायसाहिबी देने वाली थी वह तुमने खो दी। वे

कुछ रुष्ट भी हो गए थे। किन्तु इन्होंने परवाह नहीं की। सन २४, २७ तथा ३७ की बाढ़ में भी आपने जुट कर सेवा कार्य किए। जब डूबे हुए गाँवों के भूखों मरने वाले लोग सरकारी अधिकारियों से सहायता लेना अस्वीकृत कर चुके थे तब आपने बड़ी चतुरता के साथ उन्हें महात्मा गांधी के नाम पर आर्थिक सहायता ऋण स्वरूप लेना स्वीकृत करा लिया तथा उनके बीच धन बाँटा।

गंगाभक्त

दो बार आप स्थानीय म्यु० बोर्ड के सदस्य निर्वाचित होकर ६ वर्ष तक म्यु० कमिश्नर रहे। गंगा स्नान आपका नित्य नियम था। गंगा की धार में आपका विशाल बजरा तथा अनेक नावें सदैव ही पड़ी रह कर उपयोग में आती थीं। विगत 'शतकुन्डी यज्ञ' के तीन चार प्रमुख कर्णधारों में आप भी थे। कानपुर कांग्रेस का केन्द्र 'तिलक हाल' जिस 'तिलक मेमोरियल' सोसाइटी' के अधिकार में है तथा जिसके द्वारा बना, उसके आप आजीवन अध्यक्ष थे। छोटे-बड़े सभी से आप अत्यन्त सरल स्वभाव के साथ आदर से मिलते तथा यथासाध्य तन, मन, धन से सहायक होते थे। आप कानपुर कपड़ा बाजार के प्रमुख व्यापारी तथा नगर के चोटी पर के प्रथम श्रेणी के फर्म मेसर्स गोपीनाथ छंगामल के भागीदार और छम्मूलाल छंगामल के स्वत्वाधिकारी थे। किसी समय, खरीदार कपड़ा कम्पनी स्थापित कर व्यापारियों के मुक्तद्वार वाणिज्य की प्रति में

तत्पर रह कर भी सफल हुए थे। आप अपने विचार स्वातंत्र्य के कारण जब तक युक्ति-युक्त होकर कोई बात आपकी समझ में न आ जाय तब तक कितना ही विरोध क्यों न हो उसे न मानते थे। ऐसी ही एक घटना म्यु० बोर्ड में एक बार आपके जीवन में इसी कारण घटित हो गई थी। "कानपुर का इतिहास" आप के द्वारा स्व० श्री दरगाहीलाल को पुस्तक बिठूर से अपनी जिम्मेदारी पर लाकर देने के बाद ही विशेष द्रुतगति से लिखा जा सका।

सरल-स्वभाव

लाला छुंगामल जी का स्वभाव बहुत ही सरल और खरा था। उन्हें चापलूसी तथा लल्लो-चप्पो पसन्द न थी। जो बात उनके मन में आती साफ़-साफ़ कह देते थे। उन्हें अपनी रईसी या बड़प्पन की बू बिल्कुल नहीं थी। उनको सदैव मामूली कुरते टोपी में ही देखा गया, अपने लिए कभी उन्होंने बढ़िया बज़ेदार कपड़ा नहीं बनवाया।

आज हमारे नगर में गंगा जी के घाटों पर जो दो-तीन सौ नावें देख पड़ती हैं वह लालाजी के ही प्रयत्नों का फल हैं। उन्होंने एक बजरा (मकान नुमा) बनवाया था जो पिछली बाढ़ में डूब गया। इस बजरे में १०० आदमी बड़े मज़े में बैठ सकते थे।

यह बात नहीं है कि लालाजी नगर की पार्टीबन्दी के चक्कर में न रहे हों पर इधर कई साल से उन्होंने पार्टी बन्दी से अपने को अलग कर लिया था।

हमारे नगर के पुराने तरीके के व्यापार में वे अत्यन्त निपुण थे। उन्होंने अपने साझीदार रायसाहब ला० गोपीनाथ जी से साझीदारी बड़ी ही वज़ेदारी से निभाई। शहर के पुराने रईसों में यदि यों कहा जाय कि आप अन्तिम थे तो अत्युक्ति न होगी। अपने जीवन में लाला छंगामल जी ने सार्वजानिक जीवन में एक ही गल्ती शायद की और शायद वह थी म्युनिसिपिलटी की एक्जीक्यूटिव अफसरी के लिये श्री पुरुषोत्तमदास टण्डन के मुकाबिले में श्री क्रिस्टी के नाम पर सन १९२२ में वोट देना। बाद में उसका उन्हें पछतावा भी रहा था। वैसे राष्ट्रीय कार्यों में श्री छंगामल जी सदैव कांग्रेस के समर्थक रहे।

लाला जी के परिवार में उनके कनिष्ठ भ्राता श्री मनीराम कपूर और उनके भतीजे श्री पुरुषोत्तम लाल कपूर हैं जो कम्यूनिस्ट विचारधारा के समर्थक हैं।

रायसाहब गोपीनाथ

लगभग पाँच पीढ़ी पहले रायसाहब गोपीनाथ के पूर्वज पंजाब से आये थे। पंजाब में मुलतान ही इस परिवार का आदि स्थान समझा जाता है। वैसे तो प्रारम्भ से इस परिवार की धाक व छाप कानपुर नगर में पड़ती रही, किन्तु रायसाहब गोपीनाथ के पिता बाबू गोविन्दप्रसाद का नाम कानपुर में सदा के लिये सुरक्षित है। बाबू गोविन्दप्रसाद दो भाई थे। छोटे भाई बाबू गुरुनारायण थे। बाबू गोविन्दप्रसाद बड़ी दबङ्ग तबियत के थे और भड़क, आनबान व शान के बड़े कायल थे। बाबू

गोविन्दप्रसाद अपने समय के बहुत आगे बढ़े हुए रईसों में गिने जाते थे। पं० मदनमोहन मालवीय व पं० मोतीलाल नेहरू से भी इनका अच्छा सम्पर्क था।

बाबू गोविन्दप्रसाद के जीवन में अनेक घटनायें ऐसी घटीं जिनका कि प्रभाव कानपुर के नागरिकों पर भिन्न-भिन्न रूपों से पड़ा। पहली घटना स्वयं खत्री समाज की ही है। बाबू जी के ही समय में कानपुर के खत्रियों में नव घर और सौ घर का विवाद चला और लगभग १५-१६ वर्षों तक बराबर चलता रहा। इसी विवाद में ही ला० छुंगामल की घनिष्ठता भी इस परिवार से हुई। दूसरी घटना कानपुर के कपड़े व्यापारियों की है। बाबू गोविन्दप्रसाद के समय में ही एक बार कानपुर के अढ़तियों का ठोस संगठन हुआ और ख़रीदार कपड़ा कम्पनी के नाम से तमाम अढ़तिये संगठित हो गये। कानपुर के पुराने वस्त्र व्यवसायी आज भी इस खरीदार कपड़ा कम्पनी की याद करते हैं।

तीसरी घटना समूचे कानपुर के लिये वरदान स्वरूप ही सिद्ध हुई। बाबू गोविन्दप्रसाद के लड़के (रायसाहब गोपीनाथ आदि) स्थानीय गवर्नमेण्ट स्कूल में प्रारम्भिक शिक्षा प्राप्त कर रहे थे। एक दिन किसी मास्टर ने इन लड़कों को पीट दिया। बच्चों ने आकर बाबू जी से शिकायत की। बस दूसरे ही दिनएक नया स्कूल इन बच्चों की शिक्षा के लिये खुल गया। यह स्कूल बाबू जी ने अपने छोटे भाई के नाम से खोला। यही स्कूल आज का प्रसिद्ध गुरुनारायण

खत्री कालेज है। पहले यह मिडिल स्कूल गुरुनारायण खत्री स्कूल के नाम से चौक स्थित 'चमन' में खोला गया था। बाद को यह स्कूल सवाईसिंह के हाते में अपनी इमारत में चला गया। फिर सरसैयाघाट पर पुराने थियोसोफिकल स्कूल की इमारत में उठ आया जहाँ पर आज भी गुरुनारायण खत्री कालेज के नाम से मौजूद है। अब तो इसकी शानदार इमारत भी स्वर्गीय लाला कमला-पति जी की यादगार में बन गई है। लाला कमलापति जी की इच्छा बहुत पहले इस स्कूल के जीर्णोद्धार की थी। लाला कमलापति जी व रायसाहब गोपीनाथ का सहपाठी के रूप में साथ रहा था। इस प्रकार बाबू गोविन्दप्रसाद के जीवन की छाप कानपुर नगर में भिन्न भिन्न रूपों में पड़ी है।

बाबू गोविन्दप्रसाद ने एक धर्मशाला रीवाँ और दूसरी नवगाँव छावनी में बनवाई थी जो आज भी कायम हैं। बाबू गोविन्दप्रसाद जी के छह पुत्र और एक पुत्री उत्पन्न हुए। सभी पुत्र एक से एक योग्य व्यक्ति हमारे नगर के लिये साबित हुए। (१) रायबहादुर कैसरे हिन्द बलभद्रप्रसाद जी गवर्नमेण्ट की ओर से नवगाँव छावनी में मजिस्ट्रेट बनाए गए और जब से नवगाँव छावनी रियासत में आ गया तब से बाबू बलभद्रप्रसाद जी छतरपुर स्टेट में न्यायाधीश के पद पर कार्य करते रहे। (२) रायसाहब सिद्धिनाथ जी भी एक सम्मानित नागरिक रहे और श्रीगोविन्द आयल मिल व आइस फेक्टरी का कार्य संचालन इन्हीं के तत्वावधान में चलता

रहा । (३) रायसाहब सुखलाल बड़े ही व्यापार दक्ष और झाँसी के कुशल व्यापारी समझे जाते रहे। झाँसी इलेक्ट्रिक सप्लाई व गोरखपुर इलेक्ट्रिक सप्लाई इन्हीं के तत्वावधान में चली। (४) रायसाहब गोपीनाथ जिनके जीवन के सम्बन्ध में आगे इसी जीवन रेखा में पढ़ने को मिलेगा श्री गोविन्दप्रसाद के चौथे पुत्र थे। (५) श्री० जंगबहादुर (जंगो बाबू) की मिलनसारी और व्यवहार कुशलता से कानपुर के नागरिक भली भाँति परिचित हैं। मालरोड स्थित मुन्नालाल एण्ड सन्स का व्यवसाय इन्हीं के द्वारा संचालित हो रहा है। (६) बाबू मंगलसेन (मंगोबाबू) प्रायः समूचा समय परिवार की जायदाद का कार्य देखने में देते थे।

रायसाहब गोपीनाथ ने प्रारम्भिक शिक्षा स्थानीय गवर्नमेंट स्कूल में पाई थी, बाद को खत्री स्कूल की स्थापना होने पर इसी खत्री स्कूल (अब कालेज) से मिडिल तक शिक्षा प्राप्त की। रायसाहब गोपीनाथ का जन्म सम्वत १९३६ में कार्तिक शुक्ल अष्टमी को हुआ था। रायसाहब का व्याह लगभग १५-१६ साल की अवस्था में बनारस की प्रसिद्ध फर्म बलभद्रप्रसाद गोवर्धनदास के यहां हुआ था। रायसाहब ने यद्यपि मिडिल तक ही शिक्षा प्राप्त की थी किंतु विद्या का व्यसन इन्हें अधिक था और जब कभी इन्हें अवकाश मिलता था यह बराबर पढ़ा ही करते थे। किताबों और अखबारों के यह विशेष प्रेमी थे। यद्यपि मुख्य रूप से रायसाहब गोपीनाथ की दिलचस्पी कपड़े के व्यवसाय में ही थी और अधिक समय अपना प्रसिद्ध फर्म गोपीनाथ छुंगामल

की देखरेख व व्यवस्था ही में बिताते थे, किन्तु इस परिवार द्वारा संचालित अन्य उद्योगों की देखरेख भी पूर्ण रूप से करते थे। प्रसिद्ध शारदा कैनाल भी इन्हीं के तत्वावधान में सम्पन्न हुआ थी और इस कार्य कुशलता से ही प्रसन्न होकर सरकार द्वारा रायसाहब की उपाधि इन्हें दी गई थी। इलेक्ट्रिक सप्लाई का कार्य, गोविंद आयल मिल की देखभाल, नवगाँव छावनी आदि हर उद्योग को रायसाहब के व्यक्तिगत अनुभव का लाभ बराबर मिलता रहा और इसी संचालन कुशलता के कारण ही ये धंधे बराबर उन्नति करते गये।

सबसे पहले जब यह परिवार कानपुर आया था तो हटिया में किराये के मकान में ही ठहरा था। बाद को 'चमन' के सामने वाला मकान लिया गया, उसके बाद दूसरा मकान उसी के पीछे की ओर लिया गया और यह चौक को शानदार कोठी तो स्वयं रायसाहब ने ही खरीद कर बनवाई थी। सबसे पहले चौक में प्रभूदयाल परमेश्वरीदास के नाम से व्यापार चलता रहा। बाद को ला० छुंगामल को घनिष्ठता अधिक हो जाने पर चावल मण्डी में एक फर्म गोपीनाथ छुंगामल के नाम से कायम हुई। रायसाहब की देखरेख में इस फर्म ने अत्यधिक उन्नति की। रायसाहब ने इस फर्म की शाखाएं दिल्ली, कलकत्ता, अमृतसर आदि में स्थापित कीं जो अब भी हैं। रायसाहब व्यापार में अत्यन्त कुशल थे। साधारण से साधारण दलाल और अढ़तिया बराबर रायसाहब से प्रोत्साहन पाता रहा। रायसाहब

की आदत अपने से छोटों के साथ अधिक प्रेम पूर्वक मिलने की थी। अनेकों व्यक्तियों ने रायसाहब के सम्पर्क से उन्नति की। कपड़े बाजार में ही ऐसे अनेकों व्यक्ति हैं जिन्होंने रायसाहब की कृपा से काफ़ी पैसा पैदा किया। रायसाहब के व्यापार की धाक विलायत में भी अच्छी थी। सर विक्टर सासून (ए० डी० सासून मूर के मालिक) जिस समय हिन्दोस्तान में आये तो कानपुर आकर ख़ास तौर से रायसाहब से भेंट की। इंग्लैंड की प्रसिद्ध फर्म जैकववैरेन्स के चेयरमैन भी इनसे मिले थे। रायसाहब के बगीचे में शानदार दावत भी इन चेयरमैन साहब के सम्मान में हुई थी।

रायसाहब सिगरेट आदि की अपेक्षा हुक्का अधिक पसन्द करते थे। वैसे तो सभी सवारियाँ इनके यहाँ थीं किंतु इनको फिटन या विक्टोरिया गाड़ी पर चलना अधिक पसन्द था। आप गंगा स्नान के बड़े ही प्रेमी थे और नियमित रूप से नित्य गंगा स्नान करते थे। आपके घनिष्ठ मित्रों में ला० छुंगामल जी, पंडित प्रतापनारायण मिश्र, पंडित पृथ्वीनाथ आदि थे। स्थानीय कपड़ा कमेटी के विभिन्न पदों पर रायसाहब रहे और सभापति तो अनेक वर्षों तक रहे। इनके समय में कपड़ा कमेटी की अच्छी धाक थी। बजाय मौजूदा क़ायदा कानून की खींचतान के व्यापारिक पद्धति ही अधिक उस समय बर्ती जाती थी। थोड़े में कह सकते हैं कि रायसाहब के समय में दूसरा कोई भी व्यक्ति कपड़ा कमेटी का सभापति बन ही नहीं सकता था। इन्हीं के समय में

लाला रामरतन गुप्त भी इस कमेटी के सदस्य थे और निरन्तर कमेटी की बैठकों में साधारण व्यापारियों के बीच बैठकर व्यापारिक गुत्थियों को सुलझाया करते थे। आपने कपड़ा कमेटी की अच्छी उन्नति की। नया विधान भी राय-साहब के समय में ही बनाया गया था। इस विधान के बनाने में पुराने विधान की एक-एक धारा पर पूर्णरूप से विचार किया गया था। रायसाहब जहाँ एक ओर व्यापार के झंझटों में फँसे रहते थे वहीं दूसरी ओर कला की ओर से भी उदासीन नहीं थे। इनके बगीचे में दूर दूर के गाने वालों का अच्छा जमघट रहता था। अपने जीवनकाल में ही रायसाहब ने चौक में एक दूकान भी बनवाई थी।

सारांश यह कि रायसाहब कानपुर के लिए सर्वतोमुखी प्रतिभा के एक नागरिक थे। रायसाहब के कोई पुत्र नहीं हुआ। किन्तु अपने छोटे भाई बाबू जङ्गबहादुर के पुत्र श्री रामजीदास मेहरोत्रा पर इनका अत्यधिक स्नेह था अतः इन्हें ही रायसाहब ने गोद ले लिया था। श्री रामजी बाबू बराबर रायसाहब द्वारा प्रदर्शित पथ पर चलते रहे हैं। प्रसिद्ध फर्म गोपीनाथ छंगामल की पूर्णरूप से देखरेख इन्हीं के द्वारा होती रही। रायसाहब के न रहने पर उनकी यादगार में एक सुन्दर कुंवा तुलसीपुर में बन-वाया गया। रायसाहब ने अपनी बहन की एक लड़की भी गोद ली थी। रायसाहब की सदा यही शिक्षा अपने परिवार के लिये रही कि संगठित रहो। समूचा परिवार एक में ही रहे। आप

श्री किशोरचन्द कपूर

श्री जयनारायण गोयनका

इस विषय में इतने सतर्क रहते थे कि आज आपका परिवार कानपुर नगर के लिये सम्मिलित कुटुम्ब का आदर्श उपस्थित कर रहा है।

इतने कार्य-व्यस्त होते हुए भी रायसाहब संगीत कला और मनोरंजन को भी अपना ध्येय बनाये रहते। वे बहुत बड़ों की पार्टी में सम्मिलित होना पसन्द नहीं करते थे, सदैव साधारण श्रेणी के व्यक्तियों के साथ रह कर हंसी मजाक खाना-पीना, घूमना उन्हें पसंद था। वे गंगा जी के महान भक्त थे प्रदोष मण्डल की उन्होंने कानपुर में स्थापना की जो आज तक बराबर चल रहा है।

रायसाहब संगीत के अच्छे कलाकार थे। वे स्वयं कभी कभी गाते। वैसे उनके बगीचे में प्रायः गायन मण्डली जमा करती, बाहर से कोई गवैया आता तो रायसाहब द्वारा वह अवश्य सम्मानित होता।

आज रायसाहब गोपीनाथ नहीं हैं पर उनके सभी कार्य और परिवार के बच्चे उनके बताये हुए रास्ते पर ही चल रहे हैं उनके सभी फर्म और कारोबार उन्नति की ओर अग्रसर हो रहे हैं।

ला० देवीदास जी भगत

लाला बालमुकुन्द जी बेरी कानपुर के पुराने प्रसिद्ध पुरुषों में से थे। आप उन खत्री परिवारों में से थे जो कानपुर की प्रारम्भिक अवस्था में आकर यहां बसे थे। आपने चौक में कपड़े की दूकान खोली थी और उस दूकान पर सिलाई का भी

काम होता था। आपके चार पुत्र हुए। सबसे बड़े लाला देवी-दास जी, दूसरे श्री गांगों जी, तीसरे श्री चुन्नू जी और चौथे महाशय काशीनाथ जी। चारों ही पुत्रों का जन्म चौक ठठराई की गली में "चमन" के सामने वाले मकान में हुआ था।

लाला देवीदास का जन्म सम्वत १९२४ के कुआर मास की कृष्ण पक्ष की तृतीया को हुआ था। आपकी प्रारम्भिक शिक्षा आत्माराम गुरू के यहां हुई। कुछ दिन आत्माराम जी से मुड़िया और हिन्दी पढ़ने के बाद आपने कन्हैयालाल मास्टर से अंग्रेजी पढ़ी और थोड़े दिन कल्लूमल की पाठशाला में संस्कृत का अमरकोष भी रटा। चौदह वर्ष की आयु से ही आप अपने पिता बड़े भगत जी के कारबार में पड़ गए और १८ वर्ष की आयु में सूत की दलाली करना शुरू कर दिया। आप अपनी व्यापार की रुचि के कारण अपनी पसंद का काम भी करने लगे। ईश्वर की कृपा और अपनी सूझ-बूझ के कारण लाला देवीदास जी ने सूत में पैसा कमाया। अब तो आपके हौसले खुल गए। अतएव सूत के अलावा आपने शेयरों और शकर का काम भी करना शुरू कर दिया। इन कामों में भी आपको लाभ ही हुआ। आप बुढ़वल शुगर मिल के डाइरेक्टर भी बना दिए गए। आर० जी० काटन लखनऊ के भी आप डाइरेक्टर रहे हैं। अपने पुरुषार्थ से धन कमाकर इस समय आप कानपुर के धनाढ्यों में गिने जाते हैं। जिस मकान में आप इस समय रहते हैं और जो कोतवालेश्वर महादेव के पीछे गली में है, इसे

लालाजी ने सन् १९२९ में खरीदा था और सन् १९३१ में आकर उसमें बस गए।

आप सदा लोकोकारी कामों में भाग लेते रहे हैं। देश के कई बड़े-बड़े नेताओं से आपका खूब परिचय था। शहर के सभी रईसों तथा व्यवसाइयों से आपका खूब मेल-जोल था। शहर का ऐसा कोई सार्वजनिक काम न होता था जिसमें आप योग न देते हों।

स्वर्गीय पण्डित मोतीलाल जी नेहरू से तो आपकी काफी घनिष्ठता थी। पण्डित जी जिस समय कानपुर आते, उस समय देवीदास जी को जरूर याद करते और भगतजी भी जब पण्डितजी के पास पहुँचते तो यहां के मशहूर मण्डे पेड़ (संदेश) लेकर जाते क्योंकि कानपुर के मण्डे अर्थात सन्देश और वह भी एक विशेष दूकान के, पण्डित जी को बहुत पसन्द थे। एक बार पं० मोतीलाल जी अपने परिवार के साथ कहीं से आ रहे थे, उस समय पं० जी ने लाला देवीदास को तार दिया था कि सब लोगों के खाने के लिये कानपुर की मशहूर कचौड़ियां लेकर स्टेशन पर आओ। भगतजी मय सुन्दर हलवाई की गरम-गरम कचौड़ियों के पहुँचे और पं० जी के परिवार वाले उनको खाकर बड़े प्रसन्न हुए।

स्वर्गीय पं० मदन मोहन जी मालवीय से भी भगतजी का काफी परिचय रहा है। इसी मित्रता और जनहित का कार्य होने कारण भगतजी ने हिन्दू विश्वविद्यालय का चन्दा कराने

में जी तोड़ कर परिश्रम करके कानपुर से एक अच्छी रकम इकट्ठी करवायी थी।

कानपुर के प्रत्येक लोकोपयोगी कार्य के लिए चन्दा जमा करवाने और स्वयं भी चन्दा देने में भगत जी सदा अग्रसर रहे हैं। चन्दा देने और दिलवाने के अतिरिक्त भगतजी कानपुर की अनेक सार्वजनिक संस्थाओं की कार्य कारिणी के सदस्य रहे हैं। हिन्दू अनाथालय के तो आप संस्थापक सदस्यों में से हैं।

श्री० देवीदास जी बड़े ही स्वाभिमानी और मुंहफट यानी खरी कहने वाले व्यक्ति हैं, बड़े से बड़े आदमी को उसकी बुराइयां उसके मुंह पर कह दिया करते हैं। उन्होंने आजतक किसी की चापलूसी नहीं की, यहां तक कि कई बार ऐसे मौके भी पड़े जब उन्होंने बड़े-बड़े अफसरों तक को उनकी बुराइयाँ और गलतियाँ उनके मुंह पर कह दीं।

आपकी याददाश्त बहुत ही अच्छी है, ५० साल पहिले की बात भी सन तारीख समेत उन्हें याद रहती हैं। वे बहुत ही वाक्य कुशल सज्जन हैं। आजकल श्री० देवीदास लगभग ८८ साल के हैं और वृद्धावस्था के कारण अपने मकान पर ही रहते हैं।

भगतजी के पुत्र श्री रामचन्द्र बेरी कपड़े का व अन्य कार-बार करते हैं और अब भगत जी की जगह बुड़वल शुगर मिल के डाइरेक्टर हैं। श्री देवीदास जी के छोटे भाई श्री चुन्नू भगत

के पुत्र श्री कृष्णचन्द्र बेरी बी० ए० एल० एल० बी० हैं किन्तु वकालत नहीं करते। कांग्रेस के सिलसिले में आपको सन ४० और ४२ में जेल भी जाना पड़ा था।

ला० बनवारीलाल

इस परिवार के पूर्वज ला० कन्हैयालाल जी लगभग ढाई सौ वर्ष पहले औरइया से कानपुर आये थे, और तभी से यह परिवार कानपुर की श्रीवृद्धि कर रहा है। ला० कन्हैयालाल के दो पुत्र हुए। प्रथम लाला, भगवानदास दूसरे लाला छन्नूलाल। लाल भगवानदास के छः पुत्र हुए १-लाला लल्लीमल, २—लाला जग्गूमल, ३—लाला बेनीप्रसाद; ४—लाला काशीप्रसाद, ५—लाला संगमलाल, ६—लाला माधौलाल। लाला संगमलाल बड़े ही कर्मठ वैश्य थे। आपने ही नगर के प्रसिद्ध 'संगमाधीश' के मन्दिर का निर्माण करवाया था। ला० संगमलाल का जन्म सम्वत १९०४ में हुआ था और कानपुर की प्रसिद्ध फर्म भगवानदास काशीप्रसाद की स्थापना आप के द्वारा ही हुई थी जो आज भी मौजूद है। इन्हीं लाला संगमलाल के पुत्र लाला बनवारीलाल थे।

ला० बनवारीलाल का जन्म सम्वत १९३८ में श्रावण शुक्ल ३ को हुआ। साधारण अक्षर ज्ञान के बाद दूकान पर ही व्यापारिक शिक्षा मिली और इसी के सहारे लालाजी कर्मक्षेत्र में उतर पड़े। लालाजी बड़े ही कट्टर सनातनधर्मी थे और धार्मिक नियमों का बड़ी ही कठोरता पूर्वक पालन करते थे।

यावत् जीवन आपने बाजार की बनी हुई कोई वस्तु नहीं खाई। यदि कहीं बाहर भी जाते तो अपना रसोइया साथ रखते या फिर स्वयं अपने ही हाथों भोजन बना कर खाते थे। गंगा नहाने का आपका नित्य का नियम था। श्री भगवत्दास घाट पर आप नित्य ही गंगा स्नान को आते थे और यहाँ से स्नान करके जाने के बाद तो आप अपनी निष्ठा का अद्भुत परिचय देते थे। हाथ की कुहनी से लेकर गदेली तक कभी पांच कभी सात गंगाजल से भरे हुए कलश एक पर दूसरे को रख एक ही हाथ से मन्दिर ले जाते और वहाँ जाकर यह जल श्री ठाकुर जी को स्वयं ही चढ़ाते थे। इस प्रकार जल ले जाने की सामर्थ्य बड़े बड़े नौजवानों में भी अब नहीं पाई जाती। स्वयं भी लालाजी गंगाजल ही पीते थे।

लालाजी ने अपने व्यापार में काफी उन्नति की। अपने जीवनकाल में ही कपड़े बाजार की प्रसिद्ध फर्म बलभद्रचन्द्र मुन्नालाल की स्थापना आपने संवत ७५ में की। इसके बाद फर्म बनवारीलाल हनुमानदास की सम्वत १९८४ में हुई। एक फर्म बनवारीलाल रामभरोसे गल्ले बाजार में भी थी। अपने जीवन-काल में लालाजी ने प्रायः सभी तीर्थों की यात्रा की, केवल श्री अमरनाथ जी नहीं जा सके और इस कारण कि श्रावण में ही श्री अमरनाथ जी का दर्शन होता है और श्रावण तो लालाजी के लिये विशेष पर्व था। इसी महीने में तो श्री संगमाधीश की अपूर्व छटा देखने को मिलती है। अद्भुत

शृंगार व सजावट होती है। सड़क पर बाड़ा बांध कर जन्माष्टमी पर धूम धाम से नाटक भी होता है। लालाजी के जीवन भर यही होड़ रही कि संगमाधीश का ऐसा सुन्दर शृंगार व उत्साह हो जो कि नगर में दूसरी जगह देखने को न मिले।

जहाँ लालाजी ने अपने व्यापार व व्यवसाय की उन्नति की वहीं संगमाधीश के विषय में सदैव ही प्रयत्नशील रहे। यही नहीं अपने जीवनकाल में तो उन्होंने सभी दुकानों में संगमाधीश के मुनाफे की पत्ती कायम कर दी। किराया आदि की वसूली पर श्री संगमाधीश का हिस्सा कर दिया, कई गाँव व कुछ रियासतें भी इस मन्दिर में लगे हैं।

इस सब उन्नति का श्रेय ला० बनवारीलाल जी को ही है। इस मन्दिर के उत्सव में एक और कठिनाई थी जो अन्य मन्दिरों में नहीं थी, और वह थी साम्प्रदायिक समस्या। इसी मन्दिर के सामने ही मस्जिद और मिला हुआ रामनारायण बाज़ार है किन्तु लालाजी ने बड़ी बहादुरी से हमेशा अपने मन्दिर की शान क़ायम रखी।

ला० बनवारीलाल अपने चचाजात बड़े भाई ला० बिहारीलाल का बड़ा आदर करते थे। वास्तव में भाइयों में अगर कहीं सच्चा स्नेह देखने को मिला था तो वह ला० बिहारीलाल व ला० बनवारीलाल में ही। वैसे तो लालाजी का एक मात्र लक्ष्य श्री संगमाधीश की सेवा ही था। इमारत बनवाने या सजावट के कार्यों का उन्हें अच्छा ज्ञान था। साथ ही उन्हें

इस कार्य में काफी आनन्द भी आता था। जब कभी कोई सजावट के कार्य की बात आती तो लाला बनवारीलाल से अवश्य सलाह ली जाती। अपने जीवनकाल में ही लालाजी ने जाजमऊ की जमीदारी श्री ठाकुर जी के लिए खरीदी और एक सुन्दर बगीचा भी जाजमऊ में आपने बनवाया। एक बार जब सन् २७ में दंगा हुआ था तो लाला बिहारीलाल जी ने यह सुझाव रखा कि इस मौके पर आप यहाँ से दूसरी जगह रहने लगें। किन्तु लाला बनवारीलाल को यह कब मंजूर था, अपने ठाकुर जी को वह कैसे छोड़ सकते थे ? अतः आपने बड़े भाई की राय का आदर करते हुए कहा कि अच्छा बच्चों की व्यवस्था अवश्य करदी जाय किन्तु मैं तो संगमाधीश के चबूतरे पर सोऊंगा और लाख समझाने पर भी अपनी राय से टस से मस न हो सके।

लाला बनवारीलाल जी के चार पुत्र हुए। प्रथम लाला बलभद्रचन्द्र, द्वितीय लाला मुन्नालाल, तृतीय लाला लक्ष्मीनारायण और चतुर्थ लाला हनुमानदास। लालाजी के दो कन्याएं भी हुईं। लाला हनुमानदास पर लाला जी को विशेष आस्था थी, यहाँ तक कि अपनी मृत्यु से पूर्व श्री संगमाधीश का सारा भार आपने लाला हनुमानदास को ही सौंप दिया जिसे कि लाला हनुमानदास अपने पिता जी के जीवनकाल से बड़ी बुद्धिमानी के साथ निबाह रहे हैं। लाला बनवारीलाल जहाँ कहीं भी तीर्थयात्रा आदि में जाते तो अपनी श्री राधाकृष्ण की

प्रतिमा को अवश्य ही साथ रखते। इस प्रकार लाला बनवारी-लाल एक आदर्श वैश्य व भगवद् भक्त थे।

संवत २००३ को बैशाख बदी सप्तमी के ब्रह्म महूर्त में आपने अपना नश्वर शरीर छोड़ा। आज लाला बनवारीलाल नहीं हैं किन्तु उनके द्वारा उन्नत किया हुआ श्री संगमाधीश का मन्दिर हज़ारों नर नारियों के हृदय में भक्ति रस की मंदाकिनी प्रवाहित कर रहा है, और यही उनका जीता जागता स्मारक है।

सेठ रामगोपाल

सेठ रामगोपाल का जीवन चरित्र अत्यन्त शिक्षाप्रद है। इस जीवन से यह संकेत तो मिलता ही है कि यदि मां-बाप अपनी रुचि एवं चरित्र का ध्यान रखें तो संतान पर अवश्य ही उसका प्रभाव पड़ेगा। सेठ रामगोपाल के पूर्वज इनसे ४–५ पीढ़ी पहले राजपूताने के बिसाऊ (जयपुर राज्य) नामक स्थान के रहने वाले थे। यहाँ से निकल कर पहले यह परिवार यू० पी० के हाथरस में आबाद हुआ। यहीं से व्यापार आदि भी प्रारम्भ हुआ, किन्तु हाथरस से ही सेठ रामगोपाल अपने मातुल गृह राजगढ़, जो कि अलवर राज्यान्तर्गत है, की ओर अधिक आकर्षित हुए, फलतः परिवार के शेष सदस्य हाथरस ही रह गये किन्तु यह राजगढ़ आ गए और यहीं से व्यापार आदि की व्यवस्था आरम्भ हुई। सेठ रामगोपाल जी के पिता भी मौजूद थे अतः यह सारी व्यवस्था हाथरस से राजगढ़ की उन्हीं की इच्छा पर ही हुई। सेठ रामगोपाल का

जन्म राजगढ़ में ही हुआ था। सेठ कन्हैयालाल के तीन पुत्र हुए। सबसे बड़े सेठ रामगोपाल जिनकी कि यह जीवन रेखा हम पाठकों के सामने उपस्थित कर रहे हैं। दूसरे सेठ जगन्नाथ प्रसाद, तीसरे लाला गोबरधन दास। सेठ रामगोपाल का बाल्यकाल अधिकांश में राजगढ़ में ही बीता। उन दिनों स्कूल कालेज तो नौकरी चाकरी करने वालों के लिये समझे जाते थे व्यापारी और व्यवसायी वर्ग अपने लड़कों को इनमें भेजना समय बर्बाद करना समझता था। अतः सेठ रामगोपाल को भी समय की परिपाटी के आधार पर ही किसी स्कूल और कालेज तो क्या किसी सरकारी मदरसे का दर्शन करने का भी अवसर नहीं मिला। दूकान ही सेठ जी की पाठशाला थी और पिता श्री सेठ कन्हैया लाल जी ही अध्यापक थे। इस तरह साधारण मुड़िया आदि के सहारे ही इस बालक को व्यवसायिक क्षेत्र में उतरना पड़ा। ८–९ साल की अवस्था में सेठ जी की सगाई हो गई और लगभग बारह साल की अवस्था में सेठ रामगोपाल का ब्याह सहारनपुर में हो गया।

इस तरह से १३-१४ साल की अवस्था में इनके जिम्मे दूकानदारी का बोझ रख दिया गया। जिला बिजनौर के धामपुर में आढ़त की दूकान का काम काज इन्हीं के जिम्मे था। यह धामपुर जाना ही सेठ रामगोपाल जी के जीवन का मोड़ था, यहीं से एक प्रकार से जीवन की धारा दूसरी ओर प्रवाहित होने लगी। धामपुर आर्य समाजियों का एक अच्छा गढ़ था।

इन दिनों यहां पर महाशय विशम्भर नाथ का अच्छा प्रभाव था। आर्य समाजियों में इनका प्रमुख स्थान था। सेठ रामगोपाल भी इनके संपर्क में आये और धीरे-धीरे १५-१६ साल की अवस्था तक सेठ जी पक्के आर्यसमाजी हो गये। यह एक विचित्रता ही थी। सेठ जी के पिता कन्हैयालाल जी पक्के कट्टर सनातन धर्मी थे। इनके बनवाये मंदिर, धर्मशाला अब भी हैं। इस तरह जीवन धारा एक दूसरी धारा में प्रवाहित होने लगी। आर्य समाज के जलसों में बराबर आना जाना होने के कारण सामाजिक व राजनीतिक दिशा में विशेष आकर्षण होना स्वाभाविक हो उठा।

सेठ कन्हैयालाल जी ने अपने व्यापार को तमाम संयुक्त-प्रांत में फैला रखा था और एक दुकान कानपुर के नौघड़े में थी। इस दूकान का नाम श्री कन्हैयालाल रामगोपाल पड़ता था। नौघड़े के नानकचन्द साहीराम वाले फाटक में यह दूकान थी। सेठ कन्हैयालाल जी ने अपने जीवन काल में ही तीनों पुत्रों का बटवारा अलग-अलग कर दिया था। अतः कानपुर वाली दूकान का काम काज भी सेठ रामगोपाल ही देखते थे। और पिता जी के न रहने पर ये कानपुर ही आ गये। यहीं नौघड़ेवाली दूकान में काम काज देखते और इसी दूकान के ऊपर रहना भी प्रारम्भ कर दिया। बाद को पटकापुर में जहां आजकल प्रसिद्ध कांग्रेस कार्यकर्ता श्री रामनाथ टंडन रहते हैं, इन्हीं के सामने वाला फाटक मोल लेकर सपरिवार उसी में

रहने लगे। चूंकि आर्यसमाज की ओर पूर्ण रूप से यह धामपुर से ही आकर्षित हो चुके थे अतः कानपुर की आर्यसमाज में भी इनका आना जाना हो गया। उन दिनों मालरोड में जहाँ पर जाव प्रेस था आर्य समाज मन्दिर था और उन दिनों इसे ठन्डी सड़क का आर्य समाज कहा जाता था। वर्तमान आर्य समाज हाल तो ऊपर लिखे हुए आर्य समाज को बेच कर बनवाया गया था जिसमें कि सेठ रामगोपाल जी का काफी हाथ रहा। यहां की आर्य समाज में प्रमुख स्थान भी इन्हें प्राप्त हो गया और आर्यसमाज के उप प्रधान भी बहुत दिनों तक रहे। जिस तरह इनकी रुचि आर्य समाज की ओर थी उसी तरह व्यापार में भी काफी लाभ से कार्य करते थे। जितनी रकम इन्हें पैतृक मिली थी उससे कई गुना अधिक पैदा किया। एक तेल का मिल भी कन्हैयालाल रामगोपाल आयल मिल के नाम से खोला था। साथ ही रामनारायण बाजार की कैसर सोप फैक्टरी भी खरीदी। इस प्रकार व्यापार में उत्तरोत्तर उन्नति करते गए।

सार्वजनिक कार्यों में उन्हें विशेष रुचि थी। उन दिनों मारवाड़ी सामाज में विधवा विवाह बड़े साहस की बात थी, किन्तु सेठ जी विधवा विवाह के पक्के समर्थक थे और अपने घर पर ही एक मारवाड़ी सज्जन का विधवा विवाह स्वयं ही सम्पन्न करवाया। उन दिनों आर्यसमाज में मुन्शी ज्वालाप्रसाद और बाबू आनन्दस्वरूप की अच्छी ख्याति थी।

सेठ रामगोपाल की बैठक भी उक्त दोनों महानुभावों के साथ ही थी। आर्यसमाज का प्रचार करने स्वयं ही बिठूर में कार्तिकी स्नान पर जाया करते थे। कई साल लाला रामगोपाल कानपुर म्युनिस्पल बोर्ड के सदस्य भी रहे। पढ़ने का अभ्यास कम होते हुए भी शिक्षा से इन्हें बड़ा ही प्रेम था। मारवाड़ी पुस्तकालय के कार्यों में आप बड़ी दिलचस्पी लिया करते थे। मारवाड़ी स्कूल (अब कालेज) की स्थापना में भी आपका काफी हाथ रहा है। डी० ए० बी० कालेज सोसाइटी और कार्यकारिणी के सदस्य भी आप रहे थे।

आपको पुस्तकें तथा समाचार पत्र सुनने का बड़ा ही चाव था। पं० द्वारिकाप्रसाद तिवारी इन्हें नित्य ही ५-७ घण्टे पुस्तकें व अखबार आदि पढ़ कर सुनाया करते थे। मारवाड़ियों में लाला बाबूलाल जी बागला और लाला दीनानाथ बागला से रामगोपाल जी की खूब पटती थी। उस समय के सार्वजनिक कार्यकर्ताओं में सेठ रामगोपाल जी उग्रवादी समझे जाते थे। जिस समय कानपुर में इन्फ्लूएंजा का जोर बढ़ा तो एक कैम्प हूलागंज के पुल के पास नहर के किनारे स्थापित किया गया था। सेठ जी इसी कैम्प की देखभाल करते थे, मरीजों को दवा बट-वाते, अपने लड़कों को लेकर तमाम दिन इन दुःखी नागरिकों की हर प्रकार से सेवा किया करते थे। गुरुकुल से आपको अधिक स्नेह था। स्वयं भी कभी-कभी गुरुकुल जाते और स्वामी श्रद्धानन्द (उस समय के मुन्शीराम जी) से आपको अधिक प्रेम

था। गुरुकुल में आपने अपने द्वितीय पुत्र श्री० जानकीनाथ को भी भर्ती करा दिया था।

जिस समय लाला लाजपतराय कानपुर आए थे उनके सभा करने व ठहरने को कोई स्थान नहीं मिल रहा था, अतः सेठ रामगोपाल ने अपने मिल में ही उन्हें ठहरा कर वहीं सभा की। उन दिनों ला० लाजपतराय को ठहराना बड़ी हिम्मत का काम था। जिस समय भगवान तिलक कानपुर आए थे उन दिनों तो और कठिनाई थी, किन्तु सेठजी भी उग्रवादी थे, अतः अपनी गाड़ी तिलक महाराज के स्वागतार्थ देदी। सेठ रामगोपाल पर्दा प्रथा के भी प्रबल विरोधी थे। स्वयं अपनी पत्नी के साथ खुली गाड़ी में घूमने जाया करते थे। साहित्यिकों से भी आपको बहुत प्रेम था और श्री नारायणप्रसाद अरोड़ा, महाशय काशीनाथ और पं० शिवनारायण से काफ़ी घनिष्ठता थी। अमर शहीद स्वर्गीय गणेशशंकर विद्यार्थी से विशेष सम्बन्ध था। जब विद्यार्थी जी ने 'प्रताप' निकाला तो आपने विद्यार्थी जी को बहुत उत्साह दिलाया, बहुत दिनों तक साप्ताहिक 'प्रताप' के एक नम्बर के ग्राहक सेठ रामगोपाल थे।

मारवाड़ियों के नवयुवकों से आपको विशेष प्रेम था और हर तरह से इन नवयुवकों को सहयोग दिया करते थे। उन दिनों नगर के प्रसिद्ध व्यवसाई श्री नवलकिशोर जी भरतिया अनूपशहर में मास्टर थे। सेठ रामगोपाल इन्हें वहां से लाए। सेठजी को यह बर्दाश्त के बाहर की बात थी कि एक मारवाड़ी

पढ़ा-लिखा नवयुवक केवल अध्यापकी का जीवन व्यतीत करे। अतः अपने आयल मिल का कार्यभार श्री० भरतिया जी को सौंपा। जब तक यह आयल मिल रहा तब तक भरतिया जी बराबर इसका कार्य देखते रहे। सामाजिक बुराइयों को आप कभी बर्दाश्त नहीं करते थे। शहर में वेश्याओं का रहना उन्हें बराबर अखरता रहा। भैरों घाट में उन दिनों मुर्दों के जलाने की कोई उचित व्यवस्था नहीं थी। सेठ रामगोपालने इसके लिये काफी दौड़ धूप की और मुर्दों को विधि पूर्वक जलाने के लिए हवन कुण्ड बनवाने की चेष्टा की जो अब भी मौजूद है।

सेठ जी के तीन पुत्र हुए। पहले श्री रामचन्द्र मुसद्दी, जो हमारे नगर के प्रसिद्ध कांग्रेस कार्यकर्ता हैं और सपत्नीक जेल भी जा चुके हैं। अकेले तो आप अनेकों बार जेलयात्रा कर चुके हैं और शहर कांग्रेस कमेटी के एक खास सदस्य हैं। दूसरे श्री जानकीनाथ जिन्हें श्री रामगोपाल सेठ ने गुरुकुल में भर्ती करवा दिया था और वहाँ पर संस्कार हो जाने के बाद बजाय जानकी-नाथ के श्री० जगतभानु नाम रखा गया तथा इसी नाम से आपने ख्याति पाई। गुरुकुल शिक्षा समाप्त करने के बाद आप जर्मनी आदि विदेशों को भी गए। जर्मनी में आपने सिनोग्राफी की शिक्षा प्राप्त की। वहां से आकर बम्बई की अनेक फिल्म कम्पनियों में कैमरामैन रहे। वर्तमान लड़ाई में भी आपने युद्ध-स्थल में कैमरामैन की हैसियत से कार्य किया और इस क्षेत्र में लेफ्टीनेण्ट भानु के नाम से प्रख्यात रहे। आजकल आप

बम्बई के चर्च गेट मुहल्ले में रह रहे हैं। तीसरे पुत्र की मृत्यु सन २० में हो गई उस समय उसकी अवस्था लगभग ११ साल के थी। सेठ रामगोपाल के दो पुत्रियाँ भी थीं। एक सबसे बड़ी और दूसरी सबसे छोटी।

सेठ रामगोपाल को दमे की शिकायत थी। सन २३ में आपकी धर्मपत्नी चल बसीं। अन्त में सन १९२४ के दिसम्बर मास में धामपुर में ही आपकी मृत्यु इसी दमे के रोग से हो गई। आपका बनवाया हुआ धामपुर में आर्यसमाज मन्दिर है। साथ ही अपने पिता जी के बनवाए हुए मन्दिरों और धर्मशालाओं को आर्यसमाजी होते हुए भी बराबर खर्च दिया करते थे जो अब भी दिया जाता है। एक बात पितृ भक्ति की बड़ी सुन्दर सेठ रामगोपाल में थी कि आर्यसमाज के कट्टर समर्थक होते हुए भी पिता जी का श्राद्ध भक्ति विधिपूर्वक अवश्य ही किया करते थे। होमरूल लीग के भी आप सदस्य रहे। एक समय स्वामी सत्यदेव जी परिब्राजक कानपुर आए थे और सेठ रामगोपाल के यहाँ ही ठहरे थे। सेठ जी आज इस संसार में नहीं हैं किन्तु उनके पुत्र श्री रामचन्द्र मुसद्दी बराबर लोक कल्याण के कार्यों में सेठ रामगोपाल द्वारा निर्देश किये हुए पथ पर अनेक विघ्न बाधाओं के होते हुए भी चले ही जा रहे हैं। श्री० रामचन्द्र जी मुसद्दी की धर्मपत्नी श्रीमती श्रीदेवी मुसद्दी हमारे नगर की प्रसिद्ध सामाजिक कार्यकर्त्री हैं, कांग्रेस के महिला दल की कार्यकर्ता हैं। श्री० रामचन्द्र जी मुसद्दी को

बाबू कालीचरण
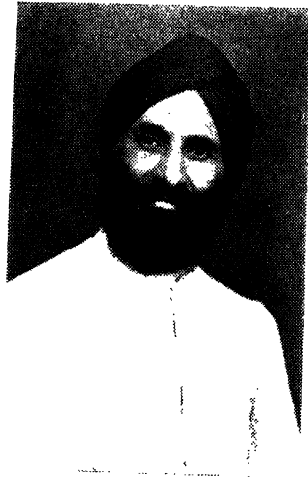
सरदार इन्द्रसिंह

बड़ी पुत्री कुमारी सरला मुसद्दी बड़ी ही होनहार हैं, आपने कालेज में शिक्षा प्राप्त की है और सार्वजनिक कार्यों में सदैव दिलचस्पी लेती रही हैं।

दीनानाथ बागला

बीकानेर राज्यान्तर्गत-चुरू नामक स्थान को प्रायः बागला मात्र का मूल उद्गम स्थान माना जाता है। ला० दीनानाथ बागला के पूर्वज भी चुरू निवासी थे किन्तु वर्तमान बागला बन्धुओं (ला० रामेश्वर प्रसाद बागला व ला० हरीशंकर बागला) के परबाबा ला० गंगाधर जी बागला ग़दर काल से पहले संयुक्त प्रांत के प्रसिद्ध (उस समय के) व्यवसाई नगर फरुखाबाद में ही व्यापार कर रहे थे। जैसा कि इस महान विप्लव के बाद अनेक नगरों के व्यवसाय एवं व्यापार में परिवर्तन हुआ उसी तरह फरुखाबाद की मण्डी भी उजड़ गई। अन्य व्यापारियों की भाँति ला० गंगाधर जी कानपुर में व्यापार एवं व्यवसाय के लिये आये और जनरलगंज में गंगाधर केदारनाथ के नाम से फर्म कायम हुई। यह फर्म उसी जगह थी जहां पर अब भी इसी परिवार की प्रसिद्ध फर्म गंगाधर बैजनाथ है। आज भी बागला बन्धु अपनी पुरानी गद्दी के स्थान में ही व्यवसाय कर रहे हैं। ला० दीनानाथ बागला (वर्तमान बागला बन्धुओं के पिता) भी इस समय तक कार्य तथा व्यवसाय की देख रेख करने लगे थे। किन्तु १९१६ में ८६ साल की अवस्था

प्राप्त करके लाला गंगाधर जी स्वर्गवासी हो गए अतः इस फर्म का विशेष भार ला० दीनानाथ बागला एवं उनके पिता ला० महीलाल जी बागला पर ही पड़ा।

लाला दीनानाथ बागला ने वैसे किसी कालेज की डिग्री नहीं पाई थी किन्तु अपने समय के कपड़े बाजार के पढ़े लिखे व्यक्तियों में थे। आपका जीवन चतुर्मुखी था। व्यापार, व्यवसाय, राजनैतिक, सामाजिक, एवं नागरिक प्रायः सभी क्षेत्रों में आप की दिलचस्पी तो थी ही साथ ही आपका प्रमुख स्थान भी था। ला० दीनानाथ बागला अपने पिता की अकेली संतान थे अतः यह स्वाभाविक था कि बागला परिवार की समस्त आशाएं इन्हीं पर आधारित हों। लाला जी ने इस आशा का निर्वाह भी किया और जीवन के हर पहलू में इन्होंने काफी तरक्की की। ३२ साल की उमर में समूचे शहर की हलचल एवं गतिविधि में काफी ख्यातनामा हो गये।

आप लगातार १२ साल तक स्थानीय म्यूनिस्पल बोर्ड के सदस्य रहे। बोर्ड की राजनीति में उस समय के आप विरोधी ग्रुप के प्रमुख नेता थे और आप की डट कर टक्कर इसी नीति के कारण हुआ करती थी। इस टक्कर में कभी-कभी बड़ी मजेदार घटनाएं भी हो जाती थीं। एक बार लालाजी अपर इन्डिया चेम्बर की ओर से इन्डियन कौंसिल के उम्मीदवार हुए। इनके विरोध में एक अंग्रेज सज्जन भी उम्मीदवार थे। मत लिए जाने पर लाला जी व उन अंग्रेज सज्जन के बराबर ही

मत आए। किन्तु यह कैसे बर्दाश्त किया जाता कि उस समय का अंग्रेज एक हिन्दोस्तानी से हार जाय। अतः तत्कालीन गवर्नर लेफ्टीनेण्ट ने अपना कास्टिंग वोट अंग्रेज के पक्ष में दिया।

आपने अनेक संस्थाओं की नींव अपने जीवन काल में ही डलवाई। यू० पी० चेम्बर, मारवाड़ी स्कूल, कपड़ा कमेटी आदि के निर्माण-कार्य में ला० दीनानाथ बागला का प्रमुख हाथ था। उस समय चिक डाल कर बाहर चपरासी बैठा कर कुर्सी मेज पर बैठने की प्रथा का चलन नहीं हुआ था। उस समय तो जिस के यहाँ दस पांच व्यक्ति हर समय बैठे रहें उसी की रईसी समझी जाती थी। बागला जी के यहाँ भी सीधे लोग पहुँच जाते और जयरामजी के बाद गद्दी पर हर समय दस पांच व्यक्ति मौजूद ही रहते थे। इसी गद्दी पर व्यापार, सामाजिक वार्ता, शहर की चर्चा और राजनैतिक दांवपेंच सब हर समय चला करते थे। उस समय के नागरिकों में वे अधिक अग्रगामी समझे जाते थे। बागला जी के यहाँ बा० बिक्रमाजीत सिंह, हाफ़िज़ मुहम्मद हलीम, ला० बहादुरलाल, बा० बिहारीलाल, ला० काशीराम, ला० गुटीराम तथा ला० विशम्भरनाथ आदि की बैठक व आना-जाना बराबर ही लगा रहता था। जहाँ वह सार्वजनिक क्षेत्र में इतने फंसे थे वहीं वह व्यापार में भी काफी सतर्क थे। ला० दीनानाथ बागला के प्रयत्नों से ही स्वदेशी काटन मिल की एजेंसी इनके यहाँ क़ायम हुई थी।

ला० दीनानाथ जी धोती कोट और गोल फेल्ट कैप, उस समय की प्रचलित पोशाक, के प्रेमी थे। जहाँ कहीं दस व्यक्ति भी सार्वजनिक रूप से इकट्ठे होते थे, चाहे वह कितना ही छोटा व बड़ा आयोजन क्यों न हो उस समय आप पगड़ी बाँध कर जरूर जाते थे। बागला जी चाय भी जाड़े के दिनों में बड़े प्रेम से पीते थे किन्तु उस समय की चाय और अब की चाय में काफी अन्तर है। उन दिनों चाय सिर्फ दूध का रंग बदलने के लिए डाली जाती थी और अब दूध केवल चाय का रंग बदलने के लिए डाल दिया जाता है। लाला जी की रात्रि की व्यालू गद्दी पर ही अपने पांच सात साथियों के साथ होती थी और इसके बाद तो फिर आराम का समय था। इसी समय ताश, शतरंज और चौपड़ आदि भी जम जाती थी। उन दिनों ताश में 'ब्रिज' 'फलश' 'पोकर' आदि का चलन नहीं हुआ था। सरकारी क्षेत्रों में भी लाला दीनानाथ बागला की काफी पहुंच थी। अधिकारियों से मिलना जुलना उस समय बड़ी ही शान व इज्जत की बात समझी जाती थी और यदि किसी अंगरेज से दोस्ती हो जाती थी तब तो कहना ही क्या है। लाला दीनानाथ बागला की सरकारी क्षेत्रों में पहुँच थी और प्रसिद्ध दिल्ली दरबार में दरबारी की हैसियत से आपको भी शामिल होने का निमन्त्रण आया था और आप गए भी थे। ला० दीनानाथ बागला ने अपने इस थोड़े से जीवन-काल को बड़े ही चमत्कार पूर्ण ढंग से बिताया। ३२ साल की अवस्था से एक मास पूर्व

लाला दीनानाथ बागला गोलोकवासी हो गए। इस तरह से सन १९१६ और १७ में ही बागला परिवार के ला० गंगाधर जी इसके बाद ला० महीलाल जी तथा अन्त में ला० दीनानाथ बागला के निधन से बागला परिवार एक प्रकार से सूना-सा हो गया था। उस समय वर्तमान बागला बन्धु श्री रामेश्वर-प्रसाद बागला व श्री हरीशंकर बागला क्रमशः ग्यारह व आठ साल के थे।

हर्ष है कि बागला बन्धुओं ने अपने माता-पिता की स्मृति में पार्वती दीनानाथ अस्पताल की स्थापना की है, जिसमें कई लाख रु० लगा है। उसका उद्घाटन हमारे प्रांत की गवरनेस श्रीमती सरोजिनी देवी द्वारा हुआ था।

गोपीनाथ रस्तोगी

श्री गोपीनाथ रस्तोगी के पूर्वज लगभग २०० वर्ष पूर्व 'कड़ा' जिला इलाहाबाद से कानपुर आये थे। इनके पूर्वज लाला जुगुलकिशोर जी आढ़त का काम करते थे। नयेगंज में गल्ले की आढ़त थी और इस फर्म का नाम बेनी प्रसाद माधो प्रसाद पड़ता था। लगभग सौ साल पहिले स्थानीय जनरलगंज पच-कूँचा में वह मकान खरीदा गया था जिसमें कि आजकल भी वही परिवार रह रहा है। ला० जुगुल किशोर के छः पुत्र हुए। पहली स्त्री से ला० माधोप्रसाद व लाला कालिका प्रसाद। दूसरी स्त्री से ला० बेनी प्रसाद ला० बनारसीदास, ला० बाला-प्रसाद व ला० काशीप्रसाद। लाला माधोप्रसाद के पुत्र गोपीनाथ

जी रस्तोगी थे और एक कन्या भी थी। ला० गोपीनाथ जी को पहलवानी का बड़ा शौक था। सोलह साल की अवस्था तक आप कसरत, कुस्ती में ही व्यस्त रहते थे। घर पर ही एक मौलवी साहब इन्हें उर्दू और फारसी पढ़ाया करते थे। उर्दू मिडिल पास करने के बाद लाला गोपीनाथ का विवाह फतेहपुर जिला में हुआ। ला० गोपीनाथ के एक कन्या हुई। दुर्भाग्य से जिस प्रकार लड़कपन में लाला गोपीनाथ की मां का स्वर्गवास हो गया था ठीक उसी प्रकार इस कन्या को छोड़कर ला० गोपीनाथ की स्त्री भी स्वर्गवासी हो गईं। लाला गोपीनाथ ने फिर दूसरा ब्याह नहीं किया और अपने भतीजों के साथ ही रहने लगे। उर्दू मिडिल पास करने के बाद लाला गोपीनाथ जी कचेहरी में कार्य करने लगे थे और लगभग २५ साल तक तक वे पेशकार रहे। संवत १९४१ में जनरलगंज बजाजे में एक दूकान कालिका प्रसाद जानकी प्रसाद के नाम से खोली गई। सम्वत ६४ में इस दूकान का नाम बदलकर कालिका प्रसाद रामचरण पड़ने लगा जो अब भी इसी नाम से क़ायम है। सन २१ में स्वदेशी आंदोलन जोरों पर था, बा० गोपीनाथ, जिन्हें ताऊजी के नाम से बजाजे वाले अधिक जानते थे, के स्वभाव के विरुद्ध था कि वे ऐसे समय में सरकारी नौकरी करें अतः उन्होंने नौकरी छोड़ दी और जनरल गंज वाली दूकान में बैठने लगे। ताऊजी बड़े ही स्पष्टवक्ता थे। बेलौस बात कहने में कभी भी नहीं चूकते थे। परिवार के कर्ता के रूप में अपने

भतीजों के साथ ही रहने लगे और बजाजे की दूकान पर बराबर बैठने लगे। बाद में अपनी दूकान के ऊपर आपने एक बनारसी व रेशमी माल की मशहूर कोठी भी खोली। लाला गोपीनाथ जी की मृत्यु पचहत्तर साल की उम्र में सं० २००२ में हुई। ताऊजी के मुख्य मित्रों में ला० खुन्नूलाल, श्री भवानी सहाय, परमानंद और ला० मंगामल जी थे। उनके परम मित्र श्री० भग्गा महाराज हैं। बाबू गोपीनाथ जी अपने नियम के बड़े ही पक्के थे। सुबह उठकर स्नान आदि से निवृत होकर २-३ घन्टे भजन पूजन अवश्य करते थे। ठीक बारह बजे वे दूकान आ जाते थे। शतरंज खेलने का ताऊजी को बड़ा शौक था। श्री वंशी महाराज पुरोहित और श्री गौरीशंकर खत्री के साथ आपकी शतरंज बराबर डटी रहती थी किन्तु यह शतरंज दूकान से आने के बाद ही होती थी। जब तक आप रहे बजाजे में आप की पूरी धाक रही। क्या मजाल जो ताऊजी की मर्जी के विरुद्ध कोई कदम बजाजे के दूकानदार उठा सकें। आज ताऊजी नहीं हैं किन्तु उनकी याद अब भी लोगों के हृदय में ताजी है।

मि० रायन

स्व० मि० जस्टिन ग्लिन रायन एम० बी० ई० बी० डी० का नाम कानपुर नगर के उद्योग व्यवसाय और म्यूनिस्पल इतिहास में सदैव स्मरणीय रहेगा। आपका कुछ विवरण इसी पुस्तक के पृष्ठ २५५ पर अपर इंडिया चेम्बर आफ कामर्स के सिलसिले में दिया जा चुका है। जो बातें वहाँ नहीं दी जा सकी उनका

उल्लेख नीचे किया जाता है:—

चेम्बर में आने से पूर्व आप टाश कम्पनीमें काफ़ी अर्से तक काम कर चुके थे। सन् १९१२ में ही चेम्बर ने उन्हें म्यू० बोर्ड में अपना प्रतिनिधि नामज़द किया और तब से सन् १९४२ तक आप म्यू० बोर्ड के सदस्य रहे। म्यू० बोर्ड में जब तक आप रहे प्रायः वाटर वर्क्स कमेटी के चेयरमैन चुने जाते थे। इस दिशा में आपकी सार्वजनिक सेवायें अमूल्य हैं। सन् १९-२७ में आपको ओ० बी० ई० की उपाधि मिली। आपकी स्मृति में कम्पनी बाग की ओर से गुमार घाट की ओर जाने वाली सड़क का नाम रायन रोड़ रखा गया है।

मि० रायन बहुत ही मिलनसार व मेहनती व्यक्ति थे, वे हिन्दुस्तानियों से मिलना बहुत पसन्द करते थे। हमारे नगर के रा० ब० बा० विक्रमाजीतसिंह, श्री चुन्नीलाल महेश्वरी उनके अभिन्न मित्रों में से थे। मि० रायन जब तक म्यू० बोर्ड में रहे पार्टीबन्दी से सदैव अलग रहे और उन्होंने सदैव अपना मत निर्भीकता पूर्वक प्रदर्शित किया।

श्री मूलचन्द टण्डन (मुल्लन बाबू)

बाबू मूलचन्द टण्डन जिन्हें कपड़ा बाज़ार का व्यवसायी वर्ग मुल्लन बाबू के नाम से अच्छी तरह जानता है, कपड़े बाजार के एक विशेष व्यक्ति थे। आपके पूर्वज काशी के रहने वाले थे। अनुमान से लगभग चार पीढ़ी पहले यह परिवार कानपुर आया था।

मुल्लन बाब के बाबा का नाम श्री चन्नामल था। ला० चन्नामल के एक भाई भी थे जिनका कि नाम ला० बिहारीलाल था। ला० चन्द्रिकाप्रसाद लाला बिहारीलाल के पुत्र थे। लाला चन्द्रिकाप्रसाद के लगभग सात पुत्र व पुत्री हुईं किन्तु दुर्भाग्य से वह सब अल्पायु ही रहे। इस प्रकार ला० बिहारीलाल का वंश वृक्ष आगे नहीं पनप सका। ला० चन्नामल के ही पुत्र ला० गनपतराय थे। लाला गनपतराय ला० मूलचन्द के पिता थे। ला० गनपतराय के तीन हो बच्चे जीवित रहे, १- ला० मूलचन्द (मुल्लन बाबू) २-बुलाकीदास व एक कन्या श्रीमती कुन्दादेवी।

ला० गनपतराय साधारण स्थिति के व्यक्ति थे। वास्तव में सम्पन्न न होते हुए भी अपनी ढकी मुंदी मर्य्यादा चलाये जाने में हो अधिक गौरव समझते थे। लाला गनपतराय लाला कुन्दनलाल फर्म के ला० मगन लाल रामचरण के यहाँ मुनीम थे और उस समय के मुनीमों की जो अच्छी तनख्वाह थी वह इन्हें भी मिलती थी। अर्थात यह पचीस रुपये महीने पर नौकर थे। सन् १८८३ में मुल्लन बाबू का जन्म स्थानीय छप्पर मुहाल के एक मकान में हुआ था। मुल्लन बाबू अभी पाँच साल के ही थे कि पिताजी स्वर्गवासी हो गये। कठिन समस्या थी। शहर का रहना और पारिवारिक स्थिति डावांडोल, इतने पर भी घर में कोई सयाना नहीं। किन्तु इनकी माता श्री ने इस समय अटूट साहस का परिचय दिया। यह वह समय था जब कि नवाबी रहन-सहन की श्री लुप्त हो चुकी थी किन्तु बुझे दीपक की गन्ध

अभी दूर नहीं हुई थी। अब भी चिकन, अद्धी और दुपल्ली टोपी की धूम थी। श्री माताजी ने अद्धी काढ़ना प्रारम्भ किया। इसी अद्धी की कढ़ाई से जो पारिश्रमिक मिलता था वही इस परिवार के भरण पोषण का सहारा था।

सात साल के मुल्लन बाबू ने दो रुपया महीने की नौकरी श्री० बस्सामल दलाल के यहाँ कर ली। आज जो सैकड़ों रुपये लोग केवल आमोद-प्रमोद में व्यय कर देते हैं उन्हें आश्चर्य होगा कि दो रुपये मासिक की भी नौकरी हो सकती है ? इस नौकरी से छुट्टी मिलने पर आप भइया जी के यहाँ कुछ व्यापारिक हिसाब-किताब के ज्ञान प्राप्ति के लिए भी जाया करते थे। इस प्रकार ग्यारह साल की अवस्था पहुंचते-पहुंचते दस रुपये महीने के नौकर हो गये, किन्तु इसी समय बस्सामल दलाल भी स्वर्गवासी हो गये, अतः नौकरी छूट गई। विधि का विधान तो कुछ और ही था। बस्सामल दलाल की मृत्यु के बाद इनका सम्पर्क कपड़े के प्रसिद्ध फर्म बिहारीलाल रामचरण के स्वर्गीय लाला बिहारीलाल से हो गया। जैसा कि स्वर्गीय लाला बिहारीलाल जी के सम्पर्क मात्र से हजारों व्यक्ति सम्पन्न हो गये ठीक इसी प्रकार से इस परिवार के भी कष्टों का अन्त होना प्रारम्भ हो गया। ला० बिहारीलाल जी के यहाँ आप तीस रुपये मासिक पर नौकर हो गये। इसी बीच आपने कपड़े बाजार में दलाली भी की। अपनी बहिन के ब्याह का भार भी अभी इनके सिर पर था अतः हटिया के लाला विशम्भरनाथ कपूर से आपने अपनी

बहिन का ब्याह भी सम्पन्न किया।

कहना नहीं होगा कि अब दुःख के दिन पूरे हो चुके थे और अब पचास रुपये महीने की प्राप्ति का डौल लग गया था। इसी समय आपका ब्याह बहराइच के लाला बिहारीलाल की पुत्री श्यामाप्यारी के साथ हुआ। अब तो आपकी श्रीवृद्धि उत्तरोत्तर होने लगी। प्रसिद्ध फर्म चन्द्रिकाप्रसाद रामस्वरूप का मुहूर्त भी इन्हीं दिनों हुआ। मुल्लन बाबू एक सफल दूकानदार साबित हुए। दिसावरों में आपकी खरीद की धाक थी और यहाँ कानपुर में भी आपके यहाँ के बाने की थाह नहीं मिलती थी। कोई भी व्यक्ति मुल्लन बाबू को गद्दी पर बैठे हुए हुक्का गुड़-गुड़ाते देख सकता था। सिगरेट की अपेक्षा आप हुक्के को ही अधिक विशेषता देते थे। व्यवसाय ही आपका जीवन था। अगर कोई नशा था तो वह व्यवसाय था। एक आढ़त की दूकान भी अपने चचा चन्द्रिकाप्रसाद की देखरेख में खोली। मुल्लन बाबू बड़ी ही मड़क के व्यक्ति थे। आपके समय की अनेकों इस मड़क की कहानियाँ बाजार में प्रचलित हैं जिन्हें अब भी बाजार के पुराने दूकानदार और दलाल बड़ी लगन से कहते सुने जाते हैं। अब तो इस कपड़े बाज़ार में ऐसी मड़क वाले कितने दूकानदार हैं इसका पता लगाना कठिन है।

सन् १९३६ में आपने इहलोक लीला समाप्त की। आप एक पुत्र श्री विश्वनाथ टण्डन को उत्तराधिकारी के रूप में छोड़ गये हैं। बाबू विश्वनाथ टण्डन भी बड़े ही कार्यकुशल व मिलनसार

स्वभाव के दूकानदार तो हैं ही साथ ही आप एक अत्यन्त कुशल कलाकार हैं। चित्रकला से आपको विशेष प्रेम है साथ ही इस कला पर आपका अच्छा अधिकार भी है। आपके बनाए हुए अनेकों सुन्दर चित्र हैं जिन्हें देखते ही आँखें तृप्त हो जाती हैं। इस प्रकार मुन्नन बाबू ने एक अत्यन्त साधारण स्थिति से अपने परिवार को अपने परिश्रम से इतना ऊंचा उठाया और व्यापारिक क्षेत्र में ख्याति अर्जित की।

मुल्लन बा० के कनिष्ठ भ्राता श्री बुलाकीदास भी सम्पन्न हैं और आप भी स्व० लाला बिहारीलाल के सम्पर्क में रहे थे। आप इस समय अपनी दूकान बुलाकीदास शिवनाथप्रसाद का काम देखते हैं।

भगत साँवलदास

पं० प्रयागनारायण तिवारी के समकालीन और चमारों में सबसे अधिक प्रसिद्ध भगत साँवलदास हो गए हैं। अपने जमाने में इनका नाम कानपुर के रईसों में था। श्री साँवलदास के चार-पांच भाई और थे जिनके नाम ये हैं—श्री दुर्गादास, श्री कालीदास, श्री किशोरदास और श्री कालिकादास। इनके एक बहिन भी थी जिनका नाम सुश्री लक्ष्मीकुँवरि था। इनके पिता का नाम श्री कृपादास था जो घाटमपुर तहसील के मौजा हिन्नो पतारा के रहने वाले थे और वहीं से आकर कानपुर शहर में मोहल्ला हीरामन का पुरवा में बसे थे।

भगत साँवलदास बड़े दानी और श्रद्धालु हिन्दू थे। ब्राह्मणों

का मान करते थे। इनका नित्य का कार्यक्रम यह था कि सबेरे स्नान करके कुछ न कुछ दान अवश्य करते थे। प्रायः रोज ही गेहूँ और चना बांटा करते थे। जाड़े में गरीबों को कम्बल और गरमी में धोती, कुर्ता तथा सलूके देते थे। उन्हें कन्याओं के विवाह करवाने में बड़ी श्रद्धा थी। अतः जो कोई भी अपनी कन्या के विवाह के लिए उनके पास पहुँच जाता उसकी आर्थिक सहायता अवश्य करते थे। उनका दान केवल गरीब व्यक्तियों ही तक सीमित नहीं था। स्कूलों और पाठशालाओं की सहायता करना भी वह अपना कर्तव्य समझते थे। कदाचित ही कोई भी याचक उनके यहाँ से विमुख होकर खाली हाथ आता था।

उन्होंने चमड़े के व्यापार से काफ़ी धन कमाया और अपने दृष्टिकोण से अच्छे कामों में खर्च किया। इस धन से उन्होंने घाटमपुर, अकबरपुर और बिल्हौर में कई जिमीदारियाँ खरीदीं तथा शहर में मकान भी बनवाये जो आज भी उनके नाती पोतों के पास मौजूद हैं। उनके वंशजों में कई भतीजे जीवित हैं जिनमें श्री मुक्ताप्रसाद जी अधिक प्रसिद्ध हैं। श्री साँवलदास की मृत्यु २४ जुलाई सन् १९०८ में लगभग ९० वर्ष की अवस्था में हुई थी। उन्होंने अपने जीवन काल में पुराने कानपुर में कबेला के पास गंगा के किनारे एक घाट भी बनवाया था।

यह घाट काफ़ी बड़ा और एक दिव्य स्थान है। घाट पर श्री साँवलदास की समाधि के अतिरिक्त जो घाट के दाहिनी ओर बनी हुई है, कई सुन्दर समाधियाँ बनी हुई हैं। घाट के

बांई ओर पश्चिम की तरफ श्री रामबख्श चौधरी की समाधि है। यह हीरामन पुरवा के रहने वाले और चमारों के एक बड़े चौधरी थे। श्री रामबख्श की समाधि के पास ही उसी ओर बाबा जीवनदास कबीरपन्थी की समाधि है। यह बाबा जी तरकारी मण्डी के रहने वाले और श्री साँवलदास के गुरू थे। यहीं पर एक कोठरी में आजकल महन्त सेवकदास कबीरपंथी रहते हैं और वहां घाट आदि की देखभाल करते हैं।

घाट के दाहिनी ओर पूरब की तरफ दलेलपुरवा के एक जाटव की समाधि है। आसपास और भी समाधियाँ हैं। घाट पर एक बहुत अच्छा दालान बना हुआ है। उसी में कांग्रेस के प्रयत्न से एक हरिजन विद्यालय अभी हाल में खोला गया है, क्योंकि वहां हरिजनों की बस्ती काफ़ी है। दालान के पीछे छोटे साँवल की समाधि का हाता है, जिसका प्रबन्ध उनकी दाश्ता ब्राह्मणी करती है और यहाँ का तथा जूही में उनके मन्दिर से लगी हुई कोठरियों का किराया वसूल करती है। घाट के पास ही एक मन्दिर भी है जिसमें सब जाति के लोग पूजा करते हैं। इधर-उधर पिकनिक अथवा वनभोज करने वालों और खोजिओं को इस घाट पर जाना चाहिए, स्थान रमणीक है।

उनकी मृत्यु के बाद उनके भाई कालिकादास ने उनकी यादगार में जूही में एक छतरी बनवाई जिसमें शिवजी की एक मूर्ति बनी हुई है। हीरामन पुरवा में इनका एक मन्दिर और

धर्मशाला भी बना हुआ है ।भगत साँवलदास को कोई व्यसन न था। वह बड़े सात्विक पुरुष और 'भगत' नाम को सार्थक करने वाले जीव थे। वह प्राचीन पंथ के क़ायल थे और बैलों की जोड़ी की गाड़ी पर चढ़ने के शौकीन थे।

छोटे सांवल

कानपुर के चमार भाइयों में छोटे साँवल नाम के भी एक सज्जन प्रसिद्ध हो गये हैं, जो अभी थोड़े ही दिन हुए सन् १९४२ की २३ वीं मार्च को मरे हैं। इनके पिता का नाम श्री केसरी भगत था। छोटे साँवल की समाधि भी बड़े साँवल अर्थात् भगत सावलदास की समाधि के पास ही पुराने कानपुर में बनी हुई है।

लाला गयाप्रसाद कपूर

ला० गया प्रसाद के पिता लाला छोटेलाल कपूर इटावा के निवासी थे। वहाँ से वह कब आये इसका पता नहीं। किन्तु कानपुर में आकर लाला छोटेलाल ने किसी के साझे में अंग्रेजों की गोरी पलटनों को रोटी सप्लाई करने का काम शुरू किया। इसी कारण उन्हें लोग छोटेलाल रोटी वाले कहने लगे। इस व्यापार से उन्हें अधिक लाभ तो हुआ ही किन्तु बड़े-बड़े अंग्रेज अधिकारियों से सम्पर्क भी स्थापित हो गया। परिणाम स्वरूप उन्हें कई ठेके मिल गये और सन् १८५७ के विद्रोह के पश्चात् उन्होंने इन ठेकों की बदौलत काफी धन पैदा किया।

लाला छोटेलाल की मृत्यु के पश्चात् उनके पुत्र लाला गया-प्रसाद ठेकेदारी का काम करने लगे। कमसरियट में ठेकों से इन्होंने खूब धन कमाया और अन्य रोजगारों की बदौलत सम्पत्ति बढ़ती ही गई और पुत्र ने पिता की कीर्ति और सम्पत्ति की वृद्धि की। आप कानपुर की खत्री समाज के अग्रगण्य और शहर के एक प्रमुख रईस थे। कानपुर के रईसों की तरह और खत्री होने के कारण आपको भी जुए का शौक था ? दिवाली में इनके यहाँ भी बड़े जोर का फड़ लगता था।

बाबू गयाप्रसाद जी के केवल एक संतान बाबू वेनीमाधव बी० ए० थे। उनका स्वास्थ्य अच्छा न था और वह पूरे लाला थे। हर प्रकार से सुखी होना बहुत कम लोगों के भाग्य में होता है। लाला गयाप्रसाद जी भी इस नियम से बच न सके थे। उन्हें पुत्र शोक उठाना पड़ा। अर्थात् २८ फरवरी सन् १८९९ ईसवी को बाबू बेनीमाधव कपूर का देहांत हो गया। पिता के सामने पुत्र का मर जाना अपार संकट है। पिता के दिल पर इससे बढ़कर कोई आघात हो ही नहीं सकता। इस चोट से लाला गयाप्रसाद जी ऐसे जख्मी हुए कि वह केवल साढ़े चार महीने ही जी सके। उसी साल १६ जुलाई को उनका भी देहांत हो गया। अब उनकी अपार सम्पत्ति का कोई उत्तरा-धिकारी न था। कहीं बुराई से भी भलाई पैदा हो जाती है। बाबू बेनी माधव की मृत्यु से लाला गयाप्रसाद जी को यह सूझी कि इस धन को परोपकार में लगाना चाहिये और उन्होंने

श्री मनोराम कपूर

पं० मोतीलाल शुक्ल

अपने मरने के केवल तीन दिन पहले यानी १३ जुलाई सन् १८९९ को अपनी सारी सम्पत्ति का एक ट्रस्ट बनाकर रजिस्ट्री करवा ली।

इस दान-पत्र के द्वारा लालाजी ने थोड़ी-सी सम्पत्ति तो अपने रिश्तेदारों अर्थात् अपनी विधवा पुत्र-बधू, विधवा स्त्री, बहन और बहन के लड़कों को दी, कुछ अपने अहलकारों तथा छोटे बड़े कर्मचारियों को दी। बाकी सारी रियासत और सम्पत्ति को लोकोपकारी कामों के लिये ट्रस्ट के सिपुर्द कर दिया। ट्रस्ट के सुपुर्द की हुई सम्पत्ति लगभग ६ लाख रुपये की थी। इसमें उनके सारे गाँव, प्रामिसरी नोट बैंकों में जमा रुपया और नगद धन सब शामिल हैं। बाबू गयाप्रसाद जी ने अपने वसीयतनामे में यह स्पष्ट ताक़ीद कर दी है कि ट्रस्ट के अधिकारी केवल उनकी सम्पत्ति से होने वाली आमदनी ही को खर्च कर सकेंगे। मूलधन में से कोई खर्च न किया जायगा। इस समय ट्रस्ट की आमदनी लगभग ३८ हज़ार रुपया वर्षिक है और ६ ट्रस्टी उसका प्रबन्ध करते हैं। इस ट्रस्ट के प्रथम सभापति लाला गोपीनारायण जी उर्फ पुत्तनलाल थे। सन् १९१७ में श्री गोपीनारायण जी की मृत्यु हो गई। उसके बाद इस ट्रस्ट के मुख्य प्रबन्धकर्ता बाबू रामसनेही जी सेठ रहे और अब बाबू कालिकाप्रसाद जी धवन हैं।

इस ट्रस्ट के द्वारा होने वाले लोकहितैषी कार्यों की सूची इस प्रकार हैः—

१—सन् १९०३ में भास्कर-समाधि-क्षेत्र की स्थापना। स्वामी भास्करानन्द लाला गयाप्रसाद के धर्मगुरू थे। अतः उनका स्मारक स्थापित करना ट्रस्ट ने अपना कर्तव्य समझा और लगभग एक लाख रुपये से संगमरमर की एक दर्शनीय समाधि बनवा दी और एक सदावर्त का भी प्रबन्ध कर दिया।

२—स्वामी भास्करानन्द जी मैथा लालपुर के रहने वाले थे, अतएव लाला गयाप्रसाद जी स्वयं मैथा में एक पक्का तालाब बनवा गये थे। वहाँ भी स्वामीजी की एक मूर्ति है जिसके पूजा-पाठ तथा भोग आदि का प्रबन्ध आज तक चला जाता है।

३—फिर बेनीमाधव धर्मशाला की स्थापना हुई जहाँ सदावर्त भी बटता है। बाद में धर्मशाला की इमारत नये सिरे से एक तिमंजिले और शानदार भवन के रूप में बनवाई गई, जिसका उद्घाटन हमारे प्रांत के प्रसिद्ध नेता माननीय बाबू पुरुषोत्तमदास टंडन ने किया था। इस धर्मशाला में दो-ढाई सौ आदमी ठहर सकते हैं। इसका प्रबन्ध बहुत उत्तम और सफ़ाई एक नम्बर है। धर्मशाला के फाटक ही पर एक ओर लाला बेनीमाधव की मूर्ति है और दूसरी ओर शिवजी की मूर्ति तथा औषधालय है जहाँ निधन जनता को मुफ्त दवा दी जाती है।

४—कुएं—जैसलमेर रियासत में कृष्णगढ़ और गोधाल के बीच में सन् १९०८ में ६०००) रु० की लागत से पानी का कष्ट दूर करने के लिए ट्रस्ट ने एक कुआँ बनवाया। दूसरा कुआँ शिमला में ९०००) रु० लगाकर सन् १९१० में बनवाया। इनके अलावा अपने इलाके के गाँवों में भी कई कुएँ बनवाये हैं।

५—सन् १९०८ में ही ट्रस्ट ने पशुओं के पानी पीने के लिये कई चरहियाँ बनवाईं और थके माँदे बटोहियों के आराम करने के लिये पक्के चबूतरे बनवाये।

६—२५०००) रुपया लगाकर ट्रस्ट ने कानपुर के सरसैया घाट पर एक पार्क और टट्टियाँ बनवाईं।

७—सन् १९१७ में ट्रस्ट ने २००००) रु० की पूँजी से "गयाप्रसाद लाइफ़ सेविंग फ़ण्ड" स्थापित किया। इसकी आमदनी से दूसरों की जान बचाने वालों को हर साल पदक या नक़द पुरस्कार देकर परोपकार-वृत्ति को प्रोत्साहित किया जाता है।

८—पुस्तकालय—कानपुर की गयाप्रसाद लाइब्रेरी एक अच्छी सार्वजनिक संस्था है। १९२४ में चार वर्ष इमारत बनवाने के बाद यह पुस्तकालय खोला गया था। इसकी इमारत में १ लाख ८० हज़ार रुपया लगा था। पुस्तकालय का प्रबन्ध करने के लिए सात आदमियों की एक कमेटी है। इमारत के नीचे बनी हुई दूकानों के २००) किराये से, तथा म्युनिसिपल

बोर्ड की २००) मासिक सहायता से, तथा १०० रुपये की सरकारी ग्रांट से पुस्तकालय का खर्च चलता है।

९—संस्थाओं को दान—ट्रस्ट समय-समय पर लोकोपकारी संस्थाओं को दान देता रहता है। उसने ५०००) रुपये प्रयाग के हिन्दू बोर्डिंग की इमारत बनवाने में, २५०००) लखनऊ के मेडिकल कालेज के नेत्र-चिकित्सालय के लिए, १५००) विन्ध्याचल की सारस्वत खत्री-धर्मशाला के लिये, १००००) सनातन धर्म महामण्डल को, १००००) सर्वेन्ट आफ इन्डिया सोसायटी को, ५०००) किंग एडवर्ड मेमोरियल फंड को, तथा डी० ए० वी कालेज, बालिका विद्यालय, गुरुनारायण खत्री स्कूल, बी० एन० एस० डी० कालेज, में से प्रत्येक को पांच-पांच हज़ार दिये हैं। तथा १००), २००). और ५००) रुपया सैकड़ों संस्थाओं दान देता रहा है।

१०—ट्रस्ट ने अकाल, बाढ़ और भूकम्प आदि दैवी विपत्तियों के अवसर पर भी पीड़ित जनता को समुचित सहायता प्रदान की है। सहायता पाने वालों में हिन्दू, मुसलमान और ईसाई का कोई भेद नहीं रखा गया है।

११—ट्रस्ट शिक्षा प्रसार का बड़ा हिमायती रहा है। उसके द्वारा न केवल गरीब विद्यार्थी ही बल्कि मध्यम श्रेणी के अनेक बच्चे भी वजीफे, पुस्तकें और आर्थिक सहायता पाते रहे हैं, और अब भी पा रहे हैं। ट्रस्ट बालिकाओं की शिक्षा की ओर से भी उदासीन नहीं है। वह अनेक कन्या-पाठशालाओं

की भी बराबर सहायता करता रहता है।

१२—विधवाओं की सहायता करने में ट्रस्ट सदा मुक्तहस्त रहा है। गरीब कन्याओं के विवाह करवाने में तथा यज्ञोपवीत संस्कार कराने में भी ट्रस्ट काफ़ी रुपया खर्च करता है। सारांश यह है कि इस ट्रस्ट का रुपया लोकोपकारी कामों में खर्च होता है और प्रबन्ध बहुत अच्छा है।

हाफ़िज़ मोहम्मद हलीम

खान बहादुर हाफ़िज़ हलीम साहब पंजाब प्रांत के फीरोज़पुर नगर के निवासी थे। वहीं सन् १८६७ में आपका जन्म हुआ था। आपके पिताका नाम हाजी मुन्शी अब्दुल रहीम साहब था। आपकी प्रारम्भिक शिक्षा दिल्ली में हुई थी। अर्बी और फ़ारसी ही आपको सिखाई गई। अंग्रेजी आपने कुछ अधिक नहीं पढ़ी। आपने तेरह वर्ष की अवस्था में ही कुरान मजीद हिफ़्ज़ कर लिया और हाफ़िज़ हो गये। आप उर्दू और फ़ारसी बहुत तेज़ और सुन्दर अक्षरों में लिखते थे। बोल भी आप अच्छा लेते थे। शेर और शायरी तथा दवाओं से आपको बड़ी रुचि थी। आप सदा विद्वानों को प्रोत्साहित करके उनकी प्रतिष्ठा करते रहते थे। आपके पितामह हाफ़िज़ इमाम बख्श अपनी 'राई' विरादरी के सरपंच थे और पिताजी दिल्ली में बकरी की खाल का व्यापार करते थे। अतः हाफ़िज़ हलीम साहब भी वहीं अपने पिताजी के साथ कारबार सीखने लगे। आपके पिताजी अत्यन्त परिश्रमी और पुराने ढङ्ग के आदमी थे।

अतएव प्रारम्भिक अवस्था से ही हाफ़िज़ हलीम साहब को भी खूब परिश्रम करने और कठिनाइयाँ झेलने की आदत पड़ गई। आप १५-१६ वर्ष की अवस्था में ही व्यापार के दाँव-पेंचों से परिचित हो गये थे। बालक हलीम अपने पिता की तरह अपने व्यापार को केवल एक छोटे दायरे में सीमित रखने पर सन्तुष्ट न थे। अतः उन्होंने कलकत्ता, 'सहारनपुर, अम्बाला, लुधियाना, सियालकोट, और कानपुर सरीखे व्यापारिक केन्द्रों की दौड़ करना शुरू किया और धीरे-धीरे इन समस्त स्थानों में अपनी एजेंसियां स्थापित कीं। चमड़े के व्यापार के अतिरिक्त सन १८८८ से सन १८९८ तक आपने गेहूँ और सरसों का कारबार भी करांची में धूम-धाम से किया। इसी ज़माने में आपको काफ़ी लाभ हुआ। इसके बाद आपने ग़ाज़ी फ़रीद साहब के साझे में 'कुसूर' में रूई का व्यापार भी जारी कर दिया। सन् १८९५ में आप कानपुर आये और यहाँ चमड़े का कारबार शुरू किया। सन् १८९९ के बीकानेर के अकाल ने आपके व्यापार को बहुत लाभ पहुँचाया। कुछ दिन पश्चात् आप किसी जर्मन फर्म के एजेन्ट मुकर्रर हो गये और उसमें भी आपको काफ़ी लाभ हुआ। अपने ज़माने में आप कानपुर के लखपतियों में हो चुके थे। आपने १९०१ में मदरास में एक टैनरी डेढ़ लाख में ख़रीदी और विलायत से चमड़े का कारबार शुरू कर दिया।

लाहौर में आपने देशी चमड़े की एक टेनरी खोल दी।

इन दिनों हाफ़िज़ जी का इतना अधिक माल विदेशों को जाता था कि बम्बई में आपके माल के लिये "हलीम डाक" के नाम से एक प्रथक प्लेटफार्म खोला गया जो अब तक है। कानपुर में आपका चमड़े का गोदाम बहुत बड़ा था। साथ ही "हलीम बूट फैक्टरी" "इण्डियन नेशनल टेनरी" और "कानपुर टेनरी" भी आप ही की स्थापित की हुई हैं। आपने अपने व्यापार की वृद्धि के लिये तीन बार विलायत की और एक बार अमेरिका की यात्रा की थी।

धन सम्पन्न होते हुए भी आप स्वभाव के बड़े नम्र और मिलनसार थे तथा गरीबों के साथ बड़ी सहानुभूति से व्यवहार करते थे। कानपुर के मुसलमानों में आप सबसे प्रतिष्ठित गिने जाते थे।

सन् १९१२ में जब अफ़गानिस्तान के अमीर हबीबुल्ला साहब कानपुर आये थे तो आप ही के यहाँ ठहरे थे। राजे महाराजाओं से आपका काफी परिचय और मेल-जोल था। आप के यहाँ ठहरने वालों में महाराजा पटियाला, बेगम भूपाल, महाराजा भरतपूर, महाराजा कोल्हापुर, हिज़ हाइनेस आग़ा खाँ, महाराजा कपूरथला, सर हारकोर्ट बटलर, सरजेम्स मेस्टन, राजा सलेमपुर, राजा महमूदाबाद आदि अनेक नवाब और राजे थे। यदि एक ओर बड़े आदमी उनके अतिथि थे, तो दूसरी ओर गरीब और मोहताजों के लिये भी उनका द्वार खुला रहता था और हाफ़िज साहब प्रायः सभी की थोड़ी बहुत सहा-

यता करते रहते थे।

हाफिज जी उर्स के बड़े शौकीन थे और बहुधा वहाँ पहुँच जाते थे। सराय सरहिंद के उर्स में जाने वालों के कष्टों को दूर करने के लिये आपने वहाँ एक बड़ी-सी सराय १९०२ में बनवायी थी और वहाँ बरसों तक आपकी ओर से एक भण्डारा भी होता रहा। १९०८ में इटावा इस्लामिया स्कूल के लिये आपने २५ हजार रुपये लगाकर एक "हलीम होस्टल" भी बनवा दिया था। सन् १९१६ में अपनी धर्म पत्नी के नाम से पटियाला रियासत के बसी नामक स्थान में "मरियम यतीम खाना" नाम से एक अनाथालय बनवाया और बरसों उसकी सैकड़ों रुपयों से सहायता करते रहे। बसी में कुरान की शिक्षा के लिये १९१७ में एक स्कूल भी बनवा दिया जो आज तक चल रहा है। अलीगढ़ मुस्लिम युनिवर्सिटी को भी आपने २५ हजार रु० चन्दा दिया था।

कानपुर में हलीम मुस्लिम स्कूल जब सन् १९१४ में परेट पर स्थापित हुआ तब हाफिज जी ने स्कूल को एक अच्छी रकम एकमुश्त देकर उसकी जड़ जमा दी थी और बराबर दस बरस तक साढ़े चार सौ रुपया मासिक देते रहे। सन् १९२२ में जब स्कूल के लिये जमीन खरीदी गई तब हाफिजजी ने उक्त संस्था को एक लाख रुपया दिया था। आज यह स्कूल हाफिजजी के नाम को अमर किये हुए हैं। यह सन्तोष की बात है कि हाफिज जी के जीवन काल में ही यह स्कूल इन्टर

कालेज हो गया था।

कानपुर के मुस्लिम यतीमखाने के हाफ़िज़ जी सभापति थे और सदा उसकी सहायता करते रहे। सन् १९१३ में उक्त अनाथालय का फाटक आपने बनवाया और उसका शिलान्यास भी स्वयं ही किया। अतः उस फाटक का नाम हलीम गेट रखा गया, जो आज भी आपकी शान का द्योतक है। आपकी दान शीलता के अनेक उदाहरण हैं, जैसेः—

१—सन् १९१७ में एम० ए० ओ० हाई स्कूल अमृतसर को ५ हज़ार रु० का दान।

२—सन् १९१७ में अंजुमन तरक्क़ी तालीम मुसलमानान अमृतसर को ५ हज़ार रु० का दान।

३—सन् १९१८ में यतीमखाना अजमेर शरीफ़ को ४ हज़ार रु० और मदरसा मज़हबी तालीम अजमेर को ३ हज़ार रुपया का दान।

४—५ हज़ार रुपया कानपुर की ईदगाह की चहार दीवारी के लिये दान।

५—उपर्युक्त संस्थाओं के अतिरिक्त इस्लामिया स्कूल फतेहपुर, लखनऊ के उलमाओं की सभा, मदरसा रहमानिया और यतीमखाना मोदहा, अंजुमन हिमायत इस्लाम लाहौर, विश्वम्भर नाथ सनातन धर्म इन्टर कालेज कानपुर आदि अनेक संस्थाओं को हज़ारों रुपये दान दिये थे।

जो दान आप गरीब विद्यार्थियों और विधवाओं को प्रत्येक

मास दिया करते थे उसकी संख्या भी पर्याप्त थी।

६—चूँकि आप 'राई' बिरादरी के थे अतः उसके वार्षिक जलसों में भी आप ने लगभग १५ हज़ार रुपये खर्च किया था।

७—रुड़की के पास कलीर शरीफ के उर्स के अवसर पर यहाँ की चार-पाँच मील लम्बी सड़क पक्की करवाने में करीब ५००००) रु० ख़र्च कर दिये।

आप मूल निवासी पटियाला रियासत के थे अतः वहाँ के महाराजा ने प्रसन्न होकर सन् १९२१ में 'मलकुल तज्जार' अर्थात् व्यापारियों के राजा की पदवी से आपको विभूषित किया। अंग्रेज़ सरकार ने १९१९ में उन्हें खाँ साहब की पदवी दी, किन्तु हाफ़िज़ जी के इनकार कर देने पर उन्हें तुरन्त ख़ान बहादुर बना दिया।

आनरेरी मजस्ट्रेट तो आप सन १९०७ से १९२७ तक, बीस वर्ष रहे और सन १९२७ में इस्तीफ़ा देकर अपने पुत्र एम० एम० बशीर साहब बी० काम (लन्डन), बार-एट-ला, एफ०, आर० सी०, म्युनिसिपल कमिश्नर और मन्त्री हलीम मुस्लिम कालेज को अपने स्थान पर आनरेरी मैजिस्ट्रेट बनवा दिया।

सन् १९०७ से १९१६ तक संयुक्त निर्वाचन के द्वारा और सन्१९२६ से १९३८ तक पृथक निर्वाचन के द्वारा आप बिना विरोध कानपुर म्युनिसिपल बोर्ड के मेम्बर बराबर चुने जाते

रहे । सन् १९२३ में बाबू बिहारीलाल जी की पार्टी की ओर से आपको कानपुर बोर्ड की चेयरमैनी के लिये भी खड़ा किया गया था और बहुमत होते हुए भी आप दुर्भाग्य से डाक्टर मुरारीलाल से हार गये थे । सन् १९२८ में आप हज भी कर आये थे और मक्का के शरीफ़ के शाही मेहमान भी रहे थे । हज से लौटने पर आपके पुत्र ने कानपुर वालों की एक बड़ी लम्बी और शानदार दावत की थी ।

कुछ समय तक स्वास्थ्य ख़राब रहने के कारण आप ७ जनवरी सन १९३९ को सुबह सात बजे यह संसार छोड़ गये । आपकी मृत्यु से शहर भर का बाज़ार बंद हो गया और कचहरी, म्युनिसिपल बोर्ड, डिस्ट्रिक्ट बोर्ड इम्प्रूवमेंट ट्रस्ट आदि भी बन्द रहे तथा स्कूल, कालेज और मील भी बन्द कर दिये गये । हाफ़िज़ जी की लोकप्रियता का दूसरा प्रमाण यह था कि आपकी लाश के साथ मुसलमानों के अतिरिक्त अनेक हिन्दू और अंग्रेज़ भी थे । परेट पर जनाज़े की नमाज़ होने के पश्चात् हाफ़िज़ जी की वसीयत के अनुसार आपकी लाश सर-हिन्द पहुँचाई गई और वहीं दफ़न की गयी । आपके दो पुत्र हैं, एक हाजी मोहम्मद नज़ीर साहब और दूसरे एस० एम० बशीर साहब जो आजकल जुग्गीलाल कमलापत ग्रुप में लोहे तथा मोटर का कारबार करते हैं ।

बैरिस्टर बशीर

शेख मोहम्मद बशीर बैरिस्टर बशीर के नाम से प्रसिद्ध

हैं और बड़े मिलनसार, बा-तहज़ीब और मधुरभाषी हैं। इनका जन्म सन् १९०२ में हुआ था। इन्होंने बी० एस-सी० इलाहाबाद से और बी० काम० लन्डन से किया था आप एफ० आर० ई० एस० हैं। वर्षों आप कानपुर म्युनिसिपल बोर्ड के मेम्बर, उसके सीनियर वाइस चेयर मैन, इम्प्रूव मेंट ट्रस्ट के मेम्बर, जूही नोटी फाइड एरिया कमेटी के सदस्य, बोर्ड आफ़ कम्यूनिकेशन के मेम्बर तथा जी० आई० पी० रेलवे की एडवाइज़री कमेटी के मेम्बर रहे हैं। अब आप जे० के० आइरन और स्टील कम्पनी के डाइरेक्टर हैं तथा आटो सर्विस गेराज के मालिक हैं।

खेलों में आपको क्रिकेट, हाकी, टेनिस, शिकार और तैरने का शौक रहा है। आपके चार लड़के हैं और निवासस्थान 'बशीर लाज' है।

लाला अनन्तराम

बिसाऊ निवासी लाला अनन्तराम जी कब आकर फ़रुखाबाद में बसे इसका तो पता नहीं, परन्तु यह निश्चित रूप से मालूम हुआ है कि सम्बत १९०५ में फरुखाबाद से कानपुर आये। कानपुर आकर उन्होंने व्यापार शुरू किया। कुछ दिन अपने नाम से व्यापार करने के उपरान्त उन्होंने बैजनाथ रामनाथ के मालिकों से मिलकर उक्त फर्म स्थापित किया और इसी फर्म के नाम से लम्बा व्यापार शुरू किया। फर्म वालों ने लाला अनन्तराम को अपना हेड मुनीम बनाकर पूरे अख्तियारात

दे दिये। लालाजी नित्य गङ्गा स्नान करने परमट जाया करते थे। वहाँ पर एक अंग्रेज हेमनकटल साहब रहता था जो नील का काम करता था। उससे नील के व्यापार के सिलसिले में लालाजी की जान-पहचान हो गई। जब सन् १८६४ में उस अंग्रेज ने एलिगन मिल का काम अपने हाथ में लिया तब लालाजी ने अपने मालिकों से कह कर मिल में काफी रुपया लगवा दिया और मेसर्स बैजनाथ रामनाथ एलिगन मिल के बैंकर हो गये।

अनन्तराम जी के तीन पुत्र थे— श्री नारायणदास, श्री गोपालदास और श्री बन्शीधर। अपने बड़े लड़के को लालाजी ने मनोहरदास रामप्रसाद फर्म के मालिक घासीराम जी के साझे में सम्बत १९३९ में मेसर्स घासीराम नारायणदास के नाम से एक दुकान खुलवा दी। किन्तु थोड़े ही दिन के पश्चात् अपने दो लड़कों के नाम से एक स्वतंत्र फर्म स्थापित करा दिया और उसका नाम नारायणदास गोपालदास रखा। यह फर्म आज भी विद्यमान है। इस फर्म के मालिक लाला रामस्वरूपजी भरतिया बड़े सज्जन, शान्त और धार्मिक मनुष्य हैं। आप लाला गोपालदास जी के पुत्र हैं। श्री बन्शीधर के पुत्र का नाम श्री विश्वनाथ जी भरतिया है।

लाला अनन्तराम जी ने सम्बत १९६२ में फीलखाना मोहाल में अपनी प्रसिद्ध धर्मशाला बनवाई थी, जिसमें उस समय एक लाख रुपया लगा था जो आज पाँच लाख से भी

न बन पाता। इस धर्मशाला में सर्वप्रथम सार्वजनिक कार्य स्वर्गीय गोपाल कृष्ण गोखले को एक पार्टी दी जाने के रूप में हुआ था। लाला अनन्तराम जी का स्वर्गवास सम्वत १९६९ में हुआ था। आप अच्छे दानी थे और गुप्त रूप से ही दान किया करते थे। भगत देवीदास के उद्योग से आपने काशी हिन्दू विश्व विद्यालय को २५००) रुपया दिया था और भगत जी से कहा था कि उनका नाम प्रकाशित न होने पावे। आपका धर्मशाला आपकी कीर्ति को बनाये हुए है और अनेक शुभ कार्यों में बहुतों के काम आता है। यह धर्मशाला कानपुर के शहर के सब धर्मशालाओं से बड़ा है और प्राचीन धर्मशालाओं में से एक है। धर्मशाला में एक शिवजी का मन्दिर भी है जिसका सावन में बड़ी धूम-धाम से शृंगार भी होता है।

लाला चुन्नीलाल महेश्वरी

ला० चुन्नीलाल जी महेश्वरी का जन्म खंजरपर जिला मेरठ में सन् १८६८ में हुआ था। कुछ ही समय बाद कानपुर के लाला गोकुलचन्द जी महेश्वरी ने आपको दत्तक पुत्र स्वीकृत किया तथा आप कानपुर नगर के निवासी हो गए।

गोद लिए जाने से पहले आपको कोई नहीं जानता था। २६ वर्ष की आयु में ही आपने चुन्नीलाल पुरुषोत्तमदास फर्म के रूप में व्यापार करना प्रारम्भ किया और स्वयं प्रसिद्ध होने के साथ ही अपनी व्यापारिकता, दानशीलता, तथा सार्वजनिक कार्यकारिता की धाक कायम कर ली।

आपके जीवन में व्यापारिक कार्यों के अतिरिक्त मुख्यरूपेण श्री गोशाला सोसाइटी का संस्थापन है। अपनी आखिरी साँस तक इस संस्था के प्रति की गई उनकी सेवायें प्रशंसनीय हैं। आप एवं आपके अन्य सहयोगी मित्रों के कार्य-काल में ही श्रीगोशाला-सोसाइटी अपने लघु रूप 'श्री गोरक्षिणी सभा' से विशाल स्वरूपिणी लोकोपकारी संस्था बन गई थी। इस संस्था के कार्यों में आप सदैव ही यथेष्ट समय देकर कार्य करते रहे।

प्रांत के प्रमुख व्यापारियों में से एक तथा कानपुर के विख्यात नागरिक होने के कारण आप अन्य अनेक प्रान्तीय तथा स्थानीय संस्थाओं के सदस्य भी रहे। उनमें से प्रमुख ये हैं,—कानपुर म्यु० बोर्ड (सन् १३-२२) अपर इण्डिया चेम्बर आफ कामर्स के प्रतिनिधि—३०-३२; अपर इण्डिया चेम्बर आफ कामर्स के सदस्य सन् १९१६ तक, यूनाइटेड प्रांविसेज चेम्बर आफ कामर्स के संस्थापक सदस्यों में से एक, मर्चेन्ट्स चेम्बर आफ़ कामर्स यू० पी० के सदस्य, जिला रेड क्रास सोसाइटी, हिन्दू सभा, कानपुर, हवाई क्लब के आजीवन सदस्य, ग्राम सुधार सभा के सदस्य।

व्यापारिक फर्म जिनसे आपका प्रमुख सम्बन्ध था वे ये थे—डायरेक्टर आर०-जी० काटन मिल्स लखनऊ, बुढ्वल सुगर मिल्स, कानपुर टेक्सटाइल मिल्स, बी-आई-सी।

आपके सुपुत्रों में श्री ला० बनारसीदास जी महेश्वरी नगर

के सुपरिचित नवयुवकों में से हैं और आपके दूसरे पुत्र श्री पुरुषोतमदास जी महेश्वरी हैं।

श्री दुबरीराम जी राठौर

कानपुर के राठौर क्षत्रिय समाज में श्री दुबरीराम जी प्रसिद्ध व्यवसायी तथा धर्म परायण व्यक्ति हो गये हैं। आपके जन्म की तिथि का ठीक ठीक पता तो नहीं है किन्तु आपकी मृत्यु लगभग ६५ वर्ष की अवस्था में संवत १९७८ में हुई थी। आपके एक ज्येष्ठ भ्राता श्री घसीटेराम जी का स्वभाव भी श्री दुबरीराम जी की तरह उदारता,,धार्मिकता तथा दयालुतापूर्ण था। दुबरीराम जी के पूर्व ही घसीटेराम जी की मृत्यु हो गई थी।

दुबरीराम जी अशिक्षित होने पर भी शिक्षितों से कम न थे। आपके स्वभाव से भोलापन टपका करता था। देश-प्रेम तथा जातीय प्रेम आप में कूटकूट कर भरा हुआ था। सेवा-भाव आपके जीवन का मुख्य लक्ष्य था। इसी उद्देश्य से प्रेरित होकर आपने सन् १९२१ (विक्रम संवत् १९७८) में एक धर्मशाला का निर्माण अपने हाथों कराया। इसका नाम श्री घसीटेराम दुबरीराम राठौर धर्मशाला रखा गया। उक्त धर्मशाला सेन्ट्रल स्टेशन के पास नहर के किनारे स्थित है। प्रतिवर्ष अनेक बारातें इसमें टिकती हैं। आजकल इस धर्मशाला को सुचारु रूप से चलाने का भार सुयोग्य ट्रस्टियों को दे दिया गया है। श्री मैकूलाल राठौर धर्मशाला के जीवन पर्यन्त

श्री दयाराम कानोडिया

श्री मदनचन्द खन्ना

हेड ट्रस्टी रहे और दुबरीराम जी के व्यवसायों की देखभाल करने में प्रमुख व्यक्ति थे। अब आपके सुपुत्र श्री जगदीशनारायण सिंह राठौर धर्मशाला के हेड ट्रस्टी हैं। श्री दुबरीराम जी में शिक्षा-प्रेम भी अत्यधिक था। फलस्वरूप आपने सन् १९१७ में तेलियाना स्कूल का निर्माण कराया। प्रबन्धाभाव से यह पाठशाला अब बन्द है।

श्री दुबरीराम जी की कानपुर के प्रमुख व्यापारियों में गिनती थी। लखपती होते हुये भी आपमें लेशमात्र भी घमंड नहीं था और न किसी को कभी सताया। पशुओं के लिये आपने एक सुन्दर चरही का निर्माण कराया था जिसमें सैकड़ों पशु प्रति दिन आकर जल पीते हैं। आप बड़े ही भगवद्भक्त पुरुष थे। गंगा जी के आप बड़े प्रेमी थे। जीवन पर्यन्त दाल-मन्डी के श्री नागेश्वर जी के मन्दिर के शृंगार का भार आपने अपने ऊपर रखा था और अब भी नियमित रूप से यह अनुपम शृंगार होता चला आ रहा है।

श्री दुबरीराम जी ने अनेक अच्छे कार्य किए। आपमें प्रेम, त्याग, निस्वार्थ भावना, तथा जातीय प्रेम की एक सच्ची लगन थी। आपके गुणों पर दृष्टि डालने से यही मालूम होता है कि निश्चय ही आप एक सत्पुरुष थे।

सेठ जानकीप्रसाद बालकृष्ण बलदुआ

इस परिवार का आदि स्थान नागोर है। इस परिवार के पूर्वज वहाँ से माधोगंज (हरदोई) आये और वहाँ से फिर लखनऊ। संवत् १९२५ के लगभग इन्होंने कानपुर में अपनी शाखा स्थापित की और फिर स्थायी रूप से यहीं व्यवसाय करने लगे। सेठ मसुख जी के पुत्र रामगोपाल जी और नथमल जी हुये। इनमें सेठ नथमल जी के पुत्र शिवनाथ जी तथा रामकृष्ण जी थे। सेठ शिवनाथ जी ने अपनी फर्म रामसुख दास रामगोपाल के कारबार की बड़ी उन्नति की। आपके यहाँ, किराना तथा कत्था का व्यापार होता था। सेठ शिवनाथ जी ने जेत (मथुरा) *में गरुड़ गोविंद के पास एक तालाब, शिवाला, कुँआ तथा बगीचा बनवाया। संवत् १९७५ में साठ वर्ष की अवस्था में आप स्वर्गवासी हुये। आपके पुत्र जानकी प्रसाद जी तथा रामप्रसाद जी हैं। संवत् १९७७ से इस परिवार ने तम्बाकू का बड़े पैमाने पर व्यापार प्रारंभ किया। इस कार्य में आपकी फर्म अच्छी प्रतिष्ठित मानी जाती है।

संवत १९९२ में सेठ रामकृष्ण जी, जानकीप्रसाद जी तथा रामप्रसाद जी का कारबार पृथक-पथक हो गया। सेठ जानकी-प्रसाद जी का जन्म संवत् १९४० में हुआ था। आपने अपनी सम्मिलित फर्म की उन्नति में अच्छा हिस्सा लिया था। इस

* ग्राम जेत मेरे सबसे बड़े पुत्र श्री भीष्म अरोड़ा का जन्म स्थान है।

समय आपके यहाँ जानकीदास बालकृष्ण के नाम से तंबाकू की आढ़त और शीरे का काम होता है। आपके बालकृष्ण जी तथा जयकृष्ण जी नामक दो पुत्र हैं।

श्री बालकृष्ण जी बंलदुवा का जन्म संवत् १९६८ में हुआ था। आप बी० ए० एल० एल० बी० हैं। पठन पाठन और लेखन में आपको विशेष रुचि है। सन् १९३२ एवं ३५ में दो बार आपने हिंदी की सुप्रसिद्ध कहानी पत्रिका 'माया' का सम्पादन किया। माहेश्वरी पत्र के भी आप कुछ समय तक सम्पादक रहे। आपके निबंध, कवितायें हिंदी के सभी मासिक पत्रों में प्रकाशित होती रहती हैं। 'विश्व काव्य' के नाम से आपने संसार के प्रसिद्ध कवियों की कुछ रचनाओं के अनुवाद किए हैं जो दो भागों में प्रकाशित हुए हैं। आपकी कई अन्य पुस्तकें भी प्रकाशित हो चुकी हैं, जैसेः — १ 'धड़कन' नामक काव्य संग्रह, २ 'प्रांगण' नामक दूसरा काव्य संग्रह, ३ 'अपने गीत' ४ 'मनके गीत', ५ 'आंगन' नामक तीसरा काव्य संग्रह, ६ 'सन्ताप' नामक काव्य में आपके हृदय का 'ताप' और व्यथा है। आप गद्य भी खूब लिखते हैं। आपकी गद्य पुस्तक 'समाजवादी विचार धारा' प्रकाशित हो चुकी है। माहेश्वरी महासभा के कानपुर अधिवेशन के अवसर पर आप स्वागत समिति के प्रधान मंत्री थे।

सेठ रामप्रसाद जी के यहाँ शिवनाथ रामप्रसाद के नाम से तम्बाकू की आढ़त का काम होता है। इनके रामकृष्ण दास

नामक एक पुत्र हैं।

सेठ राधाकृष्ण जी के पुत्र बद्रीप्रसाद जी एवं जगन्नाथ जी हैं। आपके यहाँ भागीदारी में पुरुषोत्तम दास बनारसी दास के नाम से तम्बाकू एवं किराने का काम होता है। बद्री प्रसाद जी के पुत्र श्याम सुन्दर लाल हैं।

ला० पीताम्बरलाल बाँगड़

लगभग २५० वर्ष पूर्व इस परिवार के पूर्व पुरुष साल्हाबास (रोहतक) नामक स्थान में रहते थे। वहाँ से लगभग २०० वर्ष पूर्व सेठ राम करण जी कानपुर आ गये और यहीं रहने लगे। आपने व्यापार में अच्छी सफलता प्राप्त की। आपके पुत्र सेठ गोवर्धनदास जी हुये।

सेठ गोवर्धनदास जी बहुत ही प्रतिभा संपन्न व्यक्ति थे। आपने मेसर्स गोवर्धनदास रूपराम के नाम से फर्म स्थापित कर बैंकिंग तथा आढ़त का काम प्रारम्भ किया। इसके बाद आपने देश के अन्य कई स्थानों में भी अपनी फर्म की शाखायें स्थापित कीं। आपका स्वर्गवास सन् १८५७ के ग़दर के कुछ ही समय पश्चात् हुआ। आपके सुखदेव दास, जमुनादास, जुगुल-किशोर, रामप्रसाद, शिवप्रसाद तथा नन्दलाल नामक ६ पुत्र हुये। ये सब भाई अलग-अलग हो गये और इस समय इस परिवार के लोग कानपुर में ही व्यापार करते हैं।

सेठ जुगुलकिशोर जी के बहादुरलाल, पीताम्बरलाल तथा प्यारेलाल नामक तीन पुत्र हुये। लाला बहादुरलाल जी म्यु०

मेम्बर व आनेररी मैजिस्ट्रेट रहे थे। पंचायत के आप सरपंच भी थे। संवत् १९४० में आपका स्वर्गवास हो गया।

लाला पीताम्बर लाल जी का जन्म संवत् १९३३ में हुआ था। आप भी म्युनिसिपल मेम्बर तथा आनरेरी मैजिस्ट्रेट और पंचायत के सरपंच थे। आपके यहाँ मेरठ में सेठ पीताम्बर लाल माहेश्वरी के नाम से आढ़त का व्यापार होता था। आपके पुत्र श्री जयनारायण जी हैं।

सेठ कजोड़ीमल कल्याणमल

इस परिवार का मूल स्थान नागौर है। सेठ हनुमतराम जी ने अजमेर में जाकर व्यापार करना प्रारम्भ किया। आपके कजोड़ीमल जी नामक पुत्र हुये।

सेठ कजोड़ीमल जी का जन्म संवत् १८८४ में हुआ। अजमेर में कुछ समय व्यापार करने के पश्चात् आप कानपुर आगये। यहाँ आकर बहुत साधारण पैमाने पर आपने गुड़, शक्कर, चावल और कपड़ा इत्यादि की आढ़त का काम प्रारम्भ किया। आपने अपने फर्म की बड़ी उन्नति की। आपका स्वर्गवास संवत् १९४७ में हुआ। आपके पुत्र सेठ कल्याणमल जी हुये।

सेठ कल्याणमल जी का जन्म सम्वत् १९३३ में हुआ। आपने अपनी व्यापारिक प्रतिभा के बल से अच्छी सम्पत्ति उपार्जित की एवम् चन्दौसी, बरहज, शोहरतगंज आदि स्थानों में अपनी शाखायें खोलीं। पहले आप कुछ लोगों के साथ साझे

में काम करते रहे, बाद में संवत् १९७५ से मेसर्स कजोड़ीमल कल्याणमल के नाम से व्यापार करने लगे। आप बड़े धार्मिक प्रकृति के व्यक्ति थे। आपने मथुरा ज़िले में तथा अपनी स्त्री के मैके में दो धर्मशालायें बनवाईं। आपके पुत्र श्री हरनारायण जी हुये। इनके फूलचन्द जी एवम् चाँद रतन जी नामक दो पुत्र हैं। आपके यहाँ शक्कर तथा आढ़त का व्यापार होता है।

सेठ रामप्रताप रामदयाल लोया

लगभग १०० वर्ष पूर्व सेठ रामप्रताप जी व्यापार के लिए नागौर से कानपुर आये। आपके पुत्र सेठ रामदयाल जी और मेघराज जी हुये। इन दोनों बन्धुओं ने अपनी व्यापार कुशलता से मेसर्स रामप्रताप रामदयाल नामक फर्म स्थापित कर अच्छी संपत्ति उपार्जित की। किराना तथा रंग के व्यवसाय में आप लोगों ने लाखों रुपये पैदा किए। सेठ रामदयाल जी के जयनारायण और लक्ष्मीनारायण नामक दो पुत्र हुये।

सेठ जयनारायण जी परम धार्मिक व्यक्ति थे। आपने भी खूब धन पैदा किया। सम्वत १९६० में आपका स्वर्गवास हो गया। आपके नाम पर सेठ गुलाब चन्द जी गोद आये। आपने भी फर्म की बड़ी उन्नति की। परन्तु सन् १९७३ में छोटी अवस्था में ही आपका स्वर्गवास हो गया। आपके दत्तक पुत्र शालिगराम जी हैं। वे इस समय कपड़े का व्यापार कर रहे हैं।

सेठ मनोहरदास रामप्रसाद लखोटिया

लगभग १०० वर्ष पूर्व इस परिवार के पूर्वज सेठ रूपराम जी लखोटिया बगड़ (शेखावाटी) से व्यापारार्थ कानपुर आये। यहाँ आपने मेसर्स रूपराम दीनानाथ के नाम से चीनी का व्यसाय करने के लिए फर्म खोली। आप बड़े व्यापार कुशल व्यक्ति थे। आपने कलेक्टरगंज में श्री रामचन्द्र जी का एक सुन्दर मन्दिर और गंगा किनारे एक घाट बनवाया। आपके लाला मनोहर दास जी और रामप्रसाद जी नामक दो पुत्र हुये।

सेठ मनोहरदास जी एवम् रामप्रसाद जी भी योग्य एवम् कुशल व्यापारी थे। आप लोगों ने अपनी फर्म का नाम बदलकर मनोहरदास रामप्रसाद किया और इसमें कपड़े की मिलों में रुई सप्लाई करने का काम जारी किया। आप लोगों के द्वारा इस फर्म का व्यापार और इस परिवार की प्रतिष्ठा बहुत बढ़ी आपने लाखों रुपया पैदा किया। लाला मनोहरदास जी का स्वर्गवास संवत् १९७५ में हो गया। आपके पश्चात फर्म के व्यवसाय का संचालन सेठ रामप्रसाद जी के पुत्र रामेश्वर लाल जी सम्हालने लगे, मगर केवल तीन साल के पश्चात् संवत् १९७८ में इनका भी स्वर्गवास हो गया। इस समय सेठ मनोहर दास जी के दत्तक पुत्र बाबू गणेशनारायण जी और सेठ रामेश्वर प्रसाद जी के पुत्र हरिकृष्ण जी और कैलाशनाथ जी नाबालिग थे। अतएव फर्म का संचालन सेठ मनोहर दास जी के भानजे लाला चुन्नीलाल जी बाँगड़ ने संभाला।

श्री हरिकृष्ण और श्री कैलाशनाथ का भी स्वर्गवास हो गया। इनकी माता और श्री कैलाशनाथ की धर्मपत्नी (श्री रामस्वरूप एम० एल० ए० की पुत्री) ने इन दोनों की स्मृति में सरसैयाघाट के पास हरिकृष्ण कैलाशनाथ हायर सेकेन्डरी स्कूल' स्थापित किया है, जो श्री रामस्वरूप जी की देख रेख में एक कमेटी के आधीन खूब चल रहा है।

श्री गणेश नारायण जी बड़े योग्य, सुधरे हुये विचारों के एवम् उत्साही व्यक्ति हैं। आप बड़े मिलन सार भी हैं। कानपुर के माहेश्वरी समाज में आपकी अच्छी प्रतिष्ठा है। आप के यहाँ इस समय बैंकिंग, किराना, गल्ला, आढ़त आदि का काफी व्यापार होता है।

लाला बद्रीदास प्यारेलाल भुराड़िया

यह परिवार मूल निवासी डीडवाना का है। वहाँ से रोहतक आया। रोहतक से श्री जयगोपाल जी लगभग १६० वर्ष पूर्व कानपुर आये। यहाँ आकर साधारण पैमाने पर घी और चावल का व्यापार आरम्भ किया। घी का व्यापार विशेष रूप से करने के कारण इस समय तक आपका खानदान "घी वालों" के नाम से बोला जाता है। आपके नाम पर लालमन जी गोद आये।

सेठ लालमन दास जी अपने कारबार को योग्यता पूर्वक संभालते रहे। संवत् १९३८ में आपका स्वर्गवास हुआ। यहाँ के माहेश्वरी समाज में आपकी अच्छी प्रतिष्ठा थी।

आपने बद्रीदास जी को गोद लिया था। इनके गोद आने के बाद आपके गंगाधर जी नामक पुत्र हुये।

सेठ बद्रीदास जी का जन्म संवत् १९१७ में हुआ था। आपने अपनी योग्यता द्वारा व्यापार की खूब उन्नति की। संवत् १९५८ में गंगापार (जिला उन्नाव) में एक धर्मशाला, शिवाला और कुँआ बनवाया। जिसमे अकसर कानपुर के लोग 'पिकनिक' करने जाते हैं। वहाँ हर प्रकार की सुविधा मिलती है। सम्वत् १९६४ में आपका स्वर्गवास हुआ। आपके पुत्र श्री प्यारेलाल जी हैं।

सेठ गंगाधर जी का जन्म सम्वत् १९३८ में हुआ। बड़े भाई बद्रीदास जी के स्वर्गवास के पश्चात् आपने फर्म की बड़ी उन्नति की। आपने भरथना स्टेशन के पास एक धर्मशाला, शिवाला, और कुँआ बनवाया है। आपके पुत्र श्री कृष्ण जी हैं।

सेठ प्यारेलाल जी का जन्म सम्वत् १९५३ में हुआ। आपकी व्यापारिक समाज में बड़ी प्रतिष्ठा है तथा आप अनेक संस्थाओं के सदस्य तथा पदाधिकारी हैं। आपके श्रीनारायण जी और बल्लभदास जी नामक दो पुत्र हैं। आपने शक्कर टेरिफ बोर्ड के सामने गवाही दी थी। कानपुर में आपकी जमींदारी भी थी और आप ६०००) सालाना इन्कमटैक्स देते हैं।

श्री कृष्ण जी—आपका जन्म सम्वत् १९७० में हुआ। आप बड़ी योग्यता पूर्वक अपने व्यापार का संचालन करते हैं।

इस समय इस परिवार का सेठ बद्रीदास प्यारेलाल के नाम

से कलेक्टरगंज में शक्कर और आढ़त का थोक व्यापार होता है। इसके अतिरिक्त श्री कृष्णदास श्रीनारायण के नाम से चिरगाँव में आढ़त और गल्ले का काम और प्यारेलाल बालमुकुन्द के नाम से भरथना में कपड़ा और आढ़त का काम होता है।

सेठ कालूराम रामप्रताप सोनी

सेठ सूरजमल लगभग १०५ वर्ष पूर्व बीकानेर से कानपुर आये। आपके कालूराम जी एवं मेघराज जी दो पुत्र हुये। सेठ कालूराम जी बड़े व्यापार कुशल तथा मेधावी व्यक्ति थे। आपने लाखों रुपया पैदा किया। कानपुर में स्टेशन रोड पर रेल बाजार के पास आपने एक धर्मशाला बनवाई। आपकी मृत्यु के बाद आपके भाई मेघराज जी अलग व्यापार करने लगे। उनके रामप्रताप जी और राधाकृष्ण जी नामक दो पुत्र हुये।

सेठ रामप्रताप जी ने व्यापार की खूब उन्नति की। उस समय के कपड़े के व्यापारियों में आपका प्रमुख स्थान था। आपने केदारनाथ तीर्थ पर एक धर्मशाला बनवाई। कानपुर में गंगा किनारे सरसैया घाट पर भी आपने राम लक्ष्मण का एक मंदिर बनवाया और ५ व्यक्तियों को प्रतिदिन भोजन देने का प्रबंध किया। रेल बाजार में भी एक कुँवा बनवाया तथा एक सदावर्त जारी किया जो अब भी चल रहा है। सम्वत् १९५३ में आप का स्वर्गवास हो गया। कुछ दिन बाद आपके भाई राधाकृष्ण

जी का भी स्वर्गवास हो गया। तब रामप्रताप जी के पुत्र घासी-लाल जी ने फर्म के काम को सम्हाला मगर उनका भी कम आयु में ही स्वर्गवास हो गया। तब छगनलाल जी गोद लिए गये। इनका भी स्वर्गवास हो गया। इसी प्रकार राधाकृष्ण जी के पुत्र तुलसीराम जी का और उनके पश्चात् उनके दत्तक पुत्र किशन गोपाल जी का भी स्वर्गवास हो गया। अतएव इस समय केवल स्त्रियाँ ही इस परिवार में शेष हैं। यह फर्म अपने समय में कानपुर की विशिष्ट फर्मों में मानी जाती थी।

लाला लक्ष्मणदास जी

लोहे के व्यापारी लाला लक्ष्मणदास का जन्म फाल्गुन संवत् १९०८ में हुआ था। वे साधु मार्गी श्वेताम्बर-जैन-धर्म के अनुयायी थे। उनके पिता का नाम लाला मूलचन्द था। श्री मूलचन्द जी एक साधारण स्थिति के गृहस्थ और हाथरस के रहने वाले थे। वहीं श्री लक्ष्मणदास जी का बाल्यकाल बीता। इन्होंने कुछ विशेष पढ़ा-लिखा नहीं। केवल हिसाब-किताब और मतलब भर की मुड़िया सीख ली। बाल्यकाल में इनका स्वभाव कुछ उद्दण्ड था। कुश्ती लड़ना, दण्ड पेलना और मुग्दल हिलाना ही इन्होंने अपने लिए सबसे बड़ा काम समझा। जब यह १६ वर्ष के थे तभी पिता का स्वर्गवास हो गया। कुछ समय के लिए यह अपनी ननिहाल फ़ीरोजाबाद चले गये। वहां भी वे अपनी ही धुन में मस्त रहे।

२० वर्ष की उम्र में उनका विवाह हुआ। एक दिन उनके

चाचा ने उनको अकर्मण्यता पर बहुत खेद प्रकट किया और तीव्र शब्दों में उन्हें मदुपदेश भी दिया। इस कड़ुवे उपदेश ने उन्हें जगा दिया और उन्हें अपने ऊपर बड़ी ग्लानि मालूम हुई। उसी दिन वह खाली हाथ घर से निकल पड़े और कानपुर आ पहुंचे।

कानपुर में आपने लोहे-लंगर का अपना पैतृक व्यवसाय शुरू किया। वह रेल के सामान की ठेकेदारी और दलाली करने लगे। कभी-कभी स्वयं अपने लिए रेल वालों का पुराना लोहा खरीद लिया करते थे और कुछ नफ़ा लेकर बेंच देते थे। धीरे-धीरे उन्हें खूब सफलता मिली और दिन पर दिन उनका व्यवसाय उन्नति करने लगा। उद्धत स्वभाव के लक्ष्मण दास शान्त, सुशील, व्यापार-कुशल और श्रीसम्पन्न हो चले। कान-पुर में दलाली जारी रख कर संवत् १९४३ में आपने एक दुकान कलकत्ते में खोल दी। कुछ दिन बाद कानपुर और बम्बई में भी लोहे की दुकानें कर लीं। कानपुर की दुकान प्रारम्भ में ठाकुरदास धनीराम के साझे में हुई थी। फिर दो-चार वर्ष बाद लक्ष्मणदास चम्पाराम के नाम से स्वयं अपनी दुकान कर ली। रोजगार चमक उठा। अपनी बुद्धि और व्यव-साय-कुशलता से श्री लक्ष्मणदास ने अपने कारबार को बढ़ा कर उन्नति की ऊंची सीमा तक पहुंचा दिया। लोहे के व्यापार की ही बदौलत आपको ख़ासी ख्याति हुई और वैभव भी प्राप्त हुआ। अपने पुरुषार्थ, परिश्रम, अदम्य साहस और अनवरत

उद्योग के कारण लाला लक्ष्मणदास ने बहुत बड़ी जायदाद पैदा करली। विष्णु की दासी लक्ष्मी लक्ष्मणदास की दासी बन गई।

धनोपार्जन के साथ ही साथ लाला लक्ष्मणदास ने कीर्ति का उपार्जन भी आरम्भ कर दिया। परोपकार की ओर जो उनकी प्रवृत्ति हुई तो अन्त समय तक उस प्रवृत्ति का साथ उन्होंने नहीं छोड़ा। सत्पात्रों को दान देने, दीन दुखियों का दुख दूर करने, कन्याओं का विवाह करवाने, कुएं खुदवाने और आपत्ति ग्रस्तों को उबारने में उन्होंने अपने धन का पर्याप्त सदुपयोग किया। धार्मिक कृत्यों के लिए उन्होंने बहुत कुछ दान दिया। जो कुछ उन्होंने इस तरह दिया प्रायः चुपचाप दिया। उनकी यह प्रवृत्ति उनके पुत्र लाला फूलचन्द को भी उन्हीं से पैतृक रूप में प्राप्त हुई और उनके पौत्र श्री मनोहर लाल में भी विद्यमान रही। इस परिवार ने कभी अपनी दान-शीलता दिखाने की चेष्टा नहीं की।

सादा जीवन व्यतीत करने की जो बात लाला लक्ष्मणदास में थी वही उनके पुत्र लाला फूलचन्द में आई और वही श्री मनोहरलाल में रही। वह भी अधिक टीमटाम के शौकीन नहीं थे। सम्भव है यह गुण मनोहरलाल के पुत्र चि० निर्मल कुमार में भी आ जाये।

लाला लक्ष्मणदास की परोपकार-शीलता की एक बात छिपाने से भी न छिप सकी अर्थात् उनकी धर्मशाला उनकी

स्मारक बन गई। १९१५ में इस धर्मशाला का निर्माण शुरू हुआ था और लगभग पांच वर्ष में वह बनकर तैयार हुई। सन् १९२० की बसन्त पंचमी को उसकी प्रतिष्ठा हुई। किन्तु लाला लक्ष्मणदास जी प्रतिष्ठा के कुछ ही दिन पूर्व ६८ वर्ष की उम्र में अपनी जीवन लीला समाप्त करके परलोकगामी हो गये।

धर्मशाल में तीन चौक और तीन ही मंजिलें हैं। इमारत खूब पुख़्ता बनी है। उस समय के दामों से उस के बनवाने और ज़मीन ख़रीदने में लगभग सवा चार लाख रुपये लगे थे। इस धर्मशाला की प्रतिष्ठा लाला लक्ष्मणदास के पुत्रों ने बड़ी धूमधाम और समारोह से की थी। बाहर से भी अनेक प्रतिष्ठित सज्जन और कविजन आये थे। कविताएं पढ़ी गई थीं। बहुत बड़ा हवन और ब्रह्म भोज हुआ था। दक्षिणाएं बटी थीं और दावतें हुई थीं। कोई ३० हज़ार रुपये इस अवसर पर खर्च किये गये थे।

इस धर्मशाला में सदावर्त बांटने, औषधालय चलाने, कबूतरों को दाना देने तथा मुलाजिमों की तनख़्वाह आदि के लिए लाला लक्ष्मणदास जी डेढ़-दो सौ रुपये मासिक का खर्च भी बांध गये थे। वे अपने नौकरों का काफ़ी ख़याल रखते थे। एक मुनीम को उन्होंने ५०००) रुपये का एक मकान दिया था और अन्य नौकरों को भी विशेष अवसरों पर दो-चार सौ रुपया पुरस्कार दे दिया करते थे।

लाला लक्ष्मणदास के तीन पुत्र हुए। सबसे बड़े लाला

चम्पाराम, और दूसरे लाला बाबूराम, इन दोनों का स्वर्गवास हो गया है। तीसरे पुत्र लाला फूलचन्द अभी जीवित हैं। आप बड़े नम्र, मिष्टभाषी और सरल हृदय हैं। हिन्दी कविता के आप बड़े प्रेमी और उपासक हैं। अपने चलते ज़माने में आपने कवियों तथा साहित्यिकों का काफ़ी सम्मान किया है और उन्हें पुरस्कृत किया है।

लाला शिवप्रसाद ख़ज़ान्ची

रायबहादुर लाला शिवप्रसाद जी कानपुर की खत्री जाति के भूषण और एक मशहूर रईस थे तथा खजांची साहब के नाम से प्रसिद्ध थे। आपके पिता का नाम लाला ठण्ठीमल और बाबा का नाम लाला जगन्नाथ प्रसाद था। आप लोग इलाहाबाद के बच्चाजी के ख़ान्दान की ही एक शाखा थे। लाला शिवप्रसाद खजांची इसलिए कहलाते थे क्योंकि वह कई जगह की सरकारी ट्रेजरी और कानपुर तथा लखनऊ में बंगाल बैंक के ख़ज़ांची थे। प्रान्त के ६ डाकख़ानों का ख़ज़ाना भी आप ही के पास था। लाला शिवप्रसाद के छोटे भाई लाला तुलसीराम के तीन लड़के थे। सबसे बड़े लाला सूरज प्रसाद लखनऊ के बंगाल बैंक का काम देखते थे। यह बड़े दांवपेंच के आदमी थे और कुछ लोगों का ख़याल है कि इन्हीं के कुप्रबन्ध से लाला शिवप्रसाद का काम फेल हुआ। लखनऊ के बंगाल बैंक का काम शुरू में लाला शिवप्रसाद के साले लाला खुन्नूलाल मेहरोत्रा, लालबाग वालों के सिपुर्द था। उनके

बाद लाला सूरजप्रसाद के हाथ में आया था। कानपुर के बंगाल बैंक में लाला शिवप्रसाद के नाम से लाला तुलसीराम के दूसरे पुत्र लाला चन्दूलाल काम करते थे। तुलसीराम जी के तीसरे पुत्र लाला रामकृष्ण ने वकालत पास करली थी। इनके पुत्र लाला मदनलाल जी बाद में घर के कर्ता-धर्ता हुए।

लाला शिवप्रसाद जी की जायदाद बहुत थी किन्तु काम खराब होने पर सब चली गई। परन्तु लाला जी अपना जमाना अच्छा निभा गये। सरसैया घाट पर आपका एक घाट है जो आज तक शिवप्रसाद के घाट के नाम से प्रसिद्ध है। आपका एक मन्दिर श्री बुद्धा देवी के मन्दिर से मिला हुआ बना हुआ है और रेल बाजार में एक धर्मशाला भी है।

हटिया की ठठराही में आपकी कोठी के सामने एक बगीचा था जो लाला शिवप्रसाद का बगीचा कहलाता था। उसी में परेट की रामलीला की राजगद्दी हुआ करती थे। इसी राजगद्दी के बगीचे में लाला शिवप्रसाद ने महारानी विक्टोरिया की जुबली पर 'जुबली स्कूल' नाम से एक स्कूल खोला था जिसके पहले हेड मास्टर श्री गंगादीन जी थे। बाद में चलकर यह स्कूल शिवप्रसाद ब्रांच स्कूल के नाम से प्रसिद्ध हुआ और कानपुर के गवर्नमेंट स्कूल की एक शाखा बन गया, जैसा अपनी प्रारम्भिक अवस्था में पं० पृथ्वीनाथ स्कूल भी था। बाबू हरिहरनाथ जी जुबली स्कूल के सेकेन्ड मास्टर थे और बाबू शम्भूनाथ मेहरा भी इस स्कूल के एक प्रभावशाली मास्टर रहे हैं। छगन

श्री रामनिरंजन कानोडिया

श्री रामकृष्ण गुप्त

बादशाह के बड़े भाई बाबू रामसरन जी भी सन १९०० में इस स्कूल के एक मास्टर थे।

पहले लाला शिवप्रसाद के कोइ सन्तान न थी। ६० वर्ष की अवस्था में उन्हें एक साधू मिला। उसी के आग्रह से लाला जी ने ६० वर्ष की आयु में तीसरी शादी की और उनके पांच सन्तानें हुईं। सबसे जेष्ठ पुत्र रायसाहब विश्वम्भर नाथ के दो लड़के मौजूद हैं' द्वितीय पुत्र श्री अमरनाथ के दो लड़के है। लाला जी के तीसरे पुत्र का नाम श्री भोलानाथ था और चौथे पुत्र श्री विश्वनाथ जी का पांच वर्ष की ही अवस्था में देहांत हो गया था। लाला जी की पाँचवीं सन्तान एक लड़की थी। अपने उरूज के जमाने में इस परिवार का पेशा खजांचगीरी रहा और लाला शिवप्रसाद जी शिवप्रसाद खजाची के नाम से विख्यात थे।

सर जे० पी० श्रीवास्तव

श्री ज्वालाप्रसादजी श्रीवास्तव का जन्म १६ अगस्त सन् १८८८ में एक मध्यवर्गीय परिवार में हुआ था। आपकी सारी उन्नति स्वयं आपकी प्रतिभा और परिश्रम तथा कार्य कुशलता का फल है। आपके पिता का नाम श्री जानकी प्रसाद श्रीवास्तव था जो एक साधारण तहसीलदार थे। श्री ज्वालाप्रसादजी की शिक्षा कानपुर के क्राइस्टचर्च स्कूल और कालेज में हुई। बाद में आप इलाहाबाद के म्योर सेन्ट्रल कालेज

में भी पढ़े। आपने आगरा युनीवर्सिटी से डी० एस० सी० की और लखनऊ विश्वविद्यालय से डी० लिट० की डिगरी प्राप्त की। आपकी अन्तिम शिक्षा मेन्चेस्टर कालेज आफ़ टेक्नालोजी में हुई। आप मेन्चेस्टर कालेज व इन्स्टीटयूट आफ़ केमिस्ट्री लन्दन के सम्बद्ध सदस्य भी थे। आप १९१२ में यू० पी० सरकार के प्रथम औद्योगिक केमिस्ट् तथा टेक्नालजिकल इन्स्टीटयूट् कानपुर के प्रथम सदस्य थे।

सन १९१९ में सरकारी नौकरी छोड़कर आप व्यापार में लगे और अपनी व्यापार कुशलता से देश के प्रमुख व्यापारियों में गिने जाने लगे। अपनी कुशाग्र बुद्धि और पैनी सूझ-बूझ से आपने ख्याति और धन दोनों ही प्राप्त किये। आप १९२५ से १९३७ तक यू० पी० कौन्सिल और एसेम्बली के सदस्य रहे और सन १९३१ में शिक्षा मंत्री हुए। बाद में कृषि, आबकारी और अर्थ विभाग भी सम्हाला।

सन १९२८ में आप यू० पी० साइमन कमेटी के चेयरमन बने जबकि देश में साइमन कमीशन का बायकाट बड़े जोरों से चल रहा था। आप सारे विरोध को पी गये और आपने अपने घर पर कमीशन के सदस्यों को दावत दी। सन १९३४ में आपको 'सर' की उपाधि मिली। सन ४२ से ४६ तक आप वाइसराय की कार्यकारिणी के सदस्य रह कर नागरिक सुरक्षा, खाद्य और युद्धोत्तर पुनर्निर्माण विभाग का कार्य करते रहे। सन ४६ में कोपेनहेगन में होने वाली यफ० ओ० ए० कान्फे-

रेन्स में आपने भारतीय प्रतिनिधि मण्डल का नेतृत्व किया और कान्फरेन्स के उपाध्यक्ष निर्वाचित हुए। आपको संयुक्त राष्ट्र संघटन की ओर से न्यूयार्क में आमंत्रित किया गया था।

आप कई कारखानों के भागीदार और डाइरेक्टर अथवा अध्यक्ष थे। न्यू विक्टोरिया मिल्स के आप सर्वसर्वा और उसके बोर्ड आफ डाइरेक्टर्स के सभापति थे। ६९ वर्ष की अवस्था में दिसम्बर ५४ में आपका लखनऊ के अस्पताल में हृदय की गति रुक जाने से निधन हो गया।

आपकी पत्नी श्रीमती लेडी कैलाश श्रीवास्तव एक विशिष्ट समुन्नत विचारशील महिला हैं और यदा-कदा सामाजिक महिला आन्दोलन में भाग लेती रही हैं तथा देश के कार्यों की ओर भी आपका रुझान रहा है। सर जे० पी० की उन्नति में आपका सहयोग बलदायक साबित हुआ है।

सर जे० पी० के दो पुत्र और पांच पुत्रियां हैं। आपके बड़े पुत्र श्री जे० के० श्रीवास्तव उर्फ 'सनी साहब' शिकार के शौकीन होते हुए बड़े व्यापार कुशल हैं। अब सर जे० पी० का सारा कार्य भार आप ही के कंधों पर है और वह उसे बड़ी अच्छी तरह निभा रहे हैं। आप यू० पी० चेम्बर आफ कामर्स के सभापति भी हैं।

सर जे० पी० की पुत्रियों में से श्रीमती शीला आर० दयाल भारतीय संगीत की उन्नति के लिए सदैव प्रयत्न शील रही हैं

तथा लखनऊ विश्व विद्यालय के छात्रों में प्रभावशालिनी रही हैं। आपकी तीसरी पुत्री श्रीमती शकुन्तला मसानी देश के प्रसिद्ध नेता श्री मसानी जी की धर्मपत्नी हैं।

लाला फागूलाल

इनके मूल पुरुष लाला हीरालाल खन्ना मऊनाथ भंजन जिला आजमगढ़ के निवासी थे। वहां से आकर वह मिर्जापुर में बसे और किराने की आढ़त का काम शुरू किया। किराने के कारबार के सिलसिले में ही उनका महाराज नैपाल से परिचय हुआ और उनसे बड़ी इलायची का ठेका लिया। उस जमाने में मिर्जापुर किराने की एक बड़ी मण्डी थी और श्री हीरालाल जी की दुकान का नाम शम्भूनाथ भोलानाथ पड़ता था। बाद में एक और फर्म खोला गया जिसका नाम भोलानाथ विश्वेश्वर प्रसाद पड़ा। दोनों फर्म बड़े जोरशोर से काम करने लगीं और ये लोग इलायची वालों के नाम से मशहूर हो गये। फर्म भोलानाथ विश्वेश्वर प्रसाद ने पटना, बनारस, नैपाल गंज और कानपुर में अपनी दुकानें खोलीं किन्तु हेड आफिस मिर्जापुर ही रहा।

लाला विश्वेश्वर प्रसाद सन १८९१ में मिर्जापुर का काम बन्द करके कानपुर आ गये क्योंकि यहां पहले से दुकान थी और उस पर इलायची बिकती थी। जब मालिक लोग यहां आ गये तब यहां गुदड़ी बाजार गड़ैया वाले लाला परमानन्द के मकान के सामने फाटक में इलायची का काम धूमधड़क्का

से शुरू किया। बाद में लाला विश्वेश्वर प्रसाद के छोटे भाई लाला फागूलाल ने कपड़े और सूत की दलाली भी शुरू करदी और धीरे-धीरे तरक्की करके मेड़ीलाल फागूलाल के नाम से आढ़त का काम भी करने लगे। कुछ दिन बाद दलाली का काम केवल फागूलाल दलाल के नाम से होता था और कपड़े की दुकान पर फागूलाल दुर्गाप्रसाद नाम पड़ता था।

इस समय लाला फागूलाल के भतीजे लाला छेदीलाल कपड़े का काम देखते हैं और दूसरे भतीजे श्री गोवर्धनदास जी खन्ना काफी अर्से से खन्ना प्रेस चलाते हैं।

श्री मन्नीलाल भरतिया

सन १८६० में भाई मंगलचन्द मिर्जामल कानपुर में गल्ला, कपड़ा और घी की आढ़त का काम करते थे। कुछ समय के पश्चात कपड़े के काम पर विशेष ध्यान देने के लिए गुलाबराय पन्नालाल के नाम से काम शुरू किया गया और आढ़त के काम करने के लिए महादेव रामेश्वर प्रसाद का फर्म स्थापित हुआ। श्री पन्नालाल जी लाला रामकुमार नेवटिया के बड़े मित्र थे। उस जमाने में लाला विश्वेश्वर दास, लाला रामकुमार और लाला पन्नालाल की कानपुर के कपड़े बाजार में तूती बोलती थी। श्री पन्नालाल जी का अल्प आयु में ही स्वर्गवास हो गया। अतएव श्री मन्नीलाल भरतिया को अपनी शिक्षा समाप्त करनी पड़ी। ये उस समय श्री मारवाड़ी विद्यालय के छात्र थे।

कम उम्र में व्यापार का बोझ सर पर आ पड़ने से यह कार-बार में बड़े निपुण हो गये और इस वक्त इन्हीं की देख रेख में सारा कारबार चलता है और फर्म का नाम गुलाबराय महादेव पड़ता है। इसी फर्म में पंजाबियों की आढ़त भी होती है। गुला-बराय महादेव की एक शाखा 'कमला मेडिकल स्टोर' के नाम से दवाओं का काम भी करती है। भरतिया एन्ड कम्पनी के नाम से शेयरों का काम भी होता है। यह फर्म जुग्गीलाल कमलापत की लक्ष्मी कम्पनीमें साझीदार भी है। इनकी कुछ जायदाद आसाम में भी है किन्तु यह कपड़े के मुख्य व्यापारी हैं। श्री मन्नीलाल भरतिया बड़े सज्जन, सौम्य और कुशल व्यापारी हैं। आप मारवाड़ियों की कई संस्थाओं के सदस्य हैं और जातीय कार्यों में काफ़ी दिलचस्पी लेते हैं। इन्होंने अपने सब भाई भतीजों को काम से लगा रखा है।

श्री गुरुप्रसादजी कपूर उर्फ़ अल्लूबाबू

कानपुर नगर में छोटे से लेकर बड़े तक सभी क्षेत्रों में सुपरिचित श्री गुरुप्रसाद कपूर नगर के विशिष्ट नागरिकों में अपना स्थान रखते हैं।

आपका जन्म सन १९०३ की धन तेरस को कानपुर नगर में हुआ था। आपके पिता लाला मातादीन सूतवाले अपने समय में शहर के प्रमुख व्यक्ति और व्यापारी थे। किन्तु अल्लू बाबू को अपनी ७ वर्ष की बाल्यावस्था में ही उनके विछोह का दारुण दुःख सहन करना पड़ा और आपके पिता जी अपनी

३६ वर्ष की अल्प आयु में ही आपको छोड़कर चल दिए। प्रारम्भ में आपको गुरू जी की पाठशाला में भर्ती कराया गया और घर में उर्दू शिक्षक द्वारा शिक्षा दी जाने लगी। कुछ समय बाद पं० पृथ्वीनाथ हाई स्कूल के प्रधानाध्यापक श्री सजीवन लालजी के साथ रहकर शिक्षा मिली। श्री सजीवनलालजी का उस समय के प्रमुख नागरिकों और सरकारी अधिकारियों के बीच आना-जाना रहता था, अतः उन्होंने आप को सभी के पास ले जाकर सुपरिचित करा दिया।

प्रारम्भ में आप 'प्रेम मंडल' के सदस्य होकर सार्वजनिक कार्यों में भाग लेने लगे। युवावस्था सन् १९१५ में जब स्व० श्री बाबू बिहारी लाल का युग था आप चुनाव चुनाव चर्चा में सम्मिलित होने लगे और अपने घरेलू व्यवसाय को भी देखने लगे। शनैः-शनै सनातनधर्म कालेज, हिन्दूमहासभा, अनाथालय आदि की प्रबंध समितियों में सदस्य तथा पदाधिकारी हुए और एक बार म्युनिसपेल उपचुनाव में हार कर सन् २५ के चुनाव में जीते और दोबार निर्वाचित होकर ६ वर्ष तक म्यु० कमिश्नर रहे। श्रीगणेशशंकर विद्यार्थी, ला० कमलापतजी, पं० बालकृष्ण शर्मा आदि के अत्यन्त निकटवर्ती घनिष्ठ होकर आप व्यापारिक, धार्मिक, राजनैतिक कार्यों में पूरा हिस्सा बटाते रहे।

आप यू० पी० चेम्बर आफ कामर्स के प्रमुख सदस्य, यू० पी० मर्चेंटस् चेम्बर आफ कामर्स के संस्थापक, तथा कपड़ा कमेटी को सुचारु रूप से संगठित और रजिस्टर्ड कराकर उसके

पहले प्रधान मंत्री, बादमें कपड़ा संकट काल के पहले तथा बाद में अनेक वर्षों तक अध्यक्ष रहे। सन् २५ के कांग्रेस महाधिवेशन में आपने सवारी कमेटी के प्रबन्धाध्यक्ष का कार्य सुचारु रूप से संचालित किया। आप सदैव ही सभी सार्वजनिक कार्यों में कार्यकारी रहते आ रहे हैं और अब भी रह रहे हैं। आपने अपने निजी बुद्धि बल से यथेष्ट मानार्जन किया है।

ला० लक्ष्मीनारायण गिरधारीलाल

सन १९११ में लाला लक्ष्मी नारायण बजाज ने अपनी दुकान उपर्युक्त नाम से स्थापित की और प्रारम्भ में युरोप और जापान से छींट तथा रंगीन कपड़ा मंगा कर बेचने का व्यापार किया। किन्तु असहयोग आन्दोलन के समय आपने विदेशी वस्त्रों का व्यापार बन्द करके कानपुर काटन मिल की एजेन्सी ले ली। १२ वर्ष तक इस एजेन्सी को चलाने के पश्चात उसे छोड़ दिया और न्यू विक्टोरिया मिल की एजेन्सी का काम हाथ में लिया।

आप एक कुशल व्यापारी थे और कानपुर के बाजार में आपकी खासी प्रतिष्ठा थी। एक विशिष्ट धार्मिक प्रवृत्ति के पुरुष होने ही के कारण आपने बाजार के अन्य दानी सज्जनों के सहयोग से मारवाड़ी औषधालय की स्थापना की और कई वर्ष तक उसके सभापति रहकर उसे बड़ी सफलता से चलाया। लालाजी ने चित्रकूट में एक धर्मशाला बनवाई है जहां भूखों को खाना भी मिलता है।

आपके दो लड़के थे, लाला गिरधारीलाल बजाज और लाला गोविंदराम बजाज। गोविन्द रामजी का देहान्त छोटी ही अवस्था में हो गया। अब लाला गिरधारीलाल ही सब कारबार देखते है और गजियाबाद में उन्होंने बनस्पति तेल का एक मिल स्थापित किया है।

लाला लक्ष्मी नारायण जी आपने जीवन काल में न्यू विक्टोरिया मिल और फ्री इंडिया कम्पनी के डाइरेक्टर रहे थे तथा यू० पी० चेम्बर आफ.कामर्स तथा मारवाड़ी विद्यालय की कार्य कारिणी के सदस्य भी थे।

श्री धनीराम भल्ला

श्री धनीराम जी भल्ला ने सन १९०७ में लाहौर के अनारकली मोहल्ले में "भल्ला शू कम्पनी" के नाम से जूते की एक दूकान खोली। उस समय एक हिन्दू द्वारा चमड़े का काम करना एक बिल्कुल नई बात थी और बड़े साहस का काम था। ईश्वर की कृपा से एक छोटी-सी फुटकर की दुकान बढ़कर थोक दुकान हो गई और आज यह फर्म कानपुर की "नार्थ वेस्ट टैनरी" के फ्लेक्स जूतों को वितरण करने वाले एक मात्र एजेन्ट है। भारत, बर्मा और सीलोन में 'फ्लेक्स' की लगभग १००० एजेन्सियां हैं। भल्ला शू कम्पनी की शाखाएं कानपुर, लाहौर, कलकत्ता और रंगून में हैं। लाहौर की दुकान लुट गई और वहां का कारबार बिल्कुल नष्ट हो गया।

इस फर्म की उन्नति का सारा श्रेय श्री धनीराम जी भल्ला

के दृढ़ संकल्प और अथक परिश्रम का परिणाम है। श्री बनी रामजी की मृत्यु के बाद उनके लड़के फर्म को बड़ी अच्छी तरह से चला रहे हैं।

श्री देव शर्मा

श्री देव शर्मा का जन्म कानपुर से १० मील के फ़ासले पर उन्नाव ज़िले के हड़हा नामक ग्राम में चैत बदी १५ सम्वत १९५७ में हुआ था। अतः इस समय आपकी अवस्था ५५ वर्ष की है। आपकी प्रारम्भिक शिक्षा हड़हा के अपर प्राइमरी स्कूल में शुरू हुई। ८ वर्ष की उम्र में आप अपने पिताजी के साथ कानपुर आये और पं० पृथ्वीनाथ स्कूल में भर्ती हुए। वहां पाँचवें दर्जे तक पढ़कर आप आर्य समाज के स्कूल में दाखिल हुए। उस समय कानपुर आर्यसमाज मालरोड पर था और उसी में स्कूल लगता था। इस समय उस स्थान पर श्री कृष्णा खन्ना की बिल्डिंग बन गई है। दर्जा ८ तक आर्यसमाज स्कूलमें पढ़कर शर्माजी कान्यकुब्ज स्कूल में चले गये और वहां १० दर्जे तक पढ़कर व्यापार की ओर झुक गये। एक साल तक साउथ ब्रिटिश बीमा कम्पनी का काम करके शकर की दलाली करने लगे। तीन वर्ष तक उन्नाव शकर मील की दलाली करने के पश्चात् कपड़े की लाइन में आ गये। कपड़े में पहले आपने पूज्य मदन मोहन जी मालवीय के पुत्रों की दुकान में सेल्समैन का काम किया। इस दुकान का नाम मुकुन्दजी गोविन्दजी मालवीय पड़ता था और ये मथुरादास गोकुलदास मीलों के एजेन्ट थे।

यहां से अनुभव प्राप्त करके आप करीम भाई इब्राहीम एंड सन्स लि० की कानपुर शाखा में, जो करमअली इब्राहीम के नाम से थी, सूत का काम करने लगे, क्योंकि कानपुर की शाखा सूत की एजेन्ट थी। शर्मा जी को इस फर्म में सेल्समैनी का काम करते केवल डेढ़ ही वर्ष हुआ था कि दुकान उठ गई।

सन १९२४ में कानपुर काटन मिल की एजेन्सी लेकर शर्मा जी ने श्री भवानीप्रसाद गिरधरलाल के यहां काम शुरू किया। १२ वर्ष तक यहां काम करके आपने एल० एन० गाडो-दिया के साझे में काटन मिल का काम सन १९४५ तक किया। सन १९४६ में आपने शर्मा एन्ड कम्पनी स्थापित की और सन १९५४ तक काटन मिल की एजेन्सी करते रहे। कन्ट्रोल के जमाने में शर्मा जी ने जो विशेष काम किया वह यह था कि आपने न तो कोई बेजा लाभ स्वयं उठाया और न अपने डीलरों को कोई अनुचित कार्य करने दिया। बल्कि आपने उन्नाव, कानपुर, फर्रूखाबाद, फतेहपुर और इटावा आदि में घर-घर कन्जूमरों के पास उचित दाम पर ही कानपुर काटन मिल का कपड़ा पहुंचाया। इससे गांव-गांव में आपकी धूम मच गई और लोगों को आसानी से ठीक दामों पर कपड़ा प्राप्त हो गया। शर्मा जी का यह कार्य बहुत सराहनीय रहा।

सन १९४२ में आपके छोटे भाई ने आपकी सहायता से कुमार एन्ड कम्पनी के नाम से एक दुकान अलग से खोल दी जो अभी तक उन्हीं की देखरेख में चल रही है। सन १९५०

में देव शर्मा एंड कम्पनी के नाम से बम्बई में भी आपने एक दुकान खोल दी है जिसमें आपके भतीजे श्री शिवकुमार और श्री कृष्ण कुमार काम कर रहे हैं। अब शर्मा जी के पास कानपुर काटन मिल की एजेन्सी नहीं है।

नरोना साहब

सन १९२६ में यू० पी० चेम्बर आफ़ कामर्स के दूसरे सभापति बाबू विश्वम्भर नाथ के देहान्त होने पर चेम्बर की २७ फरवरी १९२६ की आम सभा ने मिस्टर डबल्यू० सी० नरोना को अपना सभापति चुना। नरोना साहब १९२६ से १९३१ तक बराबर यू० पी० चेम्बर के सभापति रहे। १९३२ में उनका देहान्त हुआ तब बाबू विक्रमाजीतसिंहजी चेम्बर के चौथे सभापति चुने गये।

डबल्यू० सी० नरोना के पूर्वज श्री एम० एक्स० डी० नरोना गोआ के रहने वाले थे और ईसाई होने के पहले ब्राह्मण जाति के थे। यह सन १८५७ में राजपूताना से कानपुर से आये थे। यहां आकर इन्होंने ठेकेदारी का काम शुरू किया था और कलक्टरगंज की रेल बनाई थी। इनका जन्म ३० अक्टूबर सन १८२८ का गोआ में हुआ था और शरीरान्त भी गोआ में ही सन १८८८ में हुआ और वहीं उनकी कब्र बनाई गई, जो आज भी विद्यमान है।

श्री डबल्यू० सी० डी नरोना का जन्म ३१ अगस्त सन १८६२ में हुआ था। बालकपन से ही इन्हें फोटाग्राफरी का

शौक था। बड़े होने पर इन्होंने इस कला में बड़ी उन्नति की और राजा महाराजाओं के चित्र उतारने लगे, जिसके लिए इन्हें एक-एक चित्र के दो-दो हजार रुपये मिलते थे। बाद में इन्होंने एक प्रेस भी स्थापित किया और सड़कें बनाने का ठेका भी लिया। नीलाम का काम तो पहले से ही अर्थात् सन १८५८ से होता था, जो आज तक चला जाता है, जिसे श्री बिर्ला नरोना करते हैं।

श्री डबल्यू० सी० डी नरोना बड़े दानी थे। इन्होंने यू० पी० चेम्बर आफ कामर्स को २० हजार रुपया दिया था और शिमला स्कूल के लिए तो सात या आठ लाख रुपया दिया था। देहरादून केडेट कालेज के लिए भी इन्होंने काफ़ी दान दिया था। कानपुर में भी एग्रीकलचर कालेज, टेकनालाजिकल स्कूल और बालिका विद्यालय की भी धन से सहायता की थी। यहां के डी० ए० वी० कालेज में भी इन्होंने कुछ प्रामीसरी नोट जमाकर दिये थे, जिनके ब्याज से इनके नाम के स्कालरशिप चालू हैं।

नरोना साहब की धर्मपत्नी अर्थात् बिर्ला साहब की मां ने घास लाने वाले मजदूरों के आराम के लिए कुछ ऊंचे-ऊंचे चबूतरे बनवा दिये हैं जिन पर घास वाले अपनी घास रखकर आराम कर लेते हैं।

माल रोड का पोस्ट आफिस भी इन्हीं लोगों के पैसे से बना है और नरोना एक्सचेंज के नाम से विख्यात है।

———

ला० सालिगराम जी बजाज

जब खद्दरधारियों से बात करने में कारोबारी लोग मन ही मन हिचकते थे तभी के गिने-चुने दस-पाँच पैसे वालों में से श्री ला० सालिगराम जी बजाज ने देशोपकारी कार्यों में भाग लेना आरम्भ किया था।

श्री सालिगराम जी का जन्म क्वाँर शुक्ल १५ सम्वत १९-४४ में नारियल बाजार में हुआ। आपके पितुःश्री ला० रामलाल जी कानपुर नगर के पुराने वस्त्र व्यवसायी थे। लगभग आठ पीढ़ियों से आपके यहाँ कपड़े का व्यापार होता आया है। आपके अग्रज श्री बुलाकी दास जी थे और आपके पुराने फर्म का नाम श्री पट्टनमल रघूमल था। प्रारम्भ में आपकी शिक्षा भय्याजी की महाजनी पाठशाला में हुई, फिर घरपर मास्टर रख-कर पढ़ाई होती रही। इसके बाद आपने अपने पैतृक व्यवसाय में कार्य करना प्रारम्भ किया और श्री रामलाल बुलाकीदास नाम के फर्म से कपड़े का कारोबार करने लगे।

युवावस्था से ही आपको सत्संगति का चाव रहा अतः आपकी दूकान पर स्वर्गीय श्री गणेश शंकर जी विद्यार्थी, मुंशी प्रेम चन्द जी (उपन्यास सम्राट) अक्सर पधारते थे। उस समय के सभी चोटी पर के नागरिकों से आपकी घनिष्ट मैत्री थी। शनैः शनैः आप सार्वजनिक कार्यों में भाग लेने लगे। आपकी साहित्यिक रुचि भी कम न थी। प्रारम्भ से ही आप अक्सर 'लावनी' बिरहा' आदि के बड़े-बड़े दंगल कराते रहते थे।

राष्ट्रीय कवि श्री मैथिली शरण जी गुप्त की निकट मैत्री का सुयोग भी आपको प्राप्त हुआ है। अतः आप सामाजिक राजनैतिक, साहित्यिक संस्थाओं के कार्यों के लिए धन दान तथा धन संग्रह करने में पूरे मददगार रहे हैं।

सन १९०५ के स्वदेशी आन्दोलन में सर्व प्रथम आपको श्री महाशय काशीनाथ जी ने प्रेरित करके अग्रसर किया। आप 'आर्य समाज' में प्रमुख भाग लेने लगे। आर्य समाज में स्वर्गीय बा० आनन्द स्वरूप जी से एक बार नगर कीर्तन निकालने का आपने प्रस्ताव किया जिसे वे स्वीकृत न कर सके। अतः आपने अपने कुछ साथियों के साथ चौक आर्य समाज स्थापित की। अन्त में समझौता होकर प्रति वर्ष स्थानीय आर्य समाज की ओर से 'नगर कीर्तन' निकलना प्रारम्भ होने का निश्चय हुआ जो अब तक स्वामी दयानन्द जी की पुन्य वर्षिकी पर कानपुर नगर में आर्य समाज द्वारा निकाला जाता है। सार्वजनिक कार्यों में पड़ते ही आपको चुनाव का चस्का लगा। अतः आप तब से अब तक बराबर चुनावों में सरगर्मी के साथ काम करने के मर्ज में मुब्तला हो जाते हैं।

जब 'प्रताप' दैनिक श्री विद्यार्थी जी ने प्रकाशित किया और उस पर रायबरेली केस चला तो आपने तन, मन, धन तथा अर्थ संग्रह करके इस मुकदमे को लड़ने में श्री विद्यार्थी जी का हाथ बटाया। अग्रवाल हितकारिणी सभा के आप उपाध्यक्ष हुए। सन १९२५ के काँग्रेस महाधिवेशन की स्वागत समिति में

बाजार कमेटी के प्रमुख प्रबन्धक रहे, स्थानीय रामलीला के उप सभापति रहकर बहुत दिन काय किया। स्वदेशी नुमायश में भी आप कार्य कारिणी में निर्वाचित हुए। यू० पी० चेम्बर आफ कामर्स के अनेक वर्ष सदस्य रहे और दो बार उसकी ओर से म्युनिसिपल बोर्ड के मेम्बर हुए। श्री डा० जवाहरलाल जी, स्वर्गीय दया नारायण जी निगम, बा० नारायण प्रसाद जी निगम आदि से आपकी घनिष्ठ मैत्री रही। विद्यार्थी जी के चुनाव में आप अपने अत्यन्त घनिष्ठ मित्र तथा साथी श्री चुन्नी-लाल गर्ग का साथ न देकर काँग्रस के साथ रहे जिसके कारण इन्हें अपनी समाज द्वारा उस समय 'जयचन्द' आदि कहकर कोसा गया।

आप स्थानीय कपड़ा कमेटी की कार्यकारिणी के सदस्य अनेक वर्ष रहे और आपने स्थानीय शिक्षा संस्थाओं में डी० ए० वी० कालेज, श्री विश्वम्भर नाथ सनातन धर्म कालेज आदि में दान दिया। स्वर्गीय विश्वम्भर नाथ ट्रस्ट, श्री लक्ष्मन दास ट्रस्ट, श्री निम्मन लाल ट्रस्ट के आप ट्रस्टी हैं।

इस समय आप बनारसी कपड़े का कारबार करते हैं जो इनके बड़े लड़के श्री हरी शंकर की देखरेख में चलता है। इनके छोटे लड़के श्री रामशंकर म्यार मिल में एक केन्टीन चलाते है। आप मिलनसार हैं और सब जगह आपकी पहुँच है।

सेठ मंगतूराम जयपुरिया

श्री रामस्वरूप भरतिया

श्री गिल्लूमल बजाज

कानपुर नगर में मारवाड़ी योजनाओं में निस्पृह रहकर लगन के साथ कार्य करने में सफल श्री गिल्लूमल जी बजाज का निराला व्यक्तित्व है।

आपके पूर्वज 'सिंहाना' (नारनौल जयपुरस्टेट) के प्रारम्भिक निवासी थे। आपके पिता जी श्री महानन्द बजाज भागलपुर में वस्त्र व्यवसाय एवं 'बजाजी' करते थे अतः उन्हें सर्व-साधारण बजाज कहने लगे और उन्होंने भी अपने नाम के अन्त में इस उपाधि का व्यवहार करना प्रारम्भ कर दिया। भागलपुर से आप कानपुर आए और यहाँ श्री अर्जुनदास खुशालचन्द नाम का फर्म स्थापित करके कपड़े का व्यापार करने लगे। श्री गिल्लूमल जी का जन्म संवत १९५२ में कानपुर नगर में ही हुआ। प्रारम्भिक शिक्षा तो उन दिनों भैया जी के पाठशाले में ही सभी की होती थी अतः आपने भी गुरू जी से शिक्षा प्राप्त की।

जब स्थानीय मारवाड़ी पुस्तकालय की स्थापना हुई आपने उसमें भाग लिया तथा बाद में उप मंत्री निर्वाचित हुए। तब से अब तक लगभग २८ वर्ष से आप उक्त संस्था में इसी पद पर बराबर चुने जाकर कार्य कर रहे हैं। स्थानीय 'मारवाड़ी कालेज' की प्रबंध समिति में आप विगत २० वर्ष से उप मंत्री तथा 'मारवाड़ी औषधालय' के विगत १७ वर्ष से प्रधान मंत्री और

'मारवाड़ी क्लब' के ६ वर्ष से प्रधान मंत्री रहे हैं। 'गोशाला सोसाइटी' की कार्य कारिणी के विगत १४ वर्ष से सदस्य तथा कुछ समय कोषाध्यक्ष और 'गोशाला इमलिया' जहाँ ७०० गायें रहती हैं वहाँ के प्रबंध संयोजक रहे हैं। स्थानीय 'कपड़ा कमेटी' के डायरेक्टर एक बारतथा कई बार संयुक्त मंत्री और प्रधानमंत्री रहे। अखिल भारतीय तथा संयुक्त प्रान्तीय मारवाड़ी सम्मेलन की कार्य कारिणी के सदस्य भी रहे। कानपुर के दंगे में 'मारवाड़ी रिलीफ सोसाइटी' बनाकर आपने अपने अन्य बन्धुओं के सहित खान, पान, रक्षा, चिकित्सा आदि की सक्रिय सेवा की। सन् ४४ में आपने 'बालिका विद्यापीठ' की योजना प्रकाशित करके और अपने समाज की सहायता प्राप्त करके एक संस्था स्थापित की। यह बालिका विद्यापीठ एक बहुत बड़ी जमीन पर अपने भवन में चल रही है, जिसका शिलान्यास श्री गजाधर लाल जयपुरिया द्वारा हुआ था।

आप नगर के कपड़ा व्यवसायिओं में अपना प्रमुख स्थान रखते हैं तथा सदैव ही काँग्रेस के राष्ट्रीय कार्यों, समाज सेवादि में अग्रसर रहते हैं।

श्री जयनारायण जी गोयनका

नगर के प्रसिद्ध वस्त्र व्यवसायी श्री जयनारायण जी गोयनका एक कर्मठ समाज सेवी हैं। आपका जन्म संवत् १९५८ में नवल गढ़ (जयपुर स्टेट) में हुआ था। बचपन से ही आप कानपुर आ गए थे और फर्म श्री रामराज जोखीराम तथा उनके

साझे में चलने वाली अन्य दूकानों के साझीदार रहे हैं। एक बार सन ३१ में कार्निवाल के अन्दर कालों का अपमान करने वाले एक अँग्रेज से आपका झगड़ा हो गया, अन्तमें उस बेचारे को माफ़ी माँगनी पड़ी। सन् ३० के काँग्रेस आन्दोलन में आप को ६ महीने का कठिन कारावास दन्ड तथा ५००) रु० जुर्माना हुआ। जेल में आप बड़े लोकप्रिय साथियों में समझे जाते थे। वैसे भी आप बड़े मिलनसार हैं। कद आपका बहुत छोटा है। आप स्थानीय काँग्रेस कार्यों में सदैव ही उत्साह पूर्वक भाग लेते रहे हैं तथा श्रीगोशाला सोसाइटी के संयुक्त मंत्री, मारवाड़ी क्लब के उपाध्यक्ष, मारवाड़ी औषधालय के कोषाध्यक्ष, कपड़ा कमेटी, मारवाड़ी पुस्तकालय, मारवाड़ी कालेज की कार्यकारिणी के सदस्य रहे हैं।

इस समय आप श्री गिल्लूमल बजाज के साझे में 'गिल्लूमल जयनारायण' नामक फर्म से कपड़े का कारबार कर रहे हैं।

श्री रामदेव मरोलिया

आपके पूर्वज जयपुर रियासत (राजस्थान) के बगड़ नामक स्थान के निवासी थे। आपके पिता पं० भगवानदास ने आपकी शिक्षा दीक्षा का समुचित प्रबन्ध कियाथा। आपने बगड़ में अध्ययन करके बम्बई में एफ० ए० की प्रथम वर्षीय परीक्षा उत्तीर्ण की। इसके बाद नागपुर झण्डा सत्याग्रह के अवसर पर सन १९२२ कालेज की पढ़ाइ छोड़ कर असहयोगी बने और

कुछ समय तक राष्ट्रीय आन्दोलन में सक्रिय रूप से भाग लेते रहे। आपका जन्म सन १९०७ में हुआ था और इस प्रकार उस समय आपकी अवस्था १५ वर्ष की थी।

कुछ दिन बाद आपका ध्यान एक कुशल व्यापारी बनने की की तरफ आकर्षित हुआ और आप बम्बई के एक बड़े व्यापारिक फर्म में कार्य सीखने लगे और सम्वत १९७९ में निजी तौर पर रुई का व्यवसाय बम्बई में ही करने लगे। साथ ही बम्बई की विभिन्न सार्वजनिक संस्थाओं के कार्य में भी भाग लेते रहे।

बम्बई से आप कानपुर चले आये और रुई का कारोबार करके एक सफल व्यवसायी हुए और यहाँ भी सार्वजनिक कार्यों में बराबर भाग लेते रहे। आप कई वर्ष तक गोशाला सोसाइटी के प्रधान मन्त्री रहे, मरचेन्ट चेम्बर आफ कामर्स की कौंसिल के १० वर्ष तक और मारवाड़ी कालेज तथा औषधालय की कार्यकारिणी के १५ वर्ष तक सदस्य रहे। मारवाड़ी क्लब के अध्यक्ष, मारवाड़ी पुस्तकालय के वर्षों तक प्रधान मन्त्री, डिस्ट्रिक्ट स्पोर्टस एसोसिएशन के उप-सभापति, अखिल भारतीय मारवाड़ी फेडरेशन की वर्किंग कमेटी तथा संयुक्त प्रांतीय मारवाड़ी सम्मेलन की कार्यकारिणी के सदस्य और 'तुलसी साहित्य मन्दिर के संस्थापकों में अग्रगण्य होकर उसके कोषाध्यक्ष रहे। संयुक्तप्रांतीय स्टाकएक्सचेंज के संस्थापकों में से और डायरेक्टर भी रहे हैं। दो बार आप व्यापारियों की प्रमुख संस्था मरचेन्टस चेम्बर आफ कामर्स, की ओर से जी० आई० पी० तथा ई०

आई० रेलवे कमेटियों में प्रतिनिधि रहे और म्युनिसिपल बोर्ड के सदस्य निर्वाचित हुए।

आप छोटे-बड़े सभी से समान व्यवहारी, तुरन्त निर्णय कर देने वाले, विनम्र और जनसेवार्थ उत्साही सज्जन हैं।

भाई करोड़ीमल

श्री करोड़ी मल का जन्म सन १९०० में हुआ था। आपके पिता का नाम भाई दुलीचन्द था। वह ठेकेदारी का काम करते थे। वही पेशा श्री करोड़ीमल ने अपनाया। जाति के यह खटिक थे। सन १९२१ में यह कांग्रेस में शामिल हुए और कांग्रेस को पैसा भी दिया। दस वर्ष के करीब कांग्रेस में रह कर सन १९३१ में वह 'आदि हिन्दू' ग्रुप में मिल गये और कानपुर की 'आदि हिन्दू डिप्रेस्ड क्लास एसोसियेशन' के सभापति हो गये। इन दिनों यह कांग्रेस से काफ़ी रुष्ट होगये थे और सरकारपरस्त बन गयेथे परन्तु पहिनते खद्दर ही थे। यहतीन वर्ष तक कानपुर म्युनिसिपल बोर्ड के मेम्बर रहे। सन १९३३ और १९३७ में इन्हें सरकारी मेडल भी मिले। यह श्री स्वामी शिवनारायण पन्थ के अनुयायी और भक्त थे। कर्नलगंज में इसी पन्थ का इनका एक मन्दिर भी है। इनका निधन २१ सितम्बर सन १९३७ को हुआ था।

हाफ़िज़ मोहम्मद सिद्दीक़

श्री मोहम्मद सिद्दीक के पिताजी हाजी मोहम्मद अशरफ़ आंवले से सन १८७० में कानपुर आये। इनके चाचा पहले से

यहाँ तिजारत करते थे। हाजीजी यहाँ आकर उन्हीं की दुकान पर बैठे और काम सीखने लगे। एक साल के बाद हाजीजी के चचा ने उन्हें एक हज़ार रुपया दिया। उसी १००० रु० से उन्होंने अपना काम शुरूकिया और धीरे धीरे काफ़ी तरक्क़ी की। हाफ़िज़ मोहम्मद सिद्दीक का जन्म कानपुर ही में मिश्री बाज़ार में हुआ था।

इनकी प्रारम्भिक शिक्षा आंवले में हुई जहाँ के ये मूल निवासी थे। किन्तु सन १९०२ में फिर कानपुर बुला लिये गये और २० वर्ष की उम्र में यहीं इनकी शादी करदी गई।

बचपन ही से इनके पिताजी ने इन्हें अपनी दुकान पर बैठालना शुरू करदिया था, अतः यह व्यापार कुशल हो गये। किन्तु प्राइवेट तौर पर इनका पढ़ना लिखना इनके पिताजी ने जारी रखा। अंग्रेज़ी भी इन्होंने प्राइवेट शिक्षा से ही सीखी थी और काम भर के लिए काफ़ी समझ लेते थे।

सन १९१८ में इनकी स्त्रीका देहान्त होगया। उसीके ग़म में इन्होंने शायरी शुरू करदी और 'सिद्दीक' उपनाम से कविता करने लगे। इनके यहाँ शायरों का जमाव लगने लगा और यह शायरों तथा अख़बार वालों की मदद करने लगे।

यह १६ वर्ष तक कानपुर म्युनिसिपल बोर्ड के मेम्बर रहे और प्रायः निर्विरोध ही चुने जाते रहे। यह बोर्ड के वाइस-चेयरमैन और एक्टिंग चेयरमैन भी रहे थे।

यह स्वभाव से ही बड़े दाना थे। इन्होंने लखनऊ मेडिकल

कालेज, जामे मिल्लिया देहली, इस्लामिया हाईस्कूल (बाद में इण्टर कालेज) इटावा। मेस्टन कालेज बदायूँ, फै़जे आम हाई स्कूल कानपुर, हीरालालजी खन्ना के कानपुर हाईस्कूल, पंजाबी हाईस्कूल बरेली, गर्ल्स हाईस्कूल बरेली, अमीरुद्दौला कालेज लखनऊ, रहमानियां हाईस्कूल मौदहा, सिद्दीक हाईस्कूल झाँसी मियां साहब जार्ज कालेज गोरखपुर, मुस्लिम गर्ल्स कालेज अलीगढ़, हाईस्कूल फीरोज़ाबाद, हलीम इन्टर कालेज कानपुर, अरेबिक कालेज देहली, आदि शिक्षा संस्थाओं को 'क़रीब दस लाख रुपया दान दिया। इन दानों से इनकी दानशीलता के साथ ही इनका शिक्षाप्रेम भी प्रकट होता है। मज़हबी मदरसों को भी हाफ़िज़ जी ने काफ़ी पैसा दिया था। इलाहाबाद यूनीवर्सिटी, बंगाल रिलीफ़ और कस्तूरबा फण्ड में भी इन्होंने रुपया दिया था। इन्होंने सन १९४३ में अपने लड़के की शादी में २० हज़ार रुपया दान किया था। सन १९३१ के साम्प्रदायिक झगड़े में इन्होंने शान्ति पक्ष में काफ़ी काम किया था।

इनके जीवन के कुछ अन्तिम वर्ष शायरी, इतिहास और राजनीतिक विषयों पर लिखने पढ़ने में बीते। इनकी लिखी हुई लगभग ६० मुकम्मिल पुस्तकें तैयार हैं जो प्रकाशित नहीं हो पाई और हाफ़िज़ जी इस असार संसार को छोड़ कर चले गये। अपने अन्तिम समय तक इन्होंने शायरों और अख़बारवालों को मदद जारी रखी। राजनीति में हाफ़िज़ मोहम्मद सिद्दीक़ साहब एक क़ौम के हामी और इत्तहाद के पक्षपाती थे।

हाफ़िज़ जी की मृत्यु के बाद व्यापार का सारा कारबार उनके पुत्र श्रीमोहम्मद अतीक़ साहब देखते हैं, जो पूर्ववत चल रहा है।

कलकत्ता और बम्बई में भी इनकी दुकानें रही हैं और ये एक थोक व्यापारी समझे जाते रहे हैं। इनकी कुछ ज़िमींदारी भीथी। इनके मज़ार पर लिखा है—

सिद्दीक़ के मज़ार पै दो फूल डालदो,
बेचारा मर गया है यह फसले बहार में।

पुरुषोत्तमदास बनारसीदास

यह फर्म लगभग ७० वर्ष पूर्व प्रारम्भ हुआ था। इसकी मुख्य दुकान कलकत्ते में थी जहां 'दामोदर चौबे' और 'बिहारीलाल राधेलाल' नामक फर्मों पर कारबार होता था। बाद में 'दामोदर चौबे' नाम को बदलकर 'दामोदर चौबे एण्ड कम्पनी' नाम पड़ा। जब कानपुर की शाखा खोली गई तब उसका नाम 'पुरुषोत्तमदास बनारसीदास' डाला गया। कलकत्ते की 'दामोदर चौबे एण्ड कम्पनी' कलकत्ता स्टाक एक्सचेंज के एक प्राचीनतम सदस्य ही नहीं हैं बल्कि स्थानीय स्टाक एक्सचेंज के जन्मदाताओं में से एक रहे हैं। इस फर्म के प्रतिनिधि स्टाक एक्सचेंज के १४ वर्ष तक लगातार सभापति रहे हैं। इस फर्म के पास काफी जमींदारी भी थी, मुख्यतः आगरा और फ़रुखाबाद के ज़िलों में।

पुरुषोत्तमदास बनारसीदास के फर्म ने लेन-देन और देशी शकर के अढ़तिये के रूप में कारबार शुरू किया। कुछ दिन बाद

फर्म ने शकर का काम बन्द करके तम्बाकू, किराना, रूई, गल्ला और तिलहन की आढ़त का कारबार प्रारम्भ कर दिया। इस व्यापार में उसने काफी उन्नति की। इन बातों के अतिरिक्त फर्म ने सीमेंट का लाइसेन्स भी प्राप्त कर लिया है और 'रूपकिशोर एण्ड कम्पनी' के नाम से सीमेंट का व्यापार करते हैं। कलकत्ते में मूल दफ्तर होने से वहीं पर सारे फार्मों का टेक्स और सुपर टेक्स देना पड़ता है।

इस फर्म का सारा मूल धन अपना ही है। वह अन्य व्यापारियों को जायदाद आदि पर भी रुपया व्याजू देती है और मुद्दती हुण्डी पर भी रुपया देती है।

वर्षों से फर्म के मूल परिवार का एक सदस्य स्थानीय कलेक्टरी के खज़ाने का खज़ांची होता चला आया है। और जब तक राशनिंग जारी रही, वही सदस्य राशनिंग के खज़ाने का भी खज़ांची होता रहा। स्थानीय स्टाक एक्सचेंज में भी इस फर्म का एक प्रतिनिधि हमेशा रहता आया है।

स्वर्गीय श्री दामोदर चौबे की स्मृति को स्थायी बनाये रखने के लिए इस परिवार ने लगभग दो लाख रुपये का दान देकर आगरा जिले के होलीपुरा स्थान में इन्टरमीडियेट कालेज बनवा दिया है। इसी रुपये में से एक पुस्तकालय और एक औषधालय भी बनवा दिया गया है। इस कालेज, पुस्तकालय और औषधालय की इमारत तथा कालेज के अच्छे परीक्षा फलों के सम्बन्ध में प्रसिद्ध आगन्तुकों ने बड़ी तारीफ की है।

कानपुर में इस फर्म की बड़ी दुकान माढ़ा टोली में, गल्ले की कलेक्टरगंज में, किराने और तम्बाकू की रामगंज में तथा कपड़े की काहू का कोठी में है। इस समय फर्म के सारे कारबार के अधिष्ठाता श्रीराधेलाल जी चतुर्वेदी हैं। आप बड़े मिलनसार, अनुभवी, विद्वान और सुधारवादी सज्जन हैं।

सैयद मोहम्मद रज़ा

श्री मोहम्मद रज़ा का जन्म सन १८८७ में हुआ था। आप के बुजुर्ग पटना से आकर पटकापुर में बसे थे। रज़ा साहब की शिक्षा कानपुर के गवर्मेंट स्कूल में १८९६ से १९०२ तक हुई। अपनी शिक्षा समाप्त करके वह १९०२ में मेस्टनरोड के मिस्टर अब्दुल हक की दुकान पर काम करने लगे। थोड़े ही समय के पश्चात वह अपने भाई श्री मोहम्मद मेंहदी के हड्डी के कारबार में शामिल हो गये और चार वर्ष तक उनके साथ काम करते रहे। भाई साहब से किसी बात पर खटपट हो गई और वह बिना एक पैसे के घर से निकल पड़े। मजदूरी करके कुछ पैसे जमा किये और बम्बई पहुँच गये। बम्बईमें नौकरी करके उन्होंने अपने अफसरों को खूब प्रसन्न किया और शारीरिक परिश्रम से भी कुछ रुपया कमाया। लगभग छः मास के बाद थोड़ा-सा रुपया लेकर कानपुर आ गये और यहां चमड़े के कारबार की तरफ रुजू हुए।

उनके पिता जी कानपुर के कलक्टर की इजलास में पेशकार थे और चाहते थे कि उनका लड़का पुलिस का दारोग़ा बन जाये।

परन्तु राजा साहब का मन व्यापार की ओर लगा हुआ था। अतः उन्होंने तात्कालिक कलेक्टर की सिफारिश से 'नार्थ वेस्ट टेनरी' के मिस्टर सैन्डरलैंड के यहां नौकरी कर ली। शीघ्र वह टेनरी में 'बेग और ट्रंक' विभाग के असिस्टेंट इनचार्ज बना दिये गये। इस पद पर उन्हें अपनी योग्यता प्रमाणित करने का सुअवसर प्राप्त हुआ और वह तीन वर्ष के बाद टेनरी के ट्रेवलिंग एजेन्ट बना दिये गये। इस कार्य को उन्होंने इतने अच्छे ढंग से किया कि उनके अधिकारी ने उनसे प्रसन्न होकर उन्हें कानपुर, बनारस और दिल्ली की एजेन्सी दे दी। इस एजेन्सी से थोड़े ही समय में पैसा कमाकर उन्होंने स्वयं अपना चमड़े का कारखाना 'ह्विट फील्ड एण्ड कम्पनी' के नाम से चालू कर दिया जो काफी चला। इसी बीच में वह आनरेरी मेजिस्ट्रेट और म्युनिसिपल बोर्ड के मेम्बर भी हो गये। बोर्ड में वह २० वर्ष तक मेम्बर रहे।

प्रथम संसार-व्यापी युद्ध के जमाने में उन्हों ने जे० के० इन्डस्ट्री के साझेमें 'इन्डिया सप्लाइज' नामक फर्म स्थापित करके काफ़ी रुपया कमाया और सन १९४६ तक इस काम में लगे रहे। इसके बाद उन्हों ने 'जूपीटर सप्लाई' नामक एक और व्यापारिक फर्म बम्बई में खोला जिसमें सरकार की ओर से वह युद्ध सामग्री का माल बेंचने के ठेकेदार मुकर्रर कर दिये गये और अंत तक यही काम करते रहे। सन ४५-४६ में उन्हों ने ब्रुश बनाने का भी एक कारखाना खोला था जो कुछ चला नहीं। सन १९४८ में

उनका देहान्त हो गया किन्तु मरते दम तक वह शारीरिक श्रम और व्यायाम करते रहे। इसीलिए उनका शरीर काफी स्वस्थ और तगड़ा रहा।

रज़ा साहब स्वभाव के बड़े मीठे और मिलनसार थे। अपने स्वभाविक गुणों से ही वह अपने अधिकारियों और मातहतों दोनों को ही प्रसन्न रखते थे। उनके मिलने वाले उनके मधुर भाषण से इनके मित्र बन जाते थे। अपनी बोर्ड की मेम्बरी के समय में वह बोर्ड की पब्लिक हेल्थ कमेटी के चेयरमैन और शिक्षा कमेटी के मंत्री भी रहे थे। मुसलमानों में भी उनका सम्मान था। वह स्थानीय ज़िला शिया कमेटी के सभापति तो थे ही सन १९३८ में वह आल इन्डिया शिया कान्फरेन्स के स्वागताध्यक्ष भी हो गये थे।

पटकापुर में उनका एक रज़ा मंजिल था जहां आज कल टी० बी० क्लिनिक है। इसे बेंचकर वह मोहल्ला कर्नलगंज में जाकर रहने लगे थे।

सरदार इन्दर सिंह

सरदार इन्दरसिंह ने कानपुरके औद्योगिक तथा सार्वजनिक क्षेत्र में पिछले ३७ वर्षों से लगातार जो उल्लेखनीय कार्य किये हैं उनके कारण ही उन्होंने इस नगर में एक ऊँचा स्थान प्राप्त किया है।

स० इन्दरसिंह के जीवन पर एक दृष्टि डालने से यह मालूम होता है कि उन्होंने एक छोटे कारीगर के रूप में अपना जीवन

शुरू करके अपने सामने देश की औद्योगिक उन्नति में सहयोग देने का एक बड़ा आदर्श रक्खा। बहुत परिश्रम के पश्चात वे अपने कार्य में सफल रहे और उन्होंने भारत में स्टील री-रोलिंग मिल का एक नया उद्योग, कानपुर में सर्वप्रथम स्टील री-रोलिंग मिल लगा कर स्थापित किया। सरदार इन्दरसिंह कानपुर में सन् १९१८ में आए और उन्होंने १९२० में सिंह इंजीनियरिंग वर्क्स के नाम से एक कारखाना खोला और उसी कारखाने में भारत की सर्वप्रथम स्टील री-रोलिंग मिल भी स्थापित हुई।

सरदार इन्दरसिंह सन् १९२८ में तथा सन् १९३५ में इंगलैंड, जर्मनी, बेल्जियम और अन्य पश्चिमी देशों के औद्योगिक केन्द्र देखने के लिए गए और वहां काफी तजुर्बा हासिल करने के बाद उन्होंने भारत के स्टील री-रोलिंग उद्योग को आधुनिक ढंग से चलाने का सफल प्रयत्न किया। सन् १९४८ में सरदार जी अमेरिका गए और वहां से भी उन्होंने इस्पात उद्योग के बारे में कई प्रकार की नई बातें मालूम कर लीं।

औद्योगिक कार्य के साथ-साथ स० इन्दरसिंह कानपुर के राजनैतिकक्षेत्र में गत ३३ वर्षों से महत्वपूर्ण कार्य करते आयेहैं। सरदारजी ने देश के स्वतन्त्रता आन्दोलन में भी काफी सहयोग दिया है। आप सन् १९२२ में कांग्रेस के सदस्य बने और सन् १९२५ में जो अखिल भारतीय कांग्रेस का वार्षिक अधिवेशन कानपुर में हुआ उसमें आप स्वागत समिति के एक मन्त्री थे। सन् १९२६ में वे कानपुर शहर कांग्रेस कमेटी के उप-प्रधान एवं

उत्तर प्रदेश कांग्रेस कमेटी के सदस्य चुने गये। सन् १९२९ में उनको अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी का सदस्य चुना गया।

सन् १९४६ में आप कांग्रस के टिकिट पर पंजाब विधान सभा के सदस्य अमृतसर क्षेत्र से चुने गये। विधान सभा में उन्होंने जनता के हित के बहुत से कार्य किये। सन् १९५० में जो भूमिधारी कानून पंजाब सरकार ने बनाया उसका मसविदा सबसे पहिले आप ही ने पेश किया था।

सन् १९३१-३२ में आप कानपुर नगर पालिका के सदस्य चुने गये तथा सन् १९४५ से १९५३ तक लगातार नगरपालिका के सदस्य रहे। इस दस वर्ष से अधिक के कार्यकाल के अन्दर कानपुर के नागरिक जीवन में जो सुधार हुए उनमें आपका पूर्ण सहयोग रहा। आप हर समय हर प्रकार के प्रगतिशील कार्यों में दिलचस्पी लेते हैं और जनता के हित के लिए किए जाने वाले कार्यों में सहयोग दिया करते हैं। आप कई सार्वजनिक संस्थाओं के प्रमुख कार्यकर्ता हैं।

एक प्रसिद्ध उद्योगपति होते हुए एक सार्वजनिक कार्यकर्ता और जनसेवक होना वास्तव में एक बहुत ही कठिन काम है लेकिन सरदार इन्दरसिंह इस कठिन कार्य को बहुत ही सहनशीलता, उदारता और सुन्दरता के साथ निभा रहे हैं।

———

पं० दुर्गाशंकर दीक्षित

श्री गनेशप्रसाद दुर्गाशंकर फर्म के स्वत्वाधिकारी श्री दुर्गा-शंकर जी दीक्षित का जन्म संवत् १९४० में हुआ था। होलकर कालेज इन्दौर में आपने शिक्षा प्राप्त की थी। बुढ़वल शुगर मिल के आप मैनेजिंग डायरेक्टर और कानपुर शक्कर बाजार के प्रमुख व्यापारी हैं। आप ही के सद्प्रयत्नों के कारण सन १९३१ में शक्कर कमेटी की नींव पड़ी। आप अनेक वर्ष पर्यन्त इस संस्था के अध्यक्ष तथा उपाध्यक्ष रह कर कार्य संचालन करते रहे।

आप अपने समय में नगर की सार्वजनिक हलचलों में सहायता देने वाले प्रसिद्ध पुरुष एवं लोकोपकारी व्यापारी हैं। आप साहित्य प्रेमी भी हैं और यथासाध्य साहित्यिकों की सहायता भी करते रहते हैं। आप मृदुभाषी और सरल स्वभाव के सज्जन हैं।

श्री मन्नीलाल नेवटिया

श्री मन्नीलाल नेवटिया का जन्म सम्वत १९५७ के माघ में नवाबगंज, ज़िला गोंडा में हुआ था। आपके पिता श्री रामेश्वर दास कपड़े का कारबार करते थे। जब आप दो या ढाई वर्ष के थे तभी आपके पिताजी कानपुर आ गये थे और उन्होंने यहीं काहूकोठी की मुड़िया पाठशाला में पुत्र को भर्ती करा दिया। उक्त चटशाला के प्रधानाध्यापक पं० बद्री नारायण जी शर्मा को अख़बार पढ़ने या पढ़वा कर सुनने का बड़ा चाव था। आप

यदा-कदा श्री मन्नीलाल को भी समाचारपत्र पढ़ कर सुनाते। कुछ बड़े होने पर वह स्वयम् भी 'वेंकटेश्वर समाचार' तथा 'वंगवासी' आदि पत्रों के आद्योपान्त पाठक बन गये।

संवत १९६८ से जब आपकी अवस्था १०॥ वर्ष की थी आपको पैतृक व्यवसाय को सम्हालने की ओर ध्यान और पूरा समय देना पड़ा किन्तु समाचार पत्रों के नियमित रूप से पढ़ने के कारण आपके मन में सार्वजनिक सेवा का चाव प्रबल होता गया। अतः शनैः शनैः आप लोकोपकारी कार्यों में सक्रिय रूप से भाग लेने लगे और पहले पहल 'स्थानीय मारवाड़ा-सभा' में सम्मिलित हुए। फिर मारवाड़ी विद्यालय बना। उसी में एक छोटा-सा हिन्दी पुस्तकालय भी था। उसी से आपने 'मारवाड़ी पुस्तकालय तथा वाचनालय' की स्थापना जनरलगंज में की और जब तक उसका विशाल भवन स्थानीय कस्तूरबा गाँधी (बिरहाना) रोड पर नहीं बनवाया गया तब तक उसके प्राण बने रहे। १९१८ को फरवरी मास में श्री सर पद्मपति जी सिंहानिया के कर कमलों द्वारा इसका शिलान्यास हुआ। इस प्रकार से आपके जीवन में एक स्थायी लोकोपकारी संस्था का निर्माण हुआ।

संवत् १९८१ में क में अखिल भारतीय 'अग्रवाल महासभा' का छठा अधिवेशन प्रथम बार कानपुर नगर में हुआ। आप उसकी स्वागत समिति के प्रधान मंत्री के प्रमुख सहकारी एवं मंत्री रहे। इसके बाद मारवाड़ी समाज के जोभी सार्वजनिक सेवा के प्रयास हुए लगभग उन सभी के आप एक मंत्री होते रहे

श्री बनारसी दास जैन
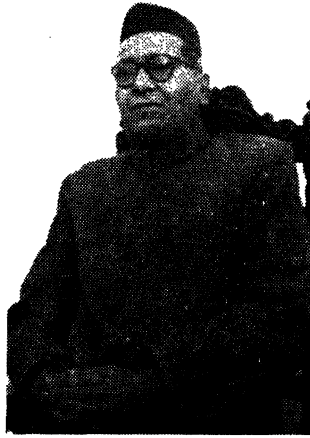
श्री विश्वनाथ भरतिया

सन ३२ से ४४ तक आप म्यु० कमिश्नर रहे। सन ३२ में आप काँग्रेस कोष के कर्त्ता-धर्ता माने जाकर गिरफ्तार किए गए और सबूत न मिलने के कारण हवालात से छोड़े गए।

पाँच-छै वर्ष पर्यन्त आप हिन्दू सभा के प्रमुख कार्यकर्त्ता एवं सदस्य रहे। सन ३८ के हिन्दू-मुस्लिम दंगे में 'मारवाड़ी रिलीफ सोसाइटी' की ओर से पीड़ितों की सेवा की।

आप कपड़ा कमेटी के उप-सभापति और किराना कमेटी के मन्त्री रहे हैं। फ्री इण्डिया जनरल इन्श्योरेन्स के डाइरेक्टरों में से एक तथा कानपुर फाइनेन्सर के डाइरेक्टर भी थे। आप ३०००) रु० इन्कमटैक्स देते हैं। आप एक स्वाभिमानी, स्वावलम्बी, सफल व्यवसायी हैं। साहित्यिकों की सहायता प्रवृत्ति आप में सदैव ही रही है।

लाला गणेश प्रसाद दलाल

इन के पूर्वजों का प्राचीन निवास सिघांणा (जयपुर) था और इनके मूल पुरुष सेठ थानीराम जी थे। आपके पुत्र गुमानी राम जी थे। सेठ गुमानी राम के पुत्र ताराचन्द जी हुए। आपने सिघांणा छोड़कर भोजनगर में अपना निवास कायम किया। सेठ ताराचन्द जी के लालचन्द जी, खींवकरण जी, श्रीराम जी, तथा रामलाल जी नामक ४ पुत्र हुए। इनमें इस समय सेठ लालचन्द जी का परिवार संभलपुर में कालूराम विशनदयाल के नाम से सेठ खींवराज जी का परिवार बाँदा, और कलकत्ता

में देवकरणदास गुलराज के नाम से और श्रीराम जी का परिवार कानपुर में गणेशप्रसाद दलाल के नाम से और कलकत्ता में गिरधारी लाल लक्ष्मीनारायण के नाम से व्यवसाय करता है।

सेठ श्रीराम जी के गंगाराम जी, अमरचन्द जी तथा हुकुमचन्द जी नामक ३ पुत्र हुए। इनमें हुकुमचन्द जी के कोई सन्तान नहीं है। सेठ गंगाराम जी के गनेशप्रसाद जी, हनुमान दास जी, रामेश्वरदास जी तथा भूरामल जी नामक ४ पुत्र हुए। इनमें से लाला गणेशप्रसाद जी भोजनगर से व्यवसायार्थ सर्व प्रथम कानपुर आये थे। उस समय आपकी परिस्थिति बहुत मामूली थी। यहाँ आकर आपने सूत की दलाली का कार्य आरम्भ किया। दलाली के साथ-साथ आप सूत का थोड़ा बहुत अपना घरू व्यापार भी करते थे। थोड़े ही समय में इस व्यापार में आपने अपनी योग्यता तथा व्यापारिक प्रतिभा के बल पर अच्छी सफलता पाई और इस व्यवसाय में आप नामी व्यवसायी माने जाने लगे। प्रधान रूप से सूत का व्यापार करने के कारण आपका बंक सूतवाला पड़ गया। कतिपय लोग इस परिवार को दलाल के नाम से भी संबोधन करते हैं। इस प्रकार आप अपने व्यापार तथा परिवार की प्रतिष्ठा को उन्नति की ओर अग्रसर करते हुए स्वर्गवासी हुए। आपके पुत्र चुन्नीलाल जी थे। इनका लाला गणेशप्रसाद जी के समय में ही स्वर्गवास हो गया था। अतएव इनके नाम पर श्री रघुनाथप्रसाद जी (पुत्र

श्री भूरामलजी) दत्तक लिए गये। इनका भी स्वर्गवास हो गया। इसके उपरान्त श्री शंकरलाल जी पुत्र (श्री भूरीमलजी) गोद लिये गये। आप बड़े ही व्यापार कुशल और अंग्रेजी में एम० ए० पास हैं।

लाला हनुमान दास जी ने अपने बड़े बन्धु द्वारा स्थापित सूत के व्यापार को बहुत उन्नत किया। इस व्यापार में आप की प्रतिभा और आपकी योग्यता इतनी ऊंची थी कि सूत के व्यवसाय में यू० पी० में सबसे बड़े व्यवसायी समझे जाते थे। यह कहना अत्युक्ति नहीं होगा कि व्यापार में, क्या मिल मालिक और क्या व्यवसायी सभी आप का वजन मानते थे। १६ वर्षों तक आपकी फर्म पर "हनुमानदास फूलचन्द" के नाम से व्यवसाय होता रहा और जब आपके साझीदार श्री फूलचन्द जी का भाग अलग हो गया तब आपने सं० १९७६ से "हनुमान दास केशरी चन्द" के नाम से फर्म स्थापित किया। आपने स्वदेशी काटन मिल, कानपुर का माल बिक्री करने के लिए अपनी एक ब्रांच "फूलचन्द गजानन्द" के नाम से खोली। अपनी धार्मिक रुचि के अनुसार आप चुपचाप दान किया करते थे। आप के पुत्र बाबू हीरालाल जी सूतवाले हैं।

श्री रामेश्वरदास जी का लक्ष्य अपनी फर्म के व्यवसाय की वृद्धि के साथ-साथ सार्वजनिक और समाजिक कामों की ओर भी रहता था। आप स्थानीय मारवाड़ी औषधालय, गोशाला और मारवाड़ी विद्यालय के कार्यों में विशेष दिलचस्पी लेते थे।

सामाजिक मामलों में आप का रुचि विशेष थी। किन्तु आपने उम्र कम पाई और आप सम्वत् १९९० में स्वर्गवासी हो गये। आपके पुत्र श्री गजानन्द जी हैं।

श्री भूरामल जी बड़े सरल स्वभाव के पुरुष हैं और अपनी फर्म के व्यवसाय सचालन में तत्परता से भाग लेते हैं। आप के फूलचन्द जी, किशनलाल जी, शिवकरण जी, रघुनाथ प्रसाद जी तथा शंकरलाल जी नामक ५ पुत्र हुए। इनमें रघुनाथ प्रसाद जी, शंकरलाल जी लाला गनेश प्रसाद जी के पुत्र चुन्नीलाल जी के गोद चले गये हैं।

श्री हीरालाल जी का जन्म सं० १९६८ में हुआ था। आपने मैट्रिक तक शिक्षा पाई है। आपकी व्यवसायिक योग्यता उच्च कोटि की है। आप ऊँचे विचार और ऊँची आस्था रखने वाले व्यक्ति हैं तथा कानपुर कपड़ा कमेटी तथा सूत कमेटी के अनेक बार अध्यक्ष रह चुके हैं। मारवाड़ी विद्यालय इन्टर कालेज, मारवाड़ी बालिका विद्यापीठ, मारवाड़ी औषधालय, अग्रसेन व्यायामशाला, गौशाला सोसाइटी और चेम्बर आफ कामर्स आदि के सक्रिय सदस्य हैं। आपको तीर्थाटन व ईश्वर भक्ति में विशेष रुचि है।

आपके बन्धु फूलचन्द जी, तथा गजानन्द जी ने मैट्रिक तक अध्ययन किया है और आपके भतीजे श्री शंकरलाल जी ने एम० ए० तक शिक्षा प्राप्त की है। किन्तु सभी अपने व्यवसाय सचालन में पूर्ण सहयोग देते हैं।

इस परिवार ने भोजनगर में एक कुआँ और एक धर्मशाला

का निर्माण कराया है और कानपुर नगर में श्री गणेश प्रसाद दलाल के नाम से पटकापुर (तपेश्वरी देवी मंदिर के समीप) में एक विशाल धर्मशाला का निर्माण कराया है। इस परिवार के लोग कानपुर की मारवाड़ी संस्थाओं, धार्मिक, उत्सवों, राष्ट्रीय कार्यों आदि में सहस्रों रुपया प्रति वर्ष सहायता देते हैं। कानपुर के व्यापारिक समाज में भी इन लोगों की अच्छी प्रतिष्ठा है।

श्री नवल किशोर भरतिया

श्री नवल किशोरजी भरतिया एक स्वयं-निर्मित व्यक्ति हैं। आपने एक साधारण कोटि के स्कूल मास्टर के रूप में जीवन क्षेत्र में प्रवेश किया और अपनी प्रतिभा से एक बीमा कम्पनी के सफल संचालक बने।

आपके पिता सेठ भगवान दास मुरादाबाद जिले के अन्तर्गत चंदौसी के प्रतिष्ठित व्यक्ति थे तथा रूई, गल्ले और कपड़े के व्यवसाय में प्रवीण थे। चंदौसी में ही ४ दिसम्बर सन् १८९६ को श्री नवल किशोर भरतिया का जन्म हुआ। जब यह ८ वर्ष के थे तभी सन् १९०४ ई० में सेठ भगवान दास जी का ३५ वर्ष की युवावस्था में स्वर्गवास हो गया जिसके कारण व्यापार को बहुत धक्का पहुंचा।

नवलकिशोर जी का अध्ययन श्यामसुन्दर मेमोरियल स्कूल चंदौसी में हुआ जहां से आपने एस० एल० सी० की परीक्षा सन् १९१४ ई० में पास की। इसी समय आपका विवाह कलानौर

जिला रोहतक निवासी श्री महाराम जी की पुत्री से हुआ। आप आगरे के विख्यात् सेंटजान्स कालेज में इस वर्ष प्रविष्ट हुए। सन् १९१८ में बी० ए० की परीक्षा में अनुत्तीर्ण होने पर आपने कालेज छोड़ दिया और ए० बी० हाई स्कूल, अनूप शहर में शिक्षक के स्थान पर नौकरी कर ली और सन् १९२० में बी० ए० परीक्षा पास की। उसी वर्ष सेठ रामगोपाल जी की प्रेरणा से आप कानपुर नगर में आए और यहाँ के विभिन्न व्यवसाइयों के समीप जीविकोपार्जन करते रहे। सन् १९२६ में आपकी पत्नी का स्वर्गवास हो गया और आपने अपना पुनर्विवाह लुधियाना निवासी श्री बंसीलाल सिंघानिया की बाल विधवा सुपुत्री श्रीमती सुशीला देवी बागला से कर लिया।

इसी समय आपने योरोप से कल यंत्रों का आयात का व्यापार आरम्भ किया और नगर के सार्वजनिक जीवन में प्रमुख भाग लिया। आपने उस समय कांग्रेस के कार्यों में प्रमुख भाग लिया तथा सन् १९३० और ३२ में कारागार की दो बार यात्रा की परन्तु अभियोग चलने पर छूट गये।

आपने अपने आयात के कार्य के साथ ही बीमा का कार्य भी आरम्भ किया और कुछ प्रमुख विदेशी कम्पनियों का प्रतिनिधित्व किया। सन् १९३४ ई० में आपने 'दि फ्री इंडिया जनरल इंश्योरेंस कम्पनी लिमिटेड' की स्थापना की। आरम्भ में ही आप उसके प्रबंध निर्देशक निर्धारित किये गये। और तब

से १९५६ तक आप उसी कम्पनी की सेवा में रत रहे हैं। यही बीमा कम्पनी कानपुर में स्थापित हुई है अन्य समस्त कम्पनियां बाहर की हैं, यद्यपि अनेकों की शाखाएं यहां है।

सन् १९४६, ४७, और ४८ में तीन बार आपने योरोप और अमेरिका की विदेश यात्रा की है। आपके कान्तिकिशोर, आदित्य किशोर, भरत किशोर, आनन्द किशोर नामक चार पुत्र और विद्यावती, उषा और सुधा नामक तीन पुत्रियां हैं।

सेठ मँगतूराम जयपुरिया

श्री मंगतूराम जी का परिवार जयपुर रियासत के अन्तर्गत नवलगढ़ स्थान का रहने वाला है। ये लोग अपने स्थान में भी प्रसिद्ध लोगों में ही रहे हैं। मंगतूराम जी का जन्म सन् १९०० में हुआ था और बचपन से ही यह व्यापार में पड़ गये। ईश्वर की ऐसी कृपा हुई कि यह उन्नति ही करते चले गये। इस समय यह एक कुशल व्यापारी के साथ-साथ मिल मालिक, लेन-देन करने वाले, जमींदार और कानपुर की स्वदेशी काटन मिल्स कम्पनी लिमिटेड के चेयरमैन हैं। यह कई ज्वाइंट कम्पनियों के डाइरेक्टर और मैनेजिंग डाइरेक्टर हैं। ये कम्पनियां बनस्पति तेल की फेक्टरी, कोयले की खानें, दाल और चावल के कारखाने, रोलिंग मिल्स, मैका और चीनी मट्टी की खदानें, रेशम और नकली रेशम के मील, प्लास्टिक की फैक्टरी तथा रूई के मील आदि हैं। आप कलकत्ते के प्रसिद्ध जयपुरिया ब्रादर्स लिमिटेड के मैनेजिंग डाइरेक्टर तथा हिन्दुस्तान मर्के-

टाइल बैंक के डाइरेक्टर हैं। आप कलकत्ते तथा कानपुर के अनेक चेम्बरों के सदस्य हैं और इंडियन चेम्बर आफ कामर्स तथा इन्डियन शुगर मिल्स एसोसियेशन के भी सदस्य हैं। भारत सरकार ने उद्योग धन्धों के लिए जो केन्द्रीय सलाहकार समिति स्थापित की है, उसके आप सदस्य हैं।

संयुक्त प्रदेश सरकार ने जो राजकीय प्लानिंग बोर्ड बनाया है, उसके भी आप मेम्बर है। आप की सारी वर्तमान उन्नति का श्रेय आपकी व्यापार और प्रबन्ध कुशलता को हैं। अपने व्यापार को आगे बढ़ाने में आप किसी जमाने में दस-दस धोती के जोड़े अपने कंधे पर लाद कर अपने ग्राहकों की दूकान पर पहुंचाया करते थे। यह आपकी परिश्रमशीलता और निस्संकोच प्रवृत्ति का एक ज्वलंत उदाहरण है।

आपने अपने पिता की स्मृति में कलकते में आनन्दराम जयपुरिया कालेज और नवलगढ़ में आनन्दराम जयपुरिया आंख अस्पताल स्थापित किया है। आप शिक्षा संस्थाओं और धर्मार्थ कार्यों में मुक्तहस्त होकर दान देते रहते हैं तथा उनसे सम्पर्क बनाये रखते हैं। समाज सुधार के कार्यों में आप को सदा दिलचस्पी रहती है। आपके दो पुत्र श्री सीताराम और श्री राजाराम तथा एक पुत्री है। आपके कारबार में आपके पुत्रों के अतिरिक्त आपके भतीजे श्री बनवारी लाल तथा अनेक रिश्तेदार सहायक हैं। इस समय आप का स्थायी निवास स्थान कानपुर का "स्वदेशी हाउस" है।

लाला हरदत्तराय केजड़ीवाल

सेठ बिलासराय हरदत्तराय केजड़ीवाल परिवार के मालिकों का मूल निवास स्थान फतेहपुर (शेखावाटी) है। लगभग १०० साल पूर्व श्री बिलासराय जी बम्बई गये। वहाँ आप अपने बन्धु धमचन्द जी, मक्खनलाल जी और दानमल जी के साथ अफीम का व्यापार करने लगे। लाला धर्मचन्दजी का अफीम के व्यापार में बहुत बढ़ा-चढ़ा काम था और इस धन्धे में आपकी धाक मानी जाती थी।

बिलासराय जी बम्बई से कानपुर आगये और यहाँ "बिलासराय हरदत्तराय" के नाम से अपनी फर्म स्थापित की और शीघ्र ही यहाँ के व्यापारिक समाज में प्रधान और प्रभावशाली पुरुष बन गये। आपके यहां बारदाना, कपड़ा, सोना चाँदी आदि का व्यापार जोरों से होता था। आपकी व्यापारिक निगाह बारीक थी। सम्वत् १९६८ में आप का स्वर्गवास हो गया। आपके पुत्र हरदत्तराय जी ने सारा कारबार सम्हाल लिया।

श्री हरदत्तराय जी इस खानदान में बहुत प्रतापी तथा प्रतिष्ठा सम्पन्न पुरुष हुए। आपने प्राचीन व्यापार की वृद्धि के साथ साथ कानपुर में एक आयल मिल भी चालू किया। व्यापार में सम्पत्ति उपार्जित कर शिक्षा प्रचार व धार्मिक कामों में बड़ी-बड़ी रकमें आपने उदारता पूर्वक प्रदान कीं। आपने "सनातन धर्म कालेज कानपुर" को एक लाख रुपयों की सहायता प्रदान

कर उसे स्थापित करवाया। स्थानीय मारवाड़ी विद्यालय को आपने हाजीपुर (कानपुर) नामक एक गांव, दो मकान और कई हज़ार रुपये नकद प्रदान किये। कानपुर में एक मकान, जो जादूराम कम्पनी के नाम से मशहूर था, खरीद कर गौशाला को दिया। तीर्थ स्थानों में व देश में कुऐ बावड़ी तथा तालाब बनवाये। इसी प्रकार धार्मिक व शुभ कामों में आपने विपुल सम्पत्ति लगाई। आपकी उदारता से प्रसन्न होकर स्थानीय "सनातन धर्म कालेज" ने आप को दानवीर की पदवी देकर आपका सम्मान किया एवं मारवाड़ी विद्यालय न आपके तैल चित्र को उद्घाटित करके अपनी कृतज्ञता प्रदर्शित की। कानपुर के व्यवसायिक समाज में आप एक चमकते हुए व्यक्ति हो गये हैं। इस प्रकार प्रतिष्ठा पूर्वक जीवन विताते हुए आप सम्वत् १९८० में स्वर्गवासी हुए। आपके पुत्र बाबू रामनारायण जी विद्यमान है।

बाबू रामनारायण जी का जन्म सं० १९४४ में हुआ था। आप सनातन धर्म कालेज और मारवाड़ी विद्यालय आदि संस्थाओं के सदस्य हैं। बाबू रामनारायण जी की भी धार्मिक कार्यों में अच्छी रुचि है। इस समय आपके यहां चाँदी सोने का व्यापार होता है तथा आपकी एक आइल मिल भी है आप के राधाकृष्ण जी, गंगाप्रसाद जी, और हरिशंकर जी नामक ३ पुत्र हैं। इनमें राधाकृष्ण जी फर्म के व्यापार में भाग लेते हैं। इनकी शिक्षा श्री मारवाड़ी विद्यालय में हुई थी।

श्री मथुराप्रसाद मुन्नालाल

लगभग ६० वर्ष हुए तब लाला मथुराप्रसाद दोसर लखनऊ जिले के बख्तियार (संडीला) नामक ग्राम से कानपुर आये। यहाँ आकर पहले पहल उन्होंने नेशनल बैंक में रुपये परखने की नौकरी की। कुछ रुपया बचाकर उन्होंने बाजार से पैसे खरीदना और दुकानदारों के हाथ बेचना शुरू किया। इस प्रकार कुछ रुपया बचाकर उन्होंने कलक्टरगंज में गल्ले की आढ़त का काम चालू कर दिया और मथुराप्रसाद मुन्नालाल का फर्म स्थापित किया। श्री मथुराप्रसाद के तीन लड़के थे— १ श्री मुन्नालाल २ श्री भिखारीलाल, ३ श्री रेवतीराम। श्री मथुराप्रसाद की मृत्यु के पश्चात तीनों भाईयों में बटवारा हो गया और एक दुकान की तीन दुकानें हो गईं। मूल दुकान मथुराप्रसाद मुन्नालाल की गल्ले का ही काम करती रही तथा दूसरी दुकान मथुराप्रसाद रेवतीराम के नाम से स्थापित होकर कपड़े की बजाजी का कार्य करने लगी। तीसरी दुकान पर लेन-देन का काम नहर पार मथुराप्रसाद भिखारीलाल के नाम से होने लगा।

श्री मुन्नालाल के केवल लड़की हुई अतः उन्होंने अपनी सारी सम्पति, जो लगभग डेढ लाख रुपये की थी, अपने भतीजे श्री रेवतीराम के लड़के श्री केदारनाथ को वसीयत करके देदी। इन्होंने बजाजी की दुकान बन्द करके कलक्टरगंज में गल्ले का काम जोर शोर से आरम्भ कर दिया। श्री मथुराप्रसाद के दूसरे पुत्र श्री भिखारीलाल को वैराग्य सवार हुआ और इन्होंने

अपनी एक लाख की सारी सम्पति तथा मन्दिर आदि ईश्वरी पण्डित को दानकर दी और स्वयं साधू बनकर जीवन व्यतीत करते रहे।

श्री केदारनाथ अपने चार भाइयों में तीसरे थे। इनके दो बड़े भाई श्री रामचरन और श्री बदरी प्रसाद थे तथा इनसे छोटे श्री जगन्नाथ। किन्तु चारों में पैदाकरू श्री केदार नाथ ही थे। इन्होंने कई लाख रुपया उपार्जन किया। किन्तु चारों भाई सदा सम्मिलित रहे। श्री केदारनाथ और श्री जगन्नाथ ने कानपुर का सेन्ट्रल धर्मशाला बनवाया और श्री रामचरन तथा श्री बदरीप्रसाद लावल्द मर गये। श्री रामचरन को मरे लगभग ४० वर्ष हुए होंगे और श्री बदरीप्रसाद जब नहर किनारे बिजली स्टेशन के पास मन्दिर बनवा रहे थे, तब वहीं पर गिरकर समाप्त हो गये। यह सारा परिवार आज भी एक शामिल-शरीक खानदान है। सन १९५२ में श्री केदारनाथ जी नहीं रहे। इनके चार पुत्र हुए— १ श्री बाबूराम, २ हरनारायण, ३ श्री राधेश्याम, ४ श्री गंगाचरण। श्री बाबूराम भी बड़े रोजगारी थे और इनके जमाने में इस परिवार की कई दुकानें क़ायम हो गईं।

१-प्रेमनारायण हरनारायण, जिसमें घी का काम कलक्टरगंज में होता है और उसकी देखरेख श्री प्रेमनारायण करते हैं जो एक वर्किङ्ग पार्टनर हैं।

२—मातादीन बाबूराम नामक दुकान में गल्ले का काम होता है। श्री मातादीन एक साझीदार हैं।

३—श्री रामलाल के साझे में जगन्नाथ रामलाल के नाम से गल्ले का कारबार कलक्टरगंज में होता है

४—कैलाश बिहारी कृष्णलाल के नाम से किराने की दुकान सेन्ट्रल धर्मशाला में है।

५—इस परिवार की किराने की एक और दुकान कलक्टर गंज में भी है जिसमें बाबूराम मोतीलाल नाम पड़ता है। श्री मोतीलाल श्री गंगाचरण के लड़के का नाम हैं।

श्री कैलाशबिहारी और श्री श्यामविहारी श्री बाबूराम के लड़के हैं। श्री राधेश्याम के लड़कों के नाम पन्नालाल और हीरा-लाल हैं जो अभी विद्यार्थी हैं। एक वकालत पढ़ रहा है और दूसरा बी० ए० में है। श्री हरनारायण के कोई लड़का नहीं है। श्री जगन्नाथ के दो पुत्र श्यामसुन्दर और दिनेश हैं। श्री मथुरा-प्रसाद और श्री नन्हेमल गुप्त उर्फ नन्हू खलीफा के बुजुर्ग एक ही वंश के थे।

बाबू अयोध्याप्रसाद

स्थानीथ चौक ठठराही मुहल्ले में किसी समय फर्म फुन्दू-मल गंगाप्रसाद चोटी पर के व्यवसायियों में था। श्री बाबू अयोध्याप्रसाद जी इसी फर्म के स्वत्वाधिकारी हुए। आपके पूर्वज पंजाब से आकर यहाँ व्यवसाय करने लगे थे। श्री अयो-ध्याप्रसाद और बाबू देवीप्रसाद जी दोनों ही सहोदर भ्राता थे।

अपने समय में श्री बाबू अयोध्याप्रसाद नगर के अत्यन्त प्रभावशाली तथा प्रसिद्ध व्यक्ति थे। यद्यपि शिक्षा के नाते आप केवल मुड़िया ही जानते थे किन्तु ईश्वर प्रदत्त ग्राह्य शक्ति के बल पर उर्दू तथा अन्य भाषाओं में भी बिना पढ़े ही संगति के कारण आपकी गति थी। आप उनमें कही सुनी गई बात समझ लेते थे और उर्दू तो बहुत अच्छी तरह बोलते थे। बहुत से झगड़े झंझटों के फैसले अक्सर आप ही के द्वारा होते रहते थे। अतः सरकारी तौर पर नियुक्त होकर आप अनेक वर्ष आनरेरी मजिस्ट्रेट भी रहे।

आपका अस्तबल मालरोड पर था जिसमें सदैव ही अच्छे से अच्छे घोड़े बँधे रहते थे। आपका एक कोचवान टामी नामक अंगरेज था जो आपके बैठने की घोड़ागाड़ी हाँका करता था। एक बार कोई भारत के चोटी पर के अंगरेज अधिकारी महोदय पुराने ई० आई० आर० स्टेशन पर पधार रहे थे। शहर के सभी उच्चवर्गीय लोगों को उनसे हाथ मिलाने को स्टेशन पर बुलावा था। किन्तु स्टेशन से एक फर्लांग पहले ही सवारी से उतर कर पैदल चलने का प्रबन्ध पुलिस और फ़ौज कड़ाई के साथ पालन करवा रही थी। आपको यह बात स्वाभिमान के प्रतिकूल प्रतीत हुई। अतः आपने रुकने की जगह पर पहुँच कर अपने अंग्रेज कोचवान को हुक्म दिया कि वह आपकी घोड़ागाड़ी स्टेशन के पोर्टिको तक ले जाय। कोचवान ने उन तेज घोड़ों को चाबुक लगादी, पहरेदार चिल्लाते तथा दौड़ते ही रह गये और गाड़ी

स्टेशन पर जा लगी। इस कार्य से आपकी बड़ी प्रसिद्धि हुई। कहते हैं एक बार मुहर्रम और दशहरा एक ही तिथियों में पड़ने परझगड़े का अँदेशा था। किन्तु आपका हिन्दू मुसलमान दोनों ही पर ऐसा प्रभाव था कि आप अपनी घोड़ागाड़ी पर मूलगंज की सड़क के बीचों बीच खड़े हो गये तथा एक ओर दशहरे तथा दूसरी से मुहर्रम का जुलूस शांतिपूर्वक निकल गया। आप ही की चौक की गली में स्थित बैठक 'चमन' में सर्व प्रथम गुरु-नारायण खत्री स्कूल की नींव पड़ी तथा क्लास लगते रहे। आप अपने समय के प्रभावशाली, धनाढ्य, दानवीर तथा दबंग पुरुष थे एवं नगर की नाक कहे जाते थे।

आपका निधन भी एक दुखद कहानी है। एक घरेलू सज्जन ने ही मनमुटाव के कारण बीच-बाजार में आपका गुण्डों द्वारा अचानक अपमान करवाया। उसी समय आप अपनी बैठक में आकर लेट रहे। सरकारी अधिकारी जो मिलने आये उन्होंने बहुत जोर डाला कि आप इस अपमान के आयोजकों तथा कर्ताओं का नाम ले दें हम उन्हें कड़ी से कड़ी सजा देंगे। किन्तु आपने यही उत्तर दिया कि घर के लड़के ही।हैं, मैं क्या करूँ कैसे नाम ले दूँ। अन्त में हीरे की कनी चाट कर सन् १८९५ में जगत से अन्तर्ध्यान हो गए।

आपके छोटे भाई ला० देवीप्रसाद जी ने आपकी यादगार में स्थानीय स्मशान, भैरोंघाट में मुर्दों के जलाये जाने की जगह पर पक्का घाट बनवा दिया है। श्री देवीप्रसाद जी सन् १८०७ में

जन्म ग्रहण कर सन् १९१६ में स्वर्गवासी हुये। आपके एकमात्र पुत्र श्री कैलाशनाथ जी खन्ना (कैलाशो बाबू) भी अपने समय के अत्यन्त प्रसिद्ध, प्रभावशाली, सुशिक्षित, और दबंग नागरिक थे। आपके पुत्र श्री विश्वनाथ खन्ना (बसन्ती बाबू) भी बड़े मिलनसार, सदरुचि से पूर्ण साहित्यिक कार्यों में सहयोग देने वाले, सरल स्वभाव के युवक हैं।

लाला कृष्णगोपाल बेरीवाल

कानपुर के प्रसिद्ध व्यापारी लाला काशीराम के भाई लाला कृष्णगोपाल बेरीवाल मारवाड़ी समाज के एक प्रतिष्ठित व्यक्ति रहे हैं। काहू की कोठी में आपकी कपड़े की दुकान थी। आप बड़े शिक्षा प्रेमी थे। आपने अपने मूल निवास स्थान बेरी में अपने निजी व्यय से एक स्कूल स्थापित किया था। इनके बड़े पुत्र श्री ज्ञानीराम का जन्म सन १९०२ में हुआ था। यह कपड़े के व्यापार में कमीशन एजेन्ट हैं।

श्री मन्नीलाल

कानपुरके देहातोंमें भी बड़े-बड़े व्यापारी हुए हैं। उन्हींमें से श्री मन्नीलाल मैथा के रहने वाले और गल्ले के एक बड़े व्यापारी हैं। आप जमींदार और बेंकर भी हैं। आपकी जमींदारी तह-सील अकबरपुर, बिल्हौर और भोगनीपुर में है। आप ३०००) रु० माल गुजारी देते थे। अब चूंकि जिमींदारी समाप्त होगई है अतएव आपने गल्ले के व्यापार की ओर अधिक ध्यान देना शुरू कर दिया है। आप गांव के मुखिया और जूरर भी रहे हैं।

आपने मैथा में एक धर्मशाला बनवाया है।

श्री पन्नालाल शर्मा

आप झींझक के मशहूर वैद्य और "अपूर्व ताक़त की दवा" के आविष्कारक पं० लालमणि शर्मा के सुपुत्र हैं। आपका शुमार डेरापुर के बड़े व्यापारियों में है। आप झींझक टाउन एरिया के चेयरमैन रहे हैं और सन १९३५ में आपको अंग्रेज़ी सरकार से एक तमग़ा भी मिला है।

सैयद मन्जूर अली

आप कोयले के व्यापारी हैं। झरिया और कानपुर में आप की कोयले की दूकानें हैं। आपका जन्म सन १९०० में हुआ था। आप कानपुर म्युनिसिपल बोर्ड के मेम्बर भी रहे हैं। बोर्ड की मेम्बरी के ज़माने में आप बोर्ड की हेल्थ कमेटी के चेयरमैन रहे थे। आपको किराये की भी काफ़ी आमदनी है और मुस्लिम जनता पर आपका काफ़ी प्रभाव है। आपके तीन लड़के हैं।

श्री जीवनराम कन्हैयालाल

कानपुर में सन १८५७ के पहले की जो लोहे की दो-चार दूकानें हैं उनमें जीवनराम कन्हैयालाल भी एक है। कदाचित यह फर्म लगभग १५० वर्ष पुराना है। इनकी एक दुकान हरीसन रोड कलकत्ते में भी थी। ये लोग दोसर वैश्य हैं और इनके बुजुर्ग श्री भवानीदीन औसनापुर ज़िला हरदोई से कानपुर

आये। उस समय लोहे की दूकानें हटिया में थीं और वहीं इनकी दूकान भी खुली। भवानीदीन के लड़के का नाम जीवन-राम था। इनके चार लड़के हुए—केदारनाथ, कन्हैयालाल, नारायणदास और बाबूराम। केदारनाथ और बाबूराम के कोई लड़का नहीं हुआ। नारायणदास का एक लड़का श्रीभगवान लावल्द मर गया और दूसरे श्री राधेश्याम के तीन लड़के हुए—प्रभूदयाल, राजाराम और रामचरन। इसी प्रकार कन्हैयालाल के पुत्र लल्लूमल के चार लड़के हुए—हुकुमचन्द, घनश्यामदास, शिवकुमार और श्रीराम। इस परिवार के समस्त लोग लोहे का ही व्यापार करते रहे हैं और इस समय इन लोगों की चार दुकानें हैं—

१ पुरानी दुकान- जीवनराम कन्हैयालाल

२ देवीदयाल रामलखन

३ जीवनराम रामलखन

४ देवीदयाल एण्ड ब्रदर्स

सब लड़के-बच्चे लोहे के काम में ही जुटे रहते हैं और श्री देवीदयाल जी व्यापार की देखभाल करते हैं।

लाला नारायणदास दर्ज़ी

लाला नारायणदास कानपुर के एक कुशल व्यापारी हो गये हैं, जो रानी की गढ़ैया अर्थात वर्तमान तरकारी मण्डी में रहते थे। आपने अपना कारबार बहुत साधारण ढंगसे शुरू कियाथा। धीरे-धीरे आप एल्गिन मिल के एक मशहूर ठेकेदार हो गये और

वहाँ डेरे तम्बू की सप्लाई का काम करने लगे।

लगभग १०० वर्ष हुए तब लाला नारायणदास १५ वर्ष की उम्र में अपने पिता लाला खुशहालचन्द के साथ कन्नोज से कानपुर आये और रानी की गढ़ैया में रहने लगे। बाप बेटों ने मिलकर पल्टन में कमसरियट का ठेका लिया। थोड़े दिन के बाद एल्गिनमिल के टेन्ट डिपार्टमें काम शुरू किया अर्थात एक प्रकार से मिलको चालू किया। ७०–७१ वर्ष वहां काम करके सन १९३१ में मिल को छोड़ा। उनके साथ उनके पुत्र लाला भगवानदास व श्री मन्नीलाल काम करते थे। श्री भगवानदासने एल्गिन मिल से काम छोड़ कर बेविस कम्पनी में साझा करके काम शुरू किया। यह कम्पनी सन १८८६ में स्थापित हुई थी। पहली जर्मन लड़ाई में बाबू भगवानदास ने सप्लाई का काम किया और काफी धन कमाया। श्री मन्नीलाल सन् १९४७ तक एल्गिन मिल में टेन्ट और यूनीफार्म का ठेका लेते रहे। इसी बीच सन् १९४४ में लाला नारायणदास का ९८ साल की आयु में स्वर्गवास हो गया और सन १९४८ में बेविस कम्पनी बन्द हो गई। बाबू अयोध्याप्रसाद भार्गव उसके सम्पति लगाने वाले (फायनेन्सर) बने किन्तु लेबर ट्रबुल अर्थात् मजदूरों की कशमकश के कारण कम्पनी फिर बन्द हो गई जो आज तक बन्द है।

लाला नरायणदास ने सन् १९२८ में एक ठाकुरद्वारा बनाकर ठाकुर अवधबिहारी ट्रस्ट स्थापित किया और अपनी जमींदारी उसी ट्रस्ट के नाम वकफ़ कर दी। ट्रस्ट में उनके खानदान के

लोग रहे हैं। सन १९४५ में श्री भगवानदास का भी देहान्त हो गया। वह आनरेरी मजिस्ट्रेट और मेम्बर म्युनिसिपल बोर्ड थे। इन्होंने रायबहादुरी की पदवी भी प्राप्त की थी। ये लोग ६ भाई थे। श्री भगवानदास से छोटे श्री मन्नीलाल उर्फ रामदास इससमय ७६ वर्ष के हैं। यह क्राइस्टचर्च स्कूलके विद्यार्थी रहे हैं। तीसरे भाई श्री गयाप्रसाद उर्फ लल्ली बाबू का सन १९५२ में ६० साल की अवस्था में स्वर्गवास हो गया। चौथे भाई श्रीकन्हैयालाल का सन १९५० में देहान्त हो गया था। इन्होंने सिविल पाइलेट का इम्तिहान पास किया था और मृत्यु के समय ५० वर्ष के थे। पाँचवें भाई श्री दुर्गाप्रसाद विद्यमान हैं और ५० वर्ष की उम्र के हैं। सबसे छोटे और छठे भाई श्री द्वारिकाप्रसाद उर्फ श्री धन्नू बाबू की अवस्था इस समय ४६ वर्ष की है।

इस परिवार के समस्त मकान इन्कमटैक्स में अटैच हो गये हैं। कोई काम इस समय नहीं हो रहा है और सब लोग पुरानी सम्पत्ति खा रहे हैं।

श्री रामदास ने अपने पिता को काम में सहायता देने के कारण मिडिल अर्थात ८ वें दर्जे से पढ़ना छोड़ दिया था और बाबू भगवानदास व्यापार में पड़ने के कारण एन्ट्रेन्स पास कर के रह गये थे। सभी भाई क्राइस्ट चर्च स्कूल में पढ़े थे। श्रीराम-दास आज भी टेन्ट एडवाइजर हैं।

लाला नारायणदास के मन्दिर में रामनौमी और जन्माष्टमी पर गायकों के जलसे शुरू से आज तक होते आये हैं। अधिक

भीड़ के कारण इधर कई वर्षों से ये जलसे फूलबाग के हाल में बड़ी धूमधाम से होते हैं जिनमें बड़े बड़े गवैये बाहर से आते हैं। रामनौमी पर इनके यहाँ से चौपही निकलती है। सम्वत् १९९३ में स्वर्गीय लाला नारायणदासने बिठूर का पुल बनवाया। उत्तरी नोन पर मौजा सकरवा, तहसील बिल्हौर में और मौजा चिल्ली, तहसील घाटमपुर में भी इन्होंने पुल बनवाये हैं।

श्री मन्नालाल नारायण दास

कानपुर में गुड़वालों के नाम से जो दुकान प्रसिद्ध है, वह है श्री मन्नालाल नारायणदास की हूलागंज की दूकान। ये लोग ओमर वैश्य हैं। लगभग १२५ वर्ष हुए तब इनके पूर्वज लाला गिरधारीलाल कानपुर आये थे। इनके दोनों लड़के श्री मन्नालाल और श्री नारायणदास कानपुर ही में पैदा हुए। श्री गिरधारीलाल ने आरम्भ में परचून का काम किया और बाद मेंगुड़ की दुकान हूलागंज में स्थापित की और गुड़वालों के नाम से प्रख्यात हो गये। आज भी इनके यहाँ गुड़ का काम होता है। सन १६०० में मन्नालाल और नारायणदास का बटवारा हो गया। श्री मन्नालाल के दो लड़के श्री गुलज़ारीलाल और श्री दुर्गाप्रसाद हैं। फर्म दोनों का एक ही है। गुलजारीलाल के पुत्र अयोध्याप्रसाद हुए जिनके श्रीराम और सियाराम दो पुत्र हैं और गुलजारीलाल श्रीराम के नाम से गुड़ का काम करते हैं। श्री दुर्गाप्रसाद के दो पुत्र श्री मथुराप्रसाद और श्री विन्द्राप्रसाद

हैं। श्री मथुराप्रसाद के ४ पुत्र हैं और विन्द्राप्रसाद के पाँच। फर्म का नाम गुलजारीलाल दुर्गाप्रसाद पड़ता है जिसमें ये लोग पार्टनर हैं।

ला० पूरनचन्द

हटिया में पूरनचन्द परमेश्वरीदास नाम से विलायती कपड़े की दुकान उस मकान में थी जिसकी चौकी सब मकानों से ऊँची है। यह दुकान अपने समय में सबसे प्रसिद्ध दूकान थी। इसके मालिक लाला पूरनचन्द जी थे, जो कानपुर के एक रईस और कानपुर म्युनिसिपल बोर्ड के प्रारम्भिक मेम्बर थे। इनके यहाँ कई पुश्तों से बजाजी होती आई थी। इनके तृतीय और सब से छोटे पुत्र बाबू बिहारीलाल कानपुर म्युनिसिपल बोर्ड के नान अफिशियल चेयरमैन भी हुए थे।

लाला पूरनचन्द का स्वभाव बड़ा सरल था। आप बड़े स्पष्ट वक्ता और बात के धनी थे। लगी लिपटी बात कभी नहीं कहते थे। जो कुछ कहते थे सच्चे हृदय से कहते थे। इसीलिये लोगों पर उनकी बातों का प्रभाव पड़ता था और लोग उनकी बात मान लिया करते थे। वे अक्सर बाजार में छोटे-छोटे दूकानदारों के यहाँ शाम को जाया करते थे। उस जमाने में तहसीलदार दूकानों पर जा-जा कर इन्कमटैक्स बाँधा करते थे। लाला पूरनचन्द ऐसे मौकों पर छोटे दूकानदारों की बहुत मदद किया करते थे।

लाला पूरनचन्द की दूकान का काम उनके जेष्ठ पुत्र बाबू रामलाल उर्फ रम्मो बाबू के सिपुर्द था। रम्मो बाबू विलायती माल की डिज़ायन बनवाने और व्यापारियों को पटाने में बड़े कुशल थे। कपड़े के बड़े-बड़े दलाल उनकी व्यापार कुशलता के कायल थे। दिवाली के दिनों में इनके बराबर जुआ खेलने वाला भी कानपुर में कोई दूसरा न था। यह बड़े बेभरम खिलाड़ी थे। सुना जाता है कि इन्होंने जुए में कभी कोई दाँव बाद नहीं किया। इसी जुए की बदौलत ही रम्मो बाबू का अन्त भी गंगा में डूब कर हुआ।

श्री० शंकरलाल कानोडिया

श्री चुन्नीलाल के पुत्र श्री नौरंगराय जी रामगढ़ से कानपुर आये। इन्होंने श्री मंगलचन्द जी को गोद लिया। श्री मंगलचन्द जी श्रीनाथ शंकरनाथ की दुकान पर लाला गुटीराम जी के साथ मुनीमी करते थे। यह ब्याज लगाने में विशेषज्ञ समझे जाते थे। इन्होंने कालूराम जी के साझे में सं० १९४९ में नौरंगराय कालूराम नाम से दुकान की जिसे लाला कालूराम जी ही देखते थे।

इस फर्म की साझेदारी स० २००२ में नहीं रही और बड़ी सद्भावना से अलहदगी हो गई। श्री कालूराम जी के पुत्र श्री मन्नीलाल और श्री मंगलचन्द के पुत्र श्री शंकरलाल में आज भी पहले का सा प्रेम-भाव है। श्री मंगलचन्द के पुत्र लाला शंकरलाल का जन्म सम्वत १९६१ में कानपुर में हुआ।

श्री मंगलचन्द के नये फर्मों के नाम नौरंगराय मंगलचन्द और मंगलचन्द शंकरलाल पड़े। पहले में कपड़े की बिकवाली का काम होता है और दूसरे में आढ़त का। पहली दुकान काहूकोठी के पास है और दूसरी बिरहाना रोड पर। दोनों की देखभाल श्री शंकरलाल जी करते हैं। आप साहित्य-प्रेमी और धार्मिक प्रवृत्ति के सज्जन हैं। मन्दिरों के शृंगार आदि में आपको विशेष रुचि है। कला से भी आपको प्रेम और जानकारी है। आपके दत्तक पुत्र का नाम श्री श्यामलाल है। श्री शंकरलाल जी कुछ कविता भी लिख लेते हैं। अपने श्यामा के पागल होने पर आपने एक बड़ी दर्दभरी तुकबन्दी की है।

हाजी मोहम्मद हमजा

हमजा साहब चमड़े के एक प्रसिद्ध व्यापारी थे। आपका जन्म गाजीपुर जिले के नौनहरा स्थान पर सन् १८८२ में हुआ था। अपने बुजुर्गों के साथ वहाँ से आकर कानपुर के हीरामन पुरवा में बसे। जिस मकान में आप रहते थे उसका नाम 'दीन' था। सन् १९०० में आपने एन्ट्रेंस पास किया और कुछ दिन क्राइस्ट चर्च कालेज में पढ़े।

कुछ समय पी० पी० एन० स्कूल में मास्टरी करने के पश्चात आप हाफिज हलीम के चमड़े के कारवार में प्रवेश कर गये और अपनी व्यापार कुशलता के द्वारा चमड़े के काममें इतने जानकार हो गये कि स्वयं अपना कारवार करने लगे और थोड़े ही समय

में यू० पी० टैनरी तथा इण्डियन नेशनल टैनरी के मालिक होगये। आप विदेशों को भी चमड़ा भेजते थे।

व्यापार के साथ साथ आप सार्वजनिक जीवन में भी भाग लेते रहे। कानपुर के बलवों में आपने शान्ति-स्थापना में काफ़ी दिलचस्पी ली। आप कानपुर की 'अन्जुमने इस्लामियाँ' 'मुस्लिम यतीमख़ाना' 'हलीम कालेज' के सभापति थे और कानपुर म्युनिसिपल बोर्ड के तथा चेम्बर के मेम्बर भी रहे थे। आप सदा ग़रीबों और विधवाओं की मदद करते थे। मुस्लिम-यतीमख़ाने के लड़कों को खाना तो आप सदा ही दिया करते थे।

आपके तीन लड़के हैं और सब पढ़े लिखे हैं। सब से बड़े लड़के का नाम श्री बरकात है, दूसरे का नाम मोहम्मद नसीम और तीसरे का नाम मोहम्मद जमील है। आपके भाई श्री मोहम्मद याकूब एम० एल० ए० भी रहे हैं। जून सन् १९५६ में आपका स्वर्गवास होगया। आपके पुत्र आपका कारबार उनके जीवन में ही चलाने लगे थे और अब भी चला रहे हैं।

बाबू रामस्वरूप टण्डन

बाबू रामस्वरूप टण्डन के पूर्वज एक बहुत लम्बे अर्से से कन्नौज में रहते आये थे, किन्तु इधर ५-७ पीढ़ी से ये लोग लखनऊ आ बसे थे और लखनऊ से सन् '५७ के ग़दर के समय अन्य नागरिकों व व्यवसाइयों की भाँति इन्हें लखनऊ भी छोड़ना पड़ा और बाबू रामस्वरूप जी के बाबा श्री साँवलदास

व्यापारिक सफलता की आशा से कानपुर आये। इनके पिता जी का नाम दिब्बनलाल टण्डन था। दिब्बनलाल जी ने कानपुर में ठेकेदारी प्रारम्भ की और वर्तमान दलिहाई का ठेका बहुत दिनों तक उन्हीं के पास रहा था। सम्वत् १९९१ में चौक स्थित आगरे वाली गली के एक मकान में बाबू रामस्वरूप टण्डन का जन्म हुआ था। यह दो भाई थे। छोटे भाई का नाम श्री काशीनाथ टण्डन है जो अब सन् २७ के समय में की गई कपड़े की दूकान रामस्वरूप काशीनाथ का कारबार देखते हैं। रामस्वरूप जी को लड़कपन से ही एकान्त अधिक प्रिय था। स्वभाव से ही यह निडर, साहसी तथा आत्म सम्मानी थे। यह माता के परमभक्त थे और अपने जीवन में जहाँ तक इनसे बन पड़ा इसे इन्होंने अच्छी तरह से निभाया भी। बाल्यकाल में टण्डन जी की शिक्षा करीमा तथा मामकीमाँ से एक मौलवी साहब ने प्रारम्भ कराई, बाद को उर्दू तथा फ़ारसी का ज्ञान घर पर ही साधारण तौर से हो जाने के बाद इन्हें गवर्नमेण्ट स्कूल में भर्ती कराया गया। फिर आपने क्राइस्ट चर्च कालेज में [illegible] पढ़ा किन्तु यह सब पढ़ लिख चुकने के बाद भी रामस्वरूप जी ने कहीं नौकरी चाकरी की फ़िकर नहीं की। विद्या का काफ़ी बड़ा भण्डार उनके पल्ले पड़ चुका था। उर्दू और फ़ारसी तो प्रारम्भिक शिक्षा के साथ ही इन्हें मिल गई थी अतः कालेज तक पहुँचते पहुँचते उर्दू और फ़ारसी के अच्छे विद्वान् हो चुके थे। शेख़ सादी के ग्रन्थ इन्हें प्रिय थे और एक प्रकार से शेख़ सादी के विचारों की छाप बहुत कुछ इन पर पड़ चुकी थी। हिंदी के भी

आप अच्छे विद्वान् थे और आपके लिखे हुए गद्य और पद्य दोनों मिलाकर क़रीब १०,००० पन्ने हस्त-लिखित अब भी इनके कनिष्ठ भ्राता श्री काशीनाथ जी के पास सुरक्षित हैं। खेद है कि अब तक उनके प्रकाशन की कोई व्यवस्था नहीं हो सकी। हां, एक उपन्यास सन् १९१८ में टण्डन जी का उन्हीं के प्रयत्नों से प्रकाशित हो सका था यह उपन्यास दो भागों में है। जिस समय यह प्रकाशित हुआ था उस समय टण्डन जी की अवस्था १९ साल की थी।

रामस्वरूप जी जिस समय दस साल के लगभग थे उस समय एक दफे उनके छोटे भाई को ५०-६० बन्दरों ने घेर लिया यह अपने भाई को बहुत चाहते थे अस्तु बचाने के लिए कूद पड़े, नतीजा यह हुआ कि बन्दरों ने उन्हें खूब नोचा। अन्याय से उन्हें चिढ़ थी। सन् ३५ के लगभग स्थानीय कपड़ा कमेटी के रायसाहब गोपीनाथ जी सभापति थे और बाबू बुद्धूलाल जी मेहरोत्रा मन्त्री। उन्हीं दिनों कपड़ा कमेटी ने बजाय एक महीने की मुद्दत के १३ दिन की मुद्दत करदी। टण्डन जी को यह सहन नहीं हुआ और फुटकर के दूकानदारों के हित की रक्षा के लिए तुरन्त ही कटिबद्ध होगए और कपड़ा-कमेटी से डट कर मोर्चा लिया। एक महीने तक बजाजे वालों ने कोई रक़म थोक वालों को नहीं चुकाई और बराबर ब्याज देते रहे। इन्हीं दिनों एक पर्चा टण्डन जी का लिखा हुआ 'धर्मराज दलदल में' इन्होंने कमेटी के अधिकारियों के विरुद्ध निकला था।

खन्ना प्रेस के श्री गोबर्धनदास खन्ना ही टण्डन जी के एकमात्र मित्र थे। बाकी वह बहुत लोगों से मिलना जुलना अधिक पसन्द नहीं करते थे। दुःख है कि सन् ४४ के मई महीने में ५१ साल की अवस्था समाप्त कर बाबू रामस्वरूप जी टण्डन गो-लोक वासी होगये। टंडन जी का एकमात्र पुत्र चि० उमंगकुमार उनकी स्मृति के रूप में परमात्मा की कृपा से जीवित है।

कुछ बङ्गाली व्यापारी

कानपुर के व्यापार और उद्योग में कुछ बङ्गाली-बन्धु भी लगे रहे हैं। इनमें से कुछ का संक्षिप्त हाल यह है :—

१—श्री पृथ्वीशचन्द्र मजूमदार महाशय की एक लिमिटेड कम्पनी है जो मिल स्टोर सप्लाई करने का व्यापार करती है। साथ ही मजूमदार कम्पनी रबड़ की चादरें, वाटरप्रूफ और फ़ीतों पर नाम काढ़ने आदि का कारबार भी करती है। इस कम्पनी का मुख्य दफ्तर तिलकनगर, कानपुर में है और शाखा कैनिङ्ग-स्ट्रीट, कलकत्ता में है। श्री मजूमदार अपने व्यापार की लाइन में विशेषज्ञ हैं। उन्होंने इस विषय की शिक्षा जापान में प्राप्त की थी। उन्होंने अपने व्यापार के सिलसिले में जर्मनी की विशेष रूप से और यूरोपीय महाद्वीप की साधारण रूप से यात्रा की है। आपका कानपुर की कुछ बङ्गाली संस्थाओं से सम्पर्क है।

२—श्री परेशचन्द्र घोष महात्मा गाँधी रोड पर स्थित "एस० एस० टी० एण्ड कम्पनी" के मालिक हैं। आप कानपुर में मोटर

के पुर्ज़े बेचने वाले पुराने व्यापारियों में से हैं, आप बर्मा-शेल ट्राल का भी व्यापार करते हैं। परेट पर आपका एक पेट्रोल-टैङ्क भी है, जिसके द्वारा मोटरकारों को पेट्रोल दिया जाता है।

३—श्री हरे कृष्ण भौमिक "रूबी उद्योग" कारबार के प्रबन्धक भागीदार हैं। यह फर्म सरकारी ठेकेदार है और राज्य तथा केन्द्रीय सरकारों को फ़ौजी जूते तथा अन्य फ़ौजी सामान देता रहता है। भौमिक महाशय पहले "नाथ बैङ्क लिमिटेड की मेस्टन रोड शाखा के मैनेजर थे।

४—श्री जे० सी० राय "बङ्गाल लेम्पस" के कानपुर में एक मात्र वितरक हैं आपकी दुकान बिरहाना रोड पर है।

५—श्री अरुणसेन सब प्रकार की चमड़े की वस्तुओं के निर्माता हैं किंतु जूते बनाना आपकी विशेषता है। आपके कारखाने का नाम "एक्मो आद्योगिक निगम" है। श्रीसेन पहले उत्तर प्रदेशीय सरकार के 'फूड-आफिसर' थे। अब आप सरकार के चमड़े की वस्तुओं के ठेकेदार हैं। चमड़े के साथ साथ आप सूती तथा ऊनी कपड़े का और स्याही तथा ब्रुश आदि का भी व्यापार करते रहते हैं। आप प्रथम श्रेणी के व्यापारिक स्नातक हैं और एक उत्साही सामाजिक कार्यकर्ता हैं। आपकी विचारधारा टैगोर स्कूल की है। आप कानपुर की कई सांस्कृतिक संस्थाओं से सम्बन्धित हैं। आप कानपुर की ब्रह्मो समाजशाखा के मन्त्री हैं। आप अंग्रेजीं और हिन्दी के लेखक भी हैं। साथ ही आप बङ्गाली भाषा के प्रसिद्ध कवि [illegible]। आपकी [illegible]-

पुस्तकें 'दाग' 'उतरोल' आदि का जिक्र बड़ी प्रतिष्ठा के साथ किया जाता है। मई १९५६ में होने वाली बुद्ध की २५०० वीं जन्म शताब्दी के मन्त्री की हैसियत से आपने बड़ी लगन से काम किया था। आप बड़े सज्जन हैं।

गृह और कुटीर उद्योग

एक ओर कानपुर नगर में पिछले पचास-साठ वर्षों में शक्ति-संचालित उद्योग-धन्धों की काफ़ी वृद्धि हुई है, तो दूसरी ओर कुछ हस्त-संचालित उद्योग भी शहर और जिले में चालू हैं।

कानपुर कांग्रेस (१९२५) के समय महात्मा गाँधी जी ने जिले के कुछ बड़े ज़मीदारों के एक शिष्ट-मण्डल से बात-चीत करते हुए कहा था कि मैं स्वदेशी की ऐसी व्यवस्था करने वाला हूँ कि जिससे इस देश में १ करोड़ आदमियों को मैं काम दे सकूं। स्वदेशी का अर्थ पहिले समझा जाता था "अपने देश की बनी हुई वस्तु" चाहे उसका उत्पादन किसी भी प्रकार होता हो और उसका लाभ देशी या विदेशी पूंजीपति को ही मिलता हो। महात्मा गाँधी जी ने स्वदेशी की एक नई कल्पना हमें दी जिसका अर्थ यह है कि अपने पास पड़ोस से उत्पन्न होने वाले या प्राप्त पदार्थों और श्रम-शक्ति से जिस वस्तु का निर्माण हो और जिसका लाभ उत्पादक या ग़रीब श्रम-जीवी को मिले, जहाँ प्राय: उत्पादक और उपभोक्ता एक हों, अर्थात् व्यक्ति या परिवार अपने उपभोग के लिए स्वयम् उत्पादन करले, और पूंजीपतियों अथवा मध्यवर्ती लोगों द्वारा जहां शोषण न हो, वही सच्ची स्वदेशी है। इसमें हमारे गाँवों की जो श्रम-शक्ति बेकार होजाती है और जो पदार्थ बेकार होजाते हैं उनका उपयोग होजाता है। आने जाने का खर्च और मध्यवर्ती मुनाफ़ा बच जाता है। फलत:

गाँव में हाथ-उद्योगों की बनी चीज़ शहर के केन्द्रित उद्योगों के मुक़ाबिले में ठहरती है।

उदाहरण के लिये कानपुर में बड़ी बड़ी कपड़े की मिलें स्थापित हो जाने के बाद भी इस ज़िले के अनेक गाँवों और बहु-संख्यक परिवारों चर्ख़ा चालू रहा और वे अपनी आवश्यकता का मोटा क ड़ा घर में कते सूत का बनवा लेते रहे। स्वभाव से अध्यवसायी कुर्मी महिलायें तो परिवार की ७०% आवश्यकता का कपड़ा अपने चरखे के सूत का ही बुनवा लेती थीं। उनके यहाँ न केवल बिछावन किन्तु तम्बू शामियाने भी घर के सूत के बनवाये जाते थे। यह व्यवस्था उन्नीसवीं शताब्दी में और बीसवीं शताब्दी के चतुर्थांश तक चालू रही। परन्तु पिछले बीस पचीस वर्षों में काफ़ी क्षीण होगई है। यह ह्रास औद्योगिक या सामाजिक कारणों से नहीं किंतु कृषि सम्बंधी कारणों से हुआ है, जिनका अभी तक ठीक निदान नहीं हो सका है। कपास की उपज इस ज़िले की भूमि में कम होने लगी। परिणाम स्वरूप किसान कपास की खेती छोड़ने लगा और वे फ़सलें जिनमें अधिक उपज होती थी और पैसा भी मिलता था (Cash Crops) जैसे गन्ना, धान आदि की काश्त इस ज़िले में बढ़ती गई। अर्थात् ग्रामों की स्वावलम्बी अर्थ व्यवस्था व्यापारी अर्थ व्यवस्था में परिणत होने लगी। आज कानपुर जिले में कुछ रचनात्मक संस्थायें काम कर रही हैं जिनका संक्षिप्त हाल इस प्रकार है:—

ग्रामीण उद्योग धन्धे

[१] टोकरी बनाने का उद्योग

अरहर की लकड़ी से बने हुए विभिन्न प्रकार के बर्तन देहातों में किसानों की आवश्यकताओं की पूर्ति करते हैं। जिन प्रान्तों में बाँस अधिक पाया जाता है वहाँ पर बाँस की टोकरी बनाई जाती है। इसके अतिरिक्त अरहर की टोकरी, अनाज भरने के बड़े बड़े झाल आदि बनाये जाते हैं। यह उद्योग साल भर जीविका नहीं दे पाता है बल्कि गाँवों के बेकार दिनों में काम दे देता है। यद्यपि यह उद्योग प्रत्येक गाँव में कुछ न कुछ हुआ ही करता है, परन्तु तहसील देरापुर में भन्देमक गढ़िया और वीसलपुर में कई परिवारों ने इस धन्धे को पेशे के रूप में अपना लिया है। जून से लेकर अगस्त तक सम्पूर्ण परिवार इसी में लगा रहता है और निम्नस्तर पर अपना जीवन निर्वाह कर लेता है। बीसलपुर के एक परिवार ने जिसमें ७ सदस्य हैं इसी को अपने सम्पूर्ण जीवन का साधन बना रखा है। यह उद्योग प्रत्येक गाँव में दो ती परिवारों को खाना दे सकता है।

[२] तेल घानी

तेल घानी एक ऐसा ग्रामीण उद्योग है जो कि प्रत्येक गाँव में एक या दो परिवारों को खाना दे सकता है। वैसे तो प्रत्येक गाँव में एक या दो तेलघानियाँ हुआ ही करती हैं किंतु संदलपुर में तेलियों के ६ परिवार तेलघानी के आधार पर अपनी जीविका

प्राप्त करते हैं। ये लोग अपना कारबार दो प्रकार से करते हैं :-

(१) स्वयम् तिलहन खरीद कर तेल निकाल कर बेचते हैं।

(२) किसानों का तिलहन लेकर मजदूरी के आधार पर तेल निकाल देते हैं।

[३] दरी बनाने का काम

पुरानी रुई का सूत निकाल कर बम्हैला, नुनारी, इरौंख के एक एक या दो दो परिवार इस काम में लगे हुए हैं।

[४] चमड़े का गृह उद्योग

जानवर मनुष्य के अभिन्न साथी हैं, जीवन में तो उपयोगी होते ही हैं परन्तु मरने पर भी सैकड़ों मनुष्यों को जीवन-दान देते हैं। हमारा जिला चमड़े के उद्योग में विशेष स्थान रखता है वैसे तो कच्चा चमड़ा बहुत कुछ शहर चला आता है। कानपुर जिले में कच्चे चमड़े का सबसे बड़ा बाजार पुखरायाँ है। यहाँ चमड़ा पकाने की राजकीय सहकारी समिति और जूते बनाने का बड़ा उद्योग भी है। ऐसे ही अन्य प्रसिद्ध केन्द्र सन्दलपुर, कैंजरी, पल्हनापुर, कैंधा और मावर आदि हैं। सन्दलपुर परगना देरापुर में स्थित है। यहाँ पर चमड़े के जूते बनाने वालों का एक अलग मुहल्ला है। सन्दलपुर में १२ परिवार इस कार्य को करते हैं। परिवारों की कुल जन-संख्या १०५ है (ग्राम पंचायत के आधार पर)। सन्दलपुर में दो प्रकार के जूते बनाये जाते हैं। मोटे चमड़े के और कुरुम से भी। तीन परिवार कुरुम के अच्छे और मजबूत बूट, न्यूकट तथा चप्पल बनाते हैं। इन परिवारों

की औसतन आमदनी ५०) प्रति माह प्रति कार्यकर्ता आँकी गई है। इन परिवारों के सदस्यों की संख्या १७ है जिसमें १० काम करने वाले हैं और अन्य छोटे बच्चे हैं। स्त्री पुरुष सभी काम करते हैं। एक दिन में एक आदमी एक जोड़ा जूता तैयार करता है जिसकी क़ीमत १०) से १५) तक होती है। और लागत भी ८) और १२) के बीच में होती है। इस प्रकार प्रति आदमी को दो रुपये से तीन रुपये तक लाभ मिल जाता है। ये लोग कुरुम को शहर कानपुर से ख़रीद कर ले जाते हैं।

सादे जूते बनाने में ६ परिवार काम करते हैं। चमड़ा देहातों से मिल जाता है। चमड़े को बनाने का काम मौजा मुखबेलपुर में होता है। इन परिवारों में आठ आदमी दक्ष कारीगर हैं और बाकी उनके सहायक हैं। प्रत्येक जूते की लागत में १) का लाभ तो हर हालत में मिल जाता है। जूते के उद्योग में ८ वर्ष के बच्चे से लेकर ६० वर्ष के बूढ़े तक सभी काम में लगे रहते हैं औरतें भी सहयोग देती हैं। सन्दलपुर जूते के लिये प्रसिद्ध है। जूते साफ़ और मजबूत बनाये जाते हैं। यहाँ के मोचियों का जीवन आर्थिक स्थिति से सुखमय ही कहा जा सकता है। ये लोग सब के सब बाहरी हैं और कभी कभी इनको शहरी प्रलोभन खींच ले जाता है जिससे कभी कभी इस उद्योग में धक्का पहुँच जाता है।

कानपुर तहसील में कैंधा और पुखरायाँ तहसील में माऊर भी चमड़ा उद्योग के बहुत अच्छे केन्द्र हैं।

[५] गजी और गाढ़े का उद्योग

देरापुर तहसील के अन्तर्गत मौजा कौंस में कोरियों के आठ परिवार अपने जीवन का निर्वाह केवल गजी बुन कर करते थे। परन्तु सन् १९४४ से सूत की कमी के कारण तथा मील के कपड़ों की ओर अधिक सम्मान होने के कारण इस ओर से लोगों ने अपना हाथ खींच लिया। अभी हाल के पर्यवेक्षण के आधार पर कौंस मौज़े में ४ परिवार जिनमें २९ सदस्य हैं, जीवन का अधिकाँश निर्वाह गजी बुन कर ही करते हैं। ये लोग ज़ाति के कोरी हैं। ये लोग मील के सूत से कपड़ा तैयार करते हैं। कपड़े का बाज़ार सन्दलपुर है जो कि सप्ताह में दो दिन लगता है। गजी बुनने का दूसरा केन्द्र डिलवल है। यह खानपुर के पास में स्थित है। डिलवल कुछ समय पहले गाढ़े के लिये प्रसिद्ध स्थान था परन्तु अब यहाँ की परिस्थिति अच्छी नहीं है। केवल दो परिबार गजी को बुनने का काम करते हैं। इन दो परिवारों में ११ सदस्य हैं जिनमें केवल ३ आदमी ही इस काम को करते हैं और बाकी खेती तथा व्यापार करते हैं मनकापुर तथा हिम्मावा में भी दो तीन परिवार ठेके पर काम करते हैं ये लोग केवल बुनाई का ही खर्चा लेते हैं, सूत स्वयं नहीं खरीदते हैं। मालिक अपना सूत दे देता है और ये दो आना से तीन आना प्रति गज के हिसाब से बुनाई लेते हैं। मनकापुर में केवल एक परिवार इस कार्य को पीढ़ियों से करता आरहा है। किन्तु एक साल से उसके कार्य में कुछ ढिलाई होगई है। आजकल की परिस्थिति में कोई भी बुनकर परिवार पूर्णतया

इस पर आधारित नहीं है क्योंकि मिल का कपड़ा सस्ता पड़ता है तथा साफ़ होता है। इसके अलावा कपास की पैदावार का लोप हो जाना भी इस ह्रास का प्रमुख कारण है। कौंस मौजा के परिवारों की आर्थिक स्थिति विशेष अच्छी नहीं है। एक परिवार १८ गज का थान ५ दिन में बुन कर तैयार करता है। बुनने में दो दिन तक तो तीन आदमियों का होना अति आवश्यक है इसके बाद दो आदमी। इस प्रकार १२ आदमी एक थान १८ गज का बुनते हैं। सूत का दाम १२) से १४) रु० तक होता है। सूत को कानपुर से ले जाया जाता है, पैसे की कमी के कारण एक साथ अधिक सूत तो खरीदा नहीं जा सकता है इसलिये आने जाने के किराये का भार भी सूत पर पड़ता है। इस प्रकार १८ गज का थान २६) से लेकर ३१) रु० तक पड़ता है जिसे मंहगा होने के कारण लोग लेना पसन्द नहीं करते। यही कारण है कि गाँवों का यह उद्योग समाप्त होता चला जा रहा है।

[६] मूंज की रस्सी और सूप

मूंज से रस्सी तो प्रत्येक गाँव का आदमी बनाता है परन्तु मौजा हवासपुर के अन्तर्गत कुछ मल्लाह परिवार रहते हैं वे लोग बेकार समय में मूंज की रस्सियाँ बनाकर सन्दलपुर में बेचने आते हैं जिससे उन लोगों को अपने दैनिक जीवन की वस्तुओं के लिये पैसे मिल जाते हैं परन्तु इस उद्योग से कोई भी परिवार अपना सीधा सम्बन्ध नहीं रखता है।

मूंज के डण्ठलों के सूप बनते हैं। इस उद्योग से मुखवेलपुर ग्राम के दो परिवार अपना सीधा सम्बन्ध रखते हैं। ये लोग सूपों को बनाकर बाजार में तो बेचते ही हैं, इसके अलावा आस पास घर घर घूम घूम कर भी बेचते हैं जिससे इन लोगों को सूप के बदले में नाज मिल जाता है।

[७] सूत की रस्सी और टाट का उद्योग

मौजा नुनारी तथा परौंख इसके केन्द्र हैं।

गाँवों में औद्योगिक शिक्षण

ग्राम उद्योगों के प्रसार और उत्थान के लिए कई संस्थायें कानपुर जिले में काम कर रही हैं। सरकार की ओर से भी कई प्रशिक्षण कक्षायें स्थापित हैं।

जिले की औद्योगिक शिक्षण कक्षायें ये हैं :-

(१) दरी बिनाई कक्षा बाबूपुरवा कानपुर।
(२) सिलाई कक्षा बिल्हौर।
(३) तेल पिराई, एच० बी० टेकनालाजिकल इन्स्टीट्यूट कानपुर
(४) बढ़ईगीरी कक्षा गोबिंदनगर।
(५) सिलाई कक्षा गोबिंदनगर।

उपरोक्त कक्षाओं का कार्य-विवरण

(१) दरी बिनाई कक्षा बाबूपुरवा।

इस कक्षा का आरम्भ सन् १९५३ में हुआ था। २ वर्ष के

अन्दर इस कक्षा के द्वारा १६ व्यक्तियों को दरी बिनाई की शिक्षा दी गई और वे अपना व्यापार करने लगे। शिक्षण क्लास के साथ साथ यह एक बड़ा उत्पत्ति केन्द्र भी बन गया जिसने पुलिस दरियों के निर्माण में विशेषता प्राप्त कर ली है। सन ५५-५६ में दरियों का उत्पादन ६७६६-)। हुआ था।

(२) सिलाई शिक्षण क्लास बिल्हौर।

यह क्लास सन् १९४९ में प्रारम्भ की गई थी। अब तक ७० व्यक्तियों को सिलाई की शिक्षा दी जा चुकी है और अब उनकी एक सहकारी समिति निर्मित कर दी गई है जिसे राज्य सरकार से कर्ज और अनुदान प्राप्त करने की सुविधायें भी हैं। यह कक्षा अब एक अच्छा उत्पादन केन्द्र है जिसने पुलिस वर्दियों बनाने में विशेषता प्राप्त की है। पुराने शिक्षित व्यक्तियों को उत्पादन कार्य में वैतनिक नियुक्त करके यह क्लास उनके लिये विशेष सहायक हुआ है।

(३) तेल पिराई एच० बी० टेकनालाजिकल इन्स्टीट्यूट कानपुर

यह क्लास सन् १९५१-५२ में प्रारम्भ किया गया था। इस समय यह क्लास सरसों और अन्य खाद्य तेलों को उचित मूल्य पर प्रदान करने के निमित्त एक उत्पादन केन्द्र की तरह कार्य कर रहा है।

(४) बढ़ईगीरी शिक्षण क्लास गोबिंदनगर।

इस क्लास का आरम्भ शरणार्थियों की सहायतार्थ गोबिंदनगर में ता० १-५-५० को हुआ था। यह क्लास व्यापारिक

स्तर पर चल रहा है जहाँ पर न केवल सरकारी विभाग के लिये बढ़ईगीरी के औजारों की पूर्ति करता है वरन् स्टोर परचेज विभाग के फर्नीचर व अन्य वस्तुओं की भी पूर्ति करता है। सन् ५५-५६ का उत्पादन १६०६२॥।) का हुआ।

(५) सिलाई शिक्षण क्लास गोबिंदनगर।

इस क्लास का आरम्भ उस क्षेत्र की शरणार्थी महिलाओं की सहायतार्थ १-४-५३ को हुआ था। यह शिक्षण क्लास भी एक उत्पत्ति केन्द्र बन गया है और इसे पुलिस तथा सरकारी वर्दियाँ बनाने में विशेषता प्राप्त है।

नगर के लघु उद्योग

कानपुर नगर विशाल उद्योगों का नगर है। यह तो पूर्व दिये हुये वृत्ताँत और उद्योगों के विवरण से प्रगट ही है। परन्तु यह अनुमान अभी बहुत कम लोगों को है कि कानपुर शहर छोटे उद्योगों का भी एक केन्द्र है। यहाँ चमड़े का काम और दरी बुनने का काम हजारों कारीगर विकेन्द्रित रूप में करते हैं। गृह उद्योग आगरा के बाद हमारे प्रदेश में सब से अधिक कानपुर शहर में चालू हैं। बेंत का बहुत काम कानपुर में बनता है और बिना किसी सरकारी सहायता के भी बास्केट, टोकरी आदि अनेक सुन्दर वस्तुयें हजारों रुपये की यहाँ बनाई और बेची जाती हैं। खजूर की चटाई, सिरकी का सामान और मूंज के मोढ़े आदि हाथ से बनाने वाले कारीगर शहर में काम करते

है। यह इसी से प्रकट है कि चटाई मुहाल, सिरकी मुहाल और मोढ़ाटोली आदि उनके अपने मुहल्ले विख्यात हैं। सरेश, सींग और टीन का काम भी यहाँ काफ़ी होता है और कई नये उद्योग तो देश के विभाजन के पश्चात् पञ्जाब के पुरुषार्थी लोगों के यहाँ बस जाने से चालू होगये हैं। अल्यूमीनियम की चीज़ें और रबर के खिलौने सैकड़ों घरों में बनने लगे हैं। खेतों के औज़ार आदि बनाने वाले लोहे के कारखानों में वृद्धि हुई है; तथा साइकिल के पुर्ज़े और साइकिलें बनने का उद्योग तो जालन्धर के बाद सब से अधिक कानपुर में ही बढ़ा है। बहुत संक्षेप में यह कानपुर नगर के कुटीर और लघु उद्योगों का विवरण है। द्वितीय पंचवर्षीय योजना के अन्तर्गत औद्योगिक स्थान Industrial Estate सरकार एक कानपुर में, दूसरा आगरा में स्थापित करने जारही है जहाँ अनेक लघु उद्योगों की स्थापना सरकार करेगी। उनके लिए सस्ते दर पर स्थान, विद्युत् शक्ति, सामूहिक सेवायें और सुविधायें सरकार देगी।

दूसरे भाग के संरक्षक

निम्नलिखित सज्जनों ने कानपुर इतिहास समिति के संरक्षक बनकर और प्रत्येक ने १०१) रुपया देकर समिति की बड़ी सहायता की है और कानपुर के इतिहास के इस दूसरे भाग को प्रकाशित करने के लिए समिति को प्रोत्साहित किया है, जिसके लिए उन्हें अनेक धन्यवाद :—

१. श्री रामनारायण जी खजाञ्ची
२. ,, गिल्लूमल जी बजाज
३. ,, सिद्धगोपाल जी कपूर
४. ,, राजाराम जी दलाल
५. ,, सर जे० पी० श्रीवास्तव (स्वर्गीय)
६. ,, विनोदकुमार पोद्दार एण्ड कम्पनी
७. ,, दुर्गाशङ्कर जी दीक्षित
८. ,, रामलुभाया जी अरोड़ा
९. ,, द्वारिकाप्रसाद सिंह (स्वर्गीय)
१०. ,, मन्नीलाल जी भरतिया
११. ,, रामकृष्ण जी गुप्त
१२. ,, सखाराम जी भसीन
१३. ,, जयनारायण जी टण्डन
१४. ,, हरीशंकर जी बागला
१५. ,, देवशर्मा जी
१६. ,, सोहनलाल जी सिंघानिया

१७. श्री प्रभूदयाल वैजनाथ
१८. „ मोहम्मदहफ़ीज़ मोहम्मदनजीर
१६. „ जीवनराम रामकृष्ण
२०. „ बद्रीदास प्यारेलाल
२१. „ श्याममनोहर चन्द्रिकाप्रसाद
२२. „ नागेश्वरप्रसाद जी
२३. „ पुरुषोत्तमदास बनारसीदास
२४. „ हरबिलासराय जी
२५. „ लक्ष्मीनारायण जी खन्ना
२६. „ शहज़ादेप्रसाद जी श्रीवास्तव
२७. „ मुर्लीधर जी वर्मा (स्वर्गीय)
२८. „ नित्यानन्द देवकीनन्दन
२६. „ चुन्नीलाल पुरुषोत्तमदास
३०. „ काशीराम कन्हैयालाल
३१. „ के० जी० ठाकुरदास
३२. „ मोतीचन्द जी
३३. „ कमलापत मोतीलाल
३४. „ बाबूलाल जी मिश्र
३५. „ पन्नालाल दुर्गाप्रसाद
३६. „ दुर्गाप्रसाद जी जैन
३७. „ पुरुषोत्तमदास जी सिंघानिया
३८. „ चिरंजीलाल जी नेवटिया
३६. „ सीताराम जी अरोड़ा

४०. श्री लच्छीराम शिवचरणलाल
४१. ,, गोपीकृष्ण जी गुप्त
४२. ,, सर पदमपत सिंघानिया
४३. ,, रामदास जी गुप्त
४४. ,, मोहम्मद समी साहब
४५. ,, रामगोपाल जी गुप्त
४६. ,, कुन्दनलाल जगन्नाथ
४७. ,, रूपनारायण रामचन्द्र
४८. ,, ए० हून साहब (स्वर्गीय)
४९. ,, हीरालाल जी खन्ना
५०. ,, मातादीन हरनारायण
५१. ,, मन्नूलाल जी बागला
५२. ,, शिवनाथ जी दलाल
५३. ,, कुञ्जीलाल जी गुप्त
५४. ,, विश्वम्भरनाथ स्वरूपनारायण
५५. ,, रतनलाल जी शर्मा
५६. ,, कृष्णचन्द्र जी अग्रवाल
५७. ,, कैलाशनाथ जी अग्रवाल
५८. ,, कृष्णनारायण जी माथुर